

प्रथम स्वतंत्रता संग्राम

1857
भारत

प्रथम स्वतंत्रता संग्राम

के

समस्त स्वतंत्रता सैनानियों

के

सम्मान में समर्पित

उत्तर प्रदेश राजकीय अभिलेखागार

संस्कृति विभाग, लखनऊ

बी–44, महानगर विस्तार, लखनऊ–226006

दूरभाष

0522 2331813

ईमेल

uparchives.lko@gmail.com

archives.up@nic.in

वेबसाइट

www.uparchives.up.nic.in

प्रकाशक :
उत्तर प्रदेश राजकीय अभिलेखागार
संस्कृति विभाग, लखनऊ
बी–44, महानगर विस्तार, लखनऊ–226006
सम्पर्क
uparchives.lko@gmail.com, archives.up@nic.in
www.uparchives.up.nic.in

आई.एस.बी.एन. :

सम्पादक :
डॉ. रूबीना बेग
निदेशक, उत्तर प्रदेश राजकीय अभिलेखागार

शोध कार्य :
प्रोफेसर नीना डेविड
श्री समी अहमद

पुस्तक सज्जा एवं मुद्रक :
रेमाधव आर्ट
09953672445, 0120 423 6984
remadhav@gmail.com

चौरी-चौरा शताब्दी वर्ष
एवं आज़ादी का
अमृत महोत्सव के अवसर पर
'१८५७ प्रथम स्वतंत्रता संग्राम'
की गौरवगाथा

प्राक्कथन

सन् 1857 का प्रथम स्वतंत्रता संग्राम भारत के इतिहास में अमिट रूप से अंकित है। यह संग्राम इस कारण भी अत्यन्त महत्वपूर्ण है क्योंकि इसमें महिलाओं एवं पुरूषों दोनों ने ही सक्रिय भूमिका निभाई और ये भारतीय समाज के सभी वर्गों, जातियों और धर्मों से ताल्लुक रखते थे।

स्वतंत्रता संग्राम की यह प्रथम चिंगारी थी, जो अग्नि के समान थोड़े ही समय में देश के विभिन्न भागों में फैल गयी। यह संघर्ष बंगाल आर्मी से प्रारम्भ होकर मेरठ, दिल्ली, सहारनपुर, मुजफ्फरनगर, अलीगढ़, मैनपुरी, बुलन्दशहर, इटावा, सरधना, रूहेलखण्ड (बरेली, मुरादाबाद, शाहजहाँपुर, बिजनौर) तथा बदायूँ, कासगंज, अवध में लखनऊ, उन्नाव, इलाहाबाद (प्रयागराज) तथा कानपुर, झांसी आदि तक विस्तारित हुआ।

भारत के 75वें स्वतंत्रता दिवस के अवसर पर उ.प्र. राजकीय अभिलेखागार, संस्कृति विभाग द्वारा इस पुस्तक का प्रकाशन किया जा रहा है। इस प्रकाशन में 1857 के प्रथम स्वतंत्रता संग्राम के प्रारम्भ से लेकर उसके कारण, विस्तार और महत्वपूर्ण घटनाओं, युद्धों, उनके नेतृत्वकर्त्ताओं में मंगल पाण्डे, झांसी की रानी लक्ष्मीबाई, नाना साहब, तात्यां टोपे, अवध की बेगम हज़रत महल, फैज़ाबाद के मौलवी अहमदुल्ला शाह, बरेली के ख़ान बहादुर ख़ान दिल्ली के बख़्त ख़ान तथा बाबू कुँवर सिंह आदि के नेतृत्व का विवरण दिया गया है।

1857 की क्रान्ति के सम्बन्ध में ऐतिहासिक तथ्य विभिन्न पुस्तकों से संकलित किए गये हैं, जिस हेतु उत्तर प्रदेश राजकीय अभिलेखागार, अमीरूद्दौला पब्लिक लाइब्रेरी, विक्टोरिया मेमोरियल हॉल कोलकाता, स्मृति संग्रहालय रेज़ीडेंसी पुरातत्व विभाग, लखनऊ, गेट्टी कलेक्शन, वेलकम लाइब्रेरी लंदन, नेशनल आर्मी म्यूज़ियम लंदन के सहयोग के लिए आभारी हैं।

मुझे विश्वास है कि प्रमुख सचिव, संस्कृति विभाग श्री मुकेश मेश्राम तथा विशेष सचिव, संस्कृति विभाग श्री आनन्द कुमार तथा निदेशक, संस्कृति विभाग श्री शिशिर के मार्गदर्शन में उ.प्र. राजकीय अभिलेखागार द्वारा तैयार की गयी यह पुस्तक जनसामान्य के लिए उपयोगी सिद्ध होगी।

प्रथम स्वतंत्रता संग्राम

1857

भारत

अनुक्रम

शुभाकांक्षा



रामनाथ कोविन्द

राष्ट्रपति, भारत सरकार

सन्देश

हमारे लिए यह बहुत ही प्रसन्नता का विषय है कि इस वर्ष 2021 में हम स्वतंत्रता की 75वीं वर्षगाँठ मना रहे हैं। कई पीढ़ियों के ज्ञात और अनेकों अज्ञात स्वतंत्रता सेनानियों के संघर्ष से हमारी आज़ादी का सपना साकार हुआ है, उन सभी ने त्याग व बलिदान के अनूठे उदाहरण प्रस्तुत किए हैं, मैं उन सभी अमर सेनानियों की पावन स्मृति को श्रद्धापूर्वक नमन करता हूँ।

1857 की क्रान्ति की वह प्रथम ज्वाला ही स्वतंत्रता के मार्ग का प्रारम्भ था, जिस पर अनेकता में एकता की भावना से चलकर, क्रान्तिकारियों ने ब्रिटिश सरकार को ललकारा था।

हमारे स्वतंत्रता सेनानियों में देश प्रेम और त्याग की भावना सर्वोपरि थी, उन्होंने अपने प्राणों की चिन्ता न करते हुए, देश हित को सर्वोपरि रखा था। हमारे देशवासियों को उन सैनिकों, क्रान्तिकारियों से शिक्षा लेनी चाहिए कि हर परिस्थिति में देशहित को ही सर्वोपरि रखना है।

बारामूला में ''डैगर वार मेमोरियल'' पर शहीदों को श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए मैंने देखा कि उस युद्ध स्मारक में एक आदर्श वाक्य अंकित है– ''मेरा हर काम, देश के नाम''। यह आदर्श वाक्य हम सभी देशवासियों को मन्त्र के रूप में आत्मसात् कर लेना चाहिए और आज़ादी के मूल्यों की रक्षा के लिए तत्पर रहना चाहिए।

मुझे यह जानकर बहुत हर्ष हो रहा है कि स्वतंत्रता की वर्षगाँठ के अवसर पर उ0 प्र0 राजकीय अभिलेखागार, संस्कृति विभाग द्वारा 1857 के प्रथम स्वाधीनता संघर्ष पर आधारित पुस्तक का प्रकाशन किया जा रहा है। प्रकाशन हेतु मेरी शुभकामनाएँ।



नरेन्द्र मोदी

प्रधानमंत्री, भारत सरकार

सन्देश

यह हमारे लिए अत्यन्त ही हर्ष का विषय है कि हम अपनी स्वतंत्रता की 75वीं वर्षगाँठ मना रहे हैं। इस बारे में किसी को ज़रा सा भी भ्रम या सन्देह नहीं होना चाहिए कि हमारे लिए भारत की अखण्डता और अक्षुणता सर्वोच्च है और इसकी रक्षा कराना हमारा परम कर्तव्य है। मातृभूमि का सम्मान सर्वोच्च है–

''जननी जन्मभूमि स्वर्गादपि गरीयसी।''

अर्थात् माता और मातृभूमि स्वर्ग से भी बढ़कर हैं।

हमें उन योद्धाओं, जवानों, सैनिकों पर गर्व है, जिन्होंने देशहित में अपने प्राणों का बलिदान दिया है। आज़ादी हासिल करने के लिए हमने बहुत ही काँटों भरा रास्ता तय किया है। गुलामी के उस कालखण्ड में जब अंग्रेज़ विस्तारवादी शक्ति के रूप में यहाँ आए तो यहाँ राज करने के लिए उन्होंने साम, दाम, दण्ड, भेद सभी रूपों का प्रयोग किया क्योंकि हमारा देश विभिन्न जातियों, धर्मों, मतों, भाषाओं, बोलियों, संस्कृतियों की विविधताओं में बिखरा हुआ था। विस्तारवादी शक्तियों को ऐसा लगा कि वे हमेशा के लिए भारत पर राज करेंगे।

ऐसे में सन् 1857 के प्रथम स्वतंत्रता संग्राम में समूचे भारत को एक सूत्र में पिरोने का कार्य किया, इस क्रान्ति ने समूचे देश की विविधताओं में एकता को जन्म दिया और समूचा देश एकजुट हो गया।

उ0 प्र0 राजकीय अभिलेखागार, संस्कृति विभाग द्वारा इस अवसर पर प्रकाशित होने वाली पुस्तक की सफलता हेतु मेरी शुभकामनाएँ।



आनन्दीबेन पटेल

गवर्नर, उत्तर प्रदेश

सन्देश

हमारे लिए यह बड़े ही गौरव की बात है, जब हमारा देश स्वतंत्रता के 75 वर्ष पूर्ण कर चुका है, यह बड़ा ही पावन अवसर है।

15 अगस्त का ऐतिहासिक दिन हमें राष्ट्रीय गौरव और आत्म सम्मान की अनुभूति कराता है। हम उन सभी क्रान्तिकारियों और वीर सपूतों और शहीदों के प्रति कृतज्ञता व्यक्त करते हैं, जिन्होंने देश को आज़ाद कराने के लिए अपना सब कुछ बलिदान कर दिया था।

1857 की क्रान्ति द्वारा आज़ादी प्राप्त करने का प्रथम प्रयास किया गया था, इस क्रान्ति ने विदेशी सरकार को हिला कर रख दिया था। बहुत से देशवासियों को इस पथ पर अपने जीवन का भी बलिदान देना पड़ा था।

देश की एकता और अखण्डता बनाए रखने के लिए हमें सदैव तत्पर रहना होगा। 1857 की क्रान्ति से सम्बंधित पुस्तक के प्रकाशन के लिए मैं उ0 प्र0 राजकीय अभिलेखागार, संस्कृति विभाग को शुभकामनाएँ देती हूँ और मुझे यह विश्वास है कि यह प्रकाशन समाज के सभी वर्गों के लिए उपयोगी सिद्ध होगा।



योगी आदित्यनाथ

मुख्यमंत्री, उत्तर प्रदेश

सन्देश

15 अगस्त 1947 को हमने स्वतंत्रता प्राप्त की। पराधीनता के खिलाफ एक लम्बी लड़ाई व अनगिनत बलिदानों के कारण ही देश स्वतंत्र हो पाया था।

देश में विभिन्न–विभिन्न स्थानों पर बने स्वाधीनता आन्दोलन से जुड़े शहीद स्मारकों से हमें देश पर न्यौछावर होने वाले रणबांकुरों का पता चलता है।

1857 में देश के प्रथम स्वतंत्रता संघर्ष का शुभारम्भ हुआ। कहीं झाँसी की रानी लक्ष्मीबाई जी ने नेतृत्व किया, तो कहीं मंगल पाण्डे जी ने नेतृत्व किया। देश के अलग–अलग हिस्सों में स्वाधीनता की सामूहिक लड़ाई का प्रतिफल है कि विदेशी हुकूमत को भारत छोड़ना पड़ा। 1857 की इस प्रथम क्रान्ति की परिणति ही हमें 15 अगस्त 1947 के रूप में देखने को मिलती है।

देश की आज़ादी के लिए अपने प्राणों की आहुति देने वाले महान क्रान्तिकारियों के सपनों को साकार करने के लिए हमें पूरी ईमानदारी से अपना कार्य करना चाहिए।

यह बड़े ही हर्ष का विषय है कि उ0 प्र0 राजकीय अभिलेखागार, संस्कृति विभाग द्वारा 1857 की प्रथम क्रान्ति पर एक पुस्तक का प्रकाशन किया जा रहा है। पुस्तक के प्रकाशन के लिए मेरी शुभकामनाएँ।



नीलकण्ठ तिवारी

संस्कृति मंत्री, उत्तर प्रदेश

सन्देश

सन् 1857 की क्रान्ति का स्मरण प्रत्येक भारतीय को गौरव से भर देता है, यह क्रान्ति देशभक्तों को सदैव ही प्रेरणा देने वाली रही है। 10 मई 1857 को प्रज्जवलित इस क्रान्ति ने ही आगे के संघर्षों के लिए भारतीयों को प्रेरणा दी और वह मार्ग दिखाया, जिस पर चलकर वे विदेशी सत्ता से लोहा ले सके और उन्हें यह देश छोड़कर जाने को विवश कर दिया।

हम उन क्रान्तिकारियों और शहीदों के प्रति कृतज्ञ हैं, जिन्होंने स्वतंत्रता प्राप्ति हेतु अपने प्राणों का बलिदान कर दिया। मैं उन शहीदों को नमन करता हूँ।

मेरे लिए यह हर्ष का विषय है कि संस्कृति विभागान्तर्गत उ0 प्र0 राजकीय अभिलेखागार, 1857 की क्रान्ति विषयक एक पुस्तक का प्रकाशन कर रहा है, मैं उ० प्र० राजकीय अभिलेखागार को पुस्तक के प्रकाशन के लिए बधाई देता हूँ और यह आशा करता हूँ कि इस पुस्तक की सामग्री, इतिहास के विद्यार्थियों, लेखकों तथा जनसामान्य के लिए भी उपयोगी सिद्ध होगी।



राजेन्द्र कुमार तिवारी

मुख्य सचिव, उत्तर प्रदेश

सन्देश

यह सर्वविदित है कि सन् 1857 का प्रथम स्वाधीनता संग्राम वास्तव में एक ऐसा अभूतपूर्व संग्राम था, जिसने भारतवासियों में देश की स्वाधीनता के लिए नयी चेतना, स्फूर्ति तथा जागृति उत्पन्न कर दी।

उ0 प्र0 राजकीय अभिलेखागार, संस्कृति विभाग द्वारा स्वाधीनता की 75वीं वर्षगाँठ के अवसर पर ''1857 के प्रथम स्वतंत्रता संघर्ष'' जैसे गौरवशाली विषय पर पुस्तक का प्रकाशन किया जाना, अत्याधिक हर्ष का विषय है।

मुझे आशा है कि ''1857 के प्रथम स्वतंत्रता संघर्ष'' में ऐसे महत्वपूर्ण तथ्यों का समावेश होगा, जिसमें स्वाधीनता संग्राम के इतिहास के सभी पक्ष उजागर होंगे, जो हमारे देश की अखण्डता एवं एकता हेतु प्रेरणा के अक्षय स्रोत सिद्ध होंगे। इस संदर्भ में मेरी हार्दिक शुभकामनाएँ।



मुकेश कुमार मेश्राम

प्रमुख सचिव, संस्कृति विभाग, उत्तरप्रदेश

सन्देश

1857 के प्रथम स्वाधीनता संग्राम का देश के इतिहास में विशेष महत्व है। यह भारतीय इतिहास में वह मील का पत्थर है, जिसने विविधताओं में बँटे हुए भारतीय समाज को समान शत्रु के समान एक साथ उठाकर खड़ा कर दिया और उन्हें एकता के सूत्र में पिरो दिया। यह प्रथम क्रान्ति थी, जिसने अंग्रज़ों की राजनीतिक, आर्थिक, अन्यायपूर्ण नीतियों के विरुद्ध भारतीय जनमानस के क्रोध को राष्ट्रीय फलक पर प्रस्फुटित किया। निःसंदेह क्रान्तिकारियों की इस स्वाधीनता संग्राम में विशेष एवं महत्वपूर्ण भूमिका रही है।

इस महान क्रान्ति में तत्कालीन भारतीय क्रान्तिकारियों के शौर्य तथा बलिदान को पुनः दैदीप्यमान करने के प्रयास स्वरूप उ0 प्र0 राजकीय अभिलेखागार, संस्कृति विभाग द्वारा स्वतंत्रता की 75वीं वर्षगाँठ के अवसर पर ''1857 की प्रथम क्रान्ति'' विषय पर एक पुस्तक का प्रकाशन किया जाना अत्यन्त ही प्रसन्नता का विषय है।

आशा है कि यह पुस्तक इतिहास के महत्वपूर्ण पक्षों को उजागर करने के साथ, वर्तमान एंव भावी पीढ़ी के लिए स्वाधीनता के मूल्य एवं उसके प्रति प्रतिबद्धता को भी जगाने–बढ़ाने का कार्य करेगी।



शिशिर

निदेशक, संस्कृति विभाग, उत्तरप्रदेश

सन्देश

मुझे यह जानकर अपार प्रसन्नता हो रही है कि स्वतंत्रता की 75वीं वर्षगाँठ के अवसर पर उ0 प्र0 राजकीय अभिलेखागार, संस्कृति विभाग द्वारा 1857 की प्रथम स्वतंत्रता की क्रान्ति से सम्बंधित पुस्तक का प्रकाशन किया जा रहा है।

1857 की क्रान्ति ही वह प्रथम क्रान्ति थी, जिसने सर्वप्रथम अंग्रेज़ों की कम्पनी सरकार को झिझोड़ डाला था, यह वह प्रारम्भिक पथ था, जहाँ से स्वतंत्रता की यात्रा प्रारम्भ करके, हमने कई पड़ावों के बाद 15 अगस्त 1947 को स्वतंत्रता प्राप्त की थी।

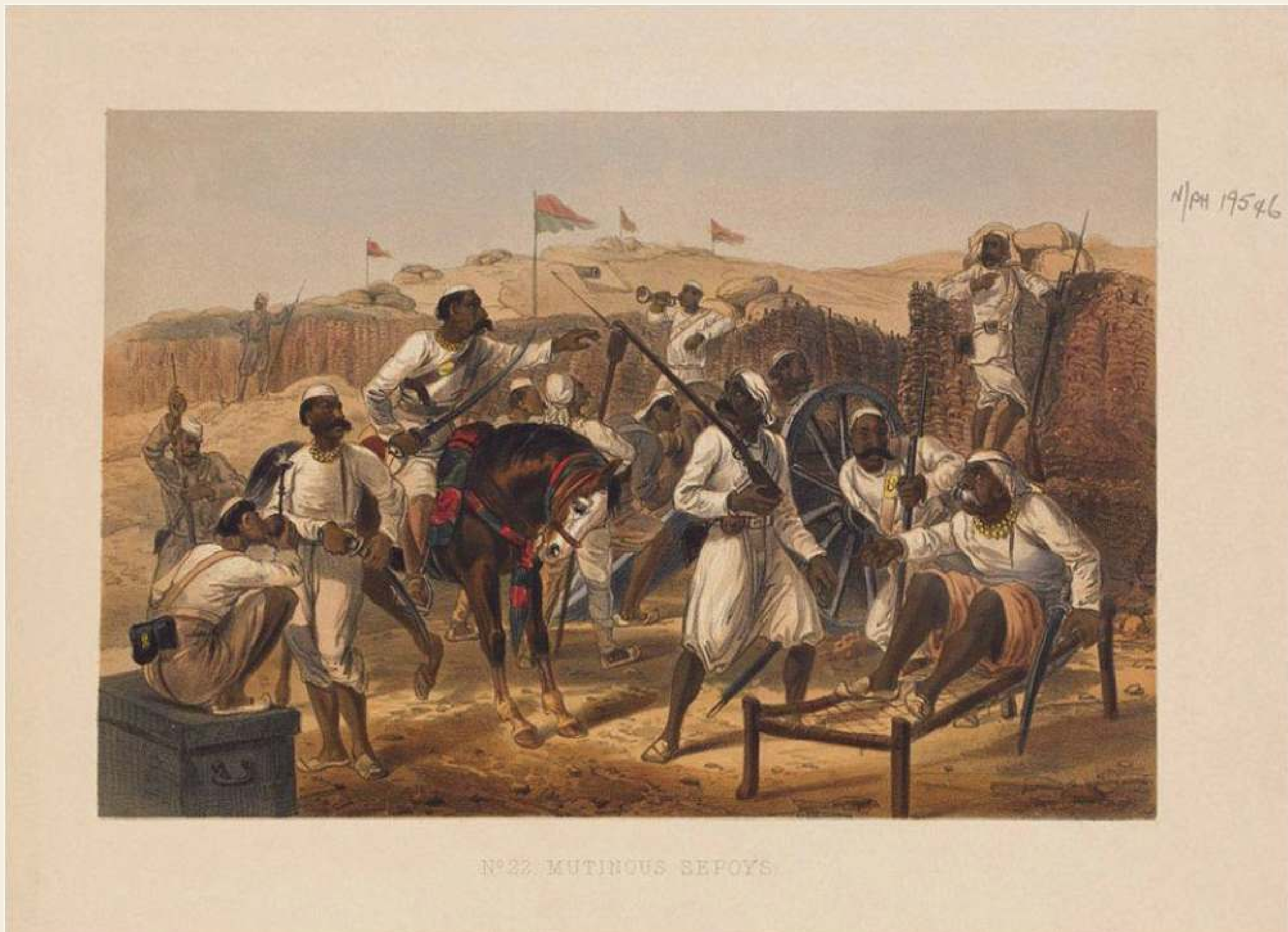
इस पुस्तक में प्रथम स्वतंत्रता संग्राम के इतिहास के विभिन्न पक्षों के बारे में महत्वपूर्ण विश्लेषणात्मक जानकारी प्रदान की गई है। इस स्वतंत्रता युद्ध में पुरुषों के साथ ही, स्त्रियों ने, समाज के सभी वर्णों, जातियों, धर्मों के लोगों ने, ब्रिटिश सत्ता के विरुद्ध संग्राम का बिगुल बजाया था।

मुझे विश्वास है कि इस पुस्तक का प्रकाशन विद्वानों, लेखकों, छात्रों, विद्यार्थियों के साथ ही, जन सामान्य के लिए भी उपयोगी सिद्ध होगा। पुस्तक के प्रकाशन की सफलता हेतु मेरी शुभकामनाएँ।

प्रथम स्वतंत्रता संग्राम

1857

भारत



बागी सिपाही, 1857
नेशनल आर्मी म्यूज़ियम, लंदन

1857 की घटनाओं की कथा को अभिलेखों और प्रकाशित द्वितीयक स्रोतों से लेकर रेखांकित किया गया। 1857 भारतीय स्वतंत्रता के युद्ध को निष्पक्ष और ऐतिहासिक दृष्टिकोण से देखने का प्रयास है। इस संग्राम में महिला और पुरुष दोनों ने सक्रिय योगदान दिया, ये भारतीय समाज के सभी वर्ग, जाति और धर्मों से थे। यदि हम पीछे देखें तो इस क्रान्ति को 150 वर्षों से अधिक समय हो चुका है, उत्तरी भारत में घटित इस विद्रोह पर अलग–अलग विचार, अलग–अलग दृष्टिकोण से लिखा गया है। यह आशा रखी जाती है कि यह साम्प्रदायिक पूर्वाग्रहों और औपनिवेशिक धारणा से परे है।

1857 की यह क्रान्ति, 10 मई 1857 को मेरठ में सिपाहियों के विद्रोह के रूप में प्रारम्भ हुई। यह विद्रोह, ईस्ट इण्डिया कम्पनी की बंगाल आर्मी में प्रारम्भ हुआ। प्रेज़िडेंसी डिवीज़न के मुख्यालय बैरकपुर में यह उथल–पुथल प्रकट हो चुकी थी, जो कि कलकत्ता (कोलकाता) के निकट था। यह मार्च 1856 से ही प्रारम्भ हो चुका था, केवल बैरकपुर में ही नहीं बल्कि अम्बाला, सियालकोट, मेरठ और अवध में भी।

ईस्ट इण्डिया कम्पनी का पूर्वी भारत का सबसे बड़ा समूह, वहाँ पर सर जॉन हियरसे के नेतृत्व में एकत्रित था। यहाँ पर नेटिव इन्फेंट्री, जो कि बैरकपुर में थी, ''म्यूटिनी के चिन्हों'' को दर्शाती है (Freedom Struggle in U.P. Vol I)।



चौकीदारों द्वारा चपातियों का वितरण
नरेटिव ऑफ द इण्डियन रिवोल्ट (सर कोलिन कैम्पबेल, लंदन, 1858)

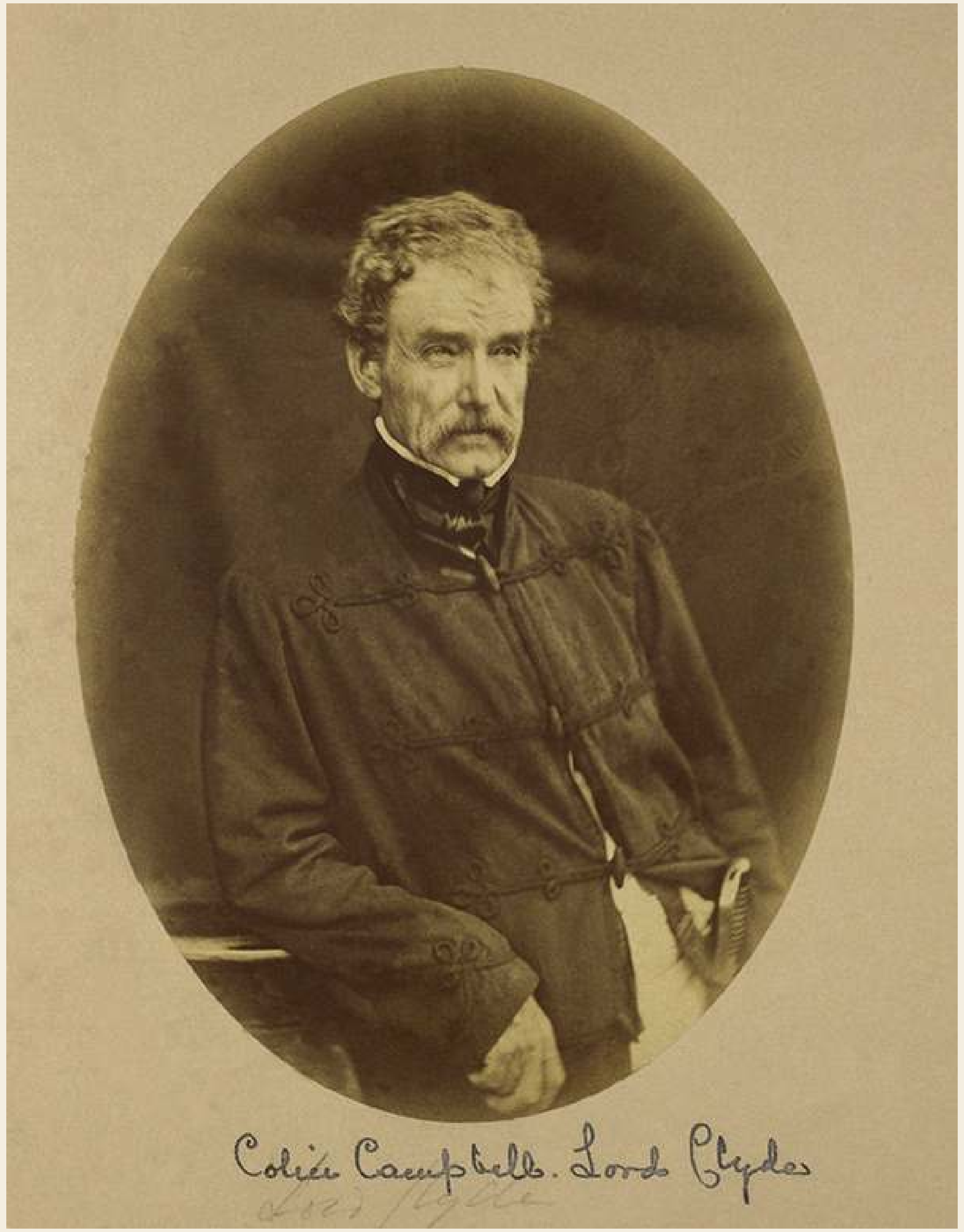
मार्च 1856 से 1857 के बीच, कारतूस और चपाती के सम्बंध में असन्तुष्टि और अफवाह फैली। परन्तु विनायक दामोदर सावरकर, जिन्होंने अपनी पुस्तक 1857 के शहीदों को समर्पित की है, जिसमें सावरकर ने इसे भारतीय स्वतंत्रता का प्रथम युद्ध बताया है।

7 फरवरी 1856 में अवध का अधिग्रहण कर लिया गया। इसका बहाना कुशासन को बनाया गया। नवाब वाज़िद अली शाह, मटियाबुर्ज़ कलकत्ता पहुँच गये।

नाना साहब (धोदूपंत) की पेंशन, जोकि सरकार ने बंद कर दी थी क्योंकि सरकार गोद लेने की परम्परा को मान्यता नहीं दे रही थी और वे पेशवा बाजीराव द्वितीय के दत्तक पुत्र थे। राज्य अपहरण की नीति के अन्तर्गत, रानी लक्ष्मीबाई की झाँसी भी अधिग्रहित कर ली गई थी।

शशि भूषण चौधरी (Theories of the Indian Mutiny) ने लिखा है कि 01 मई, 1857 को शाहजहाँपुर में मजहर करीम के घर में बैठक हुई थी, वे लोग इस विद्रोह को राष्ट्रीय स्वतंत्रता का युद्ध मानते हैं।

चौधरी ने मीटिंग में शामिल लोगों के नाम भी दिये हैं– कदर अली खान, निजाम अली, कुदरत अली, अब्दुल रउफ खान, सीतल सिंह, दौलत राय, कालका प्रसाद, घनश्याम सिंह और मंगल खान आदि जिन्हें अधिकारिक रिपोर्ट में विद्रोही कहा गया है। ब्रिटिश अधिकारियों द्वारा इन्हें गुण्डा और बदमाश की संज्ञा दी गई थी।



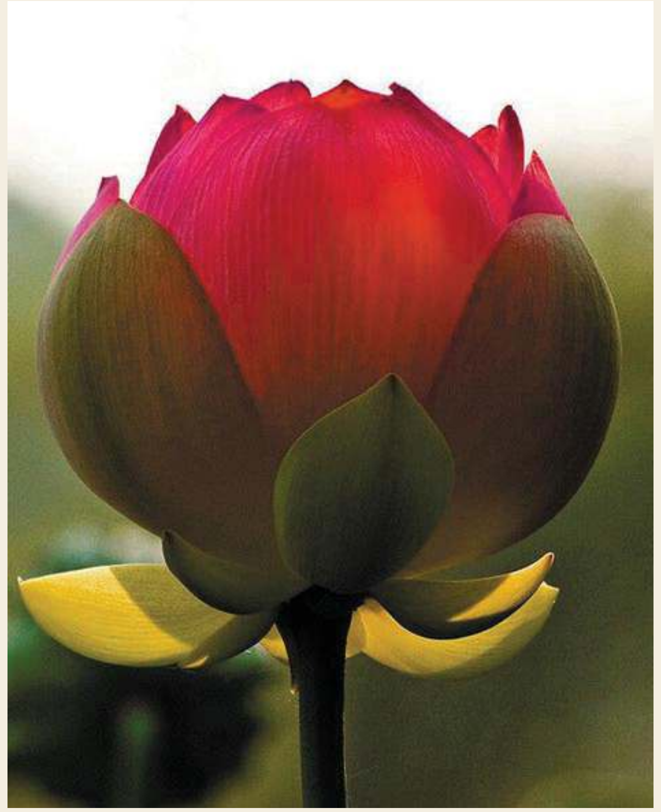
कोलिन कैम्पबेल–लार्ड क्लाइड भारत के प्रधान सेनापति – 1858
फेलिचे बीटो (अंग्रेज़, जन्म, इटली, 1832–1909)

कैम्पबेल, कमांडर इन चीफ ऑफ इण्डिया (बाद में लॉर्ड क्लाइड) ने 1857 के विद्रोह में कमल के फूल का महत्व बताया है, वे कहते हैं कि यह एक षड़्यन्त्र का चिन्ह था और कमल के फूल का प्रसार (Circulation) हो रहा था। बंगाल की सेना में एक व्यक्ति फूल लेकर आता था और रेज़ीमेंट के अध्यक्ष को देता था और वह उसे आगे बढ़ा देता था। इस प्रकार यह रेज़ीमेंट के आखिरी व्यक्ति तक पहुँचता था और वहाँ से गायब हो जाता था।

कैम्पबेल का कहना था कि कोई ऐसी रेज़ीमेंट नहीं थी, न रेज़ीमेंट, न बंगाल में कोई सर्विस, जिसमें यह ना पहुँचा हो। यह शान्ति से बिना बात किए हुए, दूसरे को दिया जाता था।

हेरोडोटस, जिन्हें 'इतिहास का जनक' कहा जाता है, उन्होंने कमल के विषय में बताया है कि जहाँ पर पानी भर जाता है, वहाँ यह खिलता है। इसके पुष्प सफेद होते हैं। ''हैण्ड्स होल्ड वर्ड्स'' (Hands hold words), जो एक पत्रिका थी, में 5 सितम्बर, 1857 को कमल का विवरण दिया है और बताया है कि हिन्दू, कमल (Nymphaea) के पत्तों का प्रयोग, प्लेट, पत्तल और व्यंजनों के लिए करते हैं। अपर प्रोविंसेस में इनको जोड़कर, पत्तल बनाई जाती है।

''ऑपरेशन रेड लोटस'' (2010) में पराग टोपे ने लिखा है कि लाल कमल, पूजा का प्रतीक है। इस पूजा की तैयारी इन्होंने, युद्ध के भड़क उठने से पहले की थी। इस पूजा में ''मखाना'' का प्रयोग किया गया और उसे आटे में चपाती बनाने के लिए मिलाया गया था। कमल की बात, सीतराम बावा (नाना साहब के पुरोहित) ने बताई है।





कमल पुष्प क्रान्ति का चिन्ह
नरेटिव ऑफ द इण्डियन रिवोल्ट (सर कोलिन कैम्पबेल, लंदन, 1858)

लाल कमल को संस्कृत में ''कोकानादम्'' कहते हैं, जिसका अर्थ है, रक्त कमल। जब लाल कमल के फूल, सेना में पहुँचते, तब सिपाही कहते, ''सब लाल हो जाएगा (फील्ड मार्शल रॉबर्ट्स)''।

कमल का चिन्ह, सेना में प्रयुक्त हुआ और नागरिकों ने क्रान्ति का प्रतीक, चपातियों को बनाया। एक सन्देशवाहक आता था और वह ग्राम सरपंच को छः चपातियाँ देता था और सन्देशवाहक कहता था कि छः और बनाओ और आगे के गाँवों में भेजो। यह पहली बार नार्थ वेस्ट प्रोविंसेस, दिल्ली के पास दिखाई देती है। यह एक गुप्त आदान प्रदान था, जो सतलज से पटना तक हो रहा था।

इसके बाद कारतूसों के प्रयोग की प्रसिद्ध घटना, प्रकाश में आती है। माइकल एडवर्ड्स (Battles of the Indian Mutiny) उस निर्णय का ज़िक्र करते हैं, जिसमें पुरानी संगीनों वाली बन्दूक या मस्कट, जिसे ब्राउन बेस कहते थे, के स्थान पर एक नयी एनफील्ड राइफल, जिसकी मारक क्षमता, और लम्बी दूरी थी और पक्की निशाने वाली थी, को प्रयोग करने का निर्णय लिया गया। इस नयी राइफल को लोड करने के लिए, नये कारतूसों को दाँत से काटने की आवश्यकता पड़ती थी। सिपाहियों ने सुना था कि यह बात सही थी कि कारतूसों में प्रयुक्त चर्बी, गाय और सुअर की थी।

इसी को उद्देशित करते हुए, 'बहादुर शाह ज़फर' (मुग़ल सम्राट) ने एक ''शेर'' (पद्य) लिखा कि–

''न ईरान ने किया न शाह रूस ने,
अंग्रेज़ को तबाह किया कारतूस ने''



एनफील्ड राइफल
नेशनल आर्मी म्यूज़ियम, लंदन



एनफील्ड राइफल के कारतूस (1857)
नेशनल आर्मी म्यूज़ियम, लंदन



राइफल के प्रयोग का अभ्यास

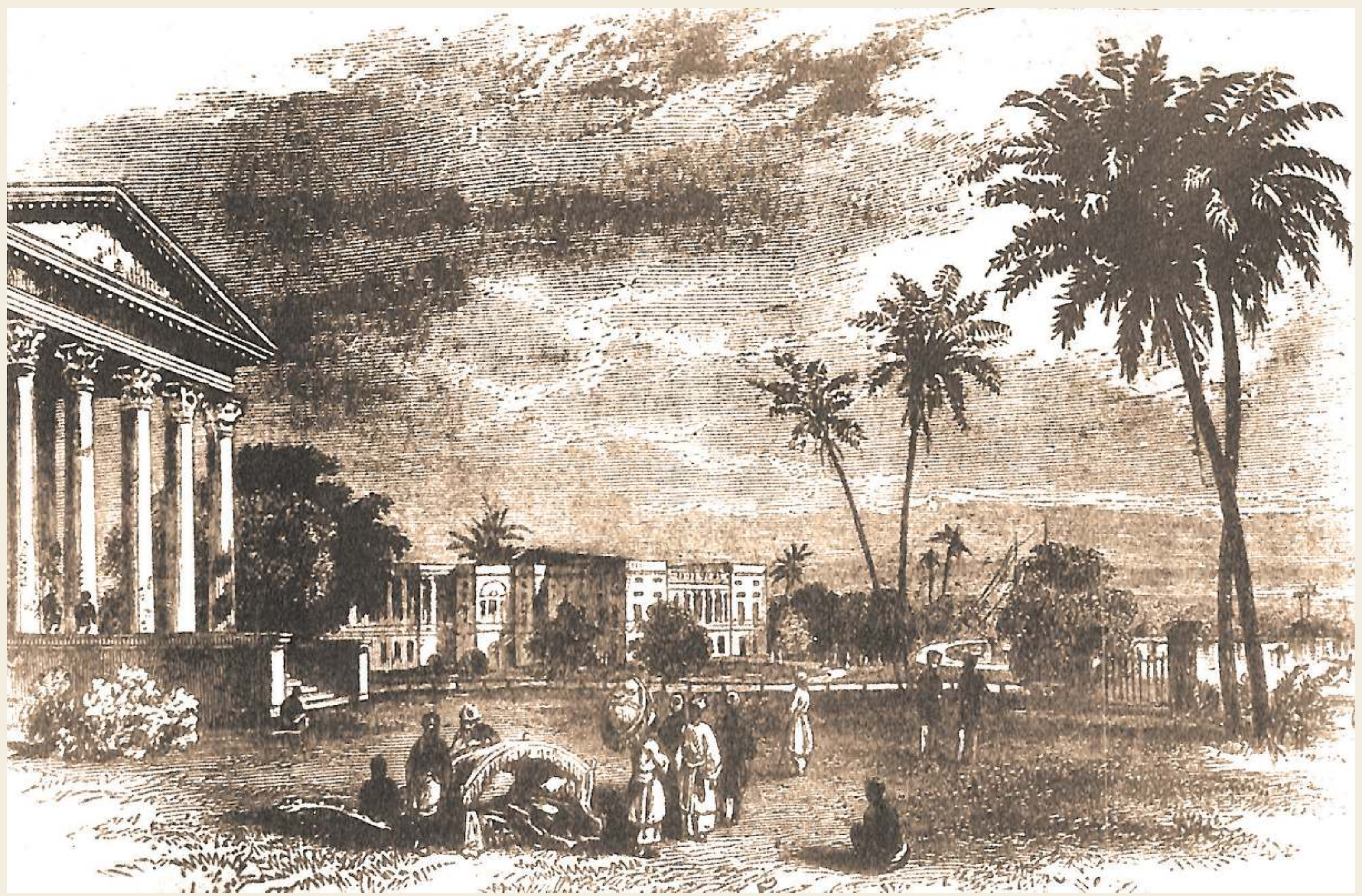
सेना में एक विद्रोही भावना फैल गई और इसके फलीभूत, सेना में एक चेतना उद्भवित हुई, जो बाद में सेना के विद्रोह के रूप में सामने आयी।

सर विलियम म्योर–(इंटेलिजेंस रिकॉर्ड वॉल्यूम III में) लिखते हैं कि सिपाहियों के मन की दबी हुई भावना, कारतूसों के विस्फोट की आवाज़ के रूप में सामने आई। यह विश्वास और मजबूत हुआ कि जो खलासी II नेटिव रेज़ीमेंट से सम्बद्ध था, ने सिपाही से पानी माँगा तो सिपाही ने इन्कार कर दिया क्योंकि वह खलासी उसकी जाति का नहीं था। खलासी ने जवाब दिया, ''जल्दी से जल्दी आपकी जाति भ्रष्ट हो जाएगी, क्योंकि नये कारतूस को दाँत से काटना पड़ेगा, जो कि गाय और सुअर की चर्बी से बने थे।''

इतिहासकार एस.एन.सेन ने बताया कि यह राइफल 1853 में आयात की गयी थी। यह ऐसे प्रयोगों के लिए नहीं बल्कि यह जानने के लिए थी कि गर्म और ठण्डा वातावरण उसे कैसे प्रभावित करता है।

एक कर्नल, जिसका नाम टकर था, ने मिलिट्री बोर्ड को चेतावनी दी थी कि अगर इन कारतूसों का वितरण हुआ तो भारतीय नागरिकों की इसके प्रति क्या प्रतिक्रिया होगी लेकिन उनकी चेतावनी को नज़रअंदाज़ कर दिया गया।

सावरकर ने कहा था कि ''कारतूसों का कारण, सिर्फ एक अस्थायी कारण था और यह सिद्धान्त (Theory) बहुत ही कपटी, छद्म, मूर्खतापूर्ण है।'' सावरकर स्वधर्म और स्वराज्य को प्राथमिकता देते हैं।



कलकत्ता से 16 मील दूर, हुगली के किनारे, बैरकपुर मिलिट्री स्टेशन

जी.डब्ल्यू. फॉरेस्ट C.I.E. जोकि भूतपूर्व डायरेक्टर ऑफ रिकॉर्ड्स थे, की पुस्तक– 'ए हिस्ट्री ऑफ द इण्डियन म्यूटिनी' 3 वॉल्यूम्स (A History of the Indian Mutiny 3 Vol.), जोकि मूल अभिलेखों के आधार पर लिखी है। उन्होंने अपने प्रथम वॉल्यूम में विद्रोह की उत्पत्ति के सम्बंध में लिखा है कि 24 जून, 1857 से मेजर जनरल हियरसे, जोकि प्रेज़िडेंसी डिवीज़न को कमाण्ड कर रहे थे, ने दो पत्र भारत सरकार को भेजे, एक कैप्टन राइड के द्वारा, जो कि डमडम में राइफल डिपो से जुड़े हुए थे। उन्होंने लिखा कि पहले से ही एक ऐसी भावना हिन्दुस्तानी सिपाहियों में, चर्बी वाले कारतूसों को लेकर थी और बाद में यह विश्वास, एक खलासी के व्यवहार के द्वारा और मजबूत हो गया, जो कि मैगज़ीन (बारूदखाना) से जुड़ा हुआ था।

दूसरी चिट्ठी, मेजर बॉन्टेन ने लिखी थी, जोकि बन्दूकधारी सेना (मस्किटरी) के गोदाम (डिपो) को डमडम में कमाण्ड कर रहे थे, जिसमें उन्होंने कहा, कैप्टन राइड के द्वारा जानकारी दी गयी थी कि उन्होंने डिपो के सारे हिन्दुस्तानियों की परेड करवाई और कहा, अगर उन्हें कोई शिकायत है तो बताएँ। सिपाहियों ने जवाब दिया कि यह चर्बी का मिश्रण, उनकी धार्मिक भावनाओं के विरुद्ध था और सुझाव दिया कि चर्बी के स्थान पर मोम और तेल का प्रयोग किया जाए, जनरल हियरसे ने सुझाव रखा कि बाज़ार से यह सामग्री प्रयोग की जाए।

कलकत्ता से 16 मील दूर, हुगली के किनारे, बैरकपुर मिलिट्री स्टेशन था। बैरकपुर सेना के प्रेज़िडेंसी डिवीज़न का मुख्यालय था और यहाँ चार नेटिव रेज़ीमेंट थे। सैकेण्ड ग्रेनेडियर्स, 34 नेटिव इन्फेंट्री, 43 लाइट इन्फेंट्री, 70 नेटिव इन्फेंट्री। सर जॉन हियरसे ने कहा कि धर्म को लेकर, सिपाहियों के मन में एक आशंका थी।



घोड़ों पर सवार क्रान्ति की सूचना लाते समाचार वाहक
नरेटिव ऑफ द इण्डियन रिवोल्ट (सर कोलिन कैम्पबेल, लंदन, 1858)

धर्मसभा कलकत्ता की एक धार्मिक हिन्दू पार्टी थी। जिसका मत था कि सरकार का इरादा, सिपाहियों का जबरन धर्म परिवर्तन करने का था। धर्मसभा ने एनफील्ड राइफल के बारे में ऐसी बातें फैला दी थीं, जिससे सम्बंधित असन्तुष्टि के कई कारण, फॉरेस्ट ने रेखांकित किए हैं।

एक प्राचीन रीति के अनुसार, हिन्दू विधवाओं के लिए दूसरा विवाह निषिद्ध था। लॉर्ड डलहौज़ी (1848–1856) के एक अधिनियम द्वारा, विधवा को दूसरा विवाह करने का अधिकार दिया गया, विधवा को द्वितीय विवाह करने की अनुमति मिल गयी। इससे यह शक और भी पक्का हो गया कि सरकार धर्म के साथ छेड़छाड़ कर रही है। टेलीग्राफ और रेलवे की स्थापना, स्कूलों के खुलने से भी एक असन्तुष्टि फैल गयी। रूढ़िवादियों को लगा कि सामाजिक और धार्मिक रूप से हिन्दू समाज को विघटित किया जा रहा है। ब्राह्मण सिपाही को कोई शंका नहीं थी कि ब्रिटिश सरकार के द्वारा, उसके धर्म पर प्रहार किया जा रहा है। ब्राह्मण सिपाही के लिए जाति भ्रष्ट होने का मतलब है, जाति के बाहर होना। समाज में यह एक घृणा की स्थिति थी और इससे, उसके पत्नी और बच्चे भी प्रभावित होंगे। जाति को बनाये रखने के लिए वे एकत्रित हो जाएँगे और वे कारतूसों को लेने और प्रयोग करने से इन्कार करेंगे।

जनरल हियरसे, सिपाहियों के धार्मिक पूर्वाग्रहों से परिचित थे, वे जानना चाहते थे कि सिपाही क्या चाहते हैं, इसलिए उन्होंने एक विशेष कोर्ट ऑफ इंक्वायरी बुलाई। जिसमें वे बैरकपुर की द्वितीय रेज़ीमेंट ग्रेनेडियर के कुछ लोगों से प्रमाण लेते कि इनके विरोध के क्या कारण हैं? (स्टेट पेपर वॉल्यूम 1)।

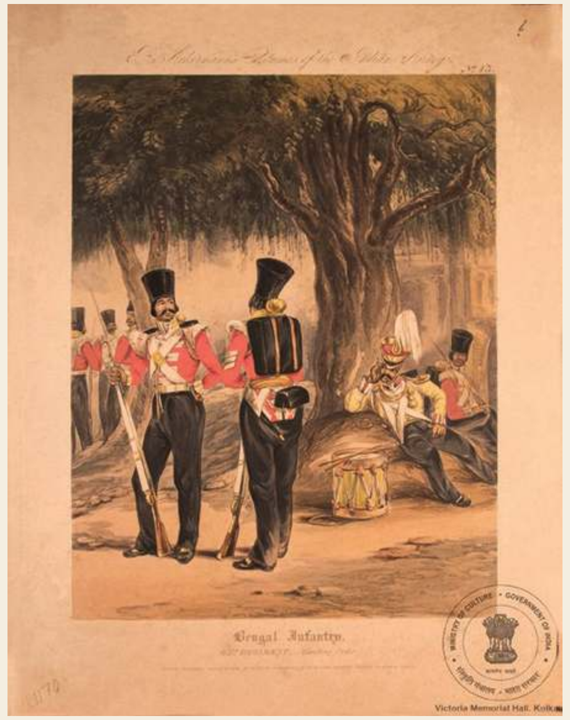


बंगाल हार्स आर्टिलरी द्वारा तोपों से उड़ाये जाते सिपाही, 1858
नेशनल आर्मी म्यूज़ियम, लंदन

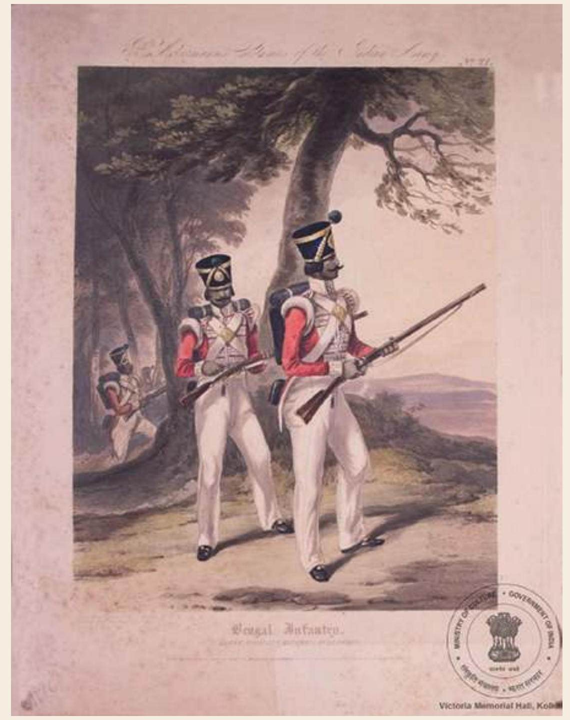
06 फरवरी को अदालत बैठी और बैजनाथ पाण्डेय नामक एक सिपाही को बुलाया गया तथा पूछा गया, तो उसने जवाब दिया कि यह कागज़, उनकी जाति को प्रभावित करेगा। दूसरी गवाही चाँद खाँ की हुई, उनका यह कहना था कि वे भी विरोध में हैं क्योंकि जब वह कागज़ जलाया जा रहा था तो उस पर चिकनाई थी। इसी प्रकार से सूबेदार खुदा बक्श, जमादार गुलाब खाँ आदि की गवाही हुई। एक हफ्ते के बाद, जनरल हियरसे ने लिखा कि बैरकपुर में विचार किया गया कि यहाँ पर विस्फोटक स्थिति बन रही है। 34 रेज़ीमेंट के जमादार ने बताया कि यहाँ परिस्थिति गम्भीर है और कुछ लोगों ने गवाही दी थी कि वे अपने धर्म के लिए मरने के लिए तैयार हैं। 06 फरवरी, 1857 को वे स्टेशन को लूटेंगे और अंग्रेज़ों को मारेंगे (स्टेट पेपर वॉल्यूम 1 पृष्ठ संख्या–20)। जनरल हियरसे ने सरकार को बताया कि सरकार को विशेष ख़तरा है। अपनी ब्रिगेड 04 नेटिव कोर को जनरल हियरसे ने उनकी मातृभाषा में सम्बोधित किया कि सरकार, धर्म परिवर्तन नहीं करना चाहती है।

बंगाल के नवाबों की प्राचीन राजधानी, मुर्शिदाबाद से कुछ मील दूर और बैरकपुर से 100 मील दूर, बैरहमपुर मिलिट्री स्टेशन था। वहाँ पर 9 रेज़ीमेंट नेटिव इन्फेंट्री, इर्रेगुलर कैवलरी एवं 2, 6 पाउण्ड तोपें, जो देशी गनर की देखरेख में थीं। चिकने कारतूस की अफवाह, बैरहमपुर भी पहुँच गयी। एक ब्राह्मण हवलदार ने कर्नल मिचेल से कहा कि नयी राइफल के लिए सरकार गाय और सुअर की चर्बी से कारतूस तैयार करेगी।

बैंजामिन डिज़रैली (1874 से 1880) का विश्वास था कि सिपाहियों के पास अविश्वास के कई कारण थे। उनका मानना था कि ब्रिटिश सरकार, स्थानीय रीति रिवाज़ों में हस्तक्षेप कर रही थी।



बंगाल इन्फेंट्री – 65वीं रेज़ीमेंट



बंगाल इन्फेंट्री लाइट कम्पनी 65 रेज़ीमेंट



28वीं बंगाल इन्फेंट्री



9वीं बंगाल लाईट केवेलरी

विक्टोरिया मेमोरियल हॉल, कोलकाता

कर्नल मिचेल ने नेटिव कमाण्ड अफसरों को बुलाया और कहा कि यह कारतूस एक साल पहले तैयार किये गये थे, जो इन्हें प्रयोग करने से इन्कार करेंगे, उन्हें सख़्त दण्ड दिया जाएगा। इसके बाद रात के ग्यारह बजे नगाड़ों की आवाज़ें सुनी गईं और सैनिक निवासों से चिल्लाने की आवाज़ें आने लगीं। उन्हें बताया गया कि सिपाहियों ने अपनी मस्कट को लोड कर लिया है। दूसरे दिन ही उनकी परेड करायी गयी, निरीक्षण के बाद, 'आर्टिकल ऑफ वार' सुनाये और उनको बर्ख़ास्त (डिस्मिस) कर दिया।

मिचेल के इस कार्य की सख़्त आलोचना हुई। बैरकपुर में जो घटना हुई, उसका समाचार 04 मार्च को कलकत्ता पहुँच गया और कम्पनी सरकार यह समझ गई कि यह ख़तरे की स्थिति है, उन्होंने सोच लिया कि वे सैन्य विद्रोहियों को दण्ड देंगे।

रविवार, दिनांक 29 मार्च को मंगल पाण्डे नामक, 34 नेटिव इन्फेंट्री के नॉन कमीशण्ड अफसर, लेफ्टिनेंट वॉग के आवास पर पहुँचे, जो 34 नेटिव इन्फेंट्री के एजुटेंट थे। उन्होंने कहा कि एक सिपाही, जिसका नाम मंगल पाण्डे था, वह क्वार्टर गार्ड से बाहर निकला और सार्जेन्ट मेजर पर गोली चलाई। मंगल पाण्डे और वॉग के बीच में गोलियाँ चलीं। सार्जेन्ट मेजर, अपने अफसर की सहायता के लिए पहुँचे। मंगल पाण्डे ने दोनों को अपनी तलवार से घायल किया और एक सिपाही ने सार्जेन्ट मेजर को ज़मीन पर गिरा दिया, दोनों की ही मृत्यु हो जाती अगर एक और सिपाही, शेख पलटू ने मंगल पाण्डे को न पकड़ा होता। जब तक दोनों घायल अफसर अपने पैरों पर खड़े हुए, तब तक मंगल पाण्डे को गिरफ्तार करने के लिए क्वार्टर गार्ड से एक और व्यक्ति निकला।





मंगल पाण्डे

जब एजुटेंट घायल होकर, अपने निवास (रेज़ीडेंट) में वापस लौटे तो उन्होंने अपने सहायकों से पूछा कि उन्होंने कैसे अपने अफसरों को घायल होने दिया? और सहायता नहीं दी? तो उनके सहायकों ने कोई जवाब नहीं दिया।

जब वहाँ पर जनरल हियरसे पहुँचे तो उन्होंने इस घटना के विषय में पूछा, तो देखा, मंगल पाण्डे ने अपने मित्रों से कहा कि वे उनके साथ मिलकर, अपने धर्म और जाति की रक्षा करें और उसी के लिए अपने प्राण दे दें।

जब जनरल अपने दो पुत्रों के साथ आगे बढ़ा तो उसे बताया गया कि मंगल पाण्डे की बन्दूक भरी हुई है और वह गोली चला सकते हैं। मंगल पाण्डे ने हियरसे पर निशाना साधा, जिसकी चेतावनी हियरसे के पुत्र ने हियरसे को दी। मंगल पाण्डे ने गोली चलाई, पर निशाना चूक गया, फिर मंगल पाण्डे ने बन्दूक की नाल को अपने सीने से चिपकाकर, पैर से घोड़ा दबाया और मंगल पाण्डे ज़मीन पर गिर गये, खून से लथपथ हो गये और उनके कपड़ों में आग लग गयी। आग बुझाई गई, मेडिकल अफसर ने उन्हें हॉस्पिटल पहुँचाया।

जनरल हियरसे 43वीं सिपाही नेटिव इन्फेंट्री के बीच में गये और कहा कि जाति के पूर्वाग्रह में हस्तक्षेप करने के लिए, किसी भी व्यक्ति को अनुमति नहीं मिलनी चाहिए। फिर वे 34 नेटिव इन्फेंट्री में गये और सिपाहियों से पूछा कि वे निष्क्रिय क्यों रहे? यह सेना विद्रोह की प्रथम घटना थी।



बैरकपुर में निःशस्त्रीकरण



11वीं रेग्यूलर कैवलरी का बेहरामपुर में निःशस्त्र होना, 1857
नेशनल आर्मी म्यूज़ियम, लंदन

मंगल पाण्डे द्वारा विद्रोह के दो दिन के बाद, 19वीं नेटिव इन्फेंट्री बैरकपुर पहुँची। वहाँ जनरल हियरसे, उनसे मिले और उनके साथ 84 फुट, जो 53 का एक भाग था, 02 बैटरी यूरोपियन आर्टीलरी भी थी। जनरल हियरसे ने 19वीं नेटिव इन्फेंट्री को सम्बोधित किया। सरकार का आदेश है कि सेना को भंग (डिस्बैण्ड) किया जाए और यह भी निर्देश था कि सेना को निःशस्त्र किया जाएँ इसके 6 दिन के बाद, मंगल पाण्डे पर म्यूटिनी का मुकदमा चलाया गया और यह कहा गया कि इन्होंने अपने अफसरों पर हमला किया एवं इनके ऊपर म्यूटिनी या सैन्य विद्रोह का आरोप लगाया गया और फाँसी की सज़ा सुनाई गयी।

फिर दूसरे दिन बैरकपुर की नेटिव इन्फेंट्री की उस टुकड़ी के सामने फाँसी दी गयी, जो फाँसी के स्थान के पास थी। जनरल ने कहा कि सेना इसे चेतावनी की तरह ले और यह भी देख ले कि विद्रोह का दण्ड क्या होता है।

जनरल हियरसे ने सरकार को लिखा कि जमादार ईश्वरी पाण्डे को भी उनकी सेना की उपस्थिति में फाँसी की सज़ा दी गयी। 34 नेटिव इन्फेंट्री के व्यवहार की ओर सरकार का ध्यान गया, विशेष अदालत (कोर्ट ऑफ इंक्वायरी) ने तहकीकात की। लॉर्ड कैनिंग ने कहा कि रेज़ीमेंट को भंग (डिस्बैण्ड) कर दिया जाए।

06 मई को नेटिव इन्फेंट्री की 7 कम्पनियाँ बैरकपुर में थीं, उन्हें सेना की उपस्थिति में भंग (डिस्बैण्ड) किया गया। उनके कोट उनसे ले लिये गये परन्तु मार्च–अप्रैल–मई के प्रारम्भ में किसी भी मिलिट्री या सिविल अफसर को ज़रा भी शक नहीं था कि बंगाल सेना का यह भाग, सैन्य विद्रोह में भाग लेगा।

मेरठ

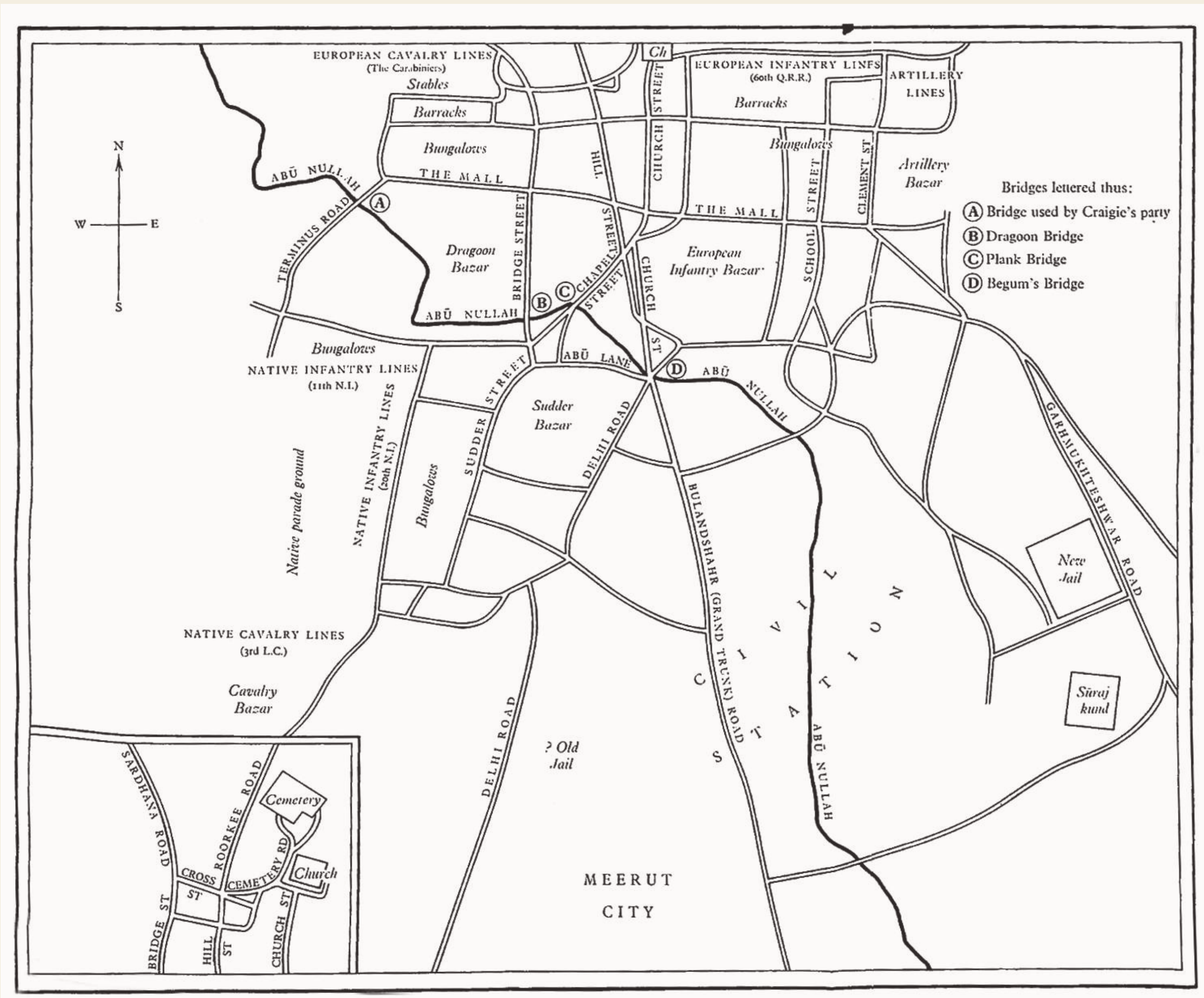
08 मई, थर्ड लाइट कैवलरी के जवानों का कोर्ट मार्शल किया गया क्योंकि वहाँ भी विद्रोही गतिविधियाँ प्रारम्भ हो गई थीं। उसी रात ह्यू गॉग (Hugh Gough), एक जूनियर अफसर ने कहा कि सिपाही दूसरे दिन सेना विद्रोह करेंगे। इस लाइट केवलरी का नेतृत्व लेफ्टिनेंट कर्नल ब्रेवेट, जॉर्ज मनरो, कार्माइकल स्मिथ ने किया।

मई 1857 में मेजर जनरल विलियम हेनरी हयूविट ने मेरठ डिवीज़न का नेतृत्व किया, वह 66 वर्ष का था। मेरठ डिवीज़न के कमिश्नर एच.एच. ग्रीथ्ड थे।

इतिहासकारों का कहना है कि मेरठ में सेना विद्रोह आरम्भ हुआ। यह विद्रोह सफल रहा। हिन्दुस्तान के एक ऐसे स्टेशन में जहाँ अंग्रेज़ सेना, हिन्दुस्तानी सिपाहियों से अधिक थी, यहाँ विद्रोह का आरम्भ होना असम्भव था।

जे.डब्ल्यू. केयी, हैनरी मीड, सर जॉन फॉरेस्ट और अन्य भारतीय इतिहासकार, विनायक दामोदर सावरकर का भी यही विचार है कि मेरठ में क्रान्ति प्रारम्भ होगी, यह किसी ने भी नहीं सोचा था। यहाँ पर सिर्फ दो ही नेटिव इन्फेंट्री रेज़ीमेंट थीं, 20 और 11। यहाँ एजुटेंट जनरल चेस्टर थे, पूरी आर्टीलरी, यूरोपियन के हाथ में थी। इन परिस्थितियों में सिपाहियों की सफलता की कोई सम्भावना नहीं थी।

भारतीय केवलरी के कर्नल स्मिथ ने जब सुना कि उसकी रेज़ीमेंट विद्रोह कर चुकी है तो अपनी जान बचाने के लिए, वहाँ से भाग गया। इसके अतिरिक्त 6 ड्रैगन गार्ड थे। कैरेबिनियर्स वहाँ पहुँच गये, इन्हें वहाँ क्रीमिया से लाया गया था।



मेरठ छावनी का नक्शा, 1857
द म्यूटिनी आउटब्रेक ऐट मेरठ इन 1857 : जे. ए. बी. पामर

फॉरेस्ट ने अपने म्यूटिनी पेपर्स में मेरठ का महत्व बताया है कि मेरठ की छावनी, जोकि दिल्ली से 36 मील दूर है, यहाँ 2 सड़कों द्वारा पहुँचा जा सकता है। एक गाज़ियाबाद से रूड़की, जो उत्तर से दक्षिण है और दूसरा, मॉल, जिसमें बड़े विशाल वृक्ष हैं, जो कि पूरब से पश्चिम हैं। मॉल के उत्तर में आर्टिलरी बिग्रेड का आवास है, यूरोपियन कोर का आवास है एवं यूरोपियन इन्फेंट्री, जो कि दाहिने–बाँये और मध्य में स्थित थी। रूड़की ट्रंक रोड, आर्टिलरी और यूरोपियन इन्फेंट्री आवासों को कैवलरी से अलग करती है। उत्तर में एक खुला स्थान है, जोकि 2 वर्ग मील लम्बा है, जहाँ सेना के लिए परेड ग्राउण्ड है। आवास के दक्षिण में अफसरों के निवास हैं और उनके उद्यान, जोकि मॉल तक पहुँच रहे हैं। मॉल के पश्चिम में एक रोड है, जो नेटिव इन्फेंट्री लाइन तक पहुँचती है। दक्षिण में कैवलरी लाइन्स हैं, नेटिव लाइन्स के पूर्वी क्षेत्र में अफसरों के बंगले हैं, जो कि नेटिव कोर से जुड़े हैं। इनके पीछे सदर या विशेष छावनी बाज़ार है, शहर की पूर्वी दिशा में एक मील की दूरी पर एक विशाल कारागार है, जिसमें 4000 कैदियों को रखा जा सकता है।

मई 1857 में मेरठ के स्टेशन पर फर्स्ट बटालियन, 60 राइफल, घुड़सवार सेना, पैदल सेना, लाइट फील्ड बैटरी, 03 नेटिव कोर स्थित थे। डमडम में चिकने कारतूस के विषय में जो वार्ता, सिपाही और खलासी के बीच हुई थी, वह मेरठ के सिपाहियों के बीच पहुँच चुकी थी। वे बहुत उत्तेजित थे, उनका मानना था कि सरकार उनके धर्म को भ्रष्ट करने का प्रयास कर रही है। यह भी कहा गया कि हड्डियों का चूरा आटे में मिलाया गया है, जोकि बाज़ारों में बिक रहा था। बैरकपुर में जो भावना थी, वह जलते हुए बंगलों के रूप में प्रकट होने लगी। अफसरों को सलामी देना बन्द कर दिया गया और सिपाहियों ने निर्णय लिया कि वे एक भी कारतूस को नहीं छुएंगे।



क्रान्तिकारियों द्वारा परम बलिदान – 1857

कर्नल स्मिथ, जो थर्ड लाइट कैवलरी का नेतृत्व कर रहे थे। उन्होंने अपने जवानों की एक परेड बुलायी और अपने जवानों को नया तरीका समझाया कि वे बिना दाँतों से काटे, कारतूसों को कार्बाइन में लोड कर सकें। यह घटना पिछले महीने 23 अप्रैल को हुई, जब उन्होंने निर्देश दिये कि एक परेड होनी चाहिए। अंग्रेज़ अफसरों को नेटिव नॉन कमीशण्ड अफसर ने बताया था कि फर्स्ट ट्रूप के जवानों ने कारतूसों को लेने से इन्कार कर दिया है। यह एक गम्भीर विषय था कि पूरी रेज़ीमेंट में सेना विद्रोह हो जाएगा, समय न बर्बाद किया जाए, तुरन्त स्मिथ को बताया जाए। स्मिथ ने निर्णय लिया कि परेड होगी, उसमें 90 सिपाही उपस्थित हुए। हवलदार मेजर से कहा गया कि बंदूक लोड करने का नया तरीका सिखायें। हवलदार मेजर ने फायर किया, कर्नल स्मिथ ने आदेश दिया कि कारतूस बाँटे जाएँ। 5 सिपाहियों ने स्वीकार किया और 85 ने इन्कार किया और कहा अगर उन्होंने इन्हें स्वीकार किया तो उनका नाम खराब होगा, यदि पूरी रेज़ीमेंट कारतूसों को लेगी तो वे भी ले लेंगे। कर्नल ने उन्हें समझाया कि वे उसे ले लें। फॉरेस्ट ने वॉल्यूम–2, पृष्ठ संख्या–228 में बताया कि हवलदार मेजर और बाकी 5 ने इनका प्रयोग किया।

स्मिथ ने एजुटेंट से कहा कि इन्हें बर्खास्त (डिस्मिस) कर दिया जाए। कोर्ट ऑफ इंक्वायरी बुलाई गयी और जब सेनाध्यक्ष एंसन के पास यह इंक्वायरी पहुँची, निर्देश मिला कि इनका कोर्ट मार्शल किया जाए। 9 मई, 1857 के सवेरे, मेरठ में पूरी सेना की एक परेड हुई और अदालत की रिपोर्ट पढ़कर सुनायी गयी। 85 सैनिकों की वर्दियाँ उतार दी गयीं और यह एक घण्टे से अधिक समय तक खड़े रहे और उनके पैरों में बेड़ियाँ डाल दी गयीं। फिर कैदियों को जेल भेज दिया गया, परेड को भंग कर दिया गया। जरनल ह्यूट ने बताया कि किस प्रकार कैदियों को नीचा दिखाया गया।

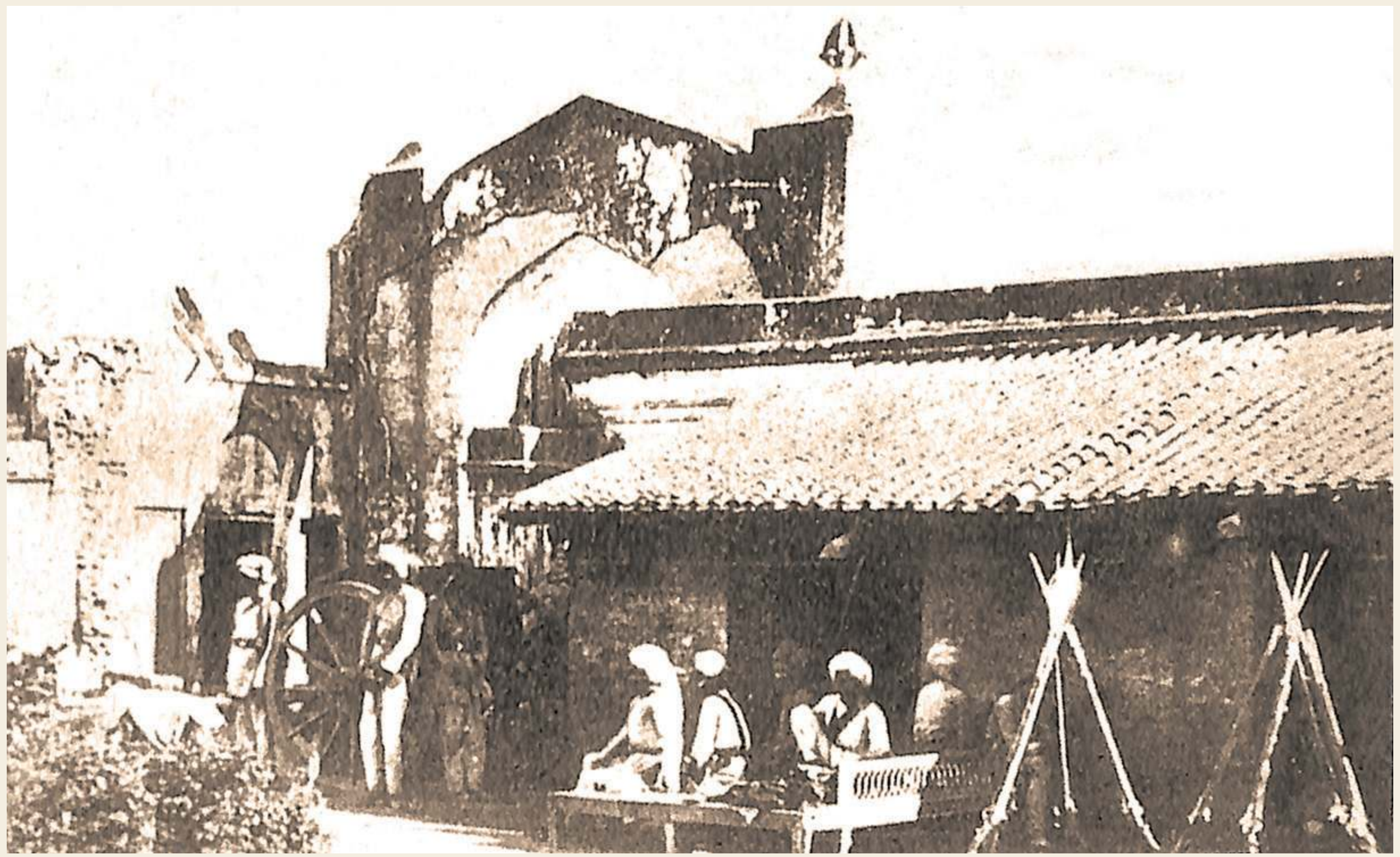


मेरठ में एक बंगले का विध्वंस
नरेटिव ऑफ द इण्डियन रिवोल्ट (सर कोलिन कैम्पबैल, लंदन, 1858)

सिपाहियों का व्यवहार अच्छा नहीं था, मुकदमे का परिणाम, जरनल एंसन को भेजा गया। उन्होंने इस दण्ड की पूरी सहमति दी लेकिन उन्होंने पछतावा व्यक्त किया कि उन्हें अस्वभाविक प्रक्रिया द्वारा दण्डित किया गया। इस दृश्य को जो भी हिन्दुस्तानी सेना देख रही थी, वह अंग्रेज़ शासकों के विरुद्ध, विद्रोह की तैयारी करने लगी और अपने साथियों को बचाने के लिए अच्छा मौका ढूंढने लगी और निर्णय लिया, वह जटिल से जटिल समस्या का सामना कर लेंगे।

10 मई, 1857 मेरठ– 10 मई, को रविवार का दिन था, सिपाहियों ने एक अच्छा मौका चुना। रविवार के दिन मेरठ के यूरोपीय निवासी, गिरजाघर (Church) जा रहे थे, संध्या के समय, रास्ते में उन्होंने मस्किटरी की आवाज़ सुनी और वे चौंक गये, उन्होंने देखा कि धुँआ आसमान तक जा रहा है। यह आवाज़, सेना विद्रोह की थी, देशी सैनिक, विद्रोह कर चुके थे और वे अपने अफसरों को जान से मार रहे थे और उनके घरों को जला रहे थे। मिसेज म्यूटर का कहना था कि मेरठ के लोगों के प्रति, अंग्रेज़ों का व्यवहार बहुत कठोर था, सैनिकों ने जो वीरता और गर्व प्रदर्शित किया, बदले की भावना पर आधारित नहीं था, उसका प्रभाव सब तरफ फैल गया। देशी सैनिकों का इरादा था कि ब्रिटिश सेना को घेर लें, जो कि गिरजाघर में हथियारों से रहित होंगे।

जितने भी सिपाही अपने सफेद वस्त्रों में थे, अपने सेना आवास की ओर गये और हरे कपड़ों में बाहर निकले। सिपाही बिना किसी कमाण्ड की आज्ञा और बिना शस्त्र के परेड ग्राउण्ड में गये, एक हत्याकाण्ड हो गया। जब भारतीय सेना नेटिव लाइन तक पहुँची, वह पूरा क्षेत्र आग की दीवार बन गया।



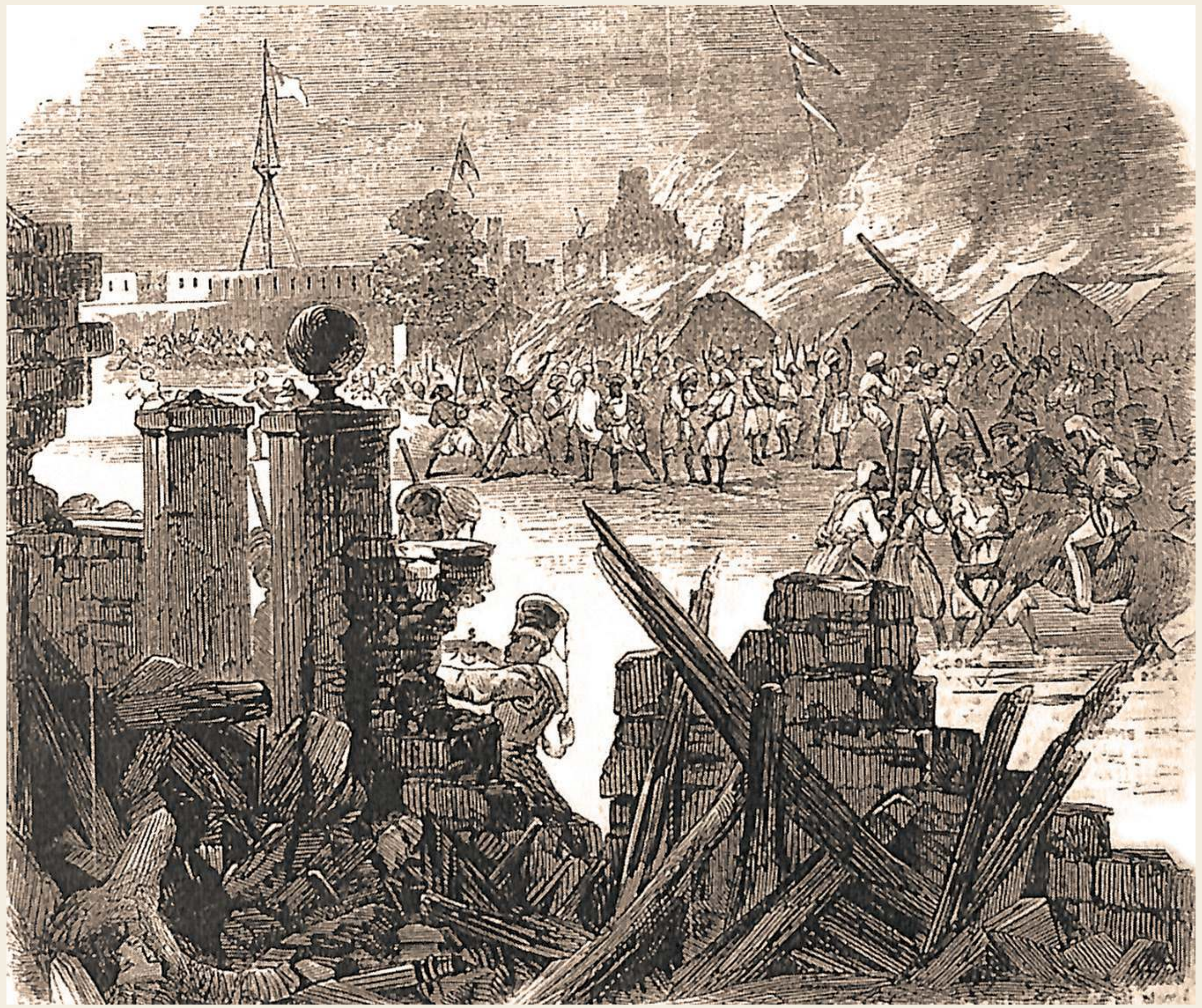
मेरठ में रिवोल्ट के बाद कुछ देशी सैनिक

यह दृश्य बहुत कम लोगों ने देखा होगा। सर आर्चडेल विल्सन ने, जो ब्रिगेडियर थे, वह वहाँ से हट गये और जब वे आगे पहुँचे तो आग के पीछे उन्हें प्रथम बुलेट का सामना करना पड़ा, जोकि सेना में एक नया प्रयोग था, जो प्रथम बार प्रयुक्त (Introduced) हुई थी। इसी कारतूस का एनफील्ड राइफल में प्रयोग हुआ था।

जे.ए.बी. पामर ने सबसे सत्यता पर आधारित विवरण दिया है (The Mutiny Outbreak at Meerut in 1857) जोकि प्राथमिक स्रोतों पर आधारित है। देशी सैनिकों ने अपनी तलवारें भांजीं, यह घुड़सवार जेल की ओर गये और अपने साथियों को छुड़ा लिया। इन्फेंट्री रेज़ीमेंट में भी विद्रोह के चिन्ह प्रदर्शित हुए, अफसरों ने इसे दबाने का पूरा प्रयास किया। कर्नल फिनीस ने अपनी रेज़ीमेंट 11 से कहा कि वे वफादार रहें लेकिन 20 इन्फेंट्री ने उनको गिरा दिया, फिर उत्तेजित होकर सिपाहियों ने शहर को लूटना प्रारम्भ कर दिया और सिपाहियों ने कहा, 'भाई दिल्ली चलो, जल्दी चलो'। फिर सेना विद्रोही, उस सड़क की ओर बढ़ गये, जो सड़क राजधानी दिल्ली की ओर जा रही थी।

फॉरेस्ट का कहना है कि मिलिट्री शासन में कमियाँ थीं। कई कैरेबियनर्स ऐसे थे, जिनके पास घोड़े नहीं थे और दिन का समय समाप्त हो रहा था। अंधेरे में अंग्रेज़ सेना, नेटिव लाइन्स पर पहुँची, जोकि खाली हो चुके थे, राइफल्स को गोली, बारूद और सामग्री भी नहीं मिली।

जनरल विल्सन से एक स्पष्टीकरण मांगा गया कि उन्होंने यूरोपियन ट्रुप्स के द्वारा कोई कदम क्यों नहीं उठाया तो उन्होंने कहा कि बंगाल आर्मी के नियमानुसार, वे कोई विशेष नेतृत्व नहीं कर सकते, जबकि वहाँ मेजर जनरल हयूविट उपस्थित थे।



मेरठ में विद्रोह
नरेटिव ऑफ द इण्डियन रिवोल्ट (सर कोलिन कैम्पबैल, लंदन, 1858)

सर कोलिन कैम्पबेल, जो एंसन के बाद सेनाध्यक्ष बने, ने अपने ''नरेटिव ऑफ द इण्डियन रिवोल्ट'' में लिखा है कि मेरठ का वह हिस्सा, जहाँ पर विशेष रूप से विद्रोह हुआ, वहाँ निवासों की बर्बादी बर्बरता पूर्वक हुई।

नरेटिव ऑफ इवेंट्स (Narrative of Events Number 406 of 1858) में मेरठ की घटनाओं का विवरण दिया है, 10 मई को सेना विद्रोह आरम्भ हुआ। उसमें हाथी पर बैठे हुए एक फकीर का वर्णन है, जोकि लोगों को उकसा रहा था और क्रान्ति के दौरान मेरठ के लोगों के बीच अपने अनुयायियों के साथ उपस्थित था। इसके अतिरिक्त सन्यासी और साधु भी वहाँ दिखाई दिये।

अंग्रेजों के बीच इस प्रकार की अफवाहें भी फैलीं कि गूजरों का हमला भी शहर पर होगा और ऐसा होने पर शहर लूटा जाएगा।

रविवार के दिन, 10 मई को सदर बाज़ार में आवाज़ सुनायी दी कि यूरोपीय मैगजीन लेने आ रहे हैं।

छावनी में उथल–पुथल हो रही थी। 20 नेटिव इन्फेंट्री के सैनिकों की आवाज़ें सुनायी दीं, सिपाही अपने शस्त्रों की ओर दौड़े, सेना विद्रोह आरम्भ हो गया।

कैप्टन मैकडोनल्ड, जो 20 नेटिव इन्फेंट्री के थे, उन्हें भी मारकर गिरा दिया गया। साथ ही मि. रिग्रियर, जोकि विद्यालय निरीक्षक (इंस्पैक्टर ऑफ स्कूल) थे, वह सैनिक आवास में गये थे, गोली का शिकार हो गये।



देशी सहयोगियों की सेना

बाज़ार में जो निवासी लोग थे, वो पुलिस से मिले, उनको रोका और उन्हें मारने का प्रयास किया। थर्ड रेज़ीमेंट के सिपाही एकत्रित हुए और अपने 25 मित्रों को छुड़ाने के लिए जेल की ओर गये परन्तु जेल के गार्ड एवं 20 एन.आई. के लोग वहाँ पहुँच गये और 800 कैदियों को नहीं छुड़ा पाये। अंग्रेज़ों को नुकसान नहीं पहुँचा। यूरोपीय लोगों ने भारतीय सिपाहियों की मैगजीन ले ली और 2000 बेड़ियाँ तैयार करवायीं।

मेरठ डिपोजिशन में अलग–अलग समय की अलग–अलग घटनाओं का विवरण दिया गया है।

20वीं नेटिव इन्फेंट्री रेज़ीमेंट के कई अफसर, जब कमांडिंग अफसर के बंगले पर बैठे थे तो लेफ्टिनेंट पैटेल वहाँ पहुँचे और बताया कि सैनिक वासों में उथल–पुथल की स्थिति है लेकिन उन्होंने इसे गम्भीरता से नहीं लिया और 20वीं नेटिव इन्फेंट्री के अफसरों ने अपने सैनिकों को आश्वासित किया, फिर वे रेज़ीमेंट की मैगजीन की ओर गये, जहाँ उन्होंने बाज़ार में बदमाशों (अंग्रेज़ों द्वारा प्रयुक्त शब्द) को देखा, जोकि 70 की संख्या में थे। टेलर ने ग्रेनेडियर कम्पनी को निर्देश दिया कि वे इन्हें हटा दें। यह पहला मौका था, जब अंग्रेज़ी शासन के आदेशों की अवज्ञा की गयी। ग्रेनेडियर कम्पनी के सिपाहियों ने अपने अफसर के निर्देशों का पालन नहीं किया। 05:45 से 6:00 बजे शाम तक अफसरों ने सिपाहियों को आश्वासित करने का प्रयास किया, फिर देखा गया कि कुछ सिपाही भरी हुई बंदूकें (लोडेड मस्कट) चुरा रहे हैं। 6:00 बजे थर्ड लाइट कैवलरी का एक सवार सैनिक, आवासों में पहुँचा और कहा कि सिपाहियों को कुछ करना है तो तुरन्त करना चाहिए, अब परिस्थिति बदल गयी। सिपाही आगे बढ़े और बाज़ार में जनता ने भी उनका समर्थन किया।



मेरठ के परेड ग्राउण्ड में कर्नल फिनीस की मृत्यु
नरेटिव ऑफ द इण्डियन रिवोल्ट (सर कोलिन कैम्पबैल, लंदन, 1858)

कर्नल फिनीस को यह सूचना एक हवलदार द्वारा प्राप्त हुई कि 11 नेटिव इन्फेंट्री ने भी विद्रोह कर दिया है। कर्नल फिनीस भी मारे गये, अब हीवेट ने अपने को यूरोपीय भाग का अध्यक्ष माना। 11 नेटिव इन्फेंट्री के एक और अफसर, लेफ्टिनेंट मोलर, ने एक सवार द्वारा कैरेबिनियर्स के सार्जेंट को संदेश भेजा। कैरेबिनियर्स के कैप्टन, कर्सटेंस पहले से ही वहाँ थे, सवार वहाँ 6:00 बजे पहुँच गया और सूचना दी कि यूरोपीय सेना बुलाई गयी है। मैगजीन में विद्रोह हुआ, कट्टरपंथियों द्वारा फिनीस और मैकडोनल्ड को गोली मारी गयी थी (मेरठ डिपोज़िशन नम्बर–19)। टेलर, लाइन्स में वापस जा रहा था लेकिन वह बाज़ार में घायल हो गया था। जो अंग्रेज़, दिल्ली की सड़क की ओर जा रहे थे, वो या तो भीड़ द्वारा मारे गये या उन्हें वापस आना पड़ा। जो छिपे हुए थे, वह भी मारे गये। 7:00 बजे तक सारा क्षेत्र अंग्रेज़ों से खाली हो गया।

इस समय पूरे 20 नेटिव इन्फेंट्री में सैन्य विद्रोह भड़क गया, कोई रिकॉर्ड प्राप्त नहीं हुआ कि उस रेज़ीमेंट का कोई भी भाग वफादार था। 11 नेटिव इन्फेंट्री में 125 सैनिक, जो अंग्रेज़ों के प्रति वफादार थे, वे नेटिव लाइन्स में रहे और निःशस्त्रित होने के लिए तैयार हो गये। उन्हें अपने घर जाने को कहा गया, बाद में इन्हें पुलिस सेवा मिली और शस्त्र भी वापस मिले।

थर्ड लाइट कैवलरी फायरिंग, परेड में सम्मिलित थी। कैण्ट की पुलिस, इस संकट में अपने कर्तव्य का पालन करने में विफल रही। इसके बाद मेजर विलियम्स ने तहकीकात की, इसका परिणाम था ''मेरठ डिपोज़िशन'', इसमें पुलिस के व्यवहार के बारे में बताया गया। मेरठ में विद्रोहियों ने दिल्ली की लाइन काट दी थी।



मेरठ से दिल्ली की ओर सिपाहियों का प्रस्थान
डेटलाइन 1857 : रुद्राशु मुखर्जी, प्रमोद कपूर रोली बुक्स 2008

4:00 बजे और 6:30 बजे, दो तार आगरा भेजे गये, जिसमें इस विस्फोट का समाचार दिया गया था। पहला तार पूरा था, दूसरा तार कटने के कारण रुक गया था। इसमें थर्ड लाइट कैवलरी का विद्रोह बताया गया, न कि नेटिव इन्फेंट्री का। दूसरे तार के बारे में सूचना, मेरठ डिस्ट्रिक्ट नरेटिव में मिलती है, जहाँ, इसकी रसीद प्राप्त होती है। आगरा डिवीज़न के नरेटिव में वर्णित है कि ''थर्ड कैवलरी ने विद्रोह किया और उन्होंने मिलने वाले सभी यूरोपियनों को मार डाला।'' प्रथम तार, प्रसिद्ध सूचना है, जो कि पोस्ट मास्टर की बहन ने अपने परिवार को भेजा था, जो कि आगरा में था– ''कैवलरी भी भड़क गयी है, जिससे सारे यूरोपियन सैनिक या घायल हुए या मारे गये हैं।'' यह मैसेज कॉल्विन को 11 की सुबह प्राप्त हुआ है और कैनिंग की प्राप्ति हेतु आगे भेजा गया। कैरेबिनियर्स सबसे पहले यूरोपियन सैनिक थे, जिन्हें सतर्क किया गया। 8 कमीशण्ड अफसर मारे गये– कर्नल फिनीस, कैप्टन टेलर, मैकडोनल्ड, एण्डरसन, लेफ्टिनेंट पैटेल, कार्नेट मैकनेब और कुछ वेटनरी सर्जन फिलिप्स और डॉसन थे, साथ ही रिटायर सर्जन स्मिथ और अन्य थे।

एस. विलियम ने बताया कि लोग बहुत उत्तेजित थे कि ईसाइयों को बिल्कुल नष्ट कर देना है, जो उनको मारना चाहते थे। भिन्न स्रोतों से प्राप्त रिपोर्ट से भी पता चला कि यूरोपीय शवों पर क्रूरता के निशान थे, जोकि (Racial Hate) प्रजातीय नफरत की कहानी कहते हैं।

गवर्नमेंट ऑफ इण्डिया ने 28 जून 1857 को जनरल ह्यूविट को कमाण्ड से हटा दिया। एक कोलाहल हुआ, जो मई जून में और तेज हो गया, जब असफलताएें बढ़ती गयीं और अफसरों को परोक्ष रूप से उत्तरदायी ठहराया गया। 10 मई, 1857 की शाम को कार्यवाही करने में देरी के लिए यूरोपियन सेना को जिम्मेदार माना।

दिल्ली

दिल्ली रोड, जोकि बेगम पुल से दक्षिण पश्चिम और मेरठ शहर के पश्चिम में है, वह आगे जाकर कई शाखाओं में बँटती है। मेरठ से दिल्ली दो सड़कों द्वारा पहुँचा जा सकता है, जो सीधी दिल्ली जाती है, उसकी दूरी 38 मील है। 10 मई की रात्रि में, बड़ी संख्या में सवार और सिपाहियों ने मेरठ छोड़ा और दिल्ली की ओर चले।

मेरठ से तीन रेज़ीमेंटों ने दिल्ली के लिए कूच किया। वे मेरठ से 3 मील दूर 'रिठानी' नामक गाँव पहुँचे। एक विश्वसनीय प्रत्यक्षदर्शी मुंशी मोहनलाल ने दिल्ली में थर्ड लाइट कैवलरी के सवार और एक सिपाही की वार्ता को सुना था। जिसमें सवार ने यह बताया था कि मेरठ की घटना घटने से पहले, दिल्ली जाने का कोई विचार नहीं था।

सिपाहियों में मतभेद था कि किस दिशा में जाना है, रूहेलखण्ड की ओर या आगरा की ओर, बिना तोपों के यह ख़तरनाक साबित होता। विचार विमर्श के बाद, यह तय किया गया कि दिल्ली जाना चाहिए क्योंकि इस शहर पर कब्ज़ा आसानी से किया जा सकता है। दिल्ली शहर पर अंग्रेज़ों के कब्ज़े के विरुद्ध, कई महीनों के लिए कब्ज़ा किया जा सकता है। 11 नेटिव इन्फेंट्री के सिपाही, जिन्होंने रेज़ीमेंटल मैगजीन को लूटा था, वह कह रहे थे, भाई दिल्ली चलो, जल्दी चलो।

30 की संख्या में थर्ड लाइट कैवलरी की एक टुकड़ी, दिल्ली पहुँची। मुग़ल सम्राट की गद्दी दिल्ली में थी। अपनी सुन्दरता के कारण, दिल्ली, आक्रमणकारियों के आकर्षण का केन्द्र थी। अफग़ान, मराठों ने दिल्ली जीता और खो दिया। बहादुरशाह ज़फर, जोकि अन्तिम मुग़ल सम्राट थे, उनसे सारे साम्राज्य का अधिकार ले लिया गया था।

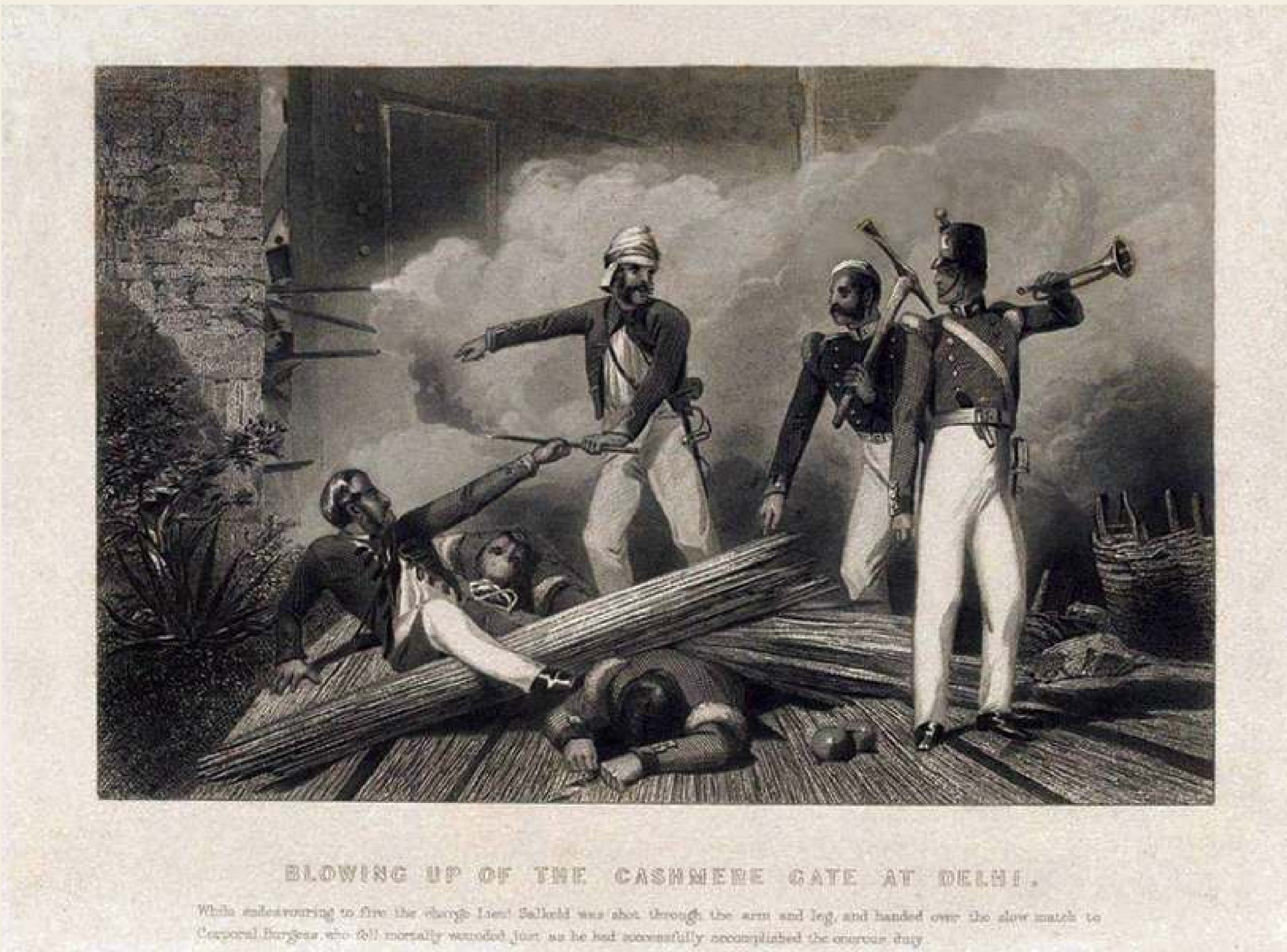


घेराबन्दी से पहले दिल्ली शहर, 1857
11 मई 1857 की सुबह, मेरठ के विद्रोही, यमुना पर करके, दिल्ली में प्रवेश करते हुए

इनके महल के बाहर, नदी के किनारे, एक शक्तिशाली किला था, जिसका नाम सलीमगढ़ था। जिसका सम्पर्क एक छोटे पुल से था, कई वर्षों से यह रास्ता बन्द था और दिल्ली के कई राजा चाहते थे कि वहाँ से रास्ता खुला होना चाहिए। सलीमगढ़ के इसी रास्ते से सेना विद्रोही, महल के अन्दर गये। जब वे सम्राट के विशेष कमरे में पहुँचे, तब उन्होंने ज़ोरदार माँग की कि इस धर्म की लड़ाई में सम्राट स्वयं को उनका अध्यक्ष घोषित करें। कुछ विद्रोही, कलकत्ता गेट से लाहौर गेट की ओर गये, बाकी सलीमगढ़ की ओर गये। लाहौर गेट पर जो सवार बाहर आया, उसने 38 नेटिव इन्फेंट्री के गार्ड से बात की और उसे मेरठ की घटनाओं के विषय में बताया और उसे सेना विद्रोहियों के आने के विषय में बताया। उनकी स्थिति, सम्राट के अंगरक्षकों के कमाण्डर, कैप्टन डगलस को बतायी गयी।

सम्राट बहादुरशाह, अपने चिकित्सक एहसान उल्ला के साथ थे। उस समय 6 सवार आये और पुकारा 'दुहाई–दुहाई', उसके बाद वे महल में फैल गये लेकिन कैप्टन डगलस ने उनसे कहा कि वे बाहर निकलें। डगलस को दिल्ली के कमिश्नर फ्रेजर से संदेश मिला कि वे कलकत्ता गेट पर मिले। उस गेट पर दिल्ली के मजिस्ट्रेट थियोफिलस मटकॉफ, कलेक्टर हचिंसन थे लेकिन वह बहुत देर में पहुँचे, तब तक सेना विद्रोही पुल पार कर चुके थे और गेट उनके कब्ज़े में था, वहाँ भीड़ जमा हो गयी थी। मटकॉफ, घटना का महत्व समझ गये, वे पुलिस के पास पहुँचे और कहा कि अन्य गेटों की रक्षा करें।

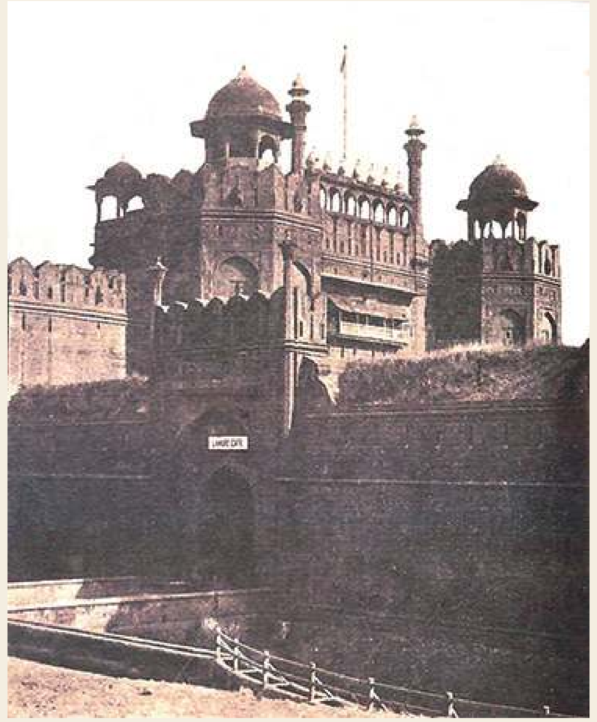
विद्रोहियों से वार्ता करने का प्रयास किया गया लेकिन कोई लाभ नहीं हुआ। मटकॉफ, डगलस के साथ बग्घी से भागा, पर एक गोली का निशाना बन गया।



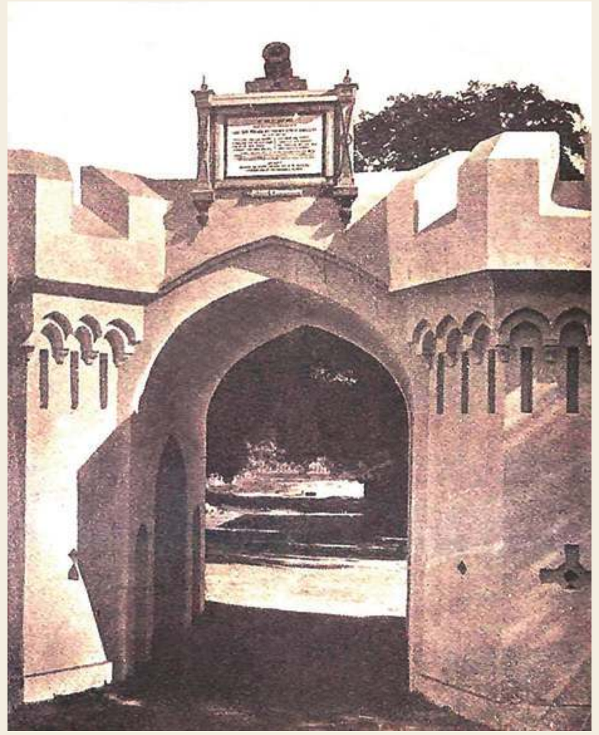
विस्फोटक द्वारा कश्मीरी गेट को उड़ाना, दिल्ली 1857
नेशनल आर्मी म्यूज़ियम, लंदन

डगलस ने अपने आपको खाई (Moat) में गिरा दिया। वह घायल हो गया और कुछ नेटिव इसे महल में ले गये, वहाँ पर इसे फ्रेजर, हचिंसन मिले, इन्होंने गेट के अन्दर जाने का एक और प्रयास किया। जब वे भीड़ को दबाने की बात कर रहे थे, तभी एक नक्काशी करने वाले ने उसे काटकर नीचे गिरा दिया। सिपाहियों के सर पर ख़ून सवार था। जेनिंग्स (पुजारी) और उनकी बेटी भी वहाँ उपस्थित थे, इनकी भी वहाँ भीड़ ने हत्या कर दी। दिल्ली के निम्न वर्ग के लोगों ने भी उनका साथ दिया। सिपाही, यूरोपीय वर्ग के आवासों की ओर गये, जहाँ–जहाँ अंग्रेज़ मिले, उन्हें वहीं मार दिया गया।

क्रान्तिकारी, अंग्रेज़ महिलाओं, पुरुषों और बच्चों को मारते हुए, कश्मीरी गेट की ओर गये, जिसके द्वारा एक सीधी सड़क, छावनी की ओर जाती थी। यहाँ 38 नेटिव इन्फेंट्री के 50 व्यक्तियों का एक गार्ड था, ब्रिगेडियर ग्रेव्स, जो स्टेशन कमाण्डर था। उसको सूचना मिल गयी थी कि सिपाही पहुँच रहे हैं। उसने दो तोपों का ऑर्डर दिया और 54 नेटिव इन्फेंट्री से कहा कि वे तुरन्त शहर की ओर बढ़ें। परन्तु तोपों के मिलने में थोड़ी देर हुई, जिससे उन्हें एक्शन लेने में देरी हुई। कैप्टन रिप्ले ने दो कम्पनियों का मार्गदर्शन किया और बाकी रेज़ीमेंट को वहीं छोड़कर आगे बढ़ा। जो सैनिक टुकड़ी, अंग्रेज़ों के प्रति निष्ठावान थी, शान्तिपूर्वक और जल्दी–जल्दी शहर के किनारे, खाई तक पहुँच गयी। उन्होंने एक लम्बा सीढ़ीदार पुल पार किया और एक बाहरी दरवाज़े को पार करते हुए, वे वहाँ पहुँचे, जहाँ पर 38वीं नेटिव इन्फेंट्री गार्ड कर रही थी। इनको पार करते हुए, वो रोड के पीछे, अन्दर वाले दरवाज़े तक पहुँचे, जहाँ पर उनका सामना सिपाहियों से हुआ। अंग्रेज़ों के वफादार सिपाहियों की बंदूकें भरी हुई नहीं थीं, उन्हें बंदूकें भरने का आदेश हुआ, पर उन्होंने बन्दूकें भरने के आदेश का पालन नहीं किया।



लालकिले का लाहौर गेट



पुरानी मैगजीन (शस्त्र भण्डार), दिल्ली
ए हिस्ट्री ऑफ द इण्डियन म्यूटिनी, जी. डब्लू. फॉरेस्ट
1857–58 रिव्यूड एण्ड इलस्ट्रेटेड फ्रॉम ओरिज़नल डॉक्यूमेंट वॉल्यूम I, 1912

अश्वारोही विद्रोहियों ने घोड़े पर बैठे हुए अफसरों को धराशायी किया। बन्दूकों और पिस्टल से गोली मारकर, नीचे गिरा दिया और जो पैदल थे, उन्हें संगीनों से भोंक दिया। 38 नेटिव इन्फेंट्री के अफसर ने सेना से कहा कि वे अपनी बन्दूकें चलायें लेकिन उसके निर्देशों की हँसी उड़ाई गयी। सिपाहियों ने जनरल रिप्ले को काट डाला। अब वे कश्मीरी गेट की ओर बढ़े लेकिन यहाँ पर ग्रेनेडियर कम्पनी ने उनको आगे बढ़ने से रोक दिया।

यह भीड़, वापस शहर लौट गयी। बन्दूकों को लाने के लिए एक अफसर छावनी की ओर गया। मेजर एबोट, जो नेतृत्व कर रहा था और पिछली घटी हुई घटना के बारे में सुन चुका था, ने सेना को सम्बोधित किया कि वे अपनी निष्ठा प्रदर्शित करें। जब वे कश्मीरी गेट पहुँचे और मेन गार्ड पर कब्ज़ा किया। वे हमले के लिए तैयार हुए पर कोई शत्रु नहीं आया, कोई सूचना नहीं मिली कि विद्रोही क्या करना चाहते हैं। केवल गोले बन्दूकों की आवाज़ से पता चल रहा था कि शहर में मैगजीन का विस्फोट हो गया है।

महल से कुछ दूर पर मैगजीन स्थित थी। जैसे ही पता चला कि विद्रोही निकट हैं तो दिल्ली के मजिस्ट्रेट, सर थियोफिलस मटकॉफ, उनके साथ लेफ्टिनेंट फॉरेस्ट भी थे, दो गन को उन्होंने पुल पर स्थित कर दिया ताकि वहाँ से सैन्य विद्रोही न निकल पायें। लेफ्टिनेंट विलोबी, जो कि मैगजीन के साथ थे, वह भी वहाँ पहुँच गये, तीनों ने देखा कि पुल का दिल्ली की तरफ का हिस्सा, कैवलरी के पक्ष में आ चुका था और सेना विद्रोही उसको पार करने जा रहे थे।

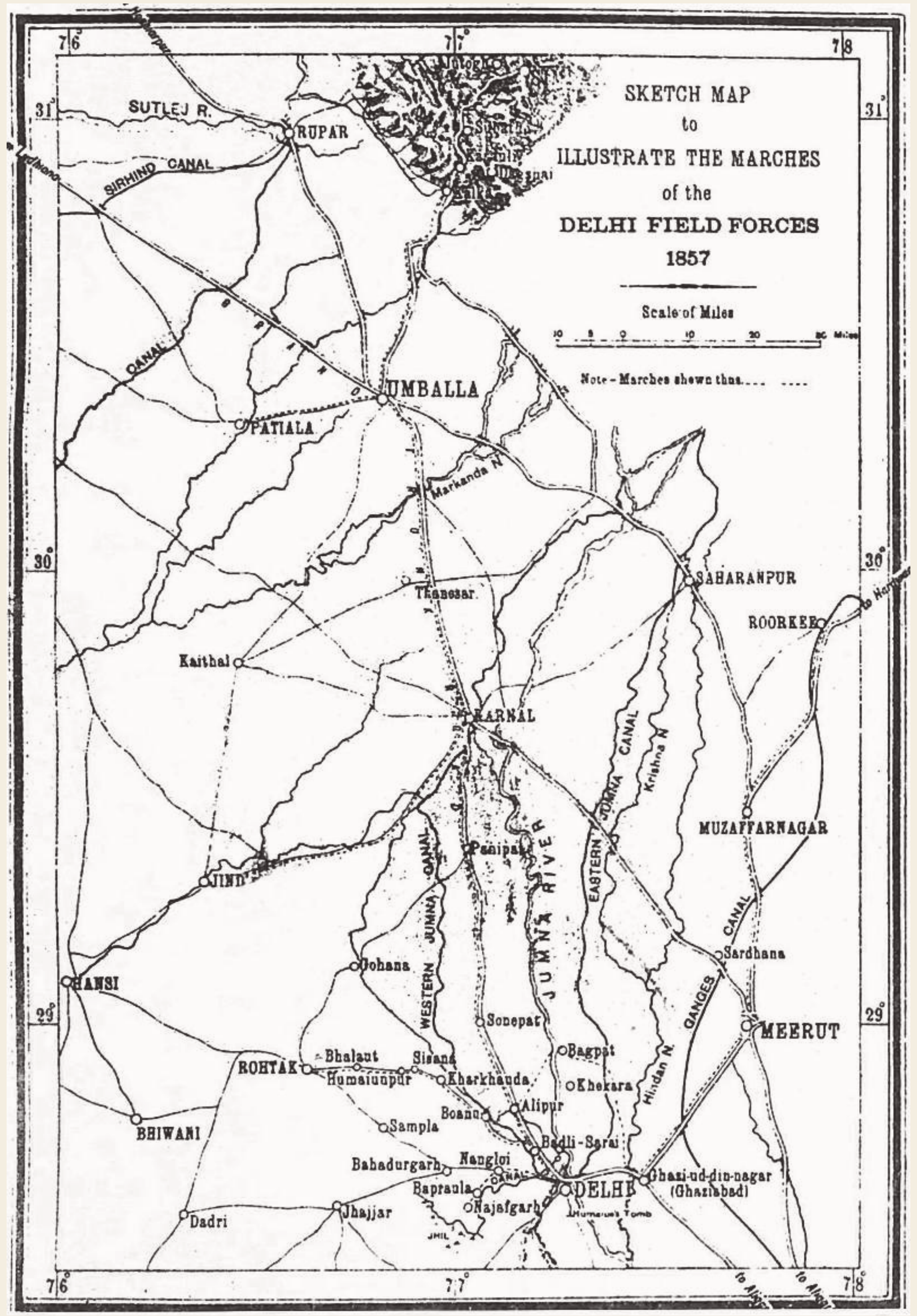


कर्नल सॉन्डर्स एलोक्सिस ऐबट
फेलिचे बीटो (अंग्रेज़, जन्म, इटली, 1832–1909)

अब दिल्ली शहर को बचाने के लिए कोई रास्ता नहीं था लेकिन विलोबी, शस्त्र भण्डार पहुँचे और उसे बचाने की तैयारी की, उनके साथ बंगाल आर्टीलरी के 8 अंग्रेज़ भी थे। गेट बन्द कर दिये गये, पूरी तैयारी की गयी लेकिन जैसे ही यह तैयारी पूरी हुई, महल के गार्ड सामने आये और माँग की कि दिल्ली के सम्राट के नाम पर मैगजीन उन्हें दे दी जाए परन्तु उनकी बात नहीं मानी गई, दोनों पक्षों के बीच मुठभेड़ हुई।

मेजर एबोट को निर्देश दिया गया कि वे दोनों गन, छावनी में भेजें। एक और निर्देश दिया गया कि वे भी रेज़ीमेंट पर लौट आयें। मेजर एबोट को पता चला कि 38 नेटिव इन्फेंट्री की सेना, यूरोपीय अफसरों को मार रही है। कैप्टन स्मिथ को गोली मारी गयी, कैप्टन गार्डेन ने शस्त्र समर्पित किये और घोड़े से गिरकर उनकी मृत्यु हो गयी। मेजर एबोट को सुरक्षा क्षेत्र में पहुँचाया गया, सिपाहियों ने उनसे कहा कि अभी तक वह उन्हें बचा रहे थे पर अब असम्भव है, वो वहाँ से भाग जाएँ। सिपाहियों ने अपने कर्नल और एजुटेन्ट से कहा कि वे भी भाग जाएँ क्योंकि वे कम्पनी की सेवा में और नहीं रहेंगे।

अब मेरठ से भी सहायता की कोई उम्मीद नहीं थी। ब्रिगेडियर ने सेना को अपनी ओर करने का एक और प्रयास किया। असेम्बली बुलाई गई परन्तु एक ही सिपाही ने पुकार का जवाब दिया। फिर वे लौटने लगे, छावनी खाली हो गयी, रात हो गयी। अंग्रेज़ों को मारा गया, सिपाही, महल की ओर गये, महल के दीवान–ए–ख़ास में पहुँचे, जहाँ दूत आते थे। मुग़ल सत्ता का आधिपत्य स्थापित हो गया।



दिल्ली फील्ड फोर्स के मार्ग को रेखांकित करता नक्शा – 1857

ए हिस्ट्री ऑफ द इण्डियन म्यूटिनी, जी. डब्लू. फॉरेस्ट 1857–58
रिव्यूड एण्ड इलस्ट्रेटेड फ्रॉम ओरिज़नल डॉक्यूमेंट वॉल्यूम I, 1912

यह हत्याकाण्ड, उसी दिन के लिए समाप्त हुआ था, दिल्ली शहर में एक भी ईसाई नहीं बचा था। सैन्य विद्रोह को दबाने और सेना का नेतृत्व करने के लिए जनरल एंसन (कमाण्डर इन चीफ) को, जो शिमला में अवकाश पर थे तुरन्त बुलाया गया। जब इन्हें दिल्ली पर कब्ज़े का समाचार प्राप्त हुआ तो वे संकट की गम्भीरता समझ गये। इन्होंने जॉन लॉरेन्स को पत्र लिखा, जिन्होंने दिल्ली के विषय में सलाह दी कि वे दिल्ली जाने में देर न करें, 40 घण्टों की देर हो गयी थी।

एंसन ने बताया कि तम्बू की कमी है, रेज़ीमेंट देर से पहुँची थी और कई रेज़ीमेंट ने सिपाहियों का साथ दिया था। साथ ही बताया कि इंटेलीजेंस रिपोर्ट कम प्राप्त हो रही हैं। एंसन ने जनरल हीवेट को एक अतिरिक्त सेना के साथ पहुँचने का निर्देश दिया। एंसन ने साथ ही यह भी बताया कि मेरे पास अपर्याप्त सेना है, साथ ही उन्होंने कहा कि 600 या 700 बेकार हो जाएँ तो क्या बचेगा, जबकि पूरे देश की सेना हमारे विरोध में है। लेकिन फॉरेस्ट का कहना है कि इस पत्र से यह नहीं समझना चाहिये कि एंसन दिल्ली के विरुद्ध नहीं जाना चाहते थे। जॉन लॉरेन्स इस बात से सहमत नहीं थे कि पूरा देश अंग्रेज़ों के विरुद्ध है। उसने जवाब दिया कि जब ब्रिटिश सेना पहुँचेगी, तब दिल्ली अपने गेट खोल देगी। दिल्ली पहुँचने से पहले अपनी सफलता के लिए, एंसन को अपने निर्देश, मेरठ में जनरल को देना आवश्यक था। वह लेफ्टिनेंट हडसन को, जो फर्स्ट बंगाल फ्यूसिलियर का था, बंगाल भेज चुका था। लेफ्टिनेंट हडसन से कहा कि एक इर्रेगुलर रेज़ीमेंट की स्थापना करें और ''करनाल और मेरठ के बीच संचार खुला रखें'' (एंसन डायरी पेज नम्बर–1)। हडसन इस विशेष पद के लिए योग्य नहीं था, इसमें कई कमियाँ थीं, यह तेज दिमाग का था, घमण्डी था और विरोध नहीं सह पाता था। हडसन के कई दुश्मन थे, यह दूसरों को नीचा दिखाता था और न्याय का पालन नहीं करता था (एंसन डायरी)।



निकोलसन की इर्रेगुलर कैवलरी द्वारा सियालकोट सिपाहियों पर आक्रमण
9 जुलाई, 1857

जब हडसन करनाल पहुँचा तो उसने कहा कि वह कुछ सवारों के साथ प्रयास करेगा। यह प्रस्ताव, सेनाध्यक्ष ने स्वीकार कर लिया, वे मेरठ सुबह ही पहुँच गया और विल्सन से मिला, फिर वह वापस करनाल पहुँचा और जनरल एंसन को तार किया कि वह ज़बरदस्ती मेरठ पहुँचा और विल्सन से कागज़ प्राप्त किया। जब सेना विद्रोह आरम्भ हुआ तो वह सेना में निम्न पद पर फर्स्ट फ्यूसिलियर था।

हडसन, मेरठ से 23 मई 1857 को लौटा। जनरल एंसन ने एक योजना तैयार की थी, जो उसने जनरल हीवेट को भेजी। इनकी सेना में 3200 यूरोपीय, 1000 हिन्दुस्तानी, 22 फील्डगन्स थे। इनका लक्ष्य था कि वे 30 मई को करनाल पहुँचें, बागपत में मेरठ की सेना से मिलें और जहाँ से तीन मिश्रित ब्रिगेड अम्बाला की हैं, वहाँ से दिल्ली के विरुद्ध बढ़ें।

25 मई को एंसन करनाल पहुँचा लेकिन इसे हैज़ा (कालरा) हो गया। एंसन की मृत्यु के बाद फील्ड फोर्स की कमान, मेजर जनरल सर हेनरी बर्नाड को मिली। 27 मई की रात्रि को मेरठ ट्रूप्स छावनी से बाहर आये, ब्रिगेडियर विल्सन इसकी कमान में थे और ग्रीथ्ड वहाँ के सिविल अफसर थे। ये तीन दिन के बाद 30 मई को दिल्ली से 10 मील दूर, हिन्डन नदी के पास, गाज़ीउद्दीन नगर पहुँचे। अब इन्हें समाचार मिला कि शत्रु, रिज (Ridge) पर, हमले के लिए तैयार हैं। जिनको उन्होंने रिज पर रखा था, उन सिपाहियों ने गोलीबारी शुरू की, सिपाहियों ने अंग्रेज़ सेना का ज़ोरदार सामना किया और 60 रेज़ीमेंट का सहारा लिया। इनका पीछा करने के बाद, दुश्मन को उनकी तोपों से अलग किया गया। एक विस्फोट के द्वारा कैप्टन एन्ड्रयूज़ और 4 अंग्रेज़ मारे गये। अब शत्रु पीछे होने लगे और कैरेबिनियर्स ने इनका पीछा किया।



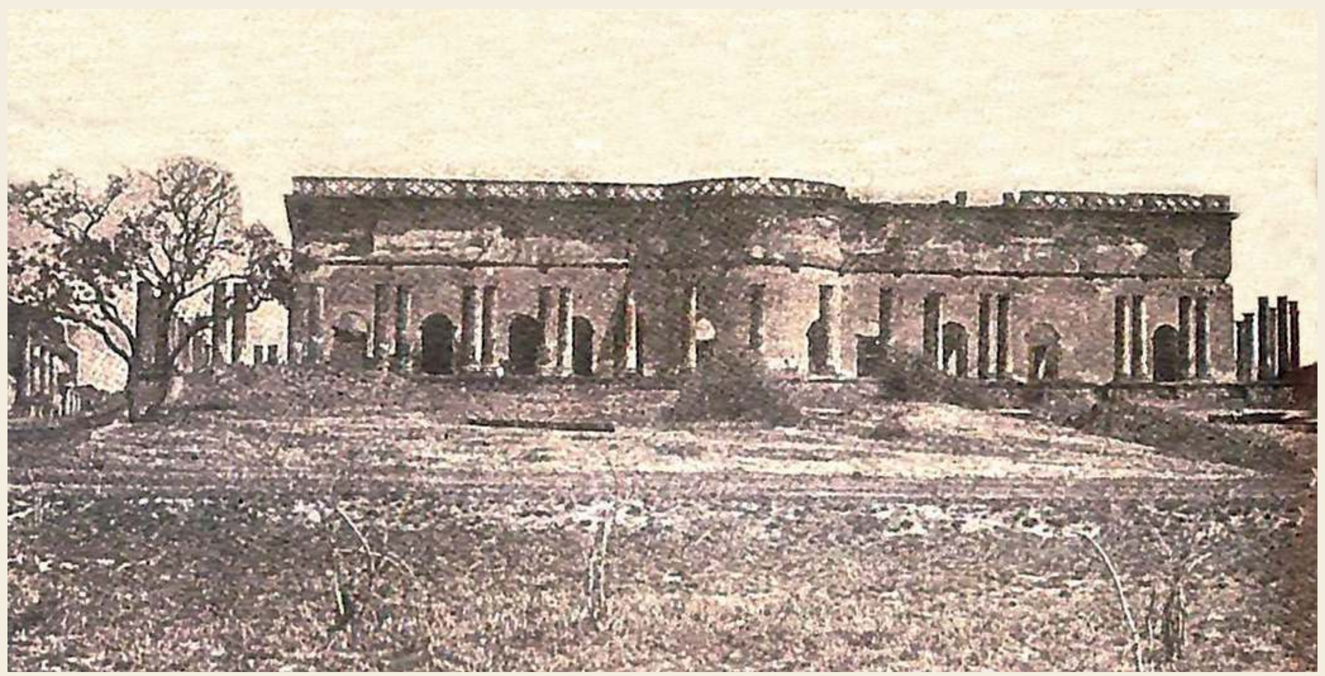
दिल्ली के निकट, बदली की सराय में भारतीय मोर्चे का तूफान, 8 जून 1857
समृति संग्रहालय रेज़िडेन्सी पुरातत्व विभाग, लखनऊ

दूसरे दिन रविवार था, पर कोई चर्च परेड नहीं हुई क्योंकि सिपाहियों द्वारा हमले की अशंका थी। दूसरे दिन दुश्मन ने फिर से हमला किया परन्तु गर्मी के कारण, अंग्रेज़ सेना पीछा नहीं कर पाई, वे प्यास से बोझिल थे। एक युवा नेपियर की मृत्यु हो गई। 1 जून को मेरठ ब्रिगेड की सहायता, सिरमूर बटालियन ने की। कमाण्डर और मेजर चार्ल्स रीज ने शत्रु से लड़ने के लिए पूरी तैयारी की लेकिन कोई सामने नहीं आया।

जनरल बर्नाड को मालूम था कि सिपाही इनका विरोध करेंगे, उन्होंने बदली की सराय पर कब्ज़ा कर लिया क्योंकि कुछ सवारों के साथ लोफर्ट हडसन वहाँ पर पहुँच चुका था, सिपाहियों ने जो स्थान चुना था वह किसी भी हमले को रोकने में सक्षम था। वो एक बड़ी इमारत में थे, जिसका द्वार विशाल था। यह बदली की सराय थी, यह सड़क के बाएँ हाथ पर थी और कैम्प इसके चारों ओर था। एक उठे हुए ऊँचे स्थान पर सिपाहियों ने भारी तोपों की और आठ इंच होवित्सर को लगाकर मोर्चा (सैण्ड बैक बैटरी) बनाया, (स्टेट पेपर्स–सीज़ ऑफ दिल्ली–by an officer) सराय के दाहिने ओर एक छोटा गाँव था।

मध्यरात्रि में ब्रिगेडियर ग्रान्ट, दस हॉर्स आर्टिलरी तोपों एवं 3 स्क्वाइन ऑफ नाइन्थ लांसर के साथ गया, जिन्हें लोफर्ट हडसन निर्देश दे रहा था। उसका इरादा था कि वह सिपाहियों के पीछे, बाएँ तरफ पहुँचे और साथ ही वह हेनरी बर्नाड के साथ मिलकर हमला करे। थोड़े समय के बाद ही विशेष कॉलम सड़क पर आया, 75 रेज़ीमेंट आगे बढ़ी और समर्थकों को वहाँ से हटा दिया और फर्स्ट फ्यूसिलियर्स के साथ मिलकर, सराय की ओर गये और द्वारों को अचानक से खोला गया। थोड़े समय के लिए मुठभेड़ हुई, सिपाहियों को अंग्रेज़ सैनिकों ने नष्ट कर दिया, कुछ समय के बाद ब्रिगेडियर ग्रेब्स आ गया।





हिन्दू राव की हवेली
ए हिस्ट्री ऑफ द इण्डियन म्यूटिनी, जी. डब्लू. फॉरेस्ट
1857–58 रिव्यूड एण्ड इलस्ट्रेटेड फ्रॉम ओरिज़नल डॉक्यूमेंट वॉल्यूम I, 1912

इनकी सेना थक चुकी थी लेकिन वे आगे बढ़ते चले गये क्योंकि उन्हें डर था कि सिपाही दोबारा संगठित होकर, दूसरे शक्तिशाली स्थान पर ना पहुँच जाएँ, फिर से 3 कॉलम तैयार किए गये।

फ्लेग्स स्टाफ टावर (Flag Staff Tower) पर, जोकि रिज पर था, सिपाहियों ने तीन तोपें रखी थीं, जहाँ से वे सर हेनरी बर्नाड की सेना का सामना कर रहे थे। जनरल विल्सन की एक सेना, सब्ज़ी मण्डी की तरफ से गई। अब सिपाहियों ने घरों और दीवारों के पीछे से गोलीबारी कर, इनका सामना किया। इन लोगों के पास 18 पाउण्ड की गन थी, ये एक बड़ी पत्थर की इमारत के पास पहुँच गये, जिसे ''हिन्दू राव का घर'' के नाम से जाना जाता था। इन्होंने विजय प्राप्त की, एक ऐसे शत्रु के विरुद्ध, जो संख्या में शक्तिशाली था, आर्टिलरी में मजबूत। उस दिन कर्नल चेस्टर की मृत्यु हुई, जो सेना का एजुटेंट जनरल था।

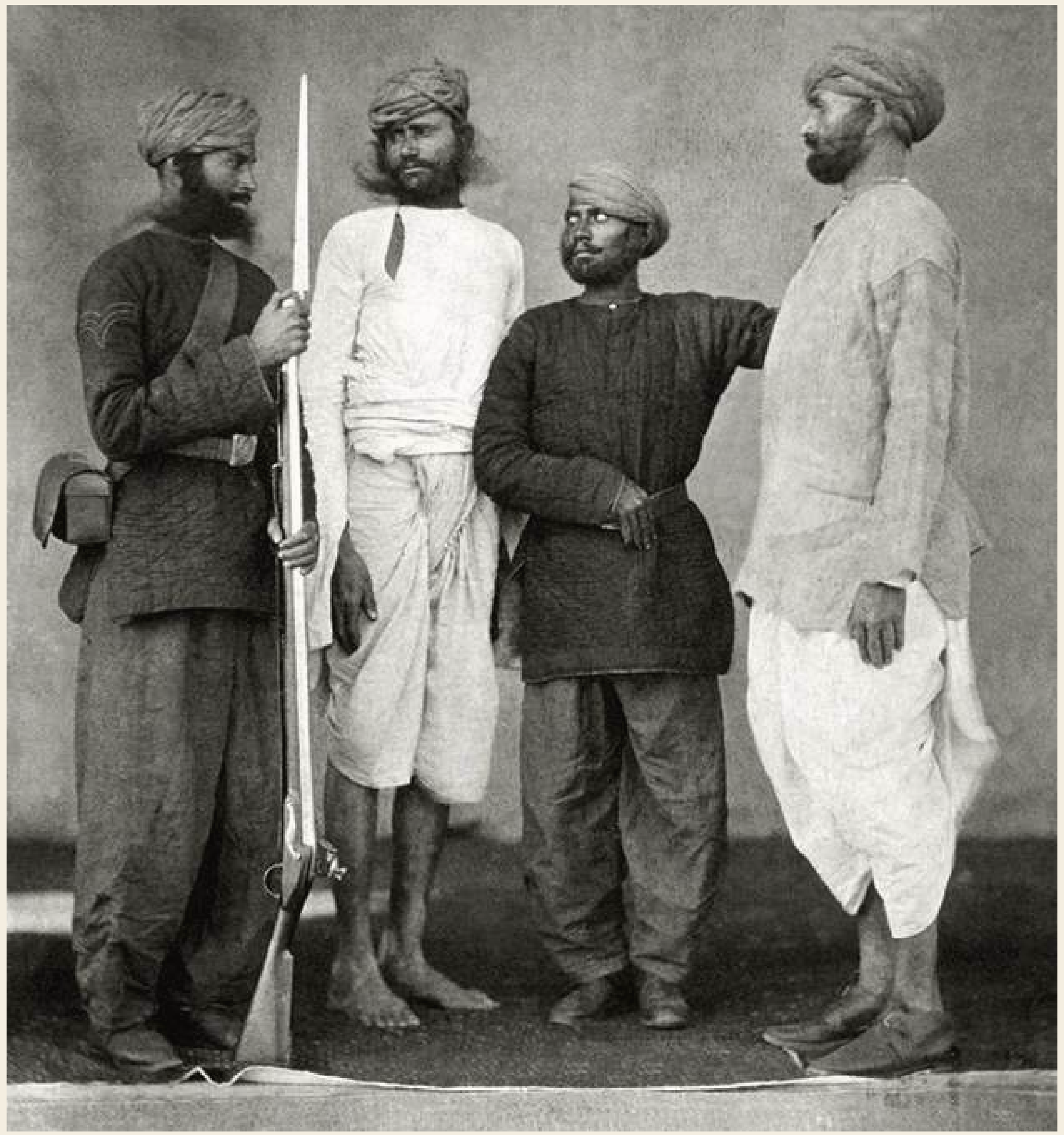
हिन्दू राव का आवास, जहाँ पर दो विजयी सेनाएँ मिलीं, वह एक बड़ी पत्थर की इमारत थी, जो पहले एक मराठा सरदार का अवकाश बिताने का ठिकाना था (Country Mention)। यहाँ पर अंग्रेज़ों के ब्रिटिश सेना का Picquet स्थापित था, उसके सामने बैटरी थी। उसके सामने आगे जाकर वेधशाला (ऑब्ज़रवेट्री) थी, जोकि एक पुरानी इमारत थी, जिसके निकट गन बैटरी को लगाया गया था। उसके आगे पठान मस्जि़द थी, जिसकी दीवारों ने पिकेट को सुरक्षा दी। आगे फ्लेग्स स्टाफ टावर (Flag Staff Tower) था, जिसकी ऊँचाई 50 फिट थी। इसमें दो बाल्कनियाँ थीं और इसके अन्दर, ऊपर जाने के लिए गोलाकार सीढ़ियाँ थीं (यहाँ पर 74 नेटिव इन्फेंट्री के कत्ल किए गये अफसरों के शव पाये गये थे)। यहाँ दो तोपें भी लगी थीं।



सब्ज़ी मण्डी की घटना
स्मृति संग्रहालय रेज़ीडेन्सी पुरातत्व विभाग, लखनऊ

इसके आगे सब्ज़ी मण्डी थी, जहाँ से सिपाही, अम्बाला जाने वाले रास्ते पर ब्रिटिश सेना का रास्ता रोक सकते थे। दिल्ली सात मील लम्बी दीवार से गोलाकार रूप से घिरा हुआ था। शहर का पूर्वी क्षेत्र, जमुना नदी पर था। जब अभ्यास हो रहा था तो पानी, पूर्वी क्षेत्र की दीवार की बुनियादों को धो रहा था। सिपाहियों की बैटरीज़, पूरे समय अंग्रेज़ सेना को हमला करके परेशान करती रही, जिनको पूरे समय एक कड़ी धूप में इनके हमले को रोकना था। 9 जून को सिपाही एक बड़ी सेना के साथ दिल्ली की ओर से आये और हिन्दू राव के आवास पर हमला किया परन्तु अंग्रेज़ों को सहायता प्राप्त हो गई। 10 जून को 500 सेना सिपाही, 2 लाइट गन और कैवलरी के साथ, ब्रिटिश सेना को पीछे से धमकाने के लिए अजमेरी दरवाज़े से बाहर आये। अंग्रेज़ों के पास, सात सिरमूर की बटालियन सेना थी, हिन्दू राव के आवास पर फिर से हमला हुआ, काफी नुकसान हुआ।

12 जून को फ्लेग्स स्टाफ टावर (Flag Staff Tower) पर हमला हुआ। यहाँ से थोड़ी दूरी पर अंग्रेज़ों की 2 लाइट गन्स थीं और 75 की छोटी सेना थी। सेना सिपाहियों ने अपने को वृक्षों के बीच छिपाकर रखा। उन्होंने ऊँची नीची ज़मीन का फायदा उठाया। इन्हें रिज के ऊपर का क्षेत्र मिल गया तुरन्त वो टावर की पिकेट की ओर पहुँच गये। 75 की टुकड़ी के कमाण्डर कैप्टन नौक्स (Knox) मारे गये, कई सिपाही भी मारे गये (Chaplain Narratiues – The Seige of Delhi by Rotton)। थियोसोफिलस मटकॉफ के बरबाद घर, जो नदी के किनारे था, पर कब्ज़ा करने के लिए एक बड़ी पिकेट भेजी गयी। कुछ समय बाद और सिपाही सब्ज़ी मण्डी से होते हुए, हिन्दू राव की पिकेट की ओर पहुँचे। 11 बंगाल फ्यूसिलियर भेजे गये। फॉरेस्ट का मत है कि किले को पराजित करने के लिए अंग्रेज़ों के पास संख्या नहीं थी। ख़तरे के दबाव में कुछ लोगों का विचार हुआ कि दिल्ली को ले लेना चाहिए।



मीणा जाति के सिपाही – देव्ली अस्थाई इन्फेंट्री, 1858

जनरल बर्नाड ने एक योजना को समर्थन दिया, जो दो गेटों को उड़ा देने की थी। जिसके द्वारा 1800 की इन्फेंट्री, जिसमें गार्ड और पिकेट्स भी थे, वे प्रवेश कर सकते थे। दो सेनाओं द्वारा कैम्प की सुरक्षा, देसी इन्फेंट्री और कैवलरी को दी जाए, उस दिन बर्नाड, फील्ड अफसर थे।

ब्रिगेडियर ग्रेब्स, फील्ड अफसर थे, उनको मौखिक निर्देश दिए गये कि पिकेट्स से अंग्रेज़ अफसर हटा दिए जाएँ। क्योंकि यह लिखित आदेश नहीं था इसलिए उन्होंने इन्कार कर दिया, वे बर्नाड के पास पहुँच गये। ग्रेब्स ने कहा कि अचानक हमला करके दिल्ली पर कब्ज़ा कर तो सकते हैं लेकिन क्या उस पर कब्ज़ा बनाये रख सकते हैं।

बर्नाड ने अपनी योजना त्याग दी। दो सेनाओं को हटा दिया गया। इनकी कड़ी आलोचना हुई, 3 दिन के बाद, हिन्दुस्तानियों ने मटकॉफ पिकेट पर इनको एक भारी संघर्ष में हरा दिया। क्रान्तिकारी लाहौर गेट से बाहर आये और अंग्रेज़ी सेना को धमकी दी। कुछ छिपकर, ब्रिटिश सेना के दाहिनी ओर पहुँच गये, जब सामना किया गया तो देखा कि सिपाहियों को इन्फेंट्री से सहायता मिल रही थी। इनकी तोपों ने बिल्कुल निशाने पर फायर किया और घोड़ों और आर्टिलरी को गिरा दिया।

मुठभेड़ में अंग्रेज़ों का नुकसान अधिक हुआ क्योंकि इधर संख्या ज़्यादा थी और रात हो रही थी। भम्र की स्थिति बन गयी, जिससे 9 लान्सर के लेफ्टि कर्नल यूल मारे गये और तीन अन्य अफसर और 17 ब्रिटिश सैनिक मारे गये। 70 घायल हो गये, ब्रिगेडियर होपग्रान्ट घायल हो गये।



तम्बू के अन्दर का दृश्य
स्मृति संग्रहालय रेज़ीडेन्सी पुरातत्व विभाग, लखनऊ

सिपाहियों ने सबसे कमज़ोर स्थान, सेना के पीछे वाले भाग पर हमला किया पर अंग्रेज़ों ने भी फिर से हमला किया। अंग्रेज़ों को यह सूचना मिली कि मेजर आल्फर्टस (Olpherts), जो दिल्ली से 20 मील की दूरी पर थे, सहायता दे सकते थे। साथ ही क्रान्तिकारियों को जालंधर फिल्लोर के क्रान्तिकारियों से सहायता मिली, इनके 3 रेज़ीमेंट इन्फेंट्री के थे और 6 लाइट कैवलरी थी। हमले के लिए एक विशेष दिन चुना गया। 23 जून प्लासी की शताब्दी पर कई सप्ताह तक, पूरे देश में भविष्यवाणियाँ फैल गयी थीं कि जब 100 साल हो जाएँगे तो ब्रिटिश शासन समाप्त हो जाएगा। 23 जून अमावस्या का दिन था, जो अच्छे दिन का प्रतीक था। विष्णु के भक्त, जो 'जात्रा' मनाते थे और ज्योतिषियों ने घोषित कर दिया था कि सितारे क्रान्तिकारियों के लिए लड़ेंगे। सर हेनरी बर्नाड 22 जून को सब्ज़ी मण्डी से होते हुए आगे बढ़े और हिन्दू राव के आवास के पीछे पहुँचे।

शाम के समय, क्रान्तिकारी शहर के अन्दर लौट गये, भारी संख्या में उनका नुकसान हो गया था। सब्ज़ी मण्डी पर अंग्रेज़ों का कब्ज़ा हो गया। मेजर रीड ने म्यूटिनियर्स की कुशलता की प्रशंसा की। अब जनरल चेम्बरलेन, एजुटेंट जनरल नियुक्त किये गये, दिल्ली में इनका स्वागत हुआ, लेफ्टिनेंट टेलर इनके साथ थे। एच.एस. ग्रीथ्ड ने सीज़ ऑफ दिल्ली में बताया कि शत्रुओं की एक भारी संख्या थी, सेना ने सहायता दी। रूहेलखण्ड के क्रान्तिकारी, 1–2 जुलाई को दिल्ली पहुँच गये। इनके पास चार रेज़ीमेंट इन्फेंट्री थी – 1 कैवलरी, 1 हार्स बैटरी, 2 पोस्ट तोपें, इनके नेता बख़्तखान थे। दिल्ली के सम्राट भी इनसे बहुत प्रभावित थे। इनको सेनाध्यक्ष नियुक्त किया गया और कहा कि अगर ये अंग्रेज़ों को वहाँ से हटा देंगे तो इन्हें गवर्नर जनरल का पद दिया जाएगा।



कश्मीरी गेट, दिल्ली

ए हिस्ट्री ऑफ द इण्डियन म्यूटिनी, जी. डब्लू. फॉरेस्ट
1857–58 रिव्यूड एण्ड इलस्ट्रेटेड फ्रॉम ओरिज़नल डॉक्यूमेंट वॉल्यूम I, 1912

अंग्रेज़ों के पास अनेक तोपें थीं, इनके पास बड़ी मात्रा में बारूद था। शहर पर आक्रमण करने की योजना बनाई गयी परन्तु वह त्याग दी गई क्योंकि 3 जुलाई को सूचना मिली कि जो रूहेलखण्ड से सैनिक आये थे, वे अंग्रेज़ कैम्प पर हमला करने जा रहे हैं।

योजना त्याग दी गई, जिसके लिए कर्नल बेयर्ड (Baird) ने पछतावा व्यक्त किया। इसे रुड़की से बुलाया गया था, ये बहुत योग्य इंजीनियर था। परन्तु मेजर कोक (Coke) ने सिपाहियों की बड़ी सेना को हरा दिया।

9 जुलाई को सब्ज़ी मण्डी पर आक्रमण हुआ, हडसन भी इसमें गाइड सुरक्षा के साथ, ग्रान्ट ट्रंक रोड से दिल्ली के फाटक तक पहुँचा। मेजर जनरल रीड 17 जुलाई को शिमला भेज दिया गया क्योंकि वे बीमार हो गया था। कमान ब्रिगेडियर विल्सन को दे दी गई और जनरल की रैंक दे दी गयी। 23 जुलाई को कश्मीरी गेट से सिपाही तेज़ी से आगे बढ़े और 'लडलो कैसल' पर कब्ज़ा कर लिया एवं पड़ोसी क्षेत्र मटकॉफ पिकेट पर हमला किया तो ब्रिगेडियर शावर्स को भेजा गया, कुछ दिनों तक सब शान्त था।

फिर 1 अगस्त को बक़रीद का दिन था और एक परम्परा थी कि इस अवसर पर शहर में एक शानदार जुलूस निकाला जाता था, जो ईदगाह तक जाता था, जहाँ मुगल सम्राट, ऊँट का बलिदान करते थे। अब निर्णय लिया गया कि अबकी बार और बड़ा बलिदान होगा। एक शाही सैल्यूट ने दिन तय किया, दुआएँ सुनाई दीं, ब्राह्मण पुजारियों ने विष्णु के अनुयायियों को प्रोत्साहित किया। क्रान्तिकारी धार्मिक उत्सव के साथ शहर के फाटकों से निकले परन्तु अंग्रेज़ों ने इन्हें रोकने का प्रयास किया।



ज़ीनत महल



बहादुर शाह ज़फर



दिल्ली के सम्राट, बहादुर शाह ज़फर, 1859
नेशनल आर्मी म्यूज़ियम, लंदन

दूसरे दिन तक लड़ाई चलती रही, दूसरे दिन हिन्दुस्तानी वापस लौट गये, इनका भारी नुकसान हुआ पर वे आशा से भरे थे। छः हफ्ते तक इन लोगों ने अंग्रेज़ो पर हमला किया, लहर अब बदलने वाली थी परन्तु सावरकर के अनुसार क्रान्तिकारियों में नेतृत्व कमज़ोर था।

मुगल सम्राट ने घोषित किया कि किसी भी व्यक्ति का शासन, हिन्दुस्तान पर अंग्रेज़ी शासन से अच्छा होगा, जो स्वतंत्रता और स्वराज देगा। उन्होंने अपने हाथ से जयपुर, जोधपुर, बीकानेर, अलवर के राजाओं को पत्र लिखे और इच्छा व्यक्त की कि फिरंगी को हर कीमत पर हिन्दुस्तान से बाहर निकालना है। एक ऐसे व्यक्ति की आवश्यकता है, जो भिन्न–भिन्न सेनाओं को संगठित कर दे और क्रान्ति को एकरूपता दे दे। मटकॉफ के "नेटिव नरेटिव" में बहादुरशाह ज़फर का हस्ताक्षरित पत्र पाया जाता है।

सावरकर ने इस पत्र के विषय में अपनी पुस्तक में लिखा कि स्वराज, स्वतंत्रता, स्वदेश, स्वधर्म, हिन्दुस्तान में पूरे तरीके से समझे जाते थे और हिन्दू–मुस्लिम, देशभक्ति की समृद्धि में एक हो गये। चार्ल्सबॉल को सिपाहियों की एकता की आशा नहीं थी क्योंकि ऐसा विशेष बदलाव, विश्व के इतिहास में कम ही दिखाई देता है। 'सीज ऑफ डेल्ही' के लेखक, रॉटन ने कहा कि आर्टिलरी में जितने अंग्रेज़ थे, उससे चार गुना ज़्यादा देशी सैनिक थे। एक विदेशी घुड़सवार पर 2 नेटिव थे और बिना देसियों के एक कदम आगे बढ़ना सम्भव नहीं था। होपग्रान्ट ने नेटिव कैवलरी की बहुत प्रशंसा की कि उनकी वीरता की कोई बराबरी नहीं है।

सेना के चार कॉलम दिल्ली की ओर बढ़े, तीन कमाण्डर थे, निकलसन, कैम्पबेल और जोन्स, ब्रिगेडियर लांग फील्ड थे और मेजर रीड थे।



मुग़ल शहज़ादों की हत्या – 1857
नेशनल आर्मी म्यूज़ियम, लंदन

14 सितम्बर 1857 को अंग्रेज़ों ने दिल्ली पर आक्रमण आरम्भ कर दिया। पहले दिन दिल्ली पर हुए हमले के दौरान कैम्पबेल घायल हुआ। ब्रिटिश कमाण्डर ने देखा, केवल दिल्ली का एक चौथाई भाग, उनके हाथ में आया है। उन्हें पता चला कि 1000 क्रान्तिकारी, अन्य लोगों को युद्ध में भाग लेने के लिए बुला रहे थे तो उन्होंने सेना की वापसी के निर्देश दिये। जॉन निकलसन अपने अन्त के निकट थे, उन्होंने कहा कि वापसी नहीं होगी और 14 सितम्बर को अंग्रेज़ सेना अपनी पोस्ट पर जमी रही और क्रान्तिकारी पराजित हुए।

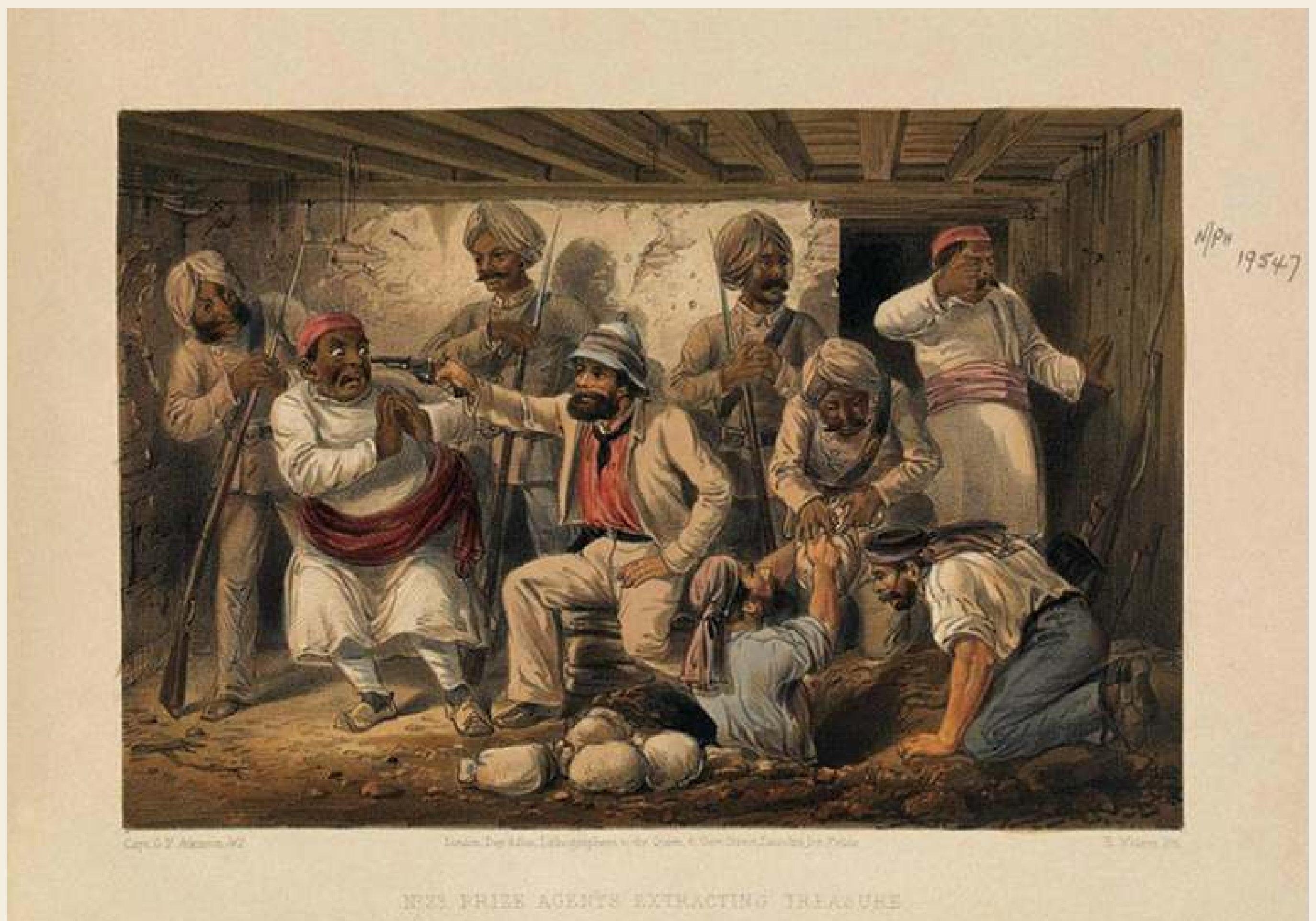
अब क्रान्तिकारियों को यह पता चल गया कि वे हार के निकट हैं। उनके एक भाग ने कहा कि उन्हें दिल्ली छोड़ देना चाहिए। दूसरे ने कहा कि कभी समर्पण नहीं करना चाहिए, चाहे सब की मृत्यु हो जाए। कुछ सिपाहियों ने दिल्ली के लिए लड़ाई लड़ी।

तीन चौथाई दिल्ली, अंग्रेज़ों के हाथों में आ गयी तो बख़्तखान सम्राट के पास गये और बताया कि विजय की सम्भावना समाप्त नहीं हुई है, उन्होंने सम्राट से माँग की कि वे भी सेना के साथ आगे बढ़ें और उनके साथ स्वराज के लिए लड़ें।

20 सितम्बर 1857 को अंग्रेज़ों ने दिल्ली पर कब्ज़ा कर लिया और 21 सितम्बर, 1857 को हुमायूँ के मकबरे में छिपे हुए सम्राट, बहादुरशाह ज़फर को पकड़ लिया गया। 22 सितम्बर, 1857 को बहादुरशाह ज़फर के दो पुत्रों, मिर्जा मुग़ल, मिर्ज़ा ख़िज्र सुल्तान और पोते, मिर्ज़ा अबू बक्र को हडसन ने दिल्ली गेट पर गोली मार दी। उनके शवों को कोतवाली लाया गया (म्योर, स्टेट पेपर वॉल्यूम)। 12 सप्ताह से ज़्यादा सीज़ ऑफ डेल्ही चला।



लेफ्टिनेंट हडसन को लाल किले के दिवान–ए–ख़ास से प्राप्त हुआ एक खंजर
नेशनल आर्मी म्यूज़ियम, लंदन



प्राईज एजेंटों द्वारा ख़जाने की प्राप्ति – सितम्बर, 1857
नेशनल आर्मी म्यूज़ियम, लंदन

ग्रिफित्स ने पराजित मुगल सम्राट का वर्णन किया है– बहादुरशाह ज़फर के पास कोई कागज़ कलम नहीं था, उन्होंने जली हुई लकड़ी के कोयले से दीवार पर लिखा था।

मिर्ज़ा गालिब ने 'दस तम्बू' में दिल्ली का वर्णन किया है। ज़ाहिर देहलवी ने 'दास्तान ए गदर' में लिखा है, दिल्ली को बुरी तरह लूटा गया और दिल्ली में हत्याकाण्ड आरम्भ हो गया।

मुग़ल शहज़ादों के अन्तिम संस्कार की कोई रस्म अदा नहीं की गई। लॉर्ड एलफिंस्टन ने जॉन लारेंस को लिखा कि दिल्ली की घेराबंदी समाप्त हुई, तो ब्रिटिश सेना ने बदले की भावना से हृदयविदारक गतिविधियाँ कीं। लूट में हम लोग नादिरशाह से भी आगे हैं। (Life of Larence Vol. II) दिल्ली, स्वधर्म और स्वराज की भावनाओं से प्रेरित थी।

क्रान्तिकारी 134 दिन लड़े, रात दिन लड़े। दिल्ली के सिपाही, राष्ट्रीय धार्मिक शहीदों की तरह लड़े।

7 जनवरी, 1858 को बहादुरशाह ज़फर पर कानूनी कार्यवाही करते हुए, मुकदमा चलाया गया। उनकी बेगम, जीनत महल ने बहादुर शाह को क्रान्ति में भाग लेने के लिए प्रेरित किया था, उन्हें भी उनके साथ बर्मा भेज दिया गया।

सहारनपुर

12 मई को मेरठ का समाचार और दिल्ली के हत्याकाण्ड का समाचार सहारनपुर पहुँचा तो गूजर और रंघूर ने लूट प्रारम्भ कर दी।

जब मुजफ्फरपुर जिले में उथल पुथल हुई तो यह ख़बरें भी सहारनपुर पहुँच गयीं। साहूकारों को लूटा गया या लूट से बचने के लिए इन्हें रकम चुकानी पड़ी। महाजनों, व्यापारियों को अपने बहीखातों एवं कर्ज़ों की रसीदें देनी पड़ीं।

सरकार के विरुद्ध, खुलकर विद्रोह पर विचार नहीं किया गया परन्तु जब सेना विद्रोह को दबाने की आवश्यकता हुई, तब सरकार के विरुद्ध विद्रोह पर विचार हुआ। यहाँ पर 29 नेटिव इन्फेंट्री, एक कम्पनी थी।

हेड पुलिस अफसर, जो सहारनपुर में था, वफादारी दिखाने का प्रयास कर रहा था। लेकिन यह विद्रोह बाबूपुर के गाँवों में दिख रहा था। फतेहपुर, संपलाबुक्कल आदि के गाँवों के ज़मींदारों के ऊपर आरोप लगाये एवं सम्मन भेजे गये, तो उन्होंने जबाव देने से इन्कार कर दिया, साथ ही पड़ोसी गूजर गाँवों से सहायता माँगी। यह गाँव, दण्ड के रूप में जला दिये गये और गाय, भैसें छीन ली गयीं।

मानकपुर के उमराव सिंह ने विद्रोह किया, इन पर एक बड़ी कीमत का इनाम रखा गया। 29वीं एवं 5वीं नेटिव इन्फेंट्री में भी उथल पुथल प्रकट हुई। सिपाहियों ने 2 जून को अपनी मस्कट रख दी और तनख्वाह लेने से इन्कार कर दिया, तब उन्हें बर्ख़ास्त (Dismiss) कर दिया गया।

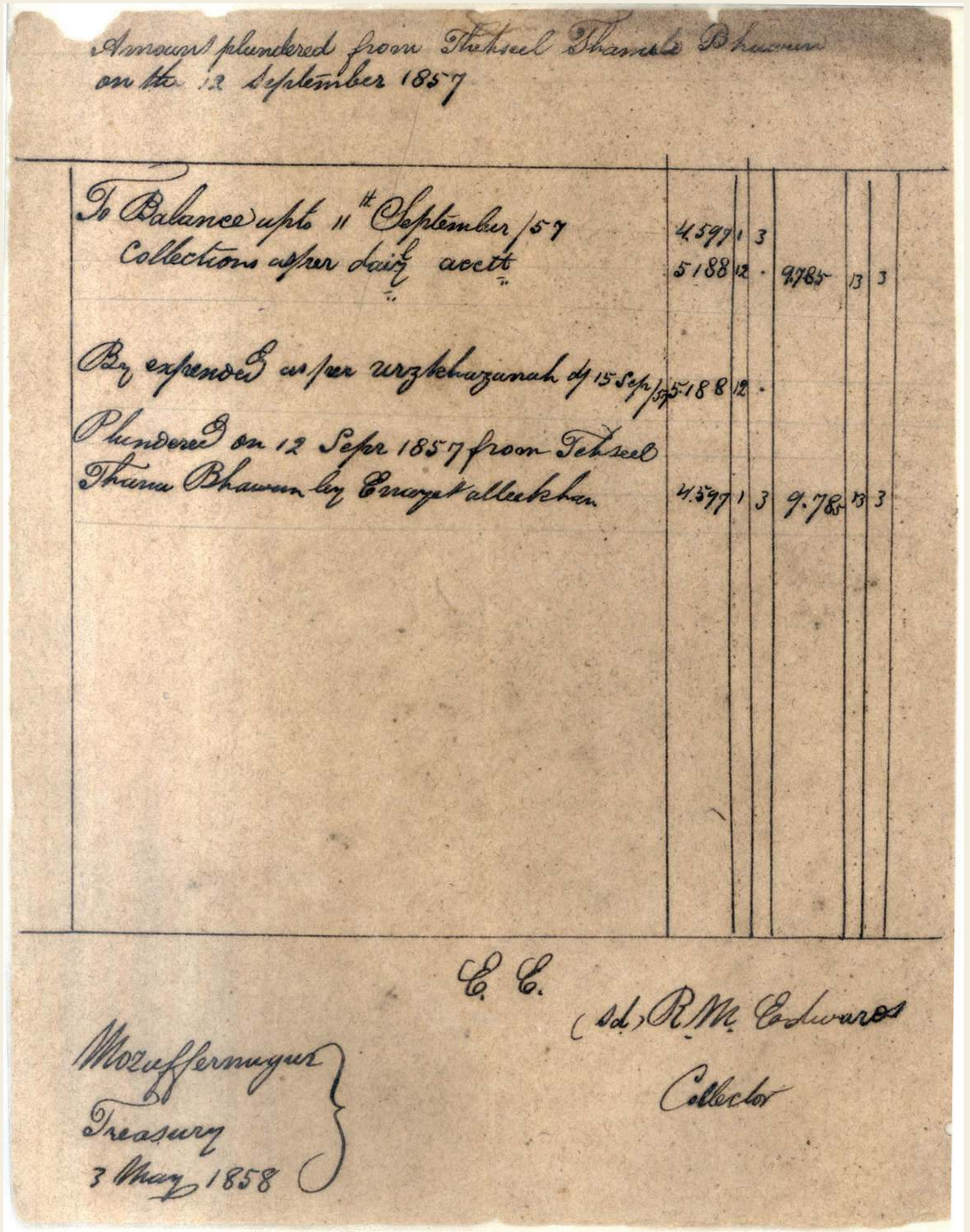
मुज़फ्फरनगर

9, 10 मई को अवकाश था। मुज़फ्फरनगर के मजिस्ट्रेट, मिस्टर बरफोर्ड सहारनपुर में थे। जॉन स्टोन, जो कि कार्यवाहक मजिस्ट्रेट थे, उन्होंने बरफोर्ड को मेरठ में भड़क उठे सेना विद्रोह के विषय में बताने के लिए एक पत्र लिखा। जब वह मुज़फ्फरनगर पहुँचा तो उसके नेटिव अधिकारियों ने गलत सूचना दी कि सेना विद्रोही और डकैत पहुँच चुके थे। बरफोर्ड ने निर्देश दिया कि सार्वजनिक दफ्तर अगले तीन दिनों तक बन्द कर दिये जाएँ, अफवाहें और गलत समाचार फैल गये।

एक अफवाह फैली कि जो कैदी जेल में थे, वो क्रान्ति में भाग लेंगे और शहर लूटा जाएगा। वो हेड क्लर्क के बंगले पर गये और रात में कोई घटना नहीं घटी। ज्वाइन्ट मजिस्ट्रेट और डिप्टी कलेक्टर, मि. ग्रान्ट को बुलाया गया और तैयारियाँ की गयीं। सबसे पहले महिलाओं और बच्चों की सुरक्षा की तैयारी की गयी और उसी रात बंगले जला दिये गये। बरफोर्ड के बंगले पर भी गाँव वालों ने हमला किया, हमलावरों को गार्ड ने रोक दिया, एक छोटा सा केस, गाँव में रिकॉर्ड किया गया और गार्ड ने बाकी हमले दबा दिये।

तहसीलदार इमदाद हुसैन ने कहा कि कोष को तहसील में लाया जाए और मि. बरफोर्ड ने भी कहा कि दोनों कोष को तहसील में दिन के दो बजे, एक तहसीलदार द्वारा ले आयें।

सिपाहियों ने निर्देशों का पालन करने से इन्कार किया और कोष लूट लिया गया और किसी भी हस्तक्षेप को रोकने के लिए संतरियों को तैनात कर दिया गया। इस लूट की रकम 85000 बतायी गयी, जो बचा था, वह शहर के लोगों ने और नौकरों ने लूट लिया।



Amount plundered from Tehseel Thana Bhawan on the 12 September 1857

To Balance upto 11th September /57	4597	1	3			
Collections as per daily acctt	5188	12	·	9785	13	3
By expended as per urzkhazanah d/ 15 Sep/57	5188	12	·			
Plundered on 12 Sepr 1857 from Tehseel Thana Bhawan by Enayat alleekhan	4597	1	3	9785	13	3

E. C.

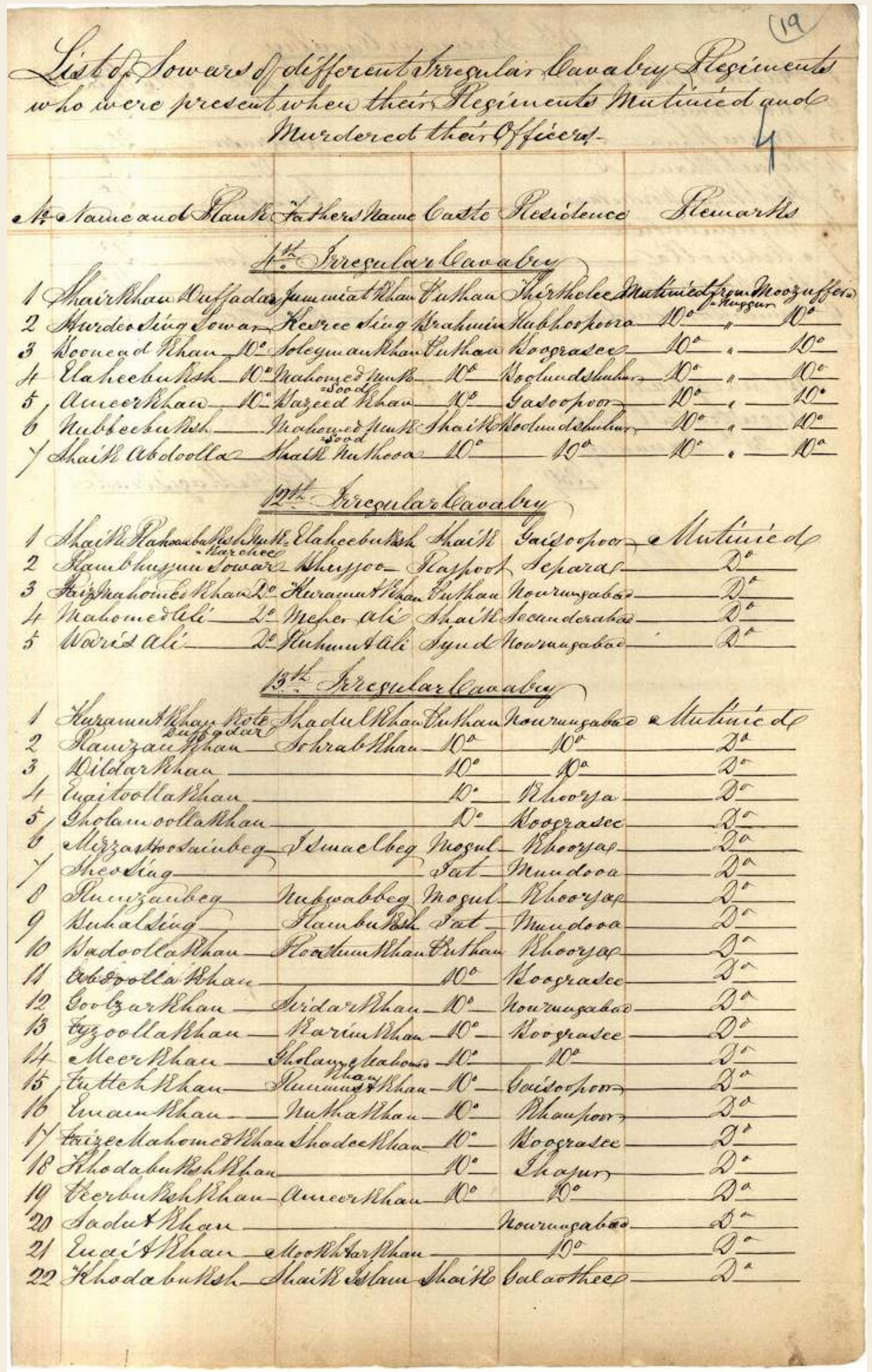
(Sd.) R.M. Edwards
Collector

Mozuffernuggur Treasury
3 May 1858

विद्रोहियों द्वारा तहसील थाना भवन की लूट का विवरण – दिनांक 03 मई, 1858
मुज़फ्फरनगर म्यूटिनी रिकॉर्ड, क्र.स. – 02

बरफोर्ड के साथ, एक दर्जन सहायक और कुछ संख्या में पुलिस रह गयी थी। यह निर्णय लिया गया कि कैदियों को रिहा कर दिया जाए। वहाँ पर एकदम से अराजकता फैल गयी, सरकारी कैदियों को छोड़ दिया गया, सिविल और अपराधी रिकॉर्ड जला दिये गये, शहर को सीज़ करने के लिए सभाएँ हुईं। पुलिस और कैवलरी इनको दबाना चाह रही थी, इन पर हमला करके और बन्दी बनाकर। बहुत से बन्दी मार दिये गये, तब उन्होंने सरकार के विरुद्ध शस्त्र उठाये। 21 जून तक स्थिति शान्तिपूर्ण रही, फिर फोर्थ इर्रेगुलर इन्फेंट्री ने सेना विद्रोह में भाग लिया और अपने अफसर लेफ्टिनेंट स्मिथ को गोली मारी। ब्रिटिश नियंत्रण कम होता जा रहा था परन्तु उस संघर्ष में कम्पनी अधिकारियों ने पुलिस की सहायता का प्रयास किया। चौकियों की स्थापना की और गाँवों में गश्त की और शामली से मेरठ तक डाक संचार सेवाओं को बचाया। अन्त में पुलिस ने जब गाँव वालों के क्रान्तिकारी प्रयास देखे तो उन्होंने हस्तक्षेप करने से इन्कार कर दिया।

थर्ड लाइट कैवलरी, जिसकी अध्यक्षता एक नेटिव सूबेदार ने की, मेरठ से पहुँची। ज्वाइन्ट मजिस्ट्रेट का स्थानान्तरण अयोग्यता के कारण मुज़फ्फरनगर से बुलन्दशहर कर दिया गया। इर्रेगुलर का विद्रोह हुआ, बटरफील्ड को सिपाहियों ने तलवारों से काट दिया और गोली भी मारी। आठ बजे शाम को चौथी इर्रेगुलर कैवलरी तहसील पहुँची और संतरी से पूछा कि वे किस रेज़ीमेंट के थे और माँग की कि जो सच्चे मुसलमान हैं, उनके साथ मिल जाएँ, तहसील खोली जाए ताकि वे कोष लूट सकें। दाऊद खान दफादार ने सेना विद्रोहियों के पास पहुँचकर, पूछा कि वे क्या चाहते हैं, जवाब मिला, ईसाईयों की जान। दाऊद खान ने जवाब दिया कि यूरोपीय तहसील आये थे पर अब वो वहाँ नहीं हैं और जो भी बचे हैं, उनका समर्पण नहीं किया जाएगा।



List of Sowars of different Irregular Cavalry Regiments who were present when their Regiments Mutinied and Murdered their Officers

No.	Name and Rank	Fathers Name	Caste	Residence	Remarks
	4th Irregular Cavalry				
1	Shair Khan Duffadar	Jummeat Khan	Puthan	Thirtholee	Mutinied from Moozuffernuggur
2	Hurdeo Sing Sowar	Kesree Sing	Brahmin	Kubboopoora	Do — Do
3	Dooneed Khan Do	Soleyman Khan	Puthan	Boograsee	Do — Do
4	Elaheebuksh Do	Mahomed Nuksood	Do	Boolundshuhur	Do — Do
5	Ameer Khan Do	Wazeed Khan	Do	Gasoopoor	Do — Do
6	Nubbeebuksh	Mahomed Nuksood	Shaikh	Boolundshuhur	Do — Do
7	Shaikh Abdoolla	Shaikh Nuthoo	Do	Do	Do — Do
	12th Irregular Cavalry				
1	Shaikh Rahumbuksh Nukib	Elaheebuksh	Shaikh	Gaisoopoor	Mutinied
2	Rambhujun Sowar Marchee	Bhujjoo	Rajpoot	Separa	Do
3	Faiz Mahomed Khan Do	Huramut Khan	Puthan	Nourungabad	Do
4	Mahomed Ali Do	Meher Ali	Shaikh	Secunderabad	Do
5	Waris Ali Do	Ruhmut Ali	Syud	Nourungabad	Do
	13th Irregular Cavalry				
1	Huramut Khan Kote Duffadar	Shadul Khan	Puthan	Nourungabad	Mutinied
2	Ramzan Khan	Sohrab Khan	Do	Do	Do
3	Dildar Khan		Do	Do	Do
4	Enaitoolla Khan		Do	Khoorja	Do
5	Gholam oolla Khan		Do	Boograsee	Do
6	Mirza Hoosainbeg	Ismaelbeg	Mogul	Khoorjae	Do
7	Sheo Sing		Jat	Mundooa	Do
8	Rumzanbeg	Nubwabbeg	Mogul	Khoorjae	Do
9	Buhal Sing	Rambuksh	Jat	Mundooa	Do
10	Wadoolla Khan	Roostum Khan	Puthan	Khoorjae	Do
11	Abdoolla Khan		Do	Boograsee	Do
12	Goolzar Khan	Sirdar Khan	Do	Nourungabad	Do
13	Ezzoolla Khan	Karim Khan	Do	Boograsee	Do
14	Meer Khan	Gholam Mahomed Khan	Do	Do	Do
15	Futteh Khan	Rummust Khan	Do	Gaisoopoor	Do
16	Emam Khan	Nutha Khan	Do	Khanpoor	Do
17	Faize Mahomed Khan	Shadee Khan	Do	Boograsee	Do
18	Khodabuksh Khan		Do	Jhapur	Do
19	Peerbuksh Khan	Ameer Khan	Do	Do	Do
20	Sadut Khan			Nourungabad	Do
21	Enait Khan	Mookhtar Khan		Do	Do
22	Khodabuksh	Shaikh Islam	Shaikh	Calaothee	Do

विभिन्न अनियमित कैवलरी रेजि़मेंट के घुडसवारों की सूची, जो रेज़ीमेंट की बग़ावत के दौरान, अधिकारियों की हत्या में सम्मिलित थे
कमिश्नर ऑफिस मेरठ डिविज़न, फाइल नं0–97

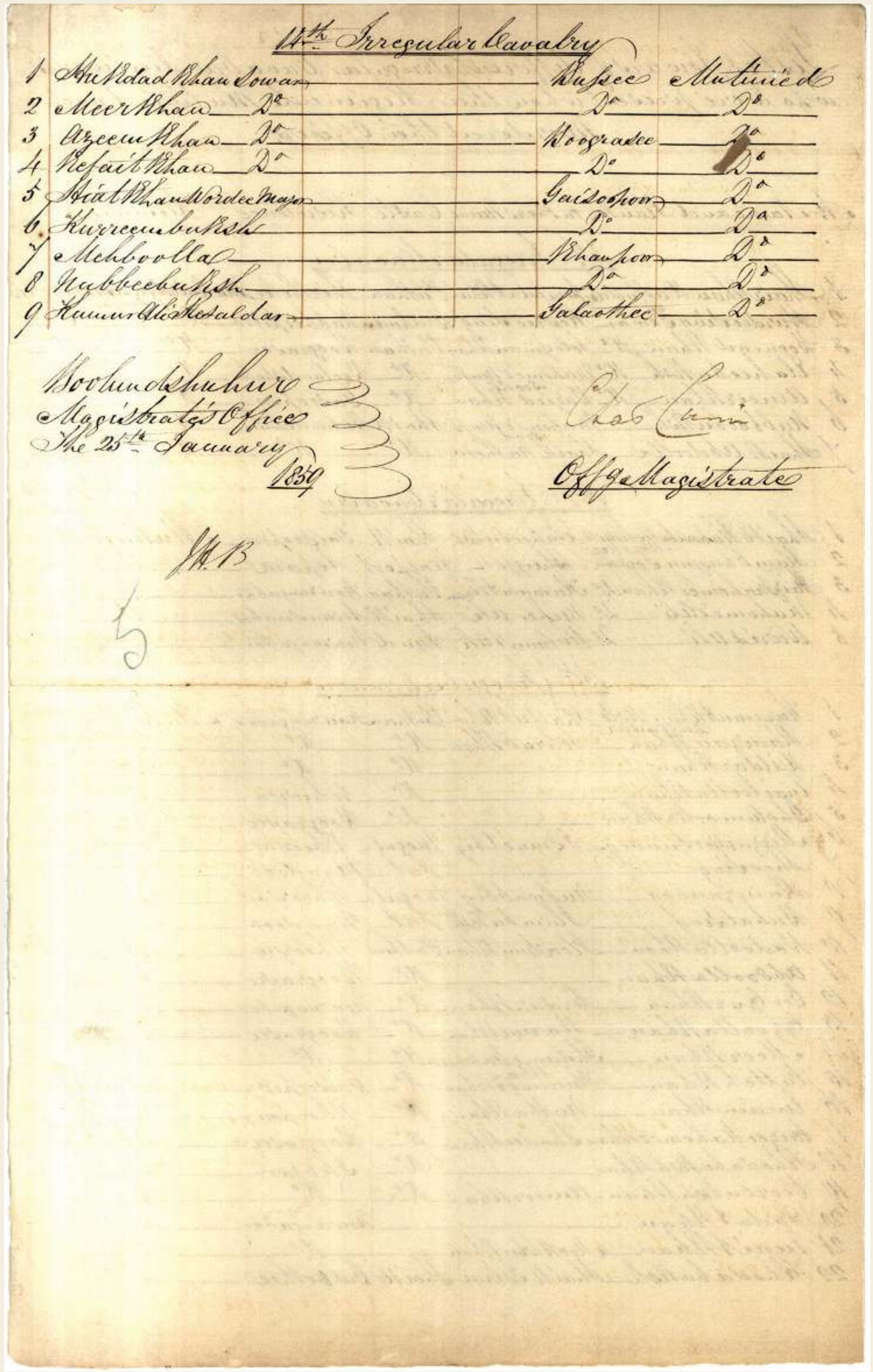
सैन्य विद्रोहियों ने लूट की माँग की और तय हुआ 6000 रुपये दिये जाएँगे, पैसे लेकर सवार लौट गये। 26 जून को सहायता के लिए और सेना पहुँच गयी, थर्ड लाइट कैवलरी, गोरखा और नसीरी बटालियन, लेफ्टिनेंट क्लार्क की अध्यक्षता में थी।

लेफ्टिनेंट चेस्टर एडबर्ड, अब बरफोर्ड के स्थान पर मजिस्ट्रेट के पद पर आ गये। कमिश्नर अब समझ गये कि अधिकारियों ने मुज़फ्फनगर में गलतियाँ की थीं, वह अफवाहों पर निर्भर थे इसलिए उनका अपना निर्णय और आत्मनिर्भरता नहीं थी और मेरठ के विशेष घटनाक्रम का समाचार समयानुसार डाक द्वारा नहीं प्राप्त हुआ। साथ–साथ कमिश्नरेट ने भी राहत सेनाओं को मेरठ से नहीं बुलवाया।

एडवर्ड ने जल्दी से जल्दी जनता में आत्मविश्वास बढ़ाया, जेल खुलवायी, राजस्व प्राप्ति और पेट्रोलिंग को संगठित किया गया। दुकानें फिर से खोली गयीं और अफवाह फैलाने वालों के लिए मृत्युदण्ड घोषित किया गया।

खैराती खान, एक पिण्डारी क्रान्तिकारी ने सख़्त विरोध किया। जब शामली पर सेना पहुँची। वे बरूत विद्रोही के अध्यक्ष थे, फिर उन्होंने दिल्ली के बादशाह के समर्थन से सेना एकत्र की थी। उनकी सेना ने बुधाना के किले पर कब्ज़ा किया और सरकारी पुलिस वहाँ से हटा दी।

शामली में खैराती खान को रोकने के लिए कम्पनी के अधिकारी पहुँचे और विद्रोहियों को दण्ड दिया गया और शस्त्र छीन लिये गये।



14th Irregular Cavalry

1	Ahkdad Khan Sowar	Bussee	Mutinied
2	Meer Khan D°	D°	D°
3	Azeem Khan D°	Koogradee	D°
4	Refait Khan D°	D°	D°
5	Hiat Khan Wordee Major	Gaisoopoor	D°
6	Kurreem buksh	D°	D°
7	Mehboolla	Khanpoor	D°
8	Nubbee buksh	D°	D°
9	Humur Ali Ressaldar	Galaothee	D°

Boolundshuhur
Magistrate's Office
The 25th January
1859

[illegible]
Offg Magistrate

JHB

5

विभिन्न अनियमित कैवलरी रेज़िमेंट के घुडसवारों की सूची, जो रेज़ीमेंट की बग़ावत के दौरान, अधिकारियों की हत्या में सम्मिलित थे
कमिश्नर ऑफिस मेरठ डिविज़न, फाइल नं0—97

यहाँ के लोगों ने इनायत अली खाँ और मोहर सिंह के नेतृत्व में क्रान्ति की। इनका साथ, यहाँ के पड़ोस की जनजातियों ने दिया, तहसील और थाने लूट लिये गये और अधिकारी शामली से भाग गये। शामली और थाना भुवन से सरकारी कोष लूट लिया गया।

क्रान्ति के दमन के लिए आर्टीलरी, गोरखा और सिक्ख भेजे गये लेकिन कोई परिणाम नहीं निकला। गोरखा और सिक्ख शहर में पहुँच गये पर इन्हें वहाँ से हटना पड़ा, फिर फर्स्ट पंजाब कैवलरी भेजी गयी। उन्होंने 100 विद्रोहियों की हत्या कर दी। यह आक्रमण विफल हुआ, थाना भुवन सैन्य क्रान्तिकारियों के कब्ज़े में रहा।

अलीगढ़

यह मेरठ डिवीज़न का सबसे दक्षिण में स्थित जिला है, यहाँ पर 9वीं नेटिव इन्फेंट्री की 300 की सेना थी, इनके कमाण्डर मेजर एल्ड (Eld) थे। यहाँ रेज़ीमेंट का मुख्यालय था, कोई विशेष घटना नहीं घटी केवल एक बंगला जलाया गया।

12 मई को एक ब्राह्मण नारायण, जो अलीगढ़ के एक गाँव के निवासी थे, उनके चाचा, 'नजीब जेल गार्ड' में थे, उन्होंने सेना विद्रोह का प्रस्ताव रखा।

9वीं नेटिव इन्फेंट्री के दो सिपाहियों ने गाँव वालों की ओर से सहयोग करने का वादा किया। उन सिपाहियों ने अपने अफसर को यह बात बतायी, उन्हें पकड़ लिया गया, उन पर मुकदमा चलाया गया। 20 मई की शाम को कलेक्ट्रेट में उन्हें फाँसी की सज़ा दी गयी।

जैसे ही यह बात सामने आयी, 9वीं नेटिव इन्फेंट्री में सैन्य विद्रोह भड़क उठा, अफसरों को भागने का मौका मिल गया। सिपाहियों ने कलेक्टर की कचहरी को आग लगायी और वहाँ धनराशि लूटी और दिल्ली की ओर चले गये और इस कोष से तीन लाख ले गये और चार लाख रह गये। यूरोपियनों की सम्पत्ति जला दी गयी, इसके लिए रसूल खान–खानसामाँ, मीरखान–मेल कोचमेन, मुख्य रूप से उत्तरदायी थे।

मैनपुरी

12 मई को मेरठ में क्रान्ति की खबर मैनपुरी पहुँची। ए.कॉक्स (स्पेशल कमिश्नर) ने विलियम म्योर, जो सरकार के सचिव थे, से पूछा कि मेरठ की घटनाओं के प्रति सबसे अच्छी नीति क्या होगी, जिसे अपनाना चाहिए। दोनों इस बात पर सहमत हुए कि सबसे पहले महिलाओं और बच्चों को सुरक्षित स्थान पर भेज देना चाहिए।

कॉक्स का परिवार सबसे पहले रवाना हुआ। पॉवर जोकि मजिस्ट्रेट थे, राव भवानी सिंह की सहायता से चौहान ठाकुरों को अपने पक्ष में किया, उन्हें आशा थी कि वे विद्रोही सिपाहियों के हमले को रोक लेंगे। पॉवर ने कहा, कमांडिंग अफसर के विचार को सभी मानेंगे, उन्होंने कहा कि सभी आगरा चले जाएँ।

सिपाही आगरा पहुँच रहे थे और अपनी बन्दूकों का प्रयोग कर रहे थे ओर पागलों की तरह चिल्ला रहे थे। पॉवर को कुछ भी समझ में नहीं आ रहा था।

कॉक्स अपनी बग्घी में रेवरेन्ट पी. केलनर को लेकर, वहाँ से रवाना हुए और जनता को आश्वस्त किया कि वे वापस आयेंगे।

वहाँ पर सारे घर जला दिये गये, दो क्लर्क रिचर्ड और लॉरेन्स की जानें गयीं। पॉवर ने रवाना होने से पहले, ढाई लाख की बूटी, राव भवानी सिंह को और जिले का चार्ज, तेज सिंह को दिया।

बुलन्दशहर

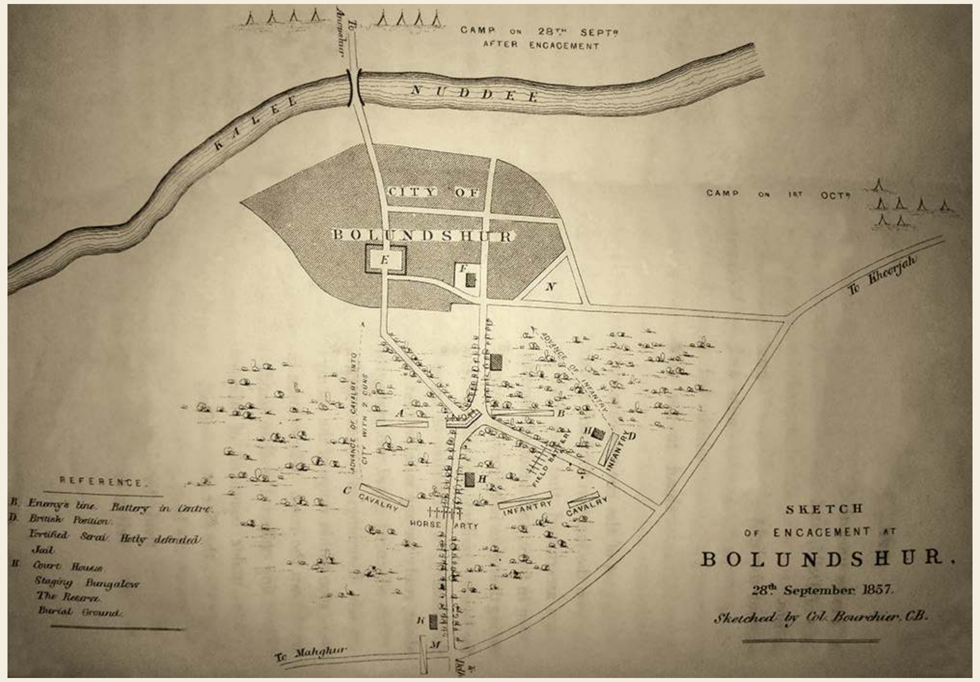
जिला अलीगढ़ के उत्तर में स्थित था, इसमें बदायूँ का एक हिस्सा भी सम्मिलित था। दक्षिण में मथुरा और आगरा, पूर्व में एटा और पश्चिम में पंजाब और मथुरा स्थित थे। बुलन्दशहर के जो परगने उत्तर में अलीगढ़ से जुड़ते हैं, वे जेवर, खुर्जा, पहासू और दिबाई हैं।

बुलन्दशहर में मजिस्ट्रेट ब्राण्ड सैप्टे थे, टर्नबुल, मैलविल, एलायल, सिविल सर्विस के अधिकारी थे। सैप्टे ने विद्रोह के बारे में सरकारी रिपोर्ट लिखी, उन्होंने ज़मींदारों से कहा कि शान्ति कायम रखने के लिए सेना उपलब्ध करायें, इनकी माँग पूरी की गयी।

कुछेसर के राव गुलाब सिंह, छतरी के मोहम्मद अली खाँ, परासू के मुराद अली खाँ और खानपुर के अब्दुल लतीफ खाँ, शिकारपुर के लक्ष्मण सिंह, सैय्यदपुर और सहरा के जाट और चन्देरा के मुसलमानों को स्थायी सेवायें देने का वादा किया गया, यदि वे घुड़सवार उपलब्ध करा दें। साथ–साथ गूजर भी विद्रोह की स्थिति में थे, गूजरों ने सरायों को जला दिया था और टेलीग्राफ को नष्ट किया।

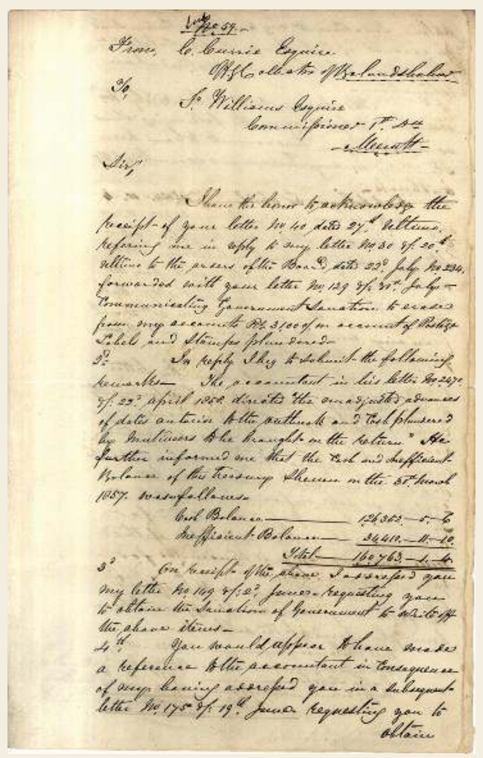
बरेली से सहायता माँगी गयी परन्तु संयोगवश 8 इर्रेगुलर कैवलरी की सेवायें नहीं प्राप्त हो सकती थीं क्योंकि उन्होंने सैन्य क्रान्ति में भाग ले लिया था। रामपुर के नवाब ने सहायता से इन्कार कर दिया था। गोरखा पहुँच नहीं पाये।

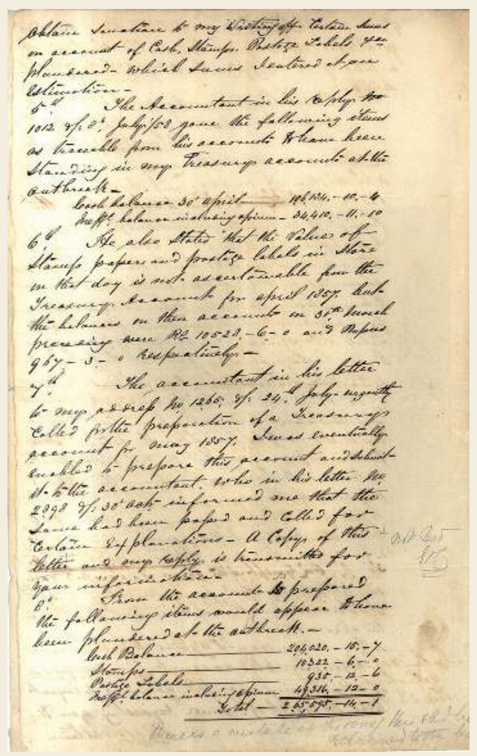
मेरठ के जनरल ह्यूविट ने यूरोपियनों को भेजने से इन्कार कर दिया कि वे लूट मेरठ पहुँचाएंगे। बुलन्दशहर के गैरीसन ने निर्णय लिया कि वे अपनी पोस्ट पर कायम रहेंगे। 9वीं नेटिव इन्फेंट्री का एक भाग, जो कि बुलन्दशहर में स्थित था, अंग्रेज़ों के प्रति वफादार रहा।

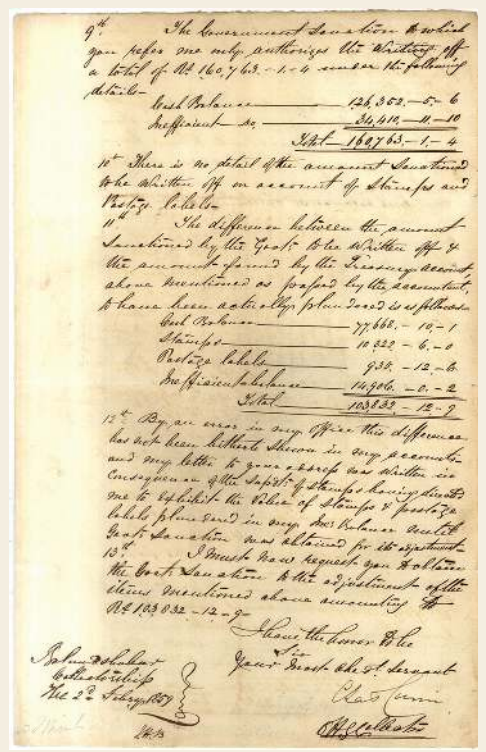


बुलन्दशहर पर घेरे के समय का नक्शा 28 सितम्बर 1857

कर्नल बरशियर द्वारा बनाया गया स्कैच







बुलन्दशहर ट्रेज़री में विद्रोहियों द्वारा नगद धनराशि, स्टाम्प पेपर, पोस्टल पेपर आदि लूटने के सम्बंध में कलेक्टर बुलन्दशहर द्वारा मेरठ के कमिश्नर को भेजी गई रिपोर्ट – दिनांक 02 फरवरी, 1859

कमिश्नर ऑफिस मेरठ डिविज़न, फाइल नं0–03

21 मई की सवेरे, अलीगढ़ से म्यूटिनी का समाचार आया। सैप्टे ने महिलाओं और बच्चों को मेरठ भेज दिया, केवल 7 अंग्रेज़ वहाँ रह गये। जनरल ह्यूविट, जो मेरठ में थे, उन्होंने रीमाउण्ड हार्सेस को देने से इन्कार कर दिया, जिनकी कड़ी आवश्यकता थी। 6 और 48 नेटिव इन्फेंट्री के रीमाउण्ड हार्सेस, जो बुलन्दशहर से मेरठ की ओर आ रहे थे, इनको लेने के लिए सैप्टे ने प्रयास किया।

सैप्टे ने लेफ्टिनेंट रास के साथ खज़ाने को बन्द करने का प्रयास किया तो गूजरों ने हमला कर दिया तो उन्हें खज़ाना, एक सिपाही के भरोसे छोड़ना पड़ा। उसी बीच गार्ड ने खज़ाना लूट लिया। अब सभी मेरठ पहुँच गये, सारा खज़ाना और घोड़े खो गये क्योंकि खज़ाना हटाने के लिए जनरल ह्यूविट ने सहायता देने से इन्कार कर दिया था। बुलन्दशहर और अलीगढ़ में अधिकारी अनुपस्थित थे, आगरा से मेरठ जाने वाली सड़क, सिपाहियों के कब्ज़े में हो गयी थी, जिन्होंने संचार व्यवस्था रोक दी थी।

देहरा की गोरखा सिरमौर बटालियन, सहायता के लिए वहाँ पहुँच रही थी लेकिन उन्हें डासना (मेरठ) में रोक दिया गया। गोरखाओं के साथ रामपुर से 200 पठान भी आये, 28 मई को उन्होंने विद्रोह कर दिया। उनमें से 30 दिल्ली चले गये। मेजर रीड गोरखाओं का नेतृत्व कर रहे थे, उन्होंने बाकियों को निर्देश दिया कि वो उस क्षेत्र को छोड़ दें, फिर पठान वापस लौट गये।

बुलन्दशहर के क्रान्तिकारियों के मुख्य नायक वलीदाद खान थे। उन्हें अपने सम्बंधियों के विश्वासघात के कारण, रूहेलखण्ड भागना पड़ा, वहाँ से वह अंग्रेज़ों से लड़ते रहे।

इटावा

इटावा के मजिस्ट्रेट, ने (Ney) (सेक्रेटरी ऑफ गवर्नमेन्ट) 19 मई की प्रातः एक कार्ट से जसवन्तनगर पहुँचे। उनके पास कार्बाइन, बन्दूकें और पिस्तौलें भी थीं, उनके साथ सड़क के गार्ड भी थे, जब उनको रोका गया तो वे कोई जवाब नहीं दे पाये, उनके शस्त्र उनसे माँग लिये गये।

अंग्रेज़ों के पास सुबह नौ बजे इंटेलीजेंस पहुँच गयी, 8 इर्रेगुलर कैवलरी के 5 सिपाही पहुँच गये। लू चल रही थी, गर्मी के कारण सिपाहियों की स्थिति बहुत मजबूत थी।

कैप्टन रॉस की रिपोर्ट (25 मई) के अनुसार 22 मई को जब सूचना प्राप्त हुई कि कई क्रान्तिकारी, शिकोहाबाद से पहुँच रहे हैं तो एक तार मि. पावर द्वारा भेजा गया, जिसमें घोषित किया गया कि 9 नेटिव इन्फेंट्री ने अलीगढ़ और मैनपुरी में भी विद्रोह कर दिया है।

रात्रि में सिपाहियों ने इटावा में सरकारी कोष लूट लिया और ऊँटों पर लाद कर ले गये, दूसरे दिन उन्होंने सैनिक आवास भी लूटे और जला दिये।

11–12 मई को सरधना पर रांघूर और राजपूतों ने हमला किया, उन्होंने बाज़ारों को लूटा। कलन्दर खान, जो एक हवलदार था, उसने स्वयं को नीरपुर गाँव (परगना बरनावा) का शासक घोषित किया।

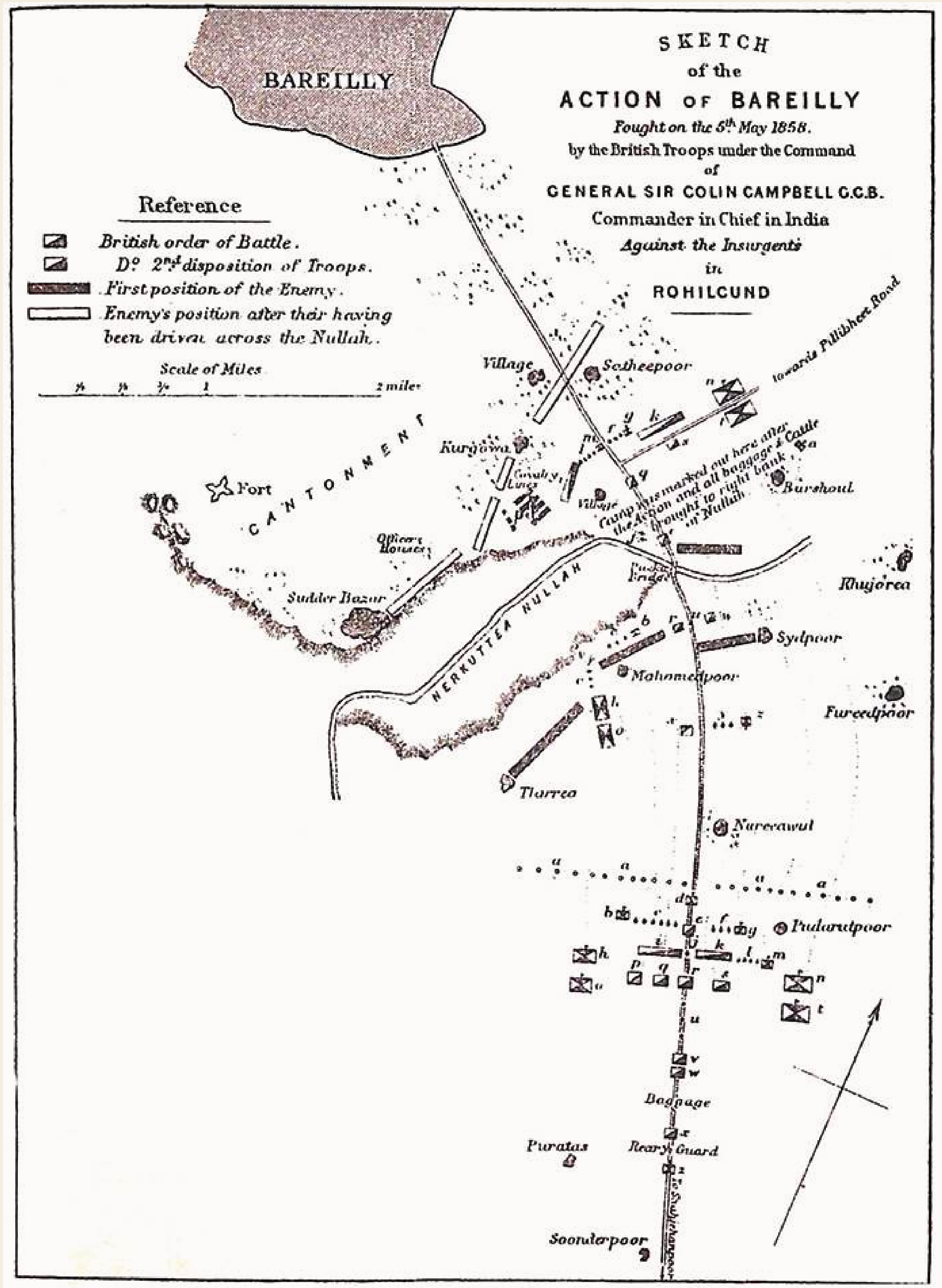
रूहेलखण्ड

रूहेलखण्ड को 1801 में अवध के नवाब ने अंग्रेज़ों को सौंप दिया था। मई, 1801 में यह एक विशेष क्षेत्र था, जो कमिश्नरी के अधीन था। यह उत्तर प्रदेश प्रान्त का एक भाग था। कमिश्नर के नीचे 4 जिले थे– बरेली, मुरादाबाद, शाहजहाँपुर, बिजनौर।

बरेली, रूहेलखण्ड की राजधानी थी, जो कि दिल्ली से 152 मील दूर थी। यह कमिश्नर का मुख्यालय था, साथ–साथ यह मिलिट्री बिग्रेड का हेडक्वार्टर भी था, जो कि मेरठ डिवीज़न का एक भाग था।

मई 1857 में रूहेलखण्ड प्रान्त में एक भी यूरोपीय कोर नहीं था, यहाँ 18वीं और 68वीं रेज़ीमेंट थी। 8 रेज़ीमेंट ऑफ इर्रेगुलर कैवलरी, नेटिव बैटरी ऑफ आर्टीलरी, 29 नेटिव इन्फेंट्री मुरादाबाद में थी, 28 नेटिव इन्फेंट्री शाहजहाँपुर में थी, बदायूँ, जोकि मिलिट्री स्टेशन नहीं था, वहाँ एक कम्पनी सिपाहियों की थी। इस समय ब्रिगेडियर सिब्बल्ड, ब्रिगेड को कमाण्ड कर रहे थे, इनके नीचे कर्नल कॉलेन ट्रूप थे, जब इन्हें दिल्ली पर कब्ज़ा और मेरठ विद्रोह का समाचार मिला। जैसे ही पता चला कि मुगल सम्राट सत्ता में आ गये हैं तो पठान रूहेला उत्तेजित हो गये। छोटे कर्ज़ों के लिए अदालतों के द्वारा जिन लोगों के पुराने क्षेत्र बेच दिये गये थे तथा उन व्यापारियों को भी अपने पुराने क्षेत्रों को वापस लेने के लिए अच्छा मौका मिला। इस प्रान्त में जो बैकिंग वर्ग था, वह भी भयभीत था क्योंकि उनके ऊपर जो सरकारी ऋण था, उनका मूल्य गिर रहा था और अफवाह फैली कि सरकार, देश की सारी चाँदी लूटना चाहती है।

अप्रैल से ही जो सिपाही तीनों मिलिट्री स्टेशन पर थे, उनके धार्मिक पूर्वाग्रह थे, जिनके कारण उन्होंने नये कारतूसों का, जो कि गाय और सुअर की चर्बी से प्रयुक्त थे, का प्रयोग करने से इन्कार कर दिया था। यही समय था, जब चपाती एक गाँव से दूसरे गाँव तीव्रगति से पहुँचायी जा



बरेली में युद्ध का नक्शा 5 मई, 1858
ए हिस्ट्री ऑफ द इण्डियन म्यूटिनी, जी. डब्लू. फॉरेस्ट
1857–58 रिव्यूड एण्ड इलस्ट्रेटेड फ्रॉम ओरिज़िनल डॉक्यूमेंट्स वॉल्यूम III, 1912

रही थी, सिपाहियों का शक और मजबूत हो गया कि सरकार इनके प्राचीन धर्म को ठेस पहुँचाना चाहती है। 19 मई को मेरठ की घटना के सात दिन के बाद, 29 नेटिव इन्फेंट्री ने, मुरादाबाद की जेल से कई कैदियों को रिहा किया, उसमें नज्जू खाँ थे, जिनके ऊपर कोर्ट ज्वाइंट मैजिस्ट्रेट की हत्या करने का आरोप था, जिसके लिए वे सज़ा भुगत रहे थे।

जी.डब्ल्यू. फॉरेस्ट के अनुसार, नज्जू खाँ, बाद में एक क्रान्तिकारी नेता बन गये। 21 मई को ब्रिगेडियर सिब्बल्ड, निरीक्षण से लौटे और सेना को सम्बोधित करते हुए अपील की कि वे अपने दिमाग से यह बात हटा दें कि सरकार धर्म भ्रष्ट करना चाहती है। रूहेलखण्ड के कमिश्नर एलेक्ज़ेण्डर ने वहाँ के हिन्दुस्तानी अफसरों से बात की और लेफ्टिनेंट गवर्नर के नाम से आश्वासित किया कि सरकार का इरादा, उनके प्रति पहले जैसा ही था। सिपाही संतुष्ट हो गये और ब्रिगेडियर ने अपने डिस्पैच में लिखा कि यही सिपाही अच्छे और वफादार रहेंगे।

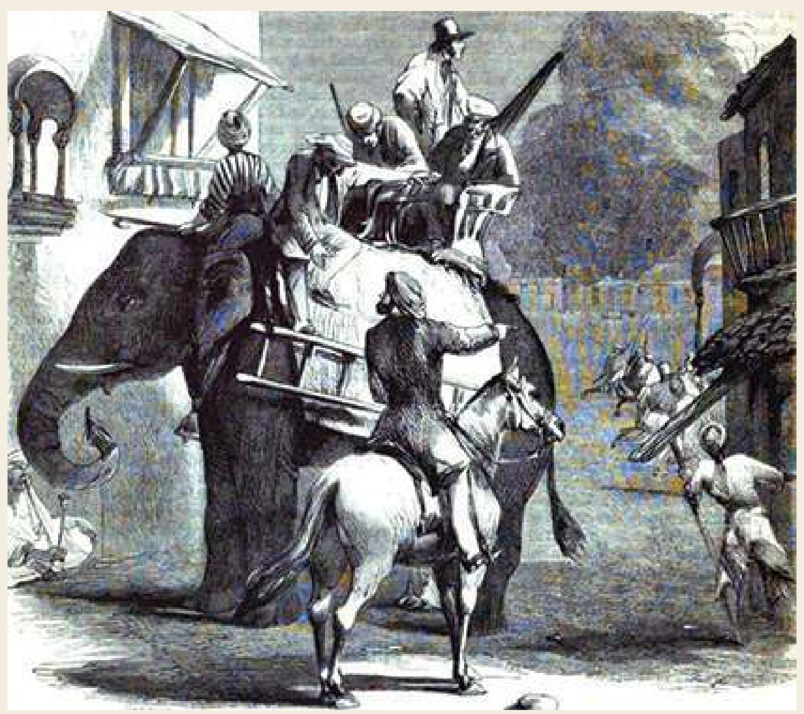
29 मई को 68 रेज़ीमेंट के हवलदार, मेजर कर्नल ट्रूप के पास गये और कहा कि उनको सूबेदार मेजर ने भेजा है और बताया है कि जब वह सुबह नदी में स्नान कर रहे थे तो सुना कि 18 और 68 रेज़ीमेंट के सिपाहियों ने सौगंध ली कि वे रात 2 बजे उठेंगे और अपने यूरोपीय अफसरों की हत्या कर देंगे। कर्नल ट्रूप ने 18 और 8 इर्रेगुलर कैवलरी को उस सूचना के बारे में चेतावनी दी, जो उन्होंने सुनी थी। 8 की छवि बहुत अच्छी थी, यह बंगाल आर्मी का बेस्ट कैवलरी कोर था। 38 रेज़ीमेंट नेटिव इन्फेंट्री ने पेग्यू जाने से इन्कार कर दिया था क्योंकि समुद्र पार करना, उनकी जाति को भ्रष्ट कर देता।

बरेली रेज़ीमेंट के कमाण्डिंग अफसर, कैप्टन एलेक्जेण्डर मैकेन्ज़ी थे, वे अनुशासित थे और इनके व्यक्तित्व में लोगों को अपनी ओर मिलाने



बरेली से पूर्व गाज़ियों से संघर्ष, 6 मई 1858

द हिस्ट्री ऑफ इण्डियन म्यूटिनी वॉल्यूम – 2, चार्ल्स बाल 1858



बरेली से कुछ यूरोपियनों का पलायन

इण्डियन एक्सपीरियन्सिज़ इन 1857–58

का गुण था। हिन्दुस्तानी अफसर, प्राचीन परिवारों के सदस्य थे, उन्हें अपनी रेज़ीमेंट पर गर्व था। जैसे ही मैकेन्ज़ी को ट्रूप ने उसकी सूचना दी तो उसने अपने को किसी भी आपात स्थिति के लिए तैयार कर लिया और अपने घोड़े तैयार कर लिये।

रविवार के सवेरे कर्नल ट्रूप ने देखा, सब शान्त हैं। मेजर पियर्सन, जो 18 की कमाण्ड कर रहे थे, उन्होंने भी आश्वासन दिया कि उनको अपनी सेना पर पूरा विश्वास है। 2 घण्टे के बाद ही 11 बजे के समय, तोपों और मस्किटरी की आवाज़ों के साथ ही लोगों के चिल्लाने की आवाज़ें सुनायी दीं। बंगले जला दिये गये, ब्रिगेडियर सिब्बल्ड अपने घोड़े पर सवार हुए, रास्ते में इनके सीने पर गोली लगी, जिससे वे गिरे और इनकी मृत्यु हो गयी। लेफ्टिनेंट टकर आगे बढ़े, उनकी भी मृत्यु हो गयी।

कर्नल ट्रूप और कमिश्नर एलेक्ज़ेण्डर, सुरक्षित क्षेत्र में पहुँच गये। ये अपनी सेना को एकत्र करने के लिए वहाँ रुके रहे और इस समय विस्फोट, नुकसान, हत्या, सिपाही कर रहे थे। इस समय वह नैनीताल जाने के लिए सहमत हो गये। कर्नल ट्रूप, जिन्होंने कमान ले ली थी, उन्होंने कैवलरी से कहा, जो वहाँ आ चुकी थी कि उनका अनुसरण करें।

मैकेन्ज़ी को सुबह ही बताया था कि एक हिन्दुस्तानी अफसर के द्वारा चेतावनी सुनी गयी थी, जब वह नहा रहे थे कि यूरोपीय अफसरों की हत्या कर दी जाएगी। इर्रेगुलर कैवलरी ने निर्णय ले लिया था कि वे तटस्थ रहेंगे। कुछ समय के बाद, ब्रिगेडियर मेजर कैप्टन बाउनला पहुँचे, उन्होंने सूचना दी की सेना विद्रोह प्रारम्भ हो चुका है। कट्टरपंथियों ने निर्देशों का पालन किया, वामपंथी कुछ समय तक स्थिर रहे, थोड़े समय के बाद मैकेन्ज़ी ने कट्टरपंथियों को रोका और उन्होंने कर्नल ट्रूप





बरेली कमिश्नरी में बना शहीद स्तम्भ

1857 के प्रथम स्वतन्त्रता संघर्ष में रूहेलखंड के बरेली क्षेत्र से खान बहादुर खान के नेतृत्व में आज़ादी के दीवाने सर पर कफन बाँध कर अंग्रज़ों के खिलाफ लड़ाई में कूद पड़े। गिरफ्तार किए गए क्रान्तिकारियों पर मुकदमा चलाया गया, उसके बाद 24 फरवरी, 1860 को खान बहादुर खान को पुरानी कोतवाली में जबकि 257 क्रान्तिकारियों को बरगद के पेड़ पर फाँसी पर लटका दिया गया। इसी स्थान पर निर्मित शहीद स्तम्भ क्रान्तिकारियों के अमर बलिदान की याद दिलाता है

से कहा कि वे सेना विद्रोहियों को रोकना चाहते हैं (कर्नल ट्रूप अकाउण्ट म्यूटिनी एट बरेली)। ट्रूप का विश्वास कैवलरी से उठ गया परन्तु मैकेन्ज़ी को अपनी सेना पर भरोसा था। मि. ग्रान्ट (मैजिस्ट्रेट) को लेकर मैकेन्ज़ी अपनी सेना के आगे परेड की ओर गये और आश्चर्यचकित हो गये, जब उन्होंने देखा कि लेफ्ट विंग, इन्फेंट्री के साथ–साथ चल रही है, वह उनकी तरफ गये और हलचल सुनी।

इन्फेंट्री के बीच से आवाज़ आयी कि इन्फेंट्री अपने धर्म के प्रति वफादार रहे, एक हरा झण्डा फहराया गया और दोनों विंग उनके चारों ओर इकट्ठा हो गयीं। मैकेन्ज़ी 23 सिपाहियों के साथ वहाँ से हट गये और बचे हुए यूरोपियन उनके साथ हो गये, जोकि नैनीताल जा रहे थे। वे 162 मील चल कर सुरक्षित नैनीताल पहुँच गये।

जैसे ही यूरोपियनों ने बरेली छोड़ा, उनके बंगले जलाये गये। जेल से कैदियों को रिहा कर दिया, जो 4000 की संख्या में थे। बख़्त खान जो आर्टीलरी के सूबेदार थे, उन्होंने ब्रिगेडियर की उपाधि धारण की और खान बहादुर खान को रूहेलखण्ड का वायसराय घोषित किया।

अभिलेखों में यह प्रमाण है कि इन्होंने क्रान्ति उकसाने में मुख्य भूमिका निभाई। वायसराय घोषित होने के बाद, ये निर्देश दिया कि जितने भी यूरोपियन थे, उन्हें मार दिया जाना चाहिए और यदि कोई हिन्दुस्तानी इन्हें बचाये तो उसे भी मार दिया जाए। तुरन्त खोज की गयी, जितने भी यूरोपियन महिला, पुरुष, बच्चे, जिन्होंने बरेली को नहीं छोड़ा था, उनकी हत्या कर दी गयी।

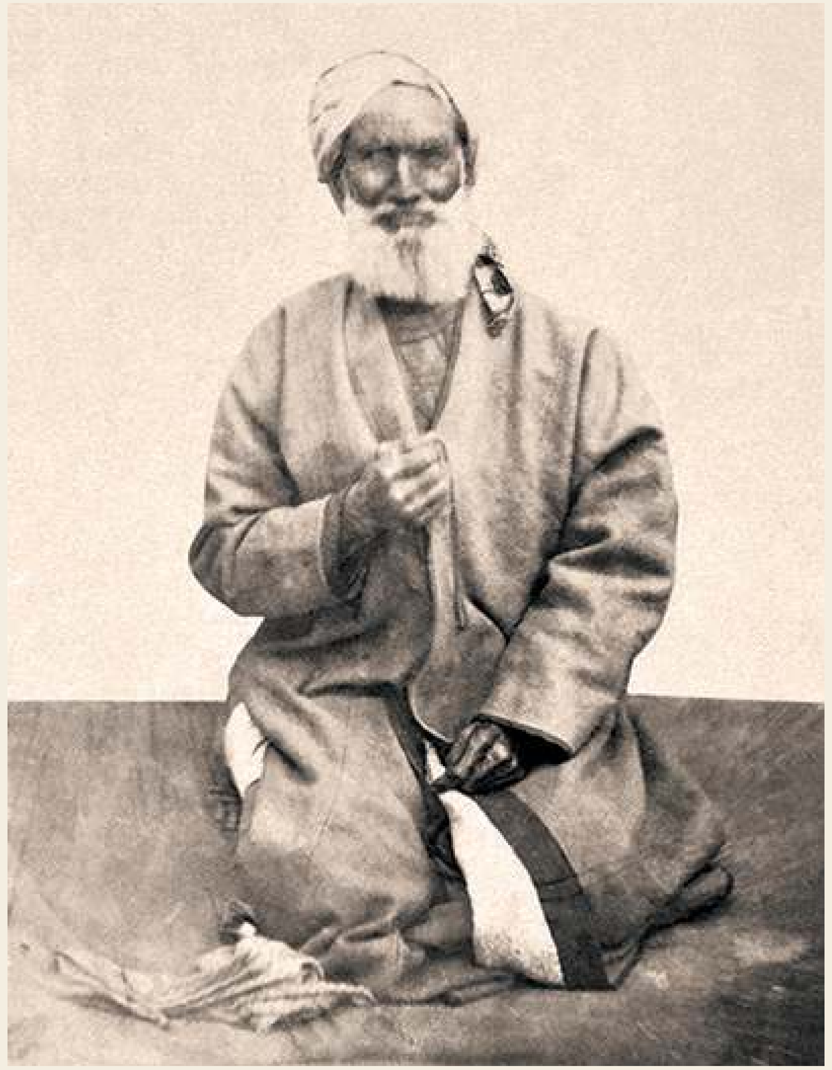
शाहजहाँपुर

यह बरेली से 40 मील दूर है, यहाँ 28 नेटिव इन्फेंट्री का स्टेशन था। मई के मध्य में मेरठ और दिल्ली के विद्रोह की गुप्त सूचना शाहजहाँपुर पहुँची और जिससे सिविल और मिलिट्री अधिकारियों को यह ज्ञान हुआ कि नेटिव ट्रूप्स की पूरी सहानुभूति, सिपाहियों के साथ है। इनको यह भी सूचना मिली कि सिपाही किस प्रकार नये कारतूसों की बात कर रहे थे, जो सेना को बाँटे गये थे।

25 मई, ईद के दिन सिपाहियों ने अपने अफसरों से कहा कि उन्होंने एक अफवाह सुनी है कि दूसरे दिन चिन्नौर के मेले के दिन, शहर के लोगों का इरादा है कि वे सरकारी खज़ाना लूटेंगे। रेज़ीमेंट के कमाण्डिंग अफसर ने सोचा कि सिपाही उनमें पूरा विश्वास रखते हैं, उन्होंने कई स्टेशन गार्ड को निर्देश दिये कि संतरी दोहरे किये जाएँ। इसका उल्टा असर हुआ, सिपाहियों ने इसका दूसरा अर्थ निकाला कि उनको दण्ड दिया जा रहा है क्योंकि उन्होंने कारतूसों को काटने से इन्कार किया था।

कलेक्टर जी.पी. मनी ने कहा कि यह सम्भव था कि सिपाही स्पष्ट रूप से सेना विद्रोह का षड्यंत्र रच रहे हैं और वे नाराज़ थे कि अपनी अतिरिक्त ड्यूटी के कारण वे इस मेले में नहीं जा पा रहे हैं, उन्होंने कारतूसों का बहाना बनाया।

28वीं रेज़ीमेंट के अफसरों में यह विश्वास था कि अगर सेना विद्रोह होगा तो लगभग 500 सिपाही वफादार रहेंगे। मि. रिकेट्स यहाँ मजिस्ट्रेट थे, 31 मई रविवार के दिन 28 नेटिव इन्फेंट्री ने यूरोपियनों की गिरजे में उपस्थिति का फायदा उठाया और विद्रोह भड़क उठा। चैपलेन मि. मैक्लम बाहर निकले, उन पर हमला हुआ लेकिन वह बच गये, उनका हाथ तलवार से काट दिया गया।



खाँ अली खाँ, शाहजहाँपुर की क्रान्ति के नेता (1857—58) पेशे से खाँ एक जिल्दसाज़ थे, जो गुप्त रूप से पत्रक, पर्चे एवं कूट सन्देशों का वितरण, स्वतंत्रता सेनानियों को करते थे। यह निरन्तर ब्रिटिश सरकार के विरुद्ध मोर्चा लेते रहे। 7 जुलाई 1857 को अपने 33 अनुयायियों सहित गिरफ्तार करे गए। 7 जुलाई 1857 को विलियम टेलर (पटना के कमिश्नर) द्वारा इन्हें जनता के समक्ष फाँसी दी गई

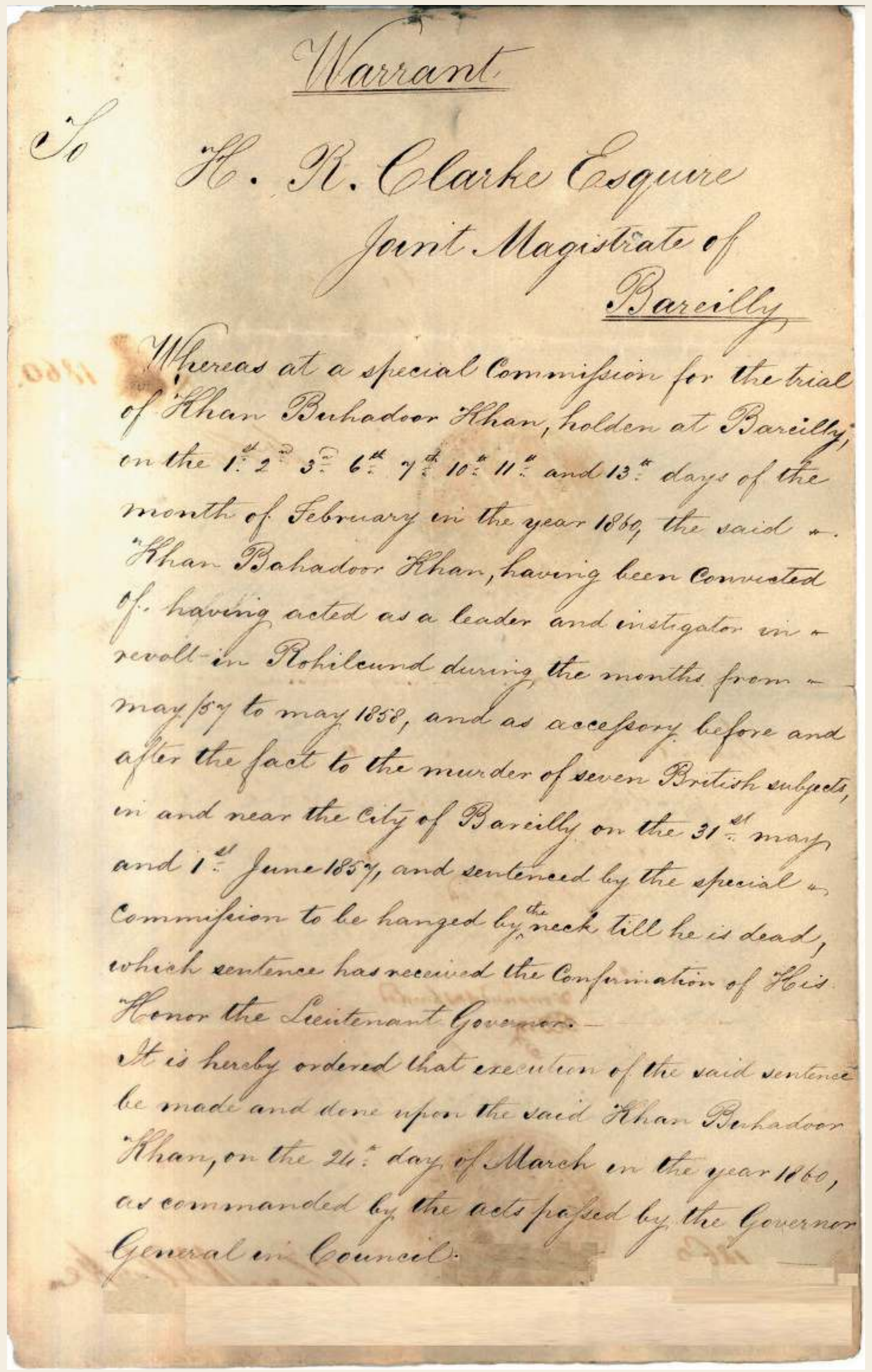
—अज्ञात फोटोग्राफर

रिकेट्स ने भी भागने का प्रयास किया, उनकी भी हत्या कर दी गयी और उनका सिर धड़ से अलग कर दिया गया। उनका शव चर्च के पास ही फेंक दिया गया। चर्च में जितने भी लोग थे, उन पर हमला हुआ। जितने भी यूरोपीय मिले, सभी को मार डाला गया।

कैप्टन जेम्स, जिसे 28 नेटिव इन्फेंट्री की कमान मिली थी, उन्हें परेड में गोली मार दी गयी। जब सिपाहियों ने शहर में प्रवेश किया तो निज़ाम अली को शहर का कोतवाल घोषित कर दिया। मंगल खान और अज्जू खान ने सिपाहियों की लूट में सहायता की, फिर कादिर अली खान और गुलाम अली खान को शहर का नवाब घोषित कर दिया और उसी शाम रेज़ीमेंट के सूबेदारों का सम्मान करने के लिए यह छावनी की ओर गये, जिसमें घनसाम सिंह ने विशेष भूमिका निभायी।

जब छावनी के बंगले लूटे जा रहे थे तो पड़ोस के रोजा कारखाने में, वहाँ के लोगों ने चीनी मिल और रम फैक्ट्री, ''मैसर्स केरयू (Carew) एण्ड कम्पनी'' का कारखाना लूटा और जला दिया। इनमें जो गाँव प्रभावित हुए थे, वे थे दिलावरपुर, रसरतपुर, जैनुद्दीननगर, नवीपुर, सोरौरा, मिश्रीपुर, रोसर, अजीज़गंज, उल्लरपुर, सहरामऊ, धनियापुर, सहबाज़पुर, बिजलापुर, लोवादा, इन्दापुर, उदवपुरा, कैरी, मकरन्दपुर एवं चन्देरा। मि. कैरयू और ब्राण्ड भाग गये लेकिन कुछ समय बाद वह भी मारे गये।

31 मई 1857 को शाहजहाँपुर के हत्याकाण्ड के लिए, गोरखपुर के मौलवी सरफराज अली, विशेषरूप से उत्तरदायी माने जाते हैं। उन्होंने हिन्दू—मुस्लिम एकता की घोषणा की थी। 29 सितम्बर 1857 को यह दिल्ली गजट में प्रकाशित हुआ।



Warrant

To

H. R. Clarke Esquire
Joint Magistrate of
Bareilly

Whereas at a special Commission for the trial of Khan Bahadoor Khan, holden at Bareilly, on the 1st 2nd 3rd 6th 7th 10th 11th and 13th days of the month of February in the year 1860 the said Khan Bahadoor Khan, having been Convicted of having acted as a leader and instigator in a revolt in Rohilcund during the months from May 57 to May 1858, and as accessory before and after the fact to the murder of seven British subjects, in and near the City of Bareilly on the 31st May and 1st June 1857, and sentenced by the special Commission to be hanged by the neck till he is dead, which sentence has received the Confirmation of His Honor the Lieutenant Governor —

It is hereby ordered that execution of the said sentence be made and done upon the said Khan Bahadoor Khan, on the 24th day of March in the year 1860, as commanded by the acts passed by the Governor General in Council.

खान बहादुर खान को फाँसी देने सम्बंधी जारी वारंट
दिनांक 22 मार्च, 1860
पत्रावली सं0–1

सेना विद्रोह का समाचार संध्या के समय तिलहर पहुँचा। दूसरे दिन 1 जून को विद्रोही सिपाही बरेली जाते समय यहाँ पहुँचे। यहाँ पर गुलाम मुहम्मद खान उनसे मिले, उन्होंने तहसीलदार को ढूढ़ने का प्रयास किया पर वे विफल हो गये।

गुलाम मुहम्मद खान को नाज़िम नियुक्त किया कि इस पद पर वे 6 महीने तक रहे, यह स्थानीय कमाण्डर भी हो गये थे। वे हल्द्वानी गये, जब बिचपुरिया का युद्ध हुआ, तब वे सेनाध्यक्ष थे। यहाँ पर 2 लोगों की मुख्य भूमिका रही, वहीदुल्ला खान और रियातुल्ला खान, जोकि उम्मूरपुर के निवासी थे, जोकि तिलहर का ही एक क्षेत्र था।

जलालाबाद में सेना क्रान्ति का समाचार पहुँचा तो तहसीलदार अहमदियर खान ने कैदियों को रिहा कर दिया। यहाँ पर विद्रोह खुलकर नहीं हुआ, इसका कारण शायद यह था कि विद्रोह फतेहगढ़ नहीं पहुँचा था, जोकि जलालाबाद से केवल 24 मील दूर था। जैसे नवाब गुलाम कादिर खान पहुँचे तो उनका सम्मान करने के लिए अहमदियर खान शाहजहाँपुर आये और उन्होंने निवेदन किया कि वे जलालाबाद के तहसीलदार के पद पर बने रहे।

एक महीने के बाद उन्होंने नवाब खान बहादुर खान को नज़राना भेजा और माँग की कि वे परगना के नाज़िम बनाये जाएँ। इनको सनद प्राप्त हो गयी, जो जलालाबाद के कागज़ों में पायी गयी। अहमदियर खान ने ज़मींदारों से राजस्व वसूला और मनी ने कहा कि वे निरंकुश थे और अत्याचार करते थे। यह व्यवहार उन्होंने खन्दर के ठाकुरों के प्रति किया।



जलालाबाद का किला
समृति संग्रहालय रेज़ीडेन्सी पुरातत्व विभाग, लखनऊ

क्रान्तिकारी सेनाओं को बरेली से सहायता मिली, जो इस्माईल खान की कमान में थे, उन्होंने गाँवों को नष्ट किया और लूटा। रूहेलखण्ड की सेना 28 अप्रैल को जलालाबाद पहुँची। विद्रोह को बढ़ावा देने के लिए अहमदियर खान के ऊपर मुकदमा चलाया गया। वे प्रमाण सहित दोषी पाये गये, उन्हें फाँसी की सज़ा दी गयी।

मजिस्ट्रेट मनी ने अपनी रिपोर्ट में लिखा कि क्रान्तिकारियों को अवध का वह भाग प्राप्त हुआ, जो जिले के पूर्व में था। जिसके कारण वह कई बार जिले में आते जाते रहे। उन्होंने कई जगहों को जलाया, पूरनपुर, पुवायाँ, खोतर और पुलिस चौकियों पर भी कब्ज़ा किया।

बिजनौर

1817 में मुरादाबाद जिले से अलग कर दिया गया और यह अलग जिला बन गया, इसका मुख्यालय नगीना में बनाया गया। 1824 में जिला मुख्यालय, यहाँ स्थानान्तरित कर दिया गया।

13 मई को स्वतंत्रता संघर्ष का समाचार बिजनौर पहुँचा, वहाँ की जनता में असंतोष व्याप्त था। अंग्रेज़ों ने विद्रोह दबाने का प्रयास किया परन्तु 16 मई को 8 मील की दूरी पर झाल और ओलेण्डा के गाँव में (जोकि परगना दारानगर में थे) भी उथल पुथल हुई एवं सहबाजपुर खद्दर में एक गाँव में हमला हुआ (Vol. V, Page No. 245-246, Rizvi And Bhargawa)।

29 नेटिव इन्फेंट्री बिजनौर से निकली, जब वे सहारनपुर से मुरादाबाद पहुँच रहे थे। जैसे ही सिपाही वहाँ से हट गये, 300 सैपर (Sapper) माइनर (Miner) रूड़की से नजीबाबाद पहुँचे और महमूद खान से भेंट की, जो अपने को वहाँ का नवाब कहते थे। इनका लक्ष्य था कि अंग्रेज़ों के विरुद्ध इन्हें उकसा दिया जाए। पहली बार क्रान्ति की भावना महमूद खान और अहमदुल्ला खान के दिलों में भड़क उठी।

विद्रोही सिपाही 21 मई को नगीना पहुँचे और तहसील को लूटा, 10000 रुपये ले गये। फिर वे धामपुर पहुँचे, उसी दिन रामस्वरूप गार्ड से मिलकर 341 कैदियों ने, जो बिजनौर जेल में थे, जेल के मुख्यद्वार को तोड़ दिया और वहाँ से भाग गये। अंग्रेज़ों ने बिजनौर कोष को बचाने का प्रयास किया और पैसा कुँए में फेंक दिया। अब गूजर, बंजारा और मेवातियों ने भी संघर्ष में भाग लिया। महमूद खान ने स्वयं को दिल्ली के सम्राट के अधीन शासक घोषित किया।

बदायूँ

25–27 मई 1857– बरेली से दक्षिण पश्चिम में स्थित है। मेरठ का समाचार 15 मई को बदायूँ पहुँच गया था। सबसे पहले बिहटा गोसाईं, जो कि बिल्सी परगना में था, यहाँ पर खरबूजे लूटे गये। ऐसा लग रहा था कि दंगाई और लुटेरे वहाँ पर प्रकट हो गये हैं और लूटना, गाँवों को जलाना शुरू कर दिया।

वहाँ पर एक ही अंग्रेज़ अफसर था– विलियम एडवर्ड्स। यह अंग्रेज़ अफसर एक योग्य व्यक्ति था, उसने अपने जिले में पुलिस सेना दोहरी कर दी, इसके बाद भी गड़बड़ी फैली।

12 दिन बीत गये थे, वहाँ कोई झगड़ा नहीं हुआ, उसकी पत्नी और बच्चे नैनीताल पहुँचा दिये गये। 25 मई को उसने अपने एक रिश्तेदार एल्फ्रेड फिलिप को 6 घुड़सवारों के साथ आते देखा। फिलिप, एटा जिले का मजिस्ट्रेट था। यह बदायूँ के विपरीत दिशा में था, वे बरेली की उथल पुथल को दबाने के लिए और सेना सहायता के लिए वहाँ जाना चाहता था।

31 मई को एडवर्ड को कमिश्नर से सूचना मिली कि कुछ भारतीय नेटिव इन्फेंट्री, यूरोपीय अफसर के नेतृत्व में आयेगी और उनकी सहायता करेगी लेकिन 01 जून को इनको बरेली की घटनाओं के बारे में बताया गया। जो कैदी बरेली से रिहा किये गये थे, वे बदायूँ से 10 मील की दूरी पर थे। इसके बाद ही कुछ सेना विद्रोही बदायूँ पहुँच रहे थे, उनका इरादा था, ट्रेजरी गार्ड से मिलकर (जिसमें 68 नेटिव इन्फेंट्री के 100 व्यक्ति थे) स्टेशन को जला देना।



10 नेटिव इन्फेंट्री द्वारा विद्रोह, 1857
स्मृति संग्रहालय रेज़ीडेन्सी परातत्व विभाग, लखनऊ

एडवर्ड ने फिलिप को यह चिंताजनक समाचार बताया और वो जल्द से जल्द अपने घोड़े को लेकर, विद्रोहियों के आने से पहले ही पहुँच गया। साथ ही एडवर्ड, बदायूँ से भागना चाहता था लेकिन उसने अपने कर्तव्य पालन का निर्णय लिया और कोतवाल को बुलाया।

नील नियोजक (इण्डिगो प्लान्टर) डोनाल्ड और उसका पुत्र, गिब्सन, जो कि कस्टम में थे और स्टुअर्ट एक यूरोपियन क्लर्क और उसकी पत्नी और परिवार ने एडवर्ड के घर में शरण ली थी।

उसी शाम 68 नेटिव इन्फेंट्री ने विद्रोह में भाग लिया, कोष लूटा और 300 कैदियों को रिहा किया। वह मजिस्ट्रेट के घर की ओर चिल्लाते हुए गए, एडवर्ड समझ गया कि विनाश का कार्य आरम्भ हो गया है, वह घोड़े पर सवार होकर भागा। एक अफग़ान नौकर और एक सिक्ख वज़ीर सिंह के साथ 2 जून को उसने गंगा पार की। पटियाली भी पार की, इसके साथ बाकी अंग्रेज़ भी भाग गये, पटियाली में फिलिप था।

एक ज़मींदार ने एडवर्ड को समझाया कि बदायूँ पहुँचना बेकार है, उन्हें फतेहगढ़ जाना चाहिए। शमसाबाद में एक भीड़ द्वारा वे सभी घेर लिये गये और गिब्सन मारा गया। बचते–बचाते वे फतेहगढ़ पहुँच गये, जो फर्रुख़ाबाद की राजधानी थी। वहाँ उनका स्वागत प्रोबेन (मजिस्ट्रेट) ने किया, उसने बताया कि 10 नेटिव इन्फेंट्री ने विद्रोह कर दिया है।

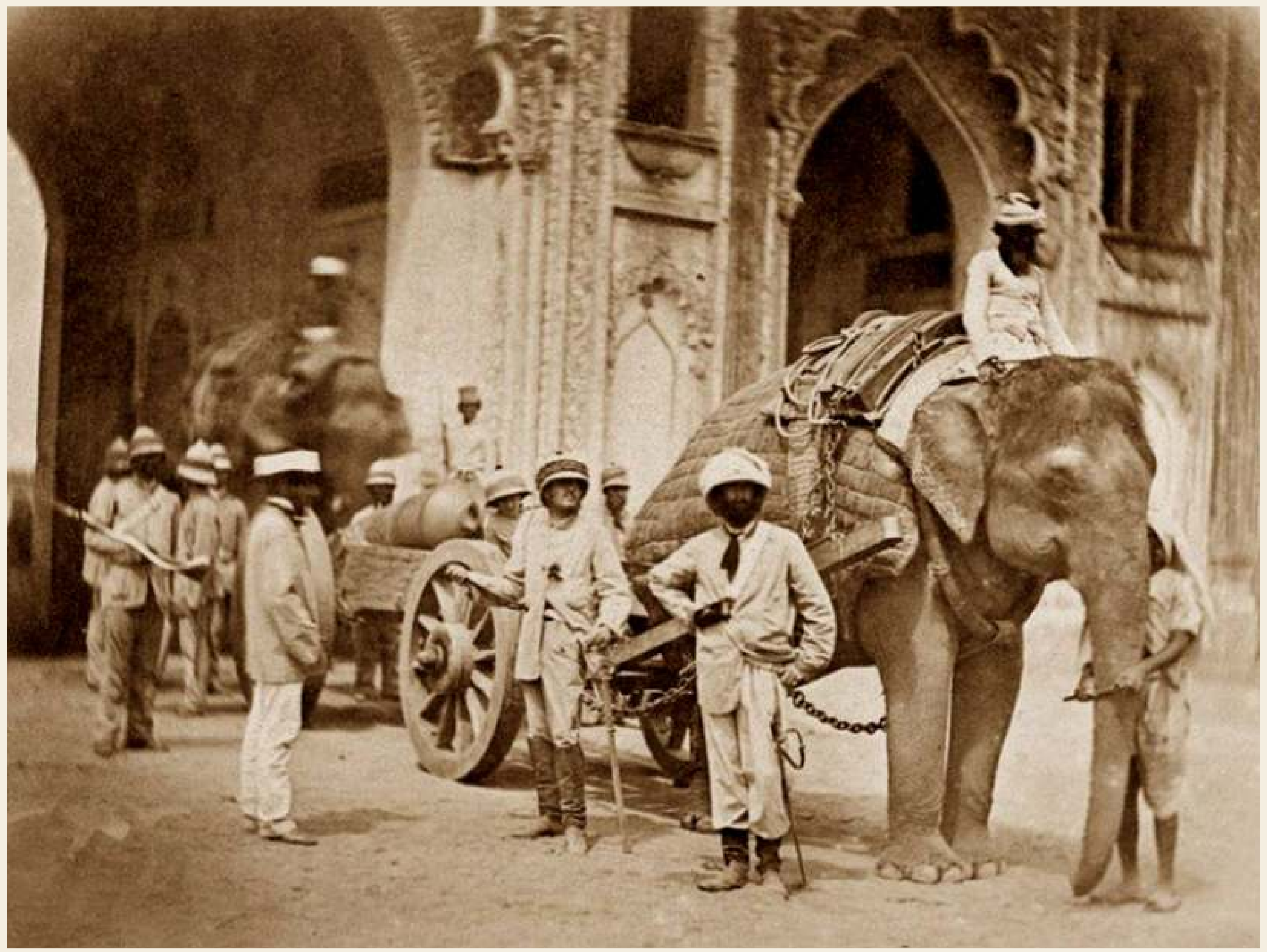
कासगंज

ए.एल. फिलिप और हॉल, एटा में सिविल गवर्नमेन्ट इंचार्ज थे। 18 मई को मेरठ का समाचार प्राप्त हुआ, तब पूरी तैयारी की गयी, संचार व्यवस्था भी सुचारू रूप से रखी गयी। ज़मींदारों को लिखित और मौखिक रूप से चेतावनी दी गयी कि वे अपने इलाकों को शान्त रखें और गाँव वालों को विद्रोह करने से रोकें।

सारा कोष मैनपुरी भेज दिया गया। 21 मई 1857 को संचार की लाइन तोड़ दी गयी लेकिन उसी दिन जमशेद खान, जो सड़क चौकी अलीगढ़ का इंचार्ज था, उसने फिलिप को बताया कि जो 9 नेटिव इन्फेंट्री के लोग एटा जा रहे थे। एटा में केवल 25 लोग जेल गार्ड के थे, उनमें विद्रोह फैल रहा था क्योंकि उन्हें वेतन का एरियर नहीं मिला था।

अंग्रेज़, एटा से भाग गये, मैनपुरी गैरीसन (सेना) विद्रोहियों से न मिल जाएँ। फिलिप को जान ख़तरे में लगी और वो नादराई की ओर गया। उसे समाचार मिला कि एक रामबहादुर ने ब्रिटिश आवास को जला दिया है और बाज़ार लूटे गये हैं, यह असंतुष्टि कासगंज पहुँच गयी।

फिलिप 25 मई को कासगंज पहुँचा तो देखा विद्रोही कासगंज पर हमला करके, दूसरे हमले की तैयारी कर रहे थे। वे गन, मस्कट और बन्दूकों को लेकर आ रहे थे। यहाँ मुठभेड़ हुई, फिलिप चाहता था कि कासगंज सुरक्षित रहे, वह विद्रोहियों के हमले से कासगंज को बचाना चाहता था। स्वयं को फिलिप ने तहसील भवन में छुपा लिया।



हाथी संचालित फील्ड गन – 1858
नेशनल आर्मी म्यूज़ियम, लंदन

3 जून को पड़ोसी जिले भी खुलकर विद्रोह में भाग लेने लगे, जब विद्रोहियों का बड़ा समूह, अधिकारियों ने देखा तो वे मैनपुरी जाने लगे। फिर उन्हें पटियाली वापस आना पड़ा क्योंकि मैनपुरी के पड़ोस में लखनऊ के विद्रोही एकत्रित थे।

कासगंज और पटियाली के बीच में कुछ क्रान्तिकारी थे, जोकि दिल्ली जा रहे थे, वे उनसे बचे। 14 दिसम्बर, 1857 में इस्माईल खान और कर्नल सिटेन के बीच एक लड़ाई हुई, जिसमें कई हज़ार क्रान्तिकारियों ने जानें गंवाईं। ब्रिटिश सेना ने कासगंज पर अधिकार कर लिया (इस युद्ध का वर्णन जे.डब्ल्यू. केयी ने ''म्यूटिनी मेमोयर'' में किया है)।

मुरादाबाद

यहाँ के कार्यवाहक मजिस्ट्रेट एच.एच. डनलप थे। बदायूँ विद्रोह के 3 दिन के बाद, जो 29 एन.आई. मुरादाबाद में थी, उसने विद्रोह किया, कोष को लूटा।

क्रे कॉफ्ट विल्सन, जो एक जज एवं विद्वान थे, स्थानीय लोगों के विषय में जानते थे और उनकी भाषा भी जानते थे। यह कट्टर शासक थे, उनका प्रभाव सिपाहियों पर भी था।

जब मेरठ में घटना हुई थी, तब सिपाही विल्सन के नियंत्रण में थे। परन्तु जब बरेली हत्याकाण्ड का समाचार फैला तो वे उन्हें नहीं रोक पाये। कुछ भारतीय अफसर, जो मुरादाबाद में अवकाश पर थे, उन्होंने कहा कि वे यूरोपियनों को बचाकर, मेरठ ले जाएँगे।

जब यह रेज़ीमेंट, जो 3 मिलिट्री स्टेशन पर थी, जिन्होंने सेना विद्रोह में भाग लिया था, अफसरों की हत्या की थी, एक हो गये और दिल्ली की ओर बढ़े। दिल्ली के सम्राट की सहायता के लिए विद्रोहियों को जल्द से जल्द बुलाया गया।

अवध-लखनऊ

13 फरवरी 1856 को अवध का प्रान्त अधिग्रहित कर लिया गया, मुख्य कमिश्नरी (चीफ कमिश्नरशिप) बना दिया गया। मेजर जनरल सर जेम्स ऊट्रम को मुख्य कमिश्नर (चीफ कमिश्नर) नियुक्त किया गया। ऊट्रम को लॉर्ड डलहौजी ने 4 दिसम्बर 1854 को रेज़ीडेंट पहले ही बनाया था। वह 1856 में इंग्लैण्ड वापस चला गया, फिर मार्च 1857 में ऊट्रम के स्थान पर हैनरी लॉरेंस को चीफ कमिश्नर बनाया गया।

14 मई को मेरठ का समाचार लखनऊ पहुँचा और 15 मई को दिल्ली का समाचार आया। हैनरी को ब्रिगेडियर का पद और आर्मी और सिविल दोनों का अध्यक्ष बना दिया गया। यहाँ पर इन्फेंट्री रेज़ीमेंट, मड़ियाव में थी और कैवलरी, मुतक्कीपुर में थी। उनके पास यूरोपियन सेना की संख्या कम थी, वफादार सिपाही थे। वे छावनी में रहते थे, उन्होंने अपनी पूरी सुरक्षा, मच्छीभवन में रखी थी और इनका एक आवास शहर में भी था।

जब विद्रोह भड़का तो हैनरी लॉरेंस ने मुख्यालय, कैण्ट से रेज़ीडेंसी स्थानान्तरित कर दिया। जनरल मैक्लॉयड इनिस, रेज़ीडेंसी के इंचार्ज में एक था, इसका मानना था कि रेज़ीडेंसी में रहना रेज़ीडेंट के लिए ठीक है। 30 मई को सिपाहियों ने रात को 9 बजे विद्रोह किया।

13वीं और 71वीं नेटिव इन्फेंट्री के सिपाही वफादार थे, उन्होंने यूरोपीय सिपाहियों का साथ दिया, शहर को जाने वाली सड़क बन्द कर दी। कुछ विद्रोही दिल्ली चले गये परन्तु वफादार सिपाही, रेज़ीमेंट में रुके रहे, दिल्ली नहीं गये। कुछ ने 30 मई के कार्यों में सक्रिय रूप से भाग लिया। चिनहट में रेज़ीडेंसी को बचाने के लिए 500 हिन्दुस्तानी सिपाही, अपने ही भाईयों के विरुद्ध लड़े।



नवीन युग के चित्रकार द्वारा प्रसिद्ध चिनहट के युद्ध का एक दृश्य
स्मृति संग्रहालय रेज़ीडेन्सी पुरातत्व विभाग, लखनऊ



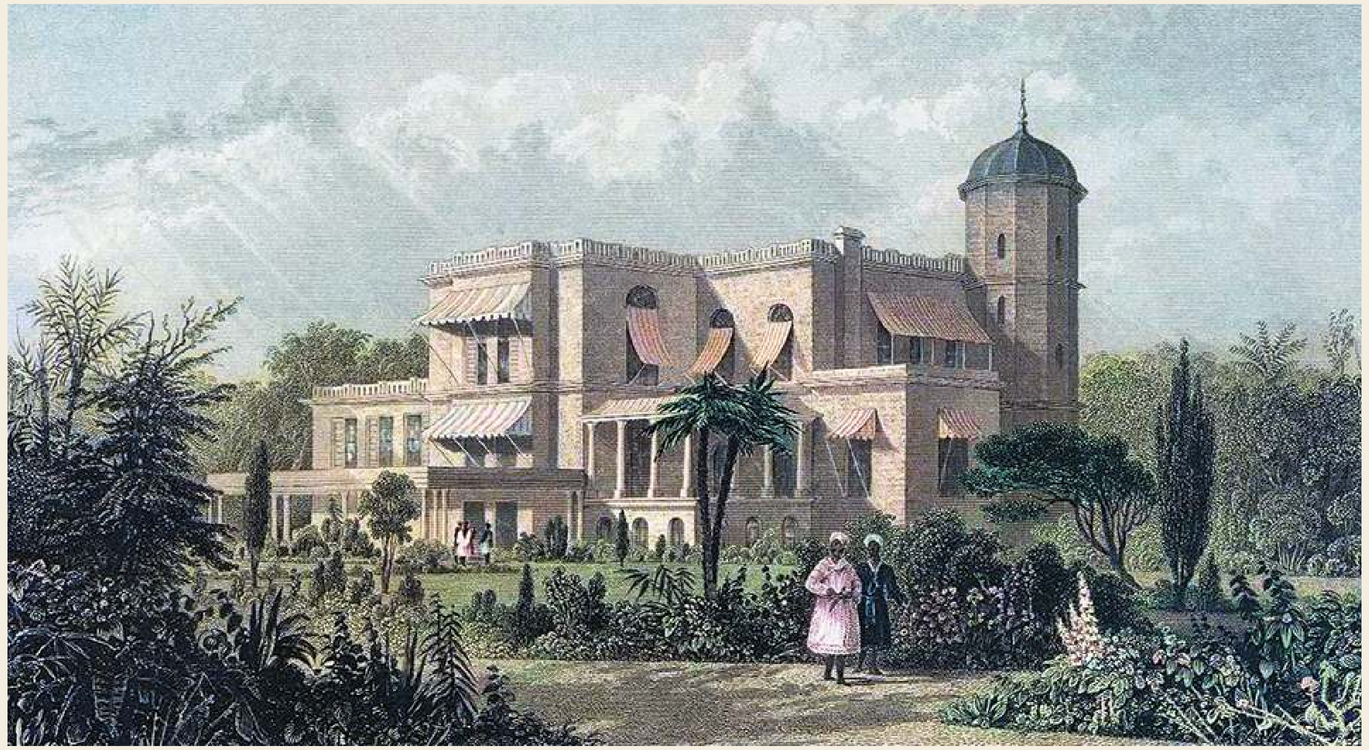
मौलवी अहमद शाह – फैज़ाबाद (अयोध्या)
विनायक दामोदर सावरकर – 1857 भारतीय स्वतंत्रता का प्रथम युद्ध, 1909

चिनहट की लड़ाई में 30 जून, 1857 को, 84 नेटिव इन्फेंट्री, 71 नेटिव इन्फेंट्री की आधी संख्या और 13 नेटिव इन्फेंट्री और दो टुकड़ी 7 लाइट कैवलरी के सिपाहियों ने भाग लिया। युद्ध प्रारम्भ हो गया (फॉरेस्ट स्टेट पेपर वॉल्यूम–II, पेज संख्या–25), यहाँ एक षड़्यंत्र के चिन्ह स्पष्ट हो रहे थे, फिर 3 दिन में ही लखनऊ के नागरिकों ने मुफ्तीगंज में विद्रोह किया। कई अन्य क्षेत्रों में भी ऐसी घटनाओं को देखकर, हैनरी लॉरेंस की तैनाती हुई और उन्हें रेज़ीडेंसी की सुरक्षा का उत्तरदायित्व दिया गया।

क्रान्तिकारी लहर, बगल के जिलों में पहुँच गयी और समाचार फैल गया कि फैज़ाबाद की सेनायें, मौलवी अहमदुल्ला शाह के नेतृत्व में लखनऊ पहुँच रही थीं। 29 जून की शाम को अवध सेना, चिनहट पहुँच गयी। 30 जून 1857 को चिनहट के इस युद्ध में मौलवी अहमदुल्ला शाह ने अंग्रेज़ों को पराजित किया।

कमालुद्दीन हैदर, जो ''कैसर–उत–तवारीख'' के लेखक हैं, उन्होंने लिखा कि लखनऊ के लोगों ने मच्छीभवन के सीज़ में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। यह पता चला कि अंग्रेज़, रेज़ीडेंसी एवं मच्छीभवन दोनों जगहों की रखवाली और बचाव नहीं कर सकते थे और दोनों के बीच संचार नहीं बना सकते थे।

1 जुलाई को हैनरी लॉरेंस ने कहा कि मच्छीभवन से निकास कर दिया जाए और उसे उड़ा दिया जाए, रात्रि में रेज़ीडेंसी पहुँचा जाए। गबिन्स ने अपनी पुस्तक, ''म्यूटिनीज़ इन अवध'' में बताया कि ब्रिटिश सेना ने मच्छीभवन को उड़ा दिया और रेज़ीडेंसी पहुँच गए।



रेज़ीडेन्सी भवन, लखनऊ
स्मृति संग्रहालय रेज़ीडेन्सी पुरातत्व विभाग, लखनऊ



मार्टिन रिचर्ड गब्बिन्स
फेलीचे बीटो द्वारा चित्र



हेनरी लॉरेन्स



जनरल जेम्स ऊट्रम

ए हिस्ट्री ऑफ द इण्डियन म्यूटिनी, जी. डब्लू. फॉरेस्ट 1857–58
रिव्यूड एण्ड इलस्ट्रेटेड फ्रॉम ओरिज़नल डॉक्यूमेंट्स वॉल्यूम III, 1912

अब रेज़ीडेंसी का घेरा डाला गया, हैनरी हैवलॉक की मृत्यु यहीं हुई। कर्नल इंग्लिस, जिस पर रेज़ीडेंसी की सुरक्षा का भार था, वह ये समझ गया कि वह हिन्दुस्तानियों के साथ लड़ाई नहीं कर सकता था। लखनऊ में अवध के क्षेत्रों में विद्रोह फैल गया, वो रेज़ीमेंट जो भ्रम में थी, अब खुलकर विद्रोह में आ गयी, रेज़ीडेंसी में भारतीयों की विजय हुई।

4 जून को लॉरेंस ने गवर्नर जनरल को तार भेजा कि यदि उन्हें कुछ हो जाए तो मेजर बैंग्स को उनके स्थान पर चीफ कमिश्नर नियुक्त किया जाए और कर्नल इंग्लिस को सेना का कमाण्डर बनाया जाए। एक अस्थायी परिषद की स्थापना हुई, जिसमें 5 लोग थे– मार्टिन गाबिन्स–फाइनेन्शियल कमिश्नर, ओमाने–ज्यूडिशियल कमिश्नर, मेजर बैंग्स, कर्नल इंग्लिस, मेजर एंडरसन–चीफ इंजीनियर। गाबिन्स को चेयरमैन बनाया गया, उसने प्रस्ताव रखा कि बची हुई रेज़ीमेंट को निःशस्त्रित कर दिया जाए। हेनरी लॉरेन्स को वापस बुला लिया गया, उसने सुरक्षा की तैयारी की, जितनी भी सेना की सामग्री भण्डार में थी, वो मच्छीभवन से रेज़ीडेंसी स्थानान्तरित कर दी गयी। जनरल व्हीलर ने कानपुर में समर्पण कर दिया। हेनरी लॉरेंस रेज़ीडेंसी में घायल हुआ और 4 जुलाई को उसकी मृत्यु हो गई। कुछ दिनों तक इसकी मृत्यु की खबर छुपाए रखी गयी। रेज़ीडेंसी, अंग्रेज़ों के बचने का अन्तिम स्थान था। इस भवन में सिपाही और नागरिक दोनों ही छिपे थे और अपने प्राण बचाने के लिए लड़ रहे थे।

जब कानपुर दोबारा अंग्रेज़ों के कब्ज़े में आ गया तो वहाँ से जुलाई 1857 में ब्रिटिश सेनाएँ, लखनऊ की ओर बढ़ीं। रेज़ीडेंसी को सहायता देने के लिए, जहाँ कई अंग्रेज़ों की दशा बहुत बुरी थी, यहाँ सेना का नेतृत्व हेनरी हैवलॉक ने किया और जेम्स ऊट्रम ने इनकी सहायता की।



गंगा सिंह – 1857–1858 के संग्राम में, लखनऊ के क्रान्तिकारियों के सरदार
फोटोग्राफर अपरिचित। चित्रः अवध में संग्राम के महत्त्वपूर्ण नेताओं का चित्र एलबम– गेट्टी कलेक्शन



आलमबाग लखनऊ में जनरल ऊट्रम की सेना का डेरा
स्मृति संग्रहालय रेज़ीडेन्सी पुरातत्व विभाग, लखनऊ

फौजों ने लखनऊ का रुख किया और उन्नाव के गाँवों में भी विद्रोह फैल गया। अब यह स्पष्ट हो गया कि अंग्रेज़ केवल एक सेना विद्रोह का ही सामना नहीं कर रहे हैं बल्कि ऐसे विरोध का सामना कर रहे हैं, जिसका अवध के कृषकों के बीच में एक लोकप्रिय आधार था।

हैवलॉक ने सितम्बर 1857 में रेज़ीडेंसी में प्रवेश किया। पर कोई राहत नहीं दे पाया क्योंकि रेज़ीडेंसी की नाकाबंदी, विद्रोहियों ने कर रखी थी और सामग्री कम थी। सेनाध्यक्ष सर कॉलिन कैम्पबेल ने नवम्बर 1857 में प्रथम हमला किया। सबसे पहला कार्य उन्होंने 3 दिसम्बर को किया कि सर्वप्रथम उन्होंने अंग्रेज़ों को शहर से बाहर किया। उनके इस कदम से विद्रोही और प्रोत्साहित हुए और कई लोग विद्रोह में भाग लेने के लिए अन्य जिलों से पहुँचे। जनवरी 1858 में शहर में लड़ती हुई जनता दिखाई दे रही थी। कैम्पबेल, लखनऊ पहुँच गये और 17 नवम्बर को ऊट्रम को 4000 की सेना के साथ, आलमबाग को जीतने के लिए छोड़ दिया। कॉलिन कैम्पबेल का दूसरा हमला, बेगम कोठी पर हुआ। हैवलॉक की मृत्यु 24 नवम्बर 1857 को पेचिश से हो गयी, जिसे अलामबाग में दफ़नाया गया।

बेगम कोठी पर हमले का विवरण, विलियम हाबर्ड रस्सेल ने अपनी पुस्तक, "My Indian Mutiny Dairy" में दिया है। यह प्रथम युद्ध पत्रकार थे, जिन्होंने केवल सिपाही विद्रोह की घटनाओं पर रिपोर्ट दी है। उन्होंने अपनी डायरी में बताया कि किन परिस्थितियों में ब्रिटिश शासन भारत में विफल रहा और सैन्य विद्रोह के रूप में परिस्थितियाँ सामने आयीं। उन्होंने बताया कि सिकन्दर बाग में जो शक्तिशाली (अमेज़ॉन) हब्शी महिलाएँ लड़ीं और वे मारी गयीं, पर यह बात अभी शक के दायरे में है कि वो महिलाएँ थीं या पुरुष।



बेग़म हज़रत महल



बिरजीस कदर, अपने सेवकों के साथ

फोर्ब्स मिचेल ने एक के विषय में बताया कि सिकन्दर बाग में जो एक महिला, पीपल के पेड़ पर चढ़ी हुई थी, उसे भी गोली लग गयी, बड़ी वीरता से लड़ी थी।

अंग्रेज़ इतिहासकारों ने बेग़म हज़रत महल को नज़रअंदाज़ किया है। परन्तु अवध में बेग़म हज़रत महल के उल्लेख के बिना 1857 की क्रान्ति का विवरण अपूर्ण है। मच्छीभवन के ज़मींदोज़ होने के बाद, रेज़ीडेंसी में ब्रिटिश सेना पहुँच गई, तो एक संगठित सरकार के अभाव में लखनऊ की जनता के आगे एक अव्यवस्थित स्थिति थी। जनता ने बिरजीस कदर, जो नवाब वाज़िद अली शाह के पुत्र थे, उनको अवध के राजा के रूप में गद्दी पर बैठाया और यह तय हुआ कि वे मुग़ल सम्राट को नज़राना देते रहेंगे। बिरजीस कदर के संरक्षक (Regent) के रूप में सरकार, बेग़म हज़रत महल को सौंप दी गई। इस प्रकार लखनऊ में एक स्वतंत्र सरकार की स्थापना हुई।

4 जुलाई, 1857 को बिरजीस कदर की ताज़पोशी हुई। कैसरबाग के क्षेत्र में हज़रत महल की कचहरी लगती थी। एक लोकतान्त्रिक अदालत की स्थापना की गई। बिरजीस कदर के नाम से हिन्दी और उर्दू में घोषणा पत्र जारी किए जाते थे, जिसमें जनता से कहा गया कि वे सब मिलकर, विदेशी सरकार के विरुद्ध खड़े हो जाएँ। उन्हें ''बाँटो और राज्य करो'' की नीति के विरुद्ध खड़े होना है। इसी के बाद अंग्रेज़ों के साथ युद्ध आरम्भ हो गया और बेलीगारद, जहाँ अंग्रेज़ एकत्र थे, उस पर हमला हुआ। मौलवी अहमदुल्ला शाह ने वीरता प्रदर्शित की और घायल हो गये। उन्होंने एक पत्र वाजिद अली शाह को लिखा, जो कि किले में बन्द थे।





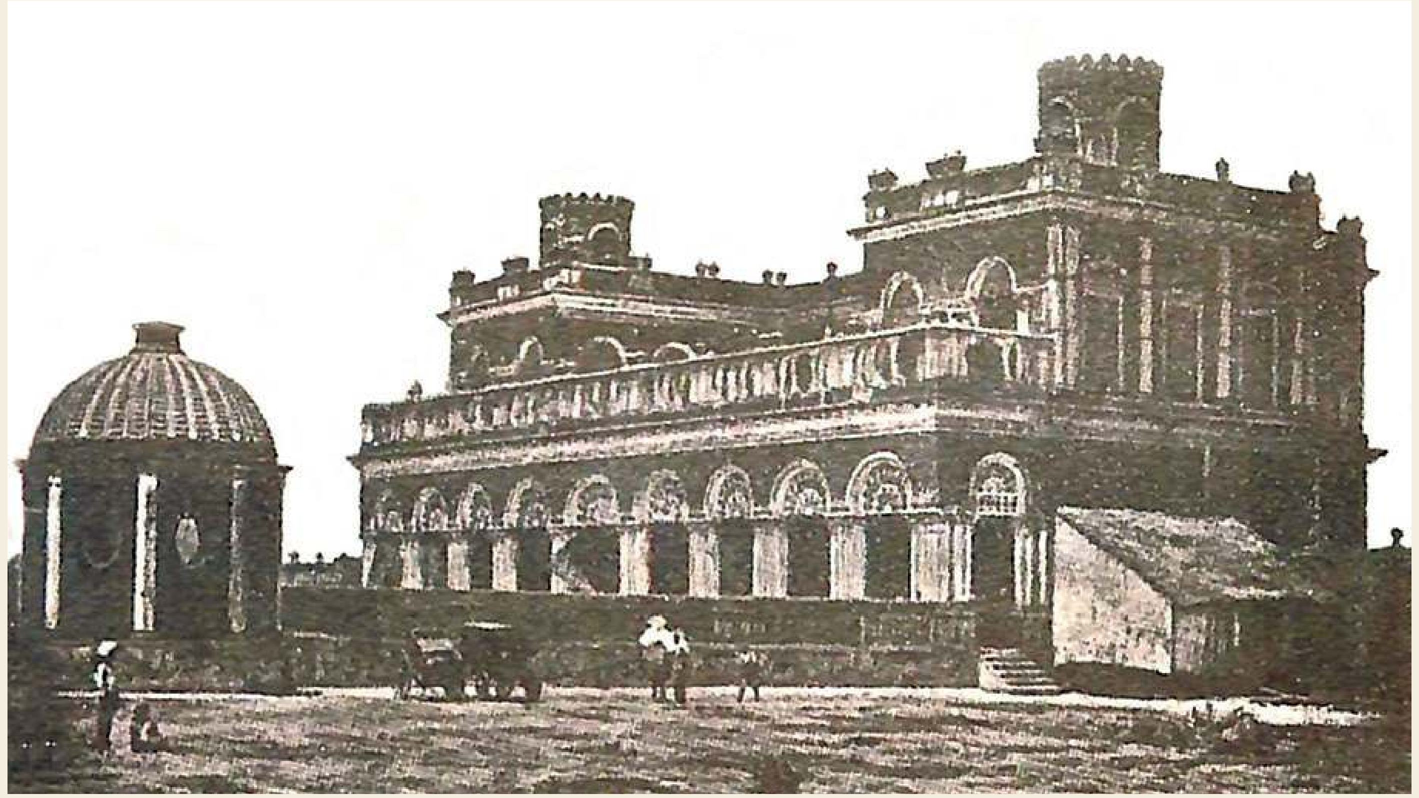
बेली गारद गेट का एक दृश्य, साथ में क्लॉक टावर गेट और ख़ासबाग की सड़क, जिस पर से हैवलॉक की सैन्य टुकड़ी गुज़री थी
ए हिस्ट्री ऑफ द इण्डियन म्यूटिनी, जी. डब्लू. फॉरेस्ट 1857–58
रिव्यूड एण्ड इलस्ट्रेटेड फ्रॉम ओरिज़नल डॉक्यूमेंट्स वॉल्यूम II, 1912

बेगम हज़रत महल की वीरता की प्रशंसा, एक पत्र में है, जो वाजिद अली शाह को लिखा गया (बेग़मात–ए–अवध के खुतूत, पृष्ठ संख्या–42 से 45), उसमें हज़रत महल की वीरता का वर्णन किया गया है। उन्होंने बताया कि उन्होंने राजा के सम्मान को ऊपर उठाया और जनता उनकी वीरता से बहुत प्रभावित हुई।

लखनऊ की जनता की देशभक्ति को जागृत करने के लिए सभी प्रयास किये गये कि उनमें देशभक्ति जाग्रत हो जाए। नवम्बर, 1857 से लेकर फरवरी, 1858 तक बेग़म हज़रत महल के कहने पर छापी हुई घोषणाएँ चिपकाई गईं। अवध सेना, ब्रिटिश कैम्प के नज़दीक आती गई, ऊट्रम पर छः बार हमला हुआ।

ने इनिस (Ney Innes) ने 'द सिपोय रिवोल्ट' में बताया है कि हज़रत महल ने सेना संगठित की और स्वयं हाथी पर बैठकर, आलमबाग में सेना का नेतृत्व किया। परन्तु सिपाहियों में यह भावना थी कि युद्ध की लहर, उनके विरुद्ध हो रही थी, वे रेज़ीडेंसी को लेने में विफल हो गये थे। हैवलॉक, ऊट्रम (आलमबाग) और कैम्पबेल के नीचे, अंग्रेज़ों की राहत सेनाओं को रोक नहीं पाए।

बेग़म ने स्वयं लिखा, ''पूरी सेना लखनऊ में है, पर उनमें साहस नहीं है। आलमबाग पर हमला क्यों नहीं करती है, और अंग्रेज़ वहाँ पहुँचेंगे, लखनऊ घिर जाएगा।'' लखनऊ में हिन्दुस्तानी सिपाहियों की सहायता जनता कर रही थी, जो 3 लाख नागरिक लखनऊ में बसे थे, वे आवश्यक वस्तुओं के लिए भी चिन्तित थे, वस्तुओं के दाम बढ़ रहे थे। इनके महल के उच्च अधिकारियों को भी भूखा रहना पड़ा था। इस स्थिति में खाद्य पदार्थ उपलब्ध कराने में और वेतन देने के लिए बेगम ने जो भी सम्भव था, वह सब किया।



मूसाबाग, लखनऊ
ए हिस्ट्री ऑफ द इण्डियन म्यूटिनी, जी. डब्लू. फॉरेस्ट 1857–58
रिव्यूड एण्ड इलस्ट्रेटेड फ्रॉम ओरिज़नल डॉक्यूमेंट्स वॉल्यूम II, 1912

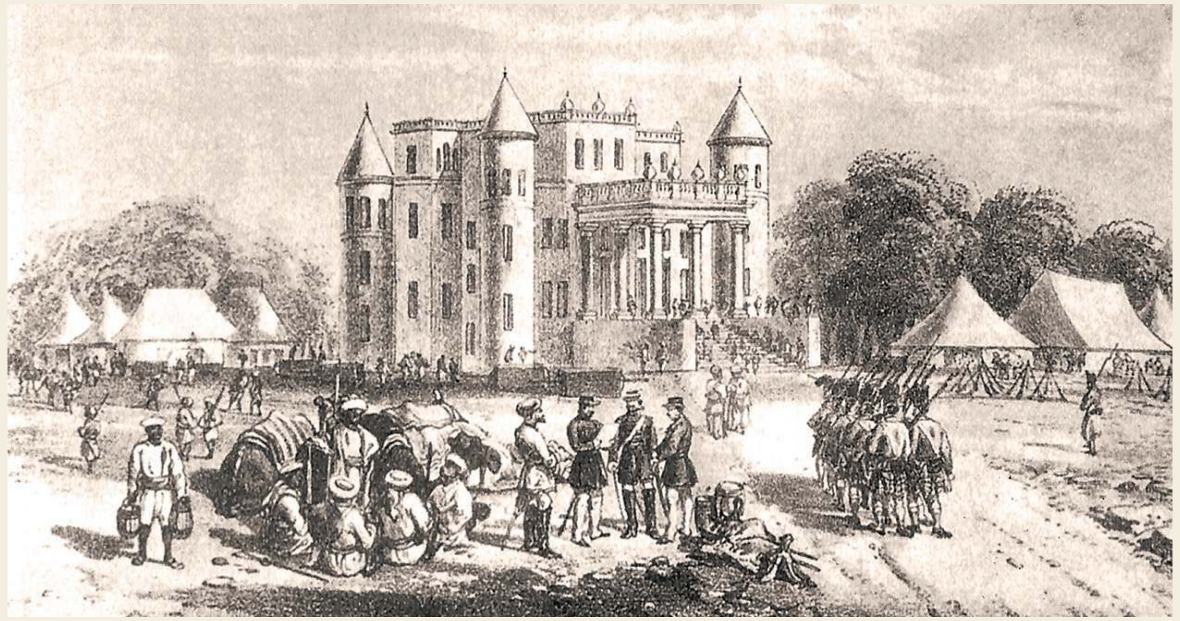
जब 11 दिसम्बर को सात हिन्दुस्तानी इन्फेंट्री रेज़ीमेंट लखनऊ पहुँचीं। उसी के बाद, कानपुर से भी सहायता मिली।

17 दिसम्बर 1857, बारूद–बन्दूकधारी वाहन भी पहुँचे। बेगम ने जब यह सहायता देखी तो उन्होंने 5 लाख रुपये, लखनऊ के चारों ओर एक दीवार बनवाने के लिए दिए।

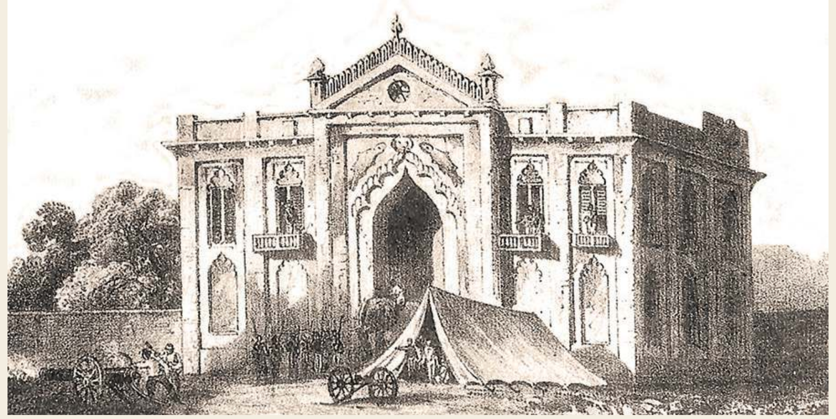
19 मार्च 1858 को एक युद्ध मूसाबाग में हुआ, जहाँ अवध सेना रुकी हुई थी।

इस युद्ध में बेगम हज़रत महल और मौलवी अहमदुल्ला शाह ने भाग लिया। ये फैज़ाबाद से अपने साथ सैनिकों को लेकर आये थे, इन्हें जेल से रिहा किया गया। इनसे सेना बहुत प्रभावित होती थी। इनसे युद्ध में प्रेरणा मिलती थी (रेक्स– नोट्स ऑन द रिवोल्ट इन द नॉर्थ प्रॉविन्सेज़ ऑफ इण्डिया)।

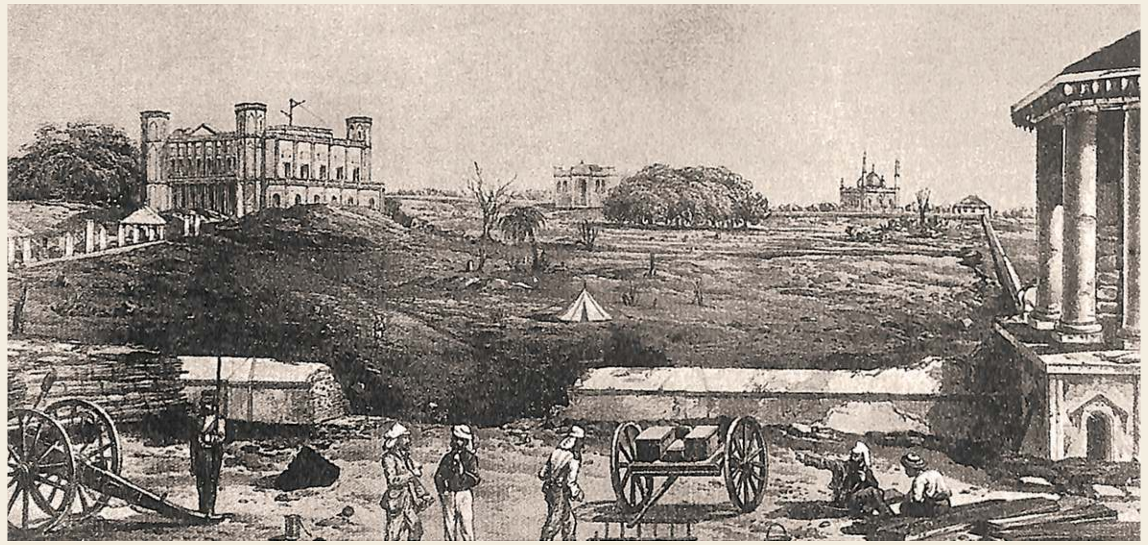
योवर्ड ने बताया कि हज़रत महल के पास बहुत से सरकारी प्रॉमिसरी नोट थे, जिनकी कीमत कई लाख थी। इन्हें लेकर वे नेपाल निकल गईं, जहाँ पर वह जीवित थीं, उनके साथ बिरजीस कदर भी हैं।



दिलकुशा पैलेस, लखनऊ, 1857



आलमबाग का द्वार, 1857



आलमबाग का आन्तरिक भाग, 1857

30 दिसम्बर 1857 को हडसन, कानपुर पहुँचा और बेकर गया, जो कि 14 मील की दूरी पर है और वहाँ पर सेनाध्यक्ष कॉलिन कैम्पबेल ने मोरन की सराय में इनका भव्य स्वागत किया। वहाँ से आगे यह छिबरामऊ पहुँचा।

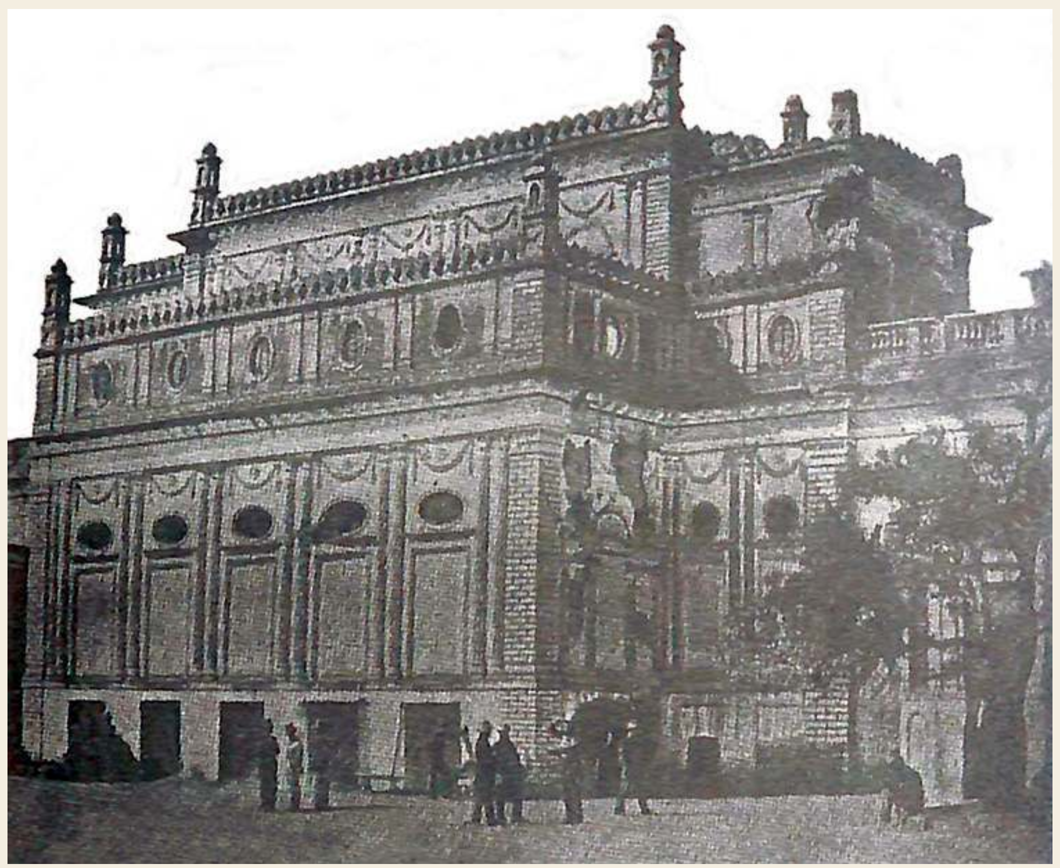
1 जनवरी, 1858 को होपग्रान्ट की ब्रिगेड, कालानदी पहुँची और फतेहगढ़ पर कब्ज़ा किया। अब कॉलिन कैम्पबेल के लिए रूहेलखण्ड पर विजय ज़रूरी थी लेकिन लॉर्ड कैनिंग अवध को पराजित करना चाहता था। गोरखाओं ने क्रान्तिकारियों को एक मुठभेड़ में पराजित किया। जिसमें जंग बहादुर की विशेष भूमिका रही। साथ–साथ उट्रम आलमबाग लखनऊ में पूरी कोशिश कर रहे थे, उन्होंने बैटरीज और अबन्तीज के साथ अपनी मुख्य सेना, कानपुर की तरफ पूरी तरह तैयार कर रखी थी।

जनवरी 1858 में कॉलिन कैम्पबेल ने लखनऊ को पराजित करने के लिए कड़ी मेहनत की, उन्होंने निर्देश जारी किये और अपनी तैयारियाँ लॉर्ड कैनिंग को बताई। 2 मार्च 1858 को ब्रिटिश सेना लखनऊ के निकट पहुँच रही थी। उसी दिन कॉलिन कैम्पबेल दिलकुशा की ओर बढ़े और उनकी भेंट उट्रम से हुई। दिलकुशा को कब्ज़े में कर लिया, उट्रम ने ब्रिगेडियर फ्रैंकलिन की रखवाली में आलमबाग छोड़ा।

5 और 78 क्वींस रेज़ीमेंट फुट्स ने जब दुश्मन को हराया तो उट्रम ने अपना कैम्प फैज़ाबाद रोड पर स्थापित कर दिया। फॉरेस्ट ने बताया कि 7 मार्च को सिपाहियों ने अंग्रेज़ पिकेट्स पर ''स्मार्ट अटैक'' किया। इसके बाद 8 मार्च को मार्टिनियर पर बमबारी की गई, वहाँ के लोगों और पूरी इमारत पर अंग्रेज़ों का कब्ज़ा हो गया।



बैंक्स हाउस



बेग़म कोठी
ए हिस्ट्री ऑफ द इण्डियन म्यूटिनी, जी. डब्लू. फॉरेस्ट 1857–58
रिव्यूड एण्ड इलस्ट्रेटेड फ्रॉम ओरिज़नल डॉक्यूमेंट्स वॉल्यूम II, 1912

बैंक्स हाउस पर हमला करने के लिए 10 मार्च के सवेरे एक बैटरी, एक होवित्सर और 3 इंच के 8 मोर्टार मार्टिनियर पार्क के निकट स्थापित कर दिए गये। बैंक्स हाउस पर आसानी से विजय प्राप्त हो गई।

प्रथम योजना थी कि बैंक्स हाउस को सेना की पोस्ट के रूप में स्थापित कर दिया जाए, इसी के बाद बेगम कोठी पर 11 मार्च को आक्रमण कर उस पर कब्ज़ा किया गया।

अब कैम्प मुख्यालय दिलकुशा में स्थापित हो गया। कॉलिन ने अपने डिस्पैच में लिखा कि ''बेगम कोठी पर कब्ज़ा सबसे मुश्किल काम था, यह सबसे कठिन संघर्ष था।''

इस संघर्ष में दोनों तरफ से लोगों की जानें गयीं और विशेषरूप से हडसन घायल हुआ। फील्ड मार्शल लॉर्ड रॉबर्टस ने अपनी पुस्तक 41 इयर्स इन इण्डिया वॉल्यूम–1 में बताया हडसन कैम्प मुख्यालय में बैठा था, तब उसे पता चला कि बेगम कोठी पर हमला होने जा रहा है। हडसन घोड़े पर शहर की ओर बढ़ा। जैसे ही वे बेगम कोठी पहुँचा, वह घायल हो चुका था।

फॉरेस्ट बताते हैं कि हडसन ने ब्रिगेडियर नेपियर से पूछा कि विद्रोही कहाँ हैं, फोर्ब्स मिचेल जो 93 में सार्जेन्ट थे, उसने इशारे से बताया, हडसन को रोका गया लेकिन हडसन आगे बढ़ा। इसको मार दिया जाए, अपनी ही जल्दबाज़ी के कारण, इसने अपनी जान खो दी। इसका अर्दली एक सिख था, जिसने इसको अपनी बाँहों में लेकर, पालकी में लिटाया और बैंक्स हाउस ले गया।



सिकन्दरबाग के बाहर का दृश्य
ए हिस्ट्री ऑफ द इण्डियन म्यूटिनी, जी. डब्लू. फॉरेस्ट 1857–58
रिव्यूड एण्ड इलस्ट्रेटेड फ्रॉम ओरिज़नल डॉक्यूमेंट्स वॉल्यूम II, 1912



युद्ध के उपरान्त सिकन्दरबाग का दृश्य
ए हिस्ट्री ऑफ द इण्डियन म्यूटिनी, जी. डब्लू. फॉरेस्ट 1857–58
रिव्यूड एण्ड इलस्ट्रेटेड फ्रॉम ओरिज़नल डॉक्यूमेंट्स वॉल्यूम II, 1912



नवाब वाजिद अली शाह द्वारा बनवाया गया सिकन्दरबाग, लखनऊ

शाहनजफ पर कब्ज़ा कर लिया गया। 11 मार्च को कॉलिन कैम्पबेल ने बेगम पैलेस को कब्ज़ा कर लिया, सिकन्दरबाग पर भी कब्ज़ा कर लिया गया। हडसन की स्थिति गम्भीर थी। उसका मित्र नेपियर उसे मिलने आया, हडसन समझ गया कि वह जीवित नहीं बच पायेगा और 11 मार्च 1858 को हडसन की मृत्यु हो गई।

14 मार्च को कैम्पबेल ने लखनऊ पर पुनः कब्ज़ा कर लिया, उसने सिपाहियों को पराजित किया, जिनका नेतृत्व फैज़ाबाद के मौलवी अहमदुल्ला शाह और अवध की बेगम कर रही थीं।

उन्नाव

उन्नाव जिला, गंगा नदी के किनारे स्थित था, यहाँ जून, 1857 के अन्त में क्रान्ति का प्रारम्भ हुआ। प्रारम्भ में यहाँ कोई नेता नहीं था परन्तु शीघ्र ही कुछ स्थानीय नेता उभर के सामने आये, जिनमें डौंडियाखेड़ा के राव रामबख़्श, तरफ–सराय के जस्सा सिंह और कान्था के सेंगरों ने परसंदन (Parsandan) के बरजोर सिंह के नेतृत्व में, बंथर के गौर हाती सिंह और चाँदी सिंह, पुरवा रनबीरपुर के देवीबख़्श, रसूलाबाद के मन्सब अली आदि ने क्रान्ति का नेतृत्व किया।

डौंडियाखेड़ा के राव रामबख़्श को अंग्रेज़ों ने संघर्ष के बाद बंदी बना लिया और 8 जून 1861 को डौंडियाखेड़ा से 5 किलोमीटर दक्षिण में स्थित, बक्सर में एक मंदिर में बरगद के पेड़ पर लटका कर फाँसी दे दी। वह मंदिर भी उसी समय ढहा दिया गया। उनकी रियासत को अंग्रेज़ सरकार द्वारा ज़ब्त कर लिया गया।

तरफ–सराय के जस्सा सिंह को बांगरमऊ में नेता के रूप में पहचान मिली, उन्होंने और उनकी सेना ने जिले में हैवलॉक की सेना का कड़ा मुकाबला किया और ''उन्नाव के युद्ध'' में वह गम्भीर रूप से घायल हो गये।

सेंगर नेता बरजोर सिंह ने भी अंग्रेज़ों का मुक़ाबला किया और बंदी बनाये गये, शीघ्र ही जेल में इनकी मृत्यु हो गयी। रसूलाबाद के ताल्लुकदार, मन्सब अली को उनकी रियासत के एक बड़े भाग से वंचित कर दिया गया।

प्रयागराज (इलाहाबाद)

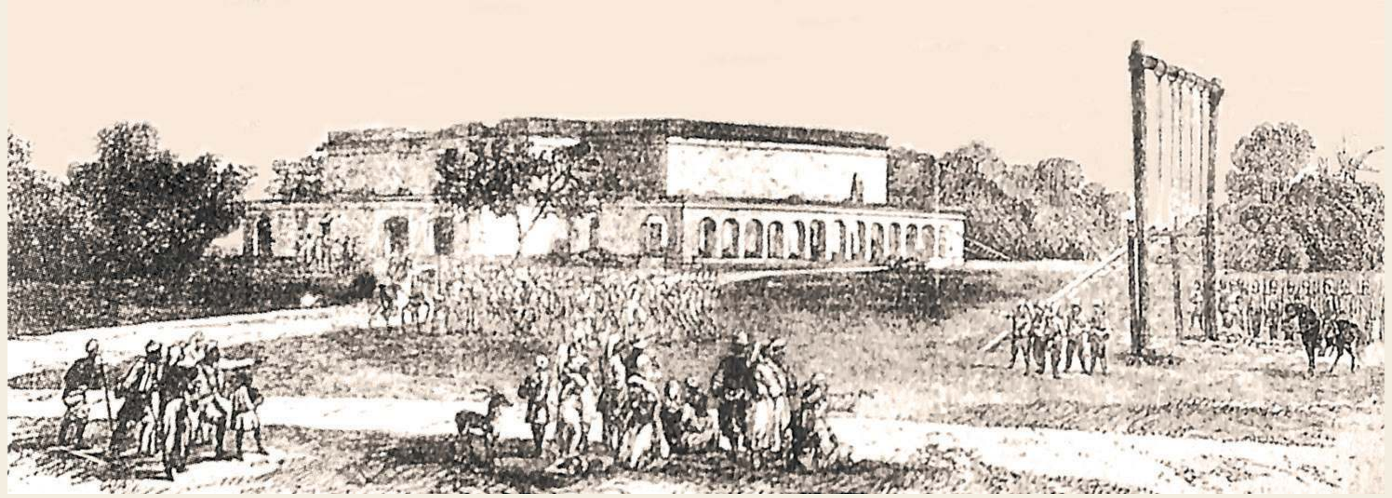
इलाहाबाद (प्रयागराज) में स्वतंत्रता सेनानियों ने दारागंज व पुल (ब्रिज ऑफ बोट्स) पर कब्ज़ा कर लिया और इनको किले के पास से कोई हटा नहीं पाया। पूरे शहर में उथल पुथल थी। रेलवे और टेलीग्राफ के तार, सिपाहियों द्वारा काट दिये गये। सिपाहियों द्वारा सरकारी खज़ाना भी लूट लिया गया और लूट का धन आपस में बाँट लिया गया।

लियाकत अली एक स्कूल मास्टर थे, जिन्हें चैल के ज़मींदार समर्थन दे रहे थे। उन्होंने दिल्ली के राजा की ओर से स्वयं को इलाहाबाद का गवर्नर घोषित किया। उन्होंने अपना मुख्यालय, खुसरोबाग में बनाया। 11 जून को नील उनका विद्रोह दबाने के लिए वहाँ पहुँचा।

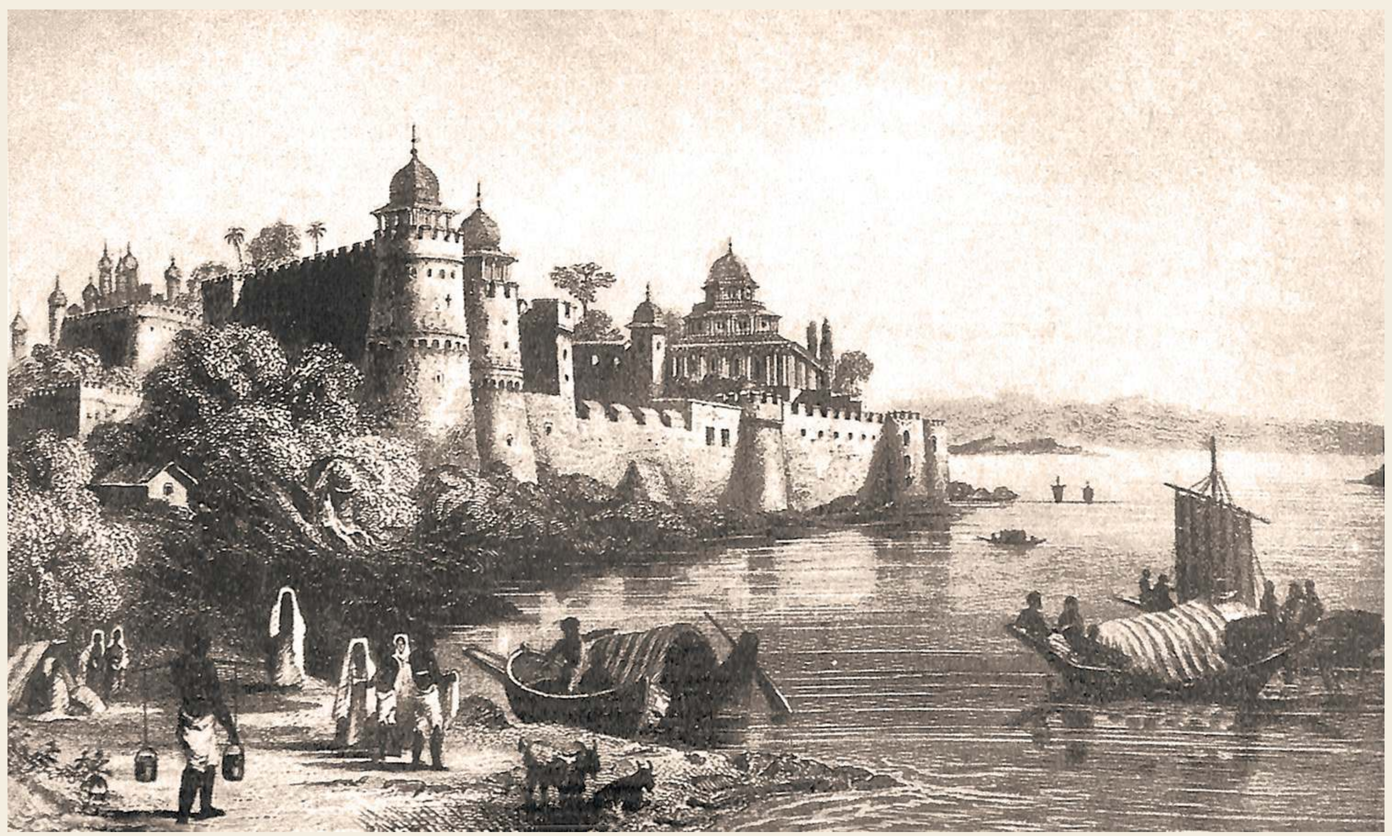
14 जून को फ्यूसिलियर का एक समूह, स्टीमर द्वारा जमुना नदी से होकर लाया गया। 15 जून को कीडगंज और मुट्ठीगंज पर हमला किया गया। नील ने वहाँ बहुत अत्याचार किये, जब हैवलॉक वहाँ पहुँचा तो उसने हर पेड़ पर सिपाहियों के शव लटके हुए देखे।

800 व्यक्ति इलाहाबाद में फाँसी पर लटका कर मार दिये गये, बहुत से शव शहर में भी पड़े हुए थे। हैवलॉक ने इलाहाबाद की कमान ली और इसे विशाल सेना का अड्डा बना दिया, जहाँ से विद्रोह को दबाने का कार्य किया जा सकता था।

सिपाहियों ने सोरांव व थापामऊ पर दुबारा कब्ज़ा किया और नुसरतपुर पर वे पराजित हो गये। 11 जुलाई को गंगा पर नावें जला दी गयीं और जो किला दहियावन पर था, उस पर भी हमला हुआ।



इलाहाबाद में कोर्ट हाउस और फाँसी



इलाहाबाद के किले का दृश्य, 1857

1000 से ज़्यादा लोग मारे गये, परगना चैल में स्थिति और बिगड़ी हुई थी। यह क्रान्ति घटनाक्रम जारी रहा। ढक्कन सिंह, धारवाल के ज़मींदार थे, क्रान्ति में इनका नाम भी प्रमुख रूप से लिया जाता है।

एफ. टॉमसन, इलाहाबाद का मजिस्ट्रेट था, उसने विश्लेषण किया है कि दोआब परगना के ज़मींदार, क्रान्ति में सम्मिलित हो गये। प्राग्वाल ब्राह्मणों ने भी अंग्रेज़ों को नष्ट करने के प्रयास में योगदान दिया। टॉमसन– जनता स्वाभाविक रूप से ज़मींदारों के साथ थी।

जनवरी 1858 में लॉर्ड कैनिंग इलाहाबाद पहुँचा और फरवरी में घोषित किया कि पूरा नॉर्थ वेस्ट प्रॉविंस, एक लेफ्टिनेंट गवर्नर के अन्तर्गत हो जाएगा और आगरा से सीट ऑफ गवर्नमेन्ट, इलाहाबाद स्थानान्तरित कर दी।

कानपुर

हैवलॉक 7 जुलाई 1857 को इलाहाबाद छोड़कर कानपुर गया। 12 जुलाई 1857 फतेहपुर पर इसने कब्ज़ा किया।

विनायक दामोदर सारवरकर ने कहा है कि ''1857 की क्रान्ति का अंकुरण, ब्रह्मावर्त (बिठूर) के महल में हुआ था...।'' कानपुर शहर, गंगा के दक्षिणी किनारे पर स्थित था।

मार्च–अप्रैल 1857 में 61 यूरोपीय आर्टिलरी के सिपाही थे और अंग्रेज़ों की देसी सेना के केवल यही प्रतिनिधि थे। पहली, 53वीं, 56वीं नेटिव इन्फैंट्री, दूसरी कैवलरी एवं नेटिव जो बैटरी से जुड़े थे, इनकी संख्या 3000 की थी।

1 मई 1857 में कानपुर की कमान सर ह्यू व्हीलर के हाथ में थी। 14 मई को मेरठ विद्रोह तथा दिल्ली की घटनाओं का समाचार कानपुर पहुँचा। इसके बाद ही उन्होंने लॉर्ड कैनिंग को टेलीग्राम में लिखा कि ''यहाँ की सेना, वर्तमान में बहुत तत्पर है लेकिन सेना में उत्तेजना है''।

22 मई को जनरल व्हीलर ने भारत सरकार को बताया कि उसने अपनी तोपें, सही स्थानों पर रख दी हैं, ख़तरे की सम्भावना है और 32 रेज़ीमेंट के 55 यूरोपीय पहुँच गये हैं। अवध इर्रेगुलर कैवलरी, जो हेनरी लॉरेन्स ने भेजी। दो तोपें और 300 सिपाही, बिठूर के महाराजा ने पहुँचाई।

बिठूर के महाराजा के विषय में जनरल व्हीलर का कहना था– क्योंकि ये मराठा था इसलिए यह अन्य सेनाओं के साथ सम्मिलित नहीं होगा। उस समय शान्ति की स्थिति थी लेकिन उस समय कुछ भी कहना सम्भव नहीं था कि भविष्य में क्या होगा।

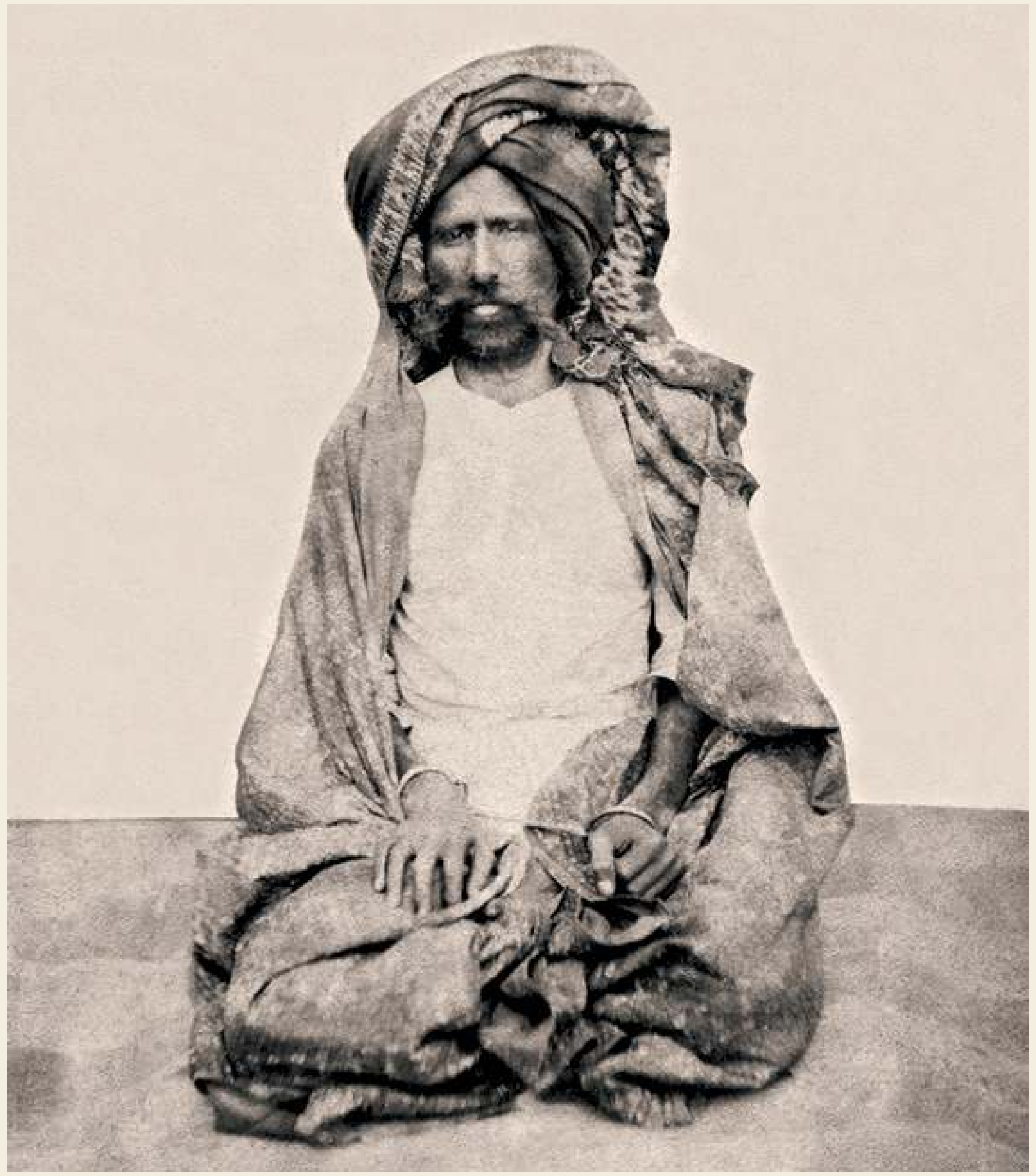


नाना साहेब पेशवा
नाना साहब पेशवा एण्ड द फाइट फॉर फ्रीडम, आनन्द स्वरूप मिश्र
आई० डी० लखनऊ 1961

महाराजा बिठूर का पूरा नाम, नाना गोविन्द धोन्दूपंत था। ये बाजीराव II के दत्तक पुत्र थे, जोकि अन्तिम ब्राह्मण पेशवा थे। इनके दो भाई, बाबा साहब और बाला साहब थे। इनके भतीजे, राव साहब थे, जोकि अपने लक्ष्य की प्राप्ति के लिए अपने धन एवं प्राणों का बलिदान देने के लिए तैयार थे। अंग्रेज़ सरकार ने इन्हें स्वाभाविक पुत्र के रूप में मान्यता नहीं दी तो इन्होंने भारत सरकार के निर्णय के विरुद्ध, ब्रिटिश सरकार से इंग्लैण्ड में अपील की और अपने एक विश्वासपात्र अजीमुल्ला खान को लन्दन भेजा, ये कानपुर में इनके एक ख़िदमतगार थे।

सावरकर इनके विषय में बताते हैं कि यह नीचे के पद से अपनी योग्यता और मेहनत के कारण ऊँचे पद पर पहुँच गये। इन्होंने यूरोप की राजनीति और युद्धों के विषय में पढ़ा था और उन्होंने निर्णय कर लिया कि वे अपने देश को दासप्रथा से मुक्त करने के लिए इस ज्ञान का उपयोग करेंगे। लेकिन लंदन में अपनी माँग पूर्ति में ये असफल हो गये। ये अपनी यात्रा में, क्रीमिया के युद्ध से प्रभावित हुए और उन्होंने कहा कि रूसियों ने फ्रांसीसियों और अंग्रेज़ों को हरा दिया था। और उनका विश्वास था कि इसी प्रकार अंग्रेज़ों की शक्ति भी दब जाएगी। परन्तु जब वे कानपुर लौटे तो नाना साहब निराश थे लेकिन वे मराठा समूह के अध्यक्ष थे।

नाना साहब के साथ, मराठा तात्या तोपे भी थे। इनके पिता का नाम पाण्डुरंग भट्ट था। नाना साहब, झाँसी की रानी और तात्या टोपे, बचपन के मित्र थे। कानपुर शहर में ये सभाएँ हो रही थीं। हिन्दू और मुसलमानों का एक गुप्त सम्मेलन, स्कूल के अध्यापक और छात्र भी इस विद्रोह पर वार्ता कर रहे थे। अफसरों के निर्देशों का पालन करने से सिपाहियों ने इन्कार किया। केवल वो निर्देश, जो स्वदेशी अफसर उनको देते थे, वह उन्हीं का पालन करते थे।



ज्वाला प्रसाद
कानपुर में नाना साहब के सेनापति
गेरिसन के नावों पर प्रस्थान से एक रात्रि पूर्व ज्वाला प्रसाद, व्हीलर की खंदक में ठहरे थे। कोयला घाट पर नेतृत्व किया और ''जून के संहार'' का आदेश दिया। 3 मई 1859 को इन्हें घाट के उसी स्थान पर फाँसी दी गई, जहाँ उन्होंने नेतृत्व किया था

सर हयू व्हीलर का विश्वास था कि नाना साहब ने 22 मई को, दो तोपों और 300 निजी सिपाहियों के साथ, कानपुर में प्रवेश किया। इनकी सेना में 10000 प्रशिक्षित उच्च कोटि के सैनिक थे। अंग्रेज़ों की सेना में गर्मी से परेशान 900 सिपाही थे।

हिलर्सडेन, कानपुर का कलेक्टर था। जिसने कोष को सुरक्षित रखने के लिए नाना साहब और तात्या तोपे को धन्यवाद दिया। अगर आवश्यकता होगी तो नाना की सेना द्वारा अंग्रेज़ महिलाएँ और बच्चे, नाना के महल ब्रह्मवर्त में पहुँचाए जाऐंगे।

केयी का कहना है– ''नाना ने ऐसे ही नहीं पढ़ा था, शिवाजी का इतिहास, जोकि मराठा साम्राज्य के संस्थापक थे।''

सावरकर का कहना था कि ''स्वतंत्रता लक्ष्य था और युद्ध उसका माध्यम था। सामान्य जन को यह बताया गया था परन्तु कौन नेता होगा, क्या स्थान होगा, यह गुप्त रखा गया। केवल गुप्त संगठन के अध्यक्ष के पास विस्तृत सूचना थी।''

कानपुर की गुप्त सभाओं की बैठक, सूबेदार टिक्का सिंह के आवास पर होती थी। शम्सुद्दीन खान, जो एक सिपाही नेता था। नाना साहब की ओर से ज्वाला प्रसाद और मुहम्मद अली इन बैठकों में सम्मिलित होते थे।

1 जून की शाम, नाना साहब, उनके भाई बाला साहब और मंत्री अजीमुल्ला खान, पवित्र गंगा के किनारे पहुँचे और टिक्का सिंह और गुप्त संगठन के अध्यक्ष से भेंट की और एक नाव द्वारा पवित्र गंगा के पानी में प्रवेश किया। सबने शपथ ग्रहण की और गंगा का पानी हाथों में लिया और कहा कि वे एक खूनी युद्ध में भाग लेंगे।

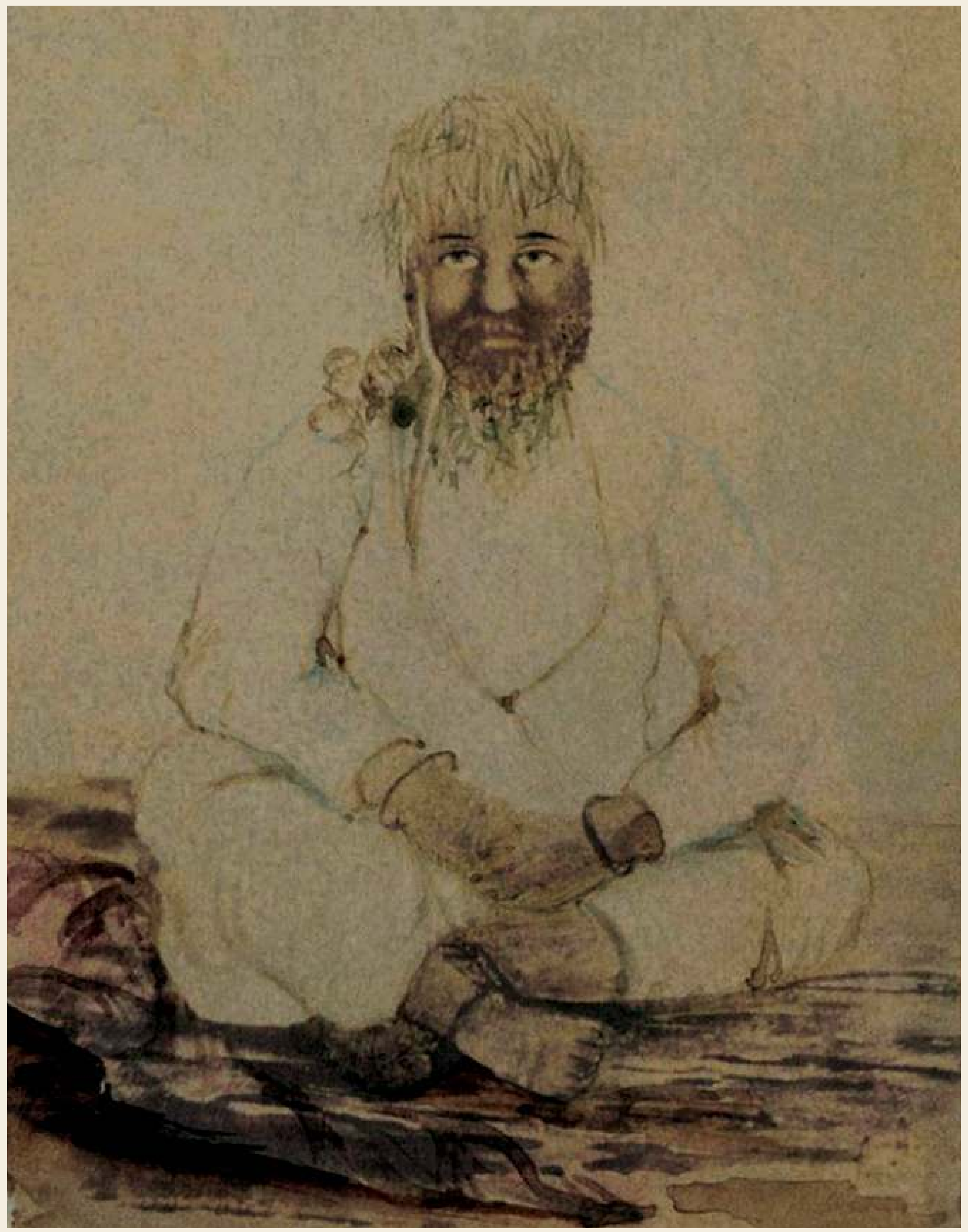


क्रान्ति दूत अजीमुल्ला खाँ, नाना साहब के विश्वसनीय सलाहकार
नाना साहब पेशवा एण्ड द फाइट फॉर फ्रीडम, आनन्द स्वरूप मिश्र। आई. डी. लखनऊ 1961

4 जून की रात्रि को 3 गोलियाँ चलाई गयीं और कुछ इमारतें जलाई गईं, यह प्रतीक था कि विनाश का समय आ चुका है। कुछ अंग्रेज़ों के आवास और अस्तबल जलाए गये।

कुछ समय के बाद 2 कैवलरी के सिपाही पहुँचे और पहली रेज़ीमेंट बाहर निकली और पुकारा "दीन एवं देश" कुछ समय के बाद पूरी रेज़ीमेंट कैवलरी के साथ मिल गई और पूरी सेना ने मार्च किया। और युद्ध गीत (war song) गाते हुए, नाना के पास, नवाबगंज कैम्प में पहुँचे।

नाना के सिपाही नवाबगंज कोष के पास तैयार थे। सारा कोष, शस्त्र भण्डार आदि क्रान्तिकारियों के हाथ में आ गया, साथ ही 2 रेज़ीमेंट भी कानपुर में थी। अंग्रेज़ों को ऐसा लगा कि यह 2 रेज़ीमेंट विद्रोह नहीं करेंगी, उन्हें उनके आवास पर जाने की अनुमति दे दी गई किन्तु कुछ समय के बाद ही अंग्रेज़ों और सिपाहियों के बीच मुठभेड़ हुई परन्तु सिपाहियों ने किसी भी अफसर को नहीं मारा। 3000 सिपाही 5 जून को नाना के पास नवाबगंज में थे। नवाबगंज में तात्या टोपे और अजीमुल्ला खान भी थे।



तात्या टोपे
नेशनल आर्मी म्यूज़ियम, लंदन

नाना साहब की गारद के एक कैप्टन थे (म्यूटिनी नरेटिव कानपुर)। इनका जन्म, महाराष्ट्र के अहमदनगर जिले के येवला नामक गाँव में एक ब्राह्मण कुल में हुआ था। इनके पिता पाण्डुरंग भट्ट शास्त्रों के विद्वान थे। पाण्डुरंग भट्ट की पत्नी का नाम रुकमाबाई था। रुकमाबाई को ही तात्या टोपे की जननी बनने का गौरव प्राप्त है। तात्या इनके ज्येष्ठ पुत्र थे, उनका वास्तविक नाम रामचन्द्र था।

तत्कालीन पेशवा बाजीराव के कानों तक, जब पाण्डुरंग भट्ट की विद्वता की खबर पहुँची तो उन्होंने उन्हें पूना में अपना आश्रय प्रदान किया। ब्रह्मवर्त (बिठूर) आते ही पाण्डुरंग को अपनी यज्ञशाला और धार्मिक विभाग का अध्यक्ष नियुक्त किया। तात्या अपने पिता के साथ, अक्सर बाजीराव के महल में जाया करते थे। यहीं उनकी मित्रता, बाजीराव के गोद लिये पुत्र, नाना से हुई, जो तात्या से लगभग 10 वर्ष छोटे थे परन्तु दोनों में अच्छी मित्रता हो गई। नाना साहब भी इन्हें अपना मित्र, दार्शनिक एवं मार्गदर्शक मानते थे।

कानपुर के बचाव की अन्तिम लड़ाई में जनरल हैवलॉक के विरुद्ध, तात्या टोपे ने सैन्य कुशलता के साथ तैयारी की। सर जॉन केयी जो मिलिट्री इतिहासकार थे, उसने लिखा कि (History of the sepay war) राष्ट्रीय सेना को इस प्रकार से तैनात किया गया था, जिसने उस ब्रिटिश कमाण्डर की सारी शक्ति को थका दिया, जिसने युद्ध कला (Art of war) का अध्ययन, पूरे जीवन में किया था। पहले ही तीन हज़ार सिपाहियों ने नाना साहब को अपने राजा के पद पर चुना था। वे उनको देखना चाहते थे, इनका शाही सम्मान किया गया और इसी के बाद ही सिपाहियों ने अपने अफसरों को चुना।



सूबेदार टिक्का सिंह

सूबेदार टिक्का सिंह, कानपुर के क्रान्तिकारी केन्द्र के मुख्य नेता थे, उन्हें जनरल की उपाधि दी गयी थी। नये सेना नियम जारी किए गये, जमादार दलगंजन सिंह 53वीं रेज़ीमेंट के कर्नल चुने गये और सूबेदार गंगादीन 56वीं रेज़ीमेंट के कर्नल चुने गये।

इसके बाद ही हाथी की पीठ पर, स्वतंत्रता के ध्वज के साथ एक जुलूस निकला और उसी दिन नगाड़ा बजाकर घोषित किया गया कि नाना का शासन आरम्भ हो गया है।

अब नाना साहब ने समझ लिया कि समय नहीं बर्बाद करना है और सबसे पहले किलेबन्दी करनी है। 6 जून की सुबह, व्हीलर को नाना साहब का पत्र मिला कि वे हमला आरम्भ करने जा रहे हैं। व्हीलर ने अपनी पूरी तैयारी कर ली।

जैसे ही युद्ध की सूचना मिली, टिक्का सिंह शस्त्र भण्डार की ओर गये और बन्दूकें अंग्रेज़ किले के विरुद्ध लगा दीं, नदी और ज़मीन दोनों तरफ से। इस हमले की तैयारी पूरी सैन्य कुशलता से की गई, कानपुर शहर में भारी उथल पुथल थी। हर वर्ग के लोग और हिन्दू–मुसलमान सभी थे और प्रभावशाली चाँदी के व्यापारी भी, अंग्रेज़ों की खोज में लग गये। दफ्तर, दुकानें और अंग्रेज़ी रिकॉर्ड जला दिये गये।

दूसरे दिन अंग्रेज़ी किले पर कब्ज़ा आरम्भ हो गया। नाना साहब की तोपों ने अंग्रेज़ी इमारतों पर हमला किया, 7 जून को अंग्रेज़ महिलाएँ और बच्चे, वहाँ से भागने लगे। कुछ दिनों के बाद, किले में पानी की कमी हो गई, वहाँ एक ही कुआँ था, जो काम का था। गर्मी का समय था, दूध की कमी के कारण बच्चे मरने लगे। सर व्हीलर का पुत्र भी युद्ध में भाग ले रहा था, जो घायल हो गया।



अज़ीज़न बाई
कानपुर स्वतंत्रता संग्राम में महत्वपूर्ण भूमिका निभाने वाली महिला
नाना साहब पेशवा एण्ड द फाइट फॉर फ्रीडमः आनंद स्वरूप मिश्रा
इनफॉरमेशन डिपार्टमेंट यू.पी., लखनऊ 1961

इस युद्ध में कई विस्फोट भी हुए, मजिस्ट्रेट हिर्ल्सडेन अपनी पत्नी को बरामदे में ले जा रहा था तो एक कैनन बॉल उसके ऊपर गिरा और वह उड़ गया, उसकी पत्नी की भी मृत्यु हो गई। हैजा (कालरा), पेचिश और टायफाइड भी फैल गया था, सर जॉर्ज पार्कर, कर्नल विलियम्स और लेफ्टिनेंट रूनी की भी मृत्यु हो गई। सभी ओर 21 दिन तक बदले की भावना फैली थी।

कानपुर की महिलाओं में अज़ीज़न बाई का योगदान भी विशेषरूप से उल्लेखनीय है। इन सबने अपने हरम त्याग कर, युद्ध में भाग लिया। नानक चन्द्र ने अपनी डायरी में लिखा कि अज़ीज़न शस्त्रों से सुसज्जित होकर, घोड़े पर सवार होकर, बिजली की तरह कौंध रही थी। कानपुर के व्यापारी जानकी प्रसाद एवं नानक चन्द्र ने इनका ब्यौरा दिया है। थके और घायल सिपाहियों को यह दूध और मिठाई बाँटती थी। ट्रिवेलियन ने 'कानपुर' में अज़ीज़न की भूमिका बताई है।

जब कानपुर में स्वतंत्रता संग्राम प्रारम्भ हुआ तो अज़ीज़न नामक महिला ने देश हित में अपना सर्वस्व दाँव पर लगा दिया। कानपुर को पुनः विजित करने के बाद, ब्रिटिश सेनापति हैवलॉक ने इन्हें गिरफ्तार कर लिया और उनके आत्मसमर्पण कर देने पर ही उन्हें जीवित छोड़ देने का वादा किया। परन्तु साहसी अज़ीज़न ने आत्मसमर्पण करना, अस्वीकार कर दिया। जैसे ही बन्दूक की गोलियाँ उनके शरीर में प्रविष्ट हुईं, उन्होंने अपने गुरु को याद किया। वह चिल्ला उठीं– 'नाना साहब की जय'।

युद्ध के समय ही नाना साहब, नागरिक शासन की पूरी तैयारी कर रहे थे। सबसे पहले उन्होंने कानपुर के निवासियों के लिए न्याय और सुरक्षा का प्रबन्ध किया। हुलास सिंह को मुख्य मजिस्ट्रेट चुना गया।



भारतीय घुड़सवार सेना द्वारा कानपुर की लड़ाई में एक ब्रिटिश पैदल सेना पर आक्रमण

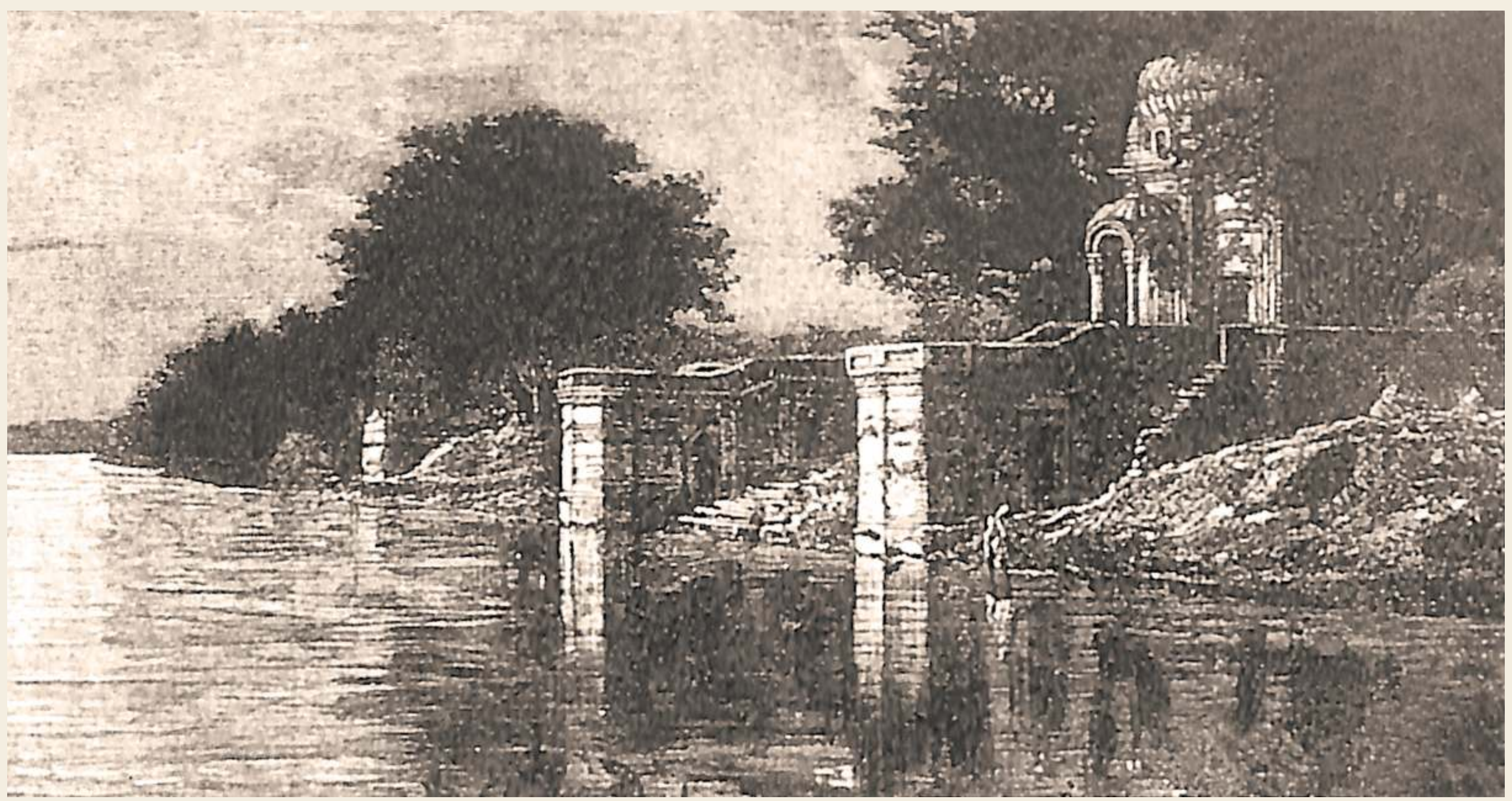
ज्वाला प्रसाद और अज़ीमुल्ला को जज के पद पर नियुक्त किया गया, नाना साहब को अध्यक्ष बनाया गया।

क्रान्तिकारियों ने अंग्रेज़ों के किले पर हमला किया। 12 जून को कानपुर में आर्टिलरी को ज़्यादा महत्व दिया गया। सावरकर के अनुसार, सिपाहियों ने विशेष वीरता दिखाई। तोपों की अग्निवर्षा को नज़रअंदाज़ करके 18 जून को सैनिक, तीर के समान आगे बढ़े और किले की दीवारों पर चढ़ गये और अंग्रेज़ी तोपें छीन लीं।

23 जून 1757 को अंग्रेज़ों ने अपनी शक्ति की आधारशिला, प्लासी की ज़मीन पर रखी थी। उस दिन हिन्दुस्तान में उनकी पहली विजय हुई थी। उस दिन हिन्दुस्तानियों का जो अपमान हुआ था, उसे वे कभी नहीं भूल पाये।

ज्योतिर्विज्ञानियों ने बताया था कि इसका बदला 23 जून, 1857 को लिया जाएगा और इस दिन नाना साहब के कैंप ने लाभ उठाने का पूरा प्रयास किया। आर्टिलरी, कैवलरी और इन्फेंट्री सभी युद्ध स्थल पर उतर आये। तीनों आगे बढ़े, पड़ोसी गाँवों से भी क्रान्तिकारियों की सहायता के लिए लोग आये और किले के अन्दर से भी लोगों ने युद्ध लड़ा।

उस दिन की लड़ाई के बाद, अंग्रेज़ निराश हो गये और वे समझ गये कि नाना के विरुद्ध वे किले को नहीं जीत सकेंगे। 25 जून को किले की दीवार पर शान्ति का ध्वज लहराया गया और युद्ध शान्ति सन्धि की घोषणा की। इसे देखकर, नाना साहब ने युद्ध रोक दिया। अंग्रेज़ों ने एक अंग्रेज़ महिला के हाथों, नाना साहब को एक पत्र भेजा। इसके बाद ही अंग्रेज़ों से कहा गया कि अपने आर्टिलरी, कोष, शस्त्र, नाना साहब को समर्पित कर दें और नाना साहब, अंग्रेज़ों के दल को इलाहाबाद ले जाएँ



सती चौरा घाट

(Red Pemphlet G.B. Melleson - 1857)। अंग्रेज़ों ने कानपुर छोड़ने की तैयारी की। कुछ राष्ट्रीय स्वयंसेवक कानपुर पहुँच रहे थे, समाचार फैल गया था कि नाना ने स्वतंत्रता का ध्वज कानपुर में फहराया था। जब समाचार मिला था कि अंग्रेज़ों ने क्रूरता से हिन्दुस्तानियों पर हमला किया था, तब हज़ारों सिपाही काशी और इलाहाबाद से पहुँच चुके थे और सब वहाँ पर चिल्ला रहे थे, बदला–बदला। सिपाहियों के बीच में अंग्रेज़ अफसरों ने 'कतल' शब्द की ध्वनि सुनी।

जी.ओ. ट्रिवेलियन की पुस्तक कानपुर में बताया कि एक पण्डित ने सिपाहियों को समझाया कि उनका सिर कलम करने में कोई पाप नहीं है, जो देशद्रोही हैं और जिन्होंने लोगों को दास बनाया है।

27 जून को सती चौरा घाट पर अंग्रेज़ दिखाई दिए, घाट के चारों ओर कैवलरी, इन्फैंट्री, आर्टिलरी थी। सुबह से ही कानपुर के नागरिक गंगा के किनारे जमा थे, दृश्य को देखने के लिए अज़ीमुल्ला खान, बाला साहब और तात्या टोपे, एक मन्दिर की बाल्कनी में खड़े थे, इस मन्दिर के अन्दर हरदेव की मूर्ति थी। सावरकर– उस समय ऐसा लग रहा था कि सब कुछ शिव के हाथ में था। अंग्रेज़ों को किले से ले जाने के लिए नाना साहब ने अच्छी तैयारी की थी। व्हीलर के लिए एक सुन्दर सज़ा हुआ हाथी था, जिसे नाना साहब के महावत लाए थे। व्हीलर ने अपने परिवार को हाथी पर बैठाया और स्वयं पालकी में गया। अंग्रेज़ी ध्वज, किले पर नीचे किया गया और स्वतंत्रता और धर्म का ध्वज, उसके स्थान पर लगाया गया। अब वे कैदी वहाँ से प्रसन्न होकर, किले के बाहर आये। नाव द्वारा पूरा दल, गंगा पार करने लगा, फिर तात्या टोपे ने अपना हाथ हिलाया और नाव को आगे बढ़ने का इशारा किया।



नाना नारायण राव, मराठा राम चन्द्र पंत के सुपुत्र, जो पेशवा के सेनापति थे। यह माना गया है कि क्रान्ति के दौरान, उन्होंने दोहरी भूमिका निभाई। अंग्रेज़ों को अपनी सेवा प्रदान करते हुए, कुछ समय के लिए नाना साहब को भी सेवा प्रदान करी
जान निकोलस ट्रेसिडर द्वारा खीचा हुआ चित्र



कानपुर जिले के जलते हुए एक गाँव से भारतीयों को निकालते हुए

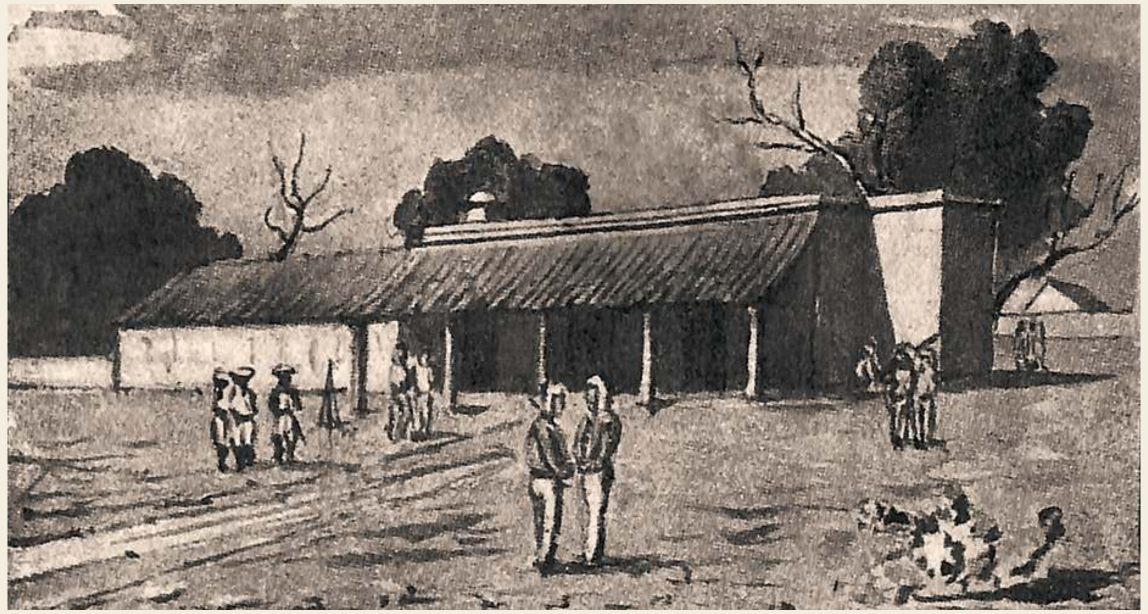
वातावरण शान्त था, तभी किसी ने एक बिगुल बजा कर शान्ति को भंग किया। इसी के बाद ही तोप, राइफल, तलवार, खुखरी और बंदूकों की आवाज़ें सुनाई पड़ीं। नाव पर सवार लोग, कूद कर किनारे आ गये। सिपाही पानी में कूद पड़े, केवल एक ही आवाज़ सुनाई दे रही थी कि मारो फिरंगी को। पुरुष–महिलाएँ गंगा में कूद पड़े, कुछ तैरने लगे, कुछ डूब गये, कुछ गोली का निशाना बन गये। पूरी गंगा रक्त से लाल हो गई, जिसने भी पानी से बाहर सिर निकाला, उसे गोली से मार दिया गया।

सवेरे के 10 बज रहे थे, नाना साहब अपने महल में थे। इनके पास सूचना आई कि सिपाहियों ने अंग्रेज़ों का हत्याकाण्ड आरम्भ कर दिया था।

नाना साहब ने सुना तो कहा कि यह सब महिलाओं और बच्चों के साथ करने की आवश्यकता नहीं थी। नाना ने कहा कि अंग्रेज़ों को मारो लेकिन महिलाओं और बच्चों को कोई नुकसान नहीं पहुँचना चाहिए।

जब तक निर्देश पहुँचा, सिपाही अपना कार्य कर चुके थे। अंग्रेज़ नावों में जल रहे थे, व्हीलर की मृत्यु हो गई थी, हिर्ल्सडन की भी मृत्यु हो गयी थी। नाना के निर्देश पर महिला और बच्चे ज़िन्दा निकाले गये और कैदी के रूप में सावदा कोठी ले जाए गये। बाकी बचे अंग्रेज़ों को एक लाइन में खड़ा करके, मार दिया गया। महिलाओं और बच्चों के प्रति नाना साहब का व्यवहार बहुत मानवतापूर्ण था।

28 जून को नाना साहब ने दरबार में मिलिट्री सेना परेड बुलाई। वहाँ दिल्ली के सम्राट को 101 तोपों की सलामी दी गई। फिर नाना साहब को 21 तोपों की सलामी दी गई।



बीबीघर का दृश्य, जहाँ क्रान्तिकारियों ने अंग्रेज़ महिलाओं एवं बच्चों की हत्या की
ए हिस्ट्री ऑफ द इण्डियन म्यूटिनी, जी. डब्लू. फॉरेस्ट 1857–58
रिव्यूड एण्ड इलस्ट्रेटेड फ्रॉम ओरिज़नल डॉक्यूमेंट वॉल्यूम I, 1912



मेजर जनरल हेनरी हैवलॉक



ब्रिगेडियर जनरल जे. जी. नील

ए हिस्ट्री ऑफ द इण्डियन म्यूटिनी, जी. डब्लू. फॉरेस्ट 1857–58
रिव्यूड एण्ड इलस्ट्रेटेड फ्रॉम ओरिज़नल डॉक्यूमेंट वॉल्यूम I, 1912

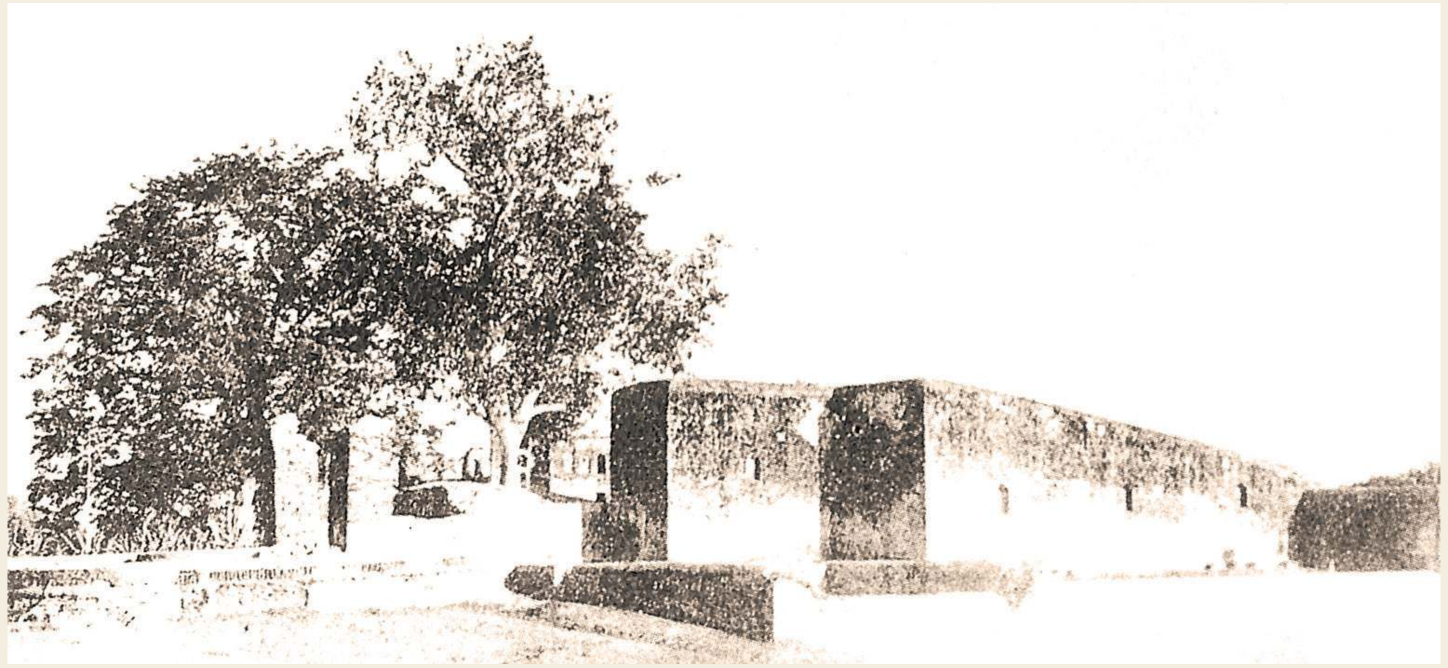
परेड की मिलिट्री रिव्यू के बाद, नाना साहब, बाला साहब के साथ ब्रह्मवर्त के महल में पहुँचे। 1 जुलाई को उनकी ताजपोशी की तैयारी की गई। पेशवा के पुराने तख्त को सम्मान के साथ दरबार में लाया गया।

नाना वहाँ पहुँचे, तोपें सलामी दे रही थीं। ये तख्त पर बैठे, इन्हें जनता का पूरा सहयोग मिला और इन्हें धार्मिक रूप से भी सहयोग मिला। 'कानपुर' में ट्रेविलियन ने लिखा है कि इन्हें तोहफे भी दिए गये।

सती चौरा घाट से बचे हुए अंग्रेज़ महिलाएँ और बच्चों की संख्या 200 थी, इन्होंने एक बंगले में शरण ली, जो बीबीघर के नाम से जाना जाता था। नाना साहब के पास सूचना आई कि हैवलॉक इनकी सहायता के लिए इलाहाबाद से कानपुर आ रहा है। एक सेना भेजी गई परन्तु वह पराजित हो गई।

15 जुलाई को हैवलॉक को सूचना मिली कि बीबीघर में बन्दी लोगों को तलवार से मार दिया गया। 16 जुलाई को उनके शव बंगले में स्थित कुएँ में फेंक दिए गये। कुसुमाबाई, पेशवा बाजीराव की पुत्री और नाना साहब की बहन थी, इनकी अवस्था इस समय 10 वर्ष थी। उनका विश्वास था कि बीबीघर की घटना में नाना साहब निर्दोष थे।

16 जुलाई को हैवलॉक ने नाना की फौजों को फतेहपुर और कानपुर के प्रथम युद्ध में पराजित किया। 17 जुलाई को सवेरे, पाउडर मैगजीन कानपुर में विद्रोहियों द्वारा उड़ा दिया गया और शाम को नाना साहब ने बिठूर छोड़ दिया। 18 जुलाई को शहर में हैवलॉक की अनुमति से, ब्रिटिश शक्ति की दोबारा स्थापना की घोषणा की गई।



बिठूर पैलेस के खण्डहर



सरस्वतेश्वर मंदिर

ब्रिगेडियर नील का जर्नल, 22 जुलाई की कानपुर की लूट का विवरण देता है। अफसरों ने यहाँ लूट में भाग लिया, जोकि अच्छा उदाहरण नहीं है। जनरल हैवलॉक ने भी इसकी आलोचना की।

यहाँ के लोगों पर 3 लाख रुपये का दण्ड लगाया गया क्योंकि उन्होंने नाना साहब के शासन को स्वीकृत किया था। हैवलॉक, कानपुर में थोड़े समय तक रहा, फिर लखनऊ गया, इनके स्थान पर नील आ गया।

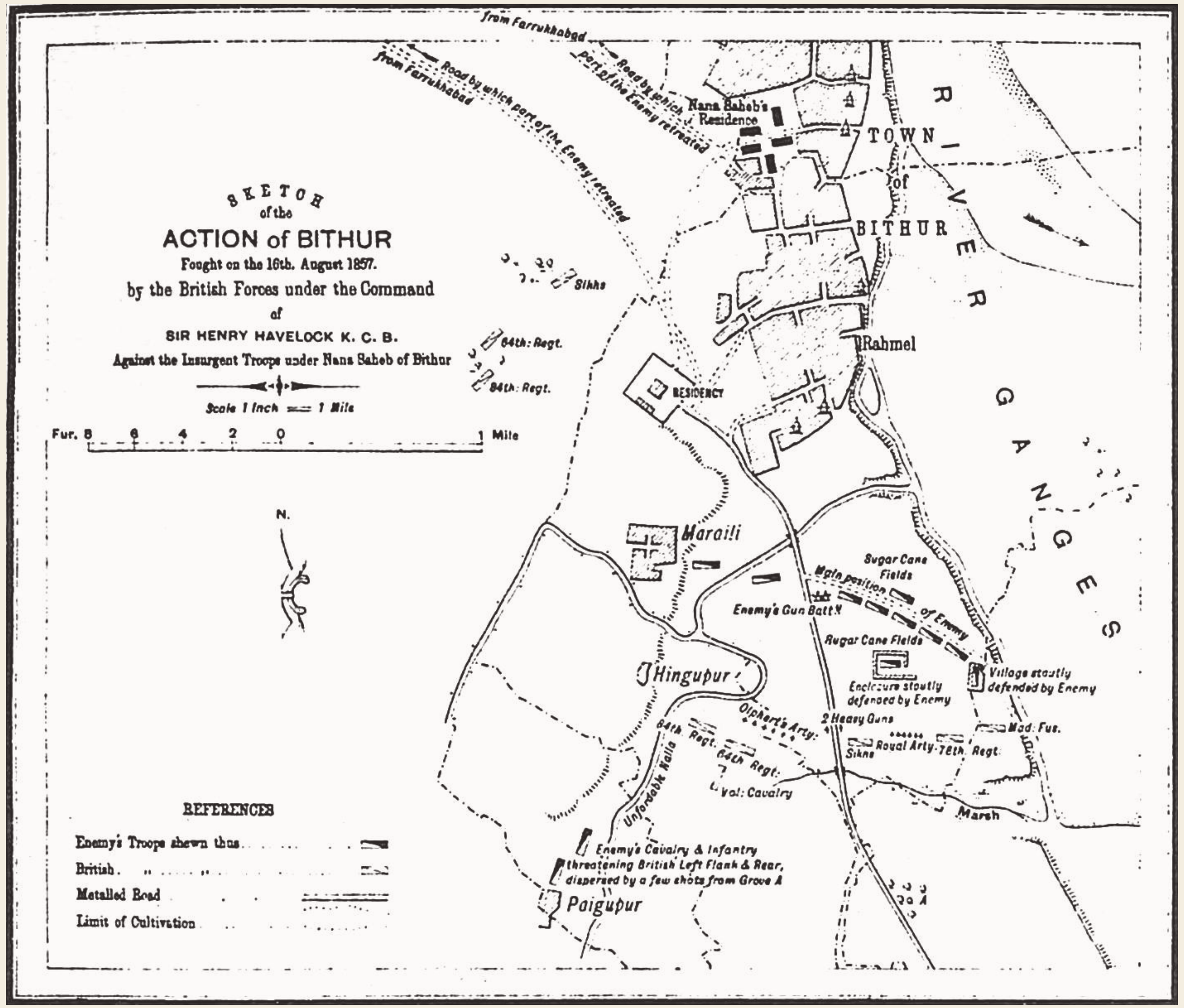
सर जॉर्ज ट्रेवेलियन ने नील के अत्याचारों की आलोचना की है। 19 जुलाई को जनरल हैवलॉक ने मेजर स्टीवेंसन को भेजा, जो कि मद्रास फ्यूसिलियर का था और बिठूर अधिकृत हो गया।

13 तोपें वहाँ से हटा दी गईं और साथ–साथ वहाँ की सम्पत्ति पर कब्ज़ा कर लिया। महल खाली कर उसे नष्ट कर दिया गया और जला दिया गया। केयी ने कानपुर की बर्बरता की बहुत आलोचना की है। बिना प्रमाण के लोगों की जानें ली गईं।

कानपुर गजेटियर भी लिखता है कि 11 दिसम्बर 1857 को सराई घाट से लौट कर, होपग्रान्ट बिठूर गया और वहाँ मंदिरों को उड़ा दिया। शीशे का मंदिर, महाराज घाट गंगा मंदिर के नाम से जाना जाता है।

सरस्वतेश्वर मंदिर, तात्या टोपे का आवास और महल भी जला दिया गया। कोष लूटा गया, जो नाना ने छिपाया था। अब कानपुर को पूरी तरह नष्ट कर दिया गया।

16 अगस्त को, बिठूर का युद्ध, तात्या तोपे के नेतृत्व में लड़ा गया। एक महीने के बाद, अंग्रेज़ों ने कानपुर को अधिकृत कर लिया। राष्ट्रीय सेनाएँ पराजित हो गयीं, इनकी प्रशंसा जनरल हैवलॉक ने भी की।

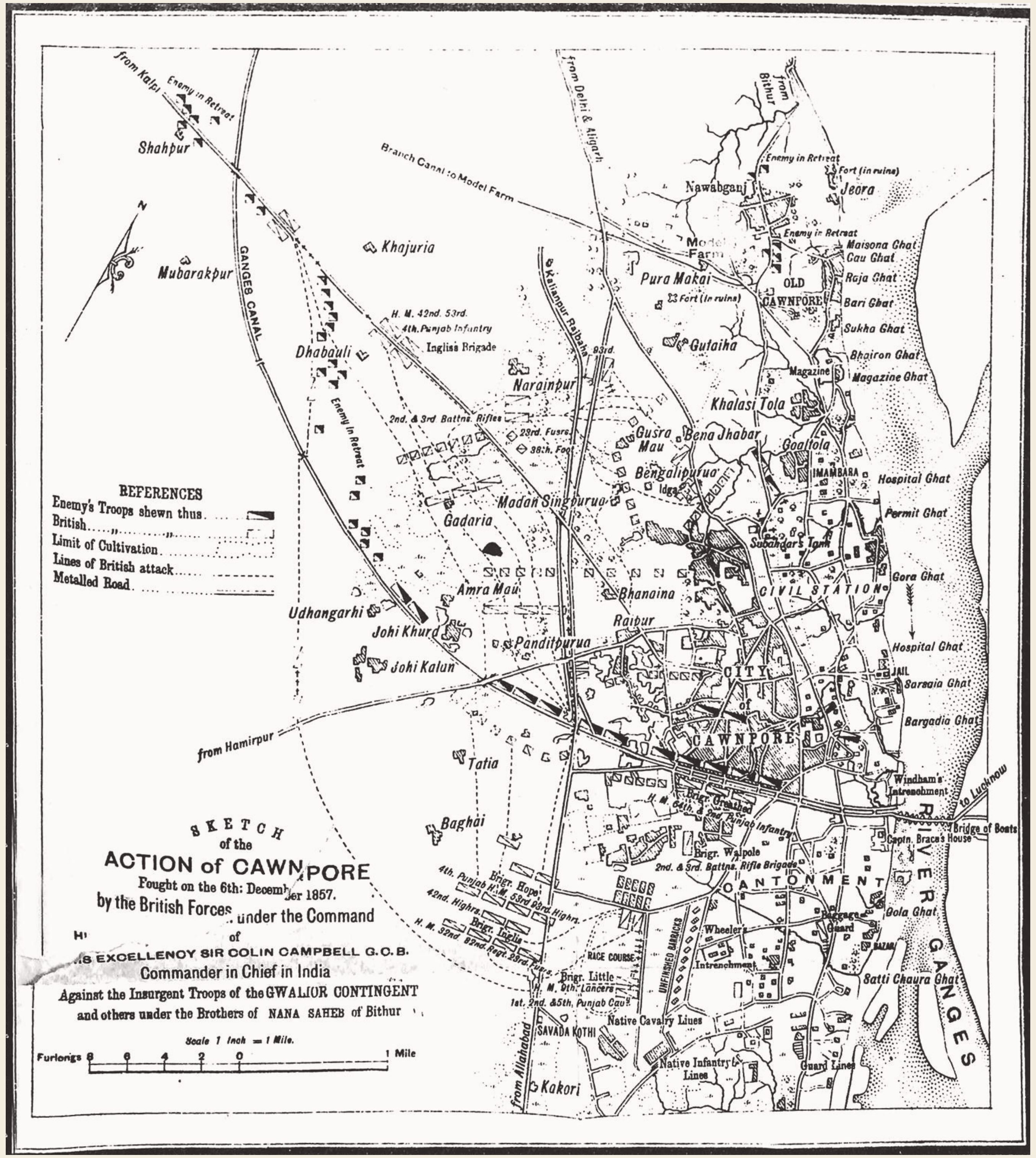


बिठूर – जनरल हैवलॉक एवं नाना के बीच युद्ध की स्थिति
ए हिस्ट्री ऑफ द इण्डियन म्यूटिनी, जी. डब्लू. फॉरेस्ट 1857–58
रिव्यूड एण्ड इलस्ट्रेटेड फ्रॉम ओरिज़नल डॉक्यूमेंट्स वॉल्यूम I, 1912

शरर ने लिखा कि 42 नेटिव इन्फैंट्री, अपने मोर्चे के पीछे से संकल्प के साथ, बड़ी ही वीरता से लड़ी और हैवलॉक ने भी अपने डिस्पैच में बताया कि सेना विद्रोहियों ने बड़ी वीरता दिखाई, वह एक घण्टे से अधिक समय तक लड़े।

जनरल हैवलॉक जब लखनऊ जा रहा था तो 26 जुलाई को मंगलवार गाँव में रुका, जो लखनऊ–कानपुर रोड पर 6 मील की दूरी पर स्थित है। 3 दिन बाद ये उन्नाव पहुँचा तो इसका सामना एक शक्तिशाली सेना से बशीरतगंज में हुआ। उसे 25 जुलाई को दानापुर के विद्रोह का समाचार मिला, वह समझ गया कि अब कलकत्ता से सहायता नहीं मिल सकती है। उसने अपनी समस्या सेनाध्यक्ष, कॉलिन काम्पबेल को बताई। लखनऊ की ओर जाने की कठिनाइयाँ बताईं, ब्रिगेडियर नील ने सुना तो कहा कि इसका प्रभाव, हमारे सम्मान के लिए बहुत बुरा है। 3 अगस्त को हैवलॉक ने लखनऊ जाने का फिर से प्रयास किया, 257 की सेना कानपुर से मिल गई लेकिन इसको फिर वापस आना पड़ा। 11 अगस्त को मंगलवार लौट आया लेकिन वहाँ पहुँचने से पहले, राष्ट्रीय सेना के साथ एक युद्ध में ''बुढ़िया की चौकी'' पर भाग लेना पड़ा।

अब नील ने हैवलॉक को बताया कि राष्ट्रीय सेनाएँ आक्रामक हो रही हैं, हमला होने का ख़तरा है। वह 13 अगस्त को गंगा पार कर, कानपुर पहुँच गया। तात्या टोपे की सेना कानपुर के निकट थी, 16 अगस्त को हैवलॉक, बिठूर गया। तात्या टोपे के नेतृत्व में एक सेना यहाँ थी, हैवलॉक ने बिठूर में इनकी सेना को पराजित किया। बिठूर में पराजय के बाद, जनरल हैवलॉक को भय था कि तात्या कहीं कानपुर पर हमला न कर दे। लेकिन तात्या टोपे ने अब अपना ध्यान ग्वालियर पर दिया, जहाँ महाराजा सिंधिया की 10000 व्यक्तिगत सेना थी। तात्या टोपे, उनसे



कानपुर – 1857 में सेनाध्यक्ष कॉलिन कैम्पबेल एवं ग्वालियर सेनानियों के बीच युद्ध
ए हिस्ट्री ऑफ द इण्डियन म्यूटिनी, जी. डब्लू. फॉरेस्ट 1857–58
रिव्यूड एण्ड इलस्ट्रेटेड फ्रॉम ओरिजनल डॉक्यूमेंट्स वॉल्यूम II, 1912

सहायता प्राप्त करना चाहते थे। ग्वालियर से सहयोग प्राप्त करना, तात्या का बहुत दूरदर्शितापूर्ण कार्य था। इसमें वह सफल हो गये और उनकी सहायता के साथ कानपुर पहुँचे। फिर कानपुर का तृतीय युद्ध हुआ और कैम्पबेल ने तात्या टोपे की सेना को पराजित किया।

तात्या, कालपी को अपनी गतिविधियों का केन्द्र बनाना चाहते थे। 29 अक्टूबर को तात्या टोपे, ग्वालियर सेना (Contingent) के साथ जालौन पहुँचे। 19 अक्टूबर को कुँवर सिंह, 40वीं BNI के साथ, बांदा से होते हुए कालपी पहुँचे। लेकिन तात्या का लक्ष्य पूरा नहीं हो पाया क्योंकि वो दरबार की सेना को अपने पक्ष में नहीं कर पाये, जो महाराजा सिंधिया की व्यक्तिगत सेवा में थे।

तात्या तोपे ने कालपी में 3000 सिपाहियों को छोड़ा और 20 तोपों के साथ 10 नवम्बर को यमुना पार की और कानपुर की ओर बढ़े। सेनाध्यक्ष कैम्पबेल, कानपुर में धमकी समझ गया, कैम्पबेल समझ गया था कि स्थिति कठिन है क्योंकि एक ओर कानपुर तथा एक ओर लखनऊ था। उसने लखनऊ के पक्ष में निर्णय लिया क्योंकि रेज़ीडेंसी में राहत की आवश्यकता थी, वे लखनऊ की ओर बढ़े।

नौ नवम्बर को उन्होंने विंडहैम (Windham) को निर्देश दिया कि ग्वालियर Contingent कानपुर पहुँचेगी, जब तक गोलीबारी न हो, तब तक उनका सामना करना है और अपने स्थान को नहीं त्यागना है। विंडहैम (Windham) के पास छोटी सेना थी।

जनरल विंडहैम ने अपनी सेना आगे बढ़ाई, तात्या टोपे ने यमुना पार की। विंडहैम ने सुना कि नाना साहब, ग्वालियर Contingent के साथ आगे बढ़ रहे हैं तो विंडहैम ने अपना स्थान त्याग दिया और युद्ध के लिए तैयार हो गया।





फतेहपुर, कानपुर के पास

26 नवम्बर को दोनों के बीच, पाण्डु नदी के किनारे एक छोटा सा युद्ध हुआ, विंडहैम को वापस लौटना पड़ा। 9 सिपाही रेज़ीमेंट मध्य भारत (Central India) में, 7 ग्वालियर Contingent थी।

विंडहैम Windham ने 25000 सिपाहियों को हराया लेकिन अंग्रेज़ों को कैवलरी की कमी के कारण, वापस लौटना पड़ा। ग्वालियर की सेना ने 27 नवम्बर को नवाबगंज (कानपुर) पर आक्रमण किया और ब्रिटिश सेना को वापस लौटना पड़ा।

28 नवम्बर को अंग्रेज़ों को घेर लिया गया। तात्या की गोलीबारी के कारण, फोर्ब्स मिचेल ने बताया कि यूरोपीय किले की ओर भागे 300 मारे गये, जो बाकी घायल हो कर शत्रु के हाथ लगे, वह काट दिए गये। 29 नवम्बर को तात्या की आर्टिलरी पूर्णरूप से प्रभावशाली हो गये और विंडहैम की सेना पराजित हुई। कानपुर, राष्ट्रीय सेना के हाथ आ गया। परन्तु 6 दिसम्बर को कॉलिन कैम्पबेल की सेना ने तात्या टोपे को कानपुर के तृतीय युद्ध में हरा दिया।

8 दिसम्बर को सराई घाट का युद्ध हुआ, जोकि कानपुर से 25 मील की दूरी पर है। इसका परिणाम यह हुआ कि कानपुर पर ब्रिटिश सत्ता का अधिग्रहण हो गया। चार्ल्स बॉल ने Indian Mutiny Vol-II में बताया कि फिरंगी अपने मोर्चे (entrenchment) पर लौट गये हैं, जहाँ उनके तम्बू पलट गये हैं, उनके हाथी, घोड़े, नौकर भाग गये हैं।

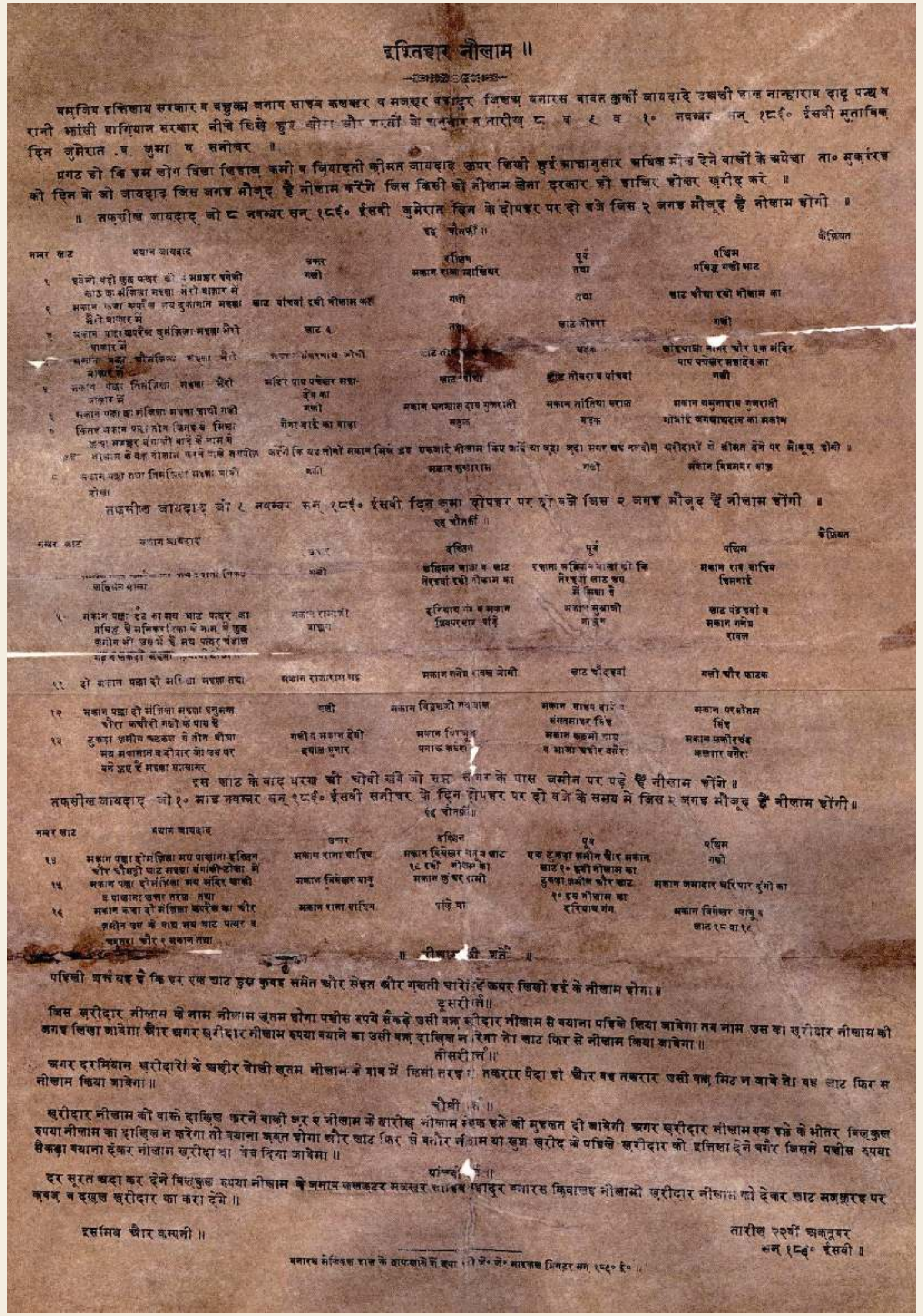
बनारस

हैवलॉक के कलकत्ता पहुँचने से पहले, कर्नल नील कलकत्ता पहुँचा। 24 मई 1857 को मेरठ की घटनाओं के विषय में समाचार फैल चुका था। दिल्ली के बारे में भी समाचार मिल चुका था। वह पूर्णरूप से बनारस जाने के लिए तैयार था, जहाँ सेना भेजने के लिए सरकार तैयार थी। इस शहर की सुरक्षा करना आवश्यक था क्योंकि प्रयाग जाने के लिए यह एक विशेष केन्द्र था।

बनारस में नदी और सड़क के संचार मिलते थे और दोनों मिलकर इलाहाबाद जाते थे, जहाँ एक शक्तिशाली किला था। इस किले के मैगजीन में शस्त्र थे लेकिन उनकी रखवाली हिन्दुस्तानी सेना कर रही थी। इस किले की सुरक्षा विशेष थी और यह वहाँ की सेना की वफादारी पर निर्भर थी।

जैसे ही मेरठ का समाचार लॉर्ड कैनिंग को मिला, उन्होंने अपनी सेना के सिपाहियों को बनारस और इलाहाबाद भेजना शुरू किया। 3 जून को कर्नल नील, अपनी रेज़ीमेंट के कुछ सिपाहियों के साथ बनारस पहुँचा। उसके पहले, 60 सिपाही और तीन अफसर पहुँच चुके थे। उसने कानपुर के लिए तैयारी की थी लेकिन 4 जून को समाचार पहुँचा कि आजमगढ़ में सेना विद्रोह हो चुका था।

बनारस में जो हिन्दुस्तानी सिपाही थे, 37 नेटिव इन्फैंट्री के थे। 4 जून को ही नेटिव इन्फैंट्री को निशस्त्रित करने की बात हुई। जैसे ही वाराणसी के हिन्दुस्तानी सिपाहियों को दिल्ली और मेरठ की घटनाओं के विषय में पता चला तो उन्होंने खुलकर माँग की कि वे विदेशियों के बंधन से मुक्त हो जाएँ तथा पश्चिम जिलों से सूचना माँगी कि संघर्ष की स्थिति कैसी थी।



इश्तिहार नीलाम ॥

बमूजिब इत्तिलाय सरकार व बहुक्म जनाब साहब कलक्टर व मजहर बहादुर जिलह बनारस बाबत कुर्की जायदादें दखली नाना नान्हाराव दादू पन्थ व रानी झांसी बाग़ियान सरकार नीचे लिखे हुए [illegible] तारीख ८ व ९ व १० नवम्बर सन् १८६० ईसवी मुताबिक दिन जुमेरात व जुमा व सनीचर ॥

[illegible]

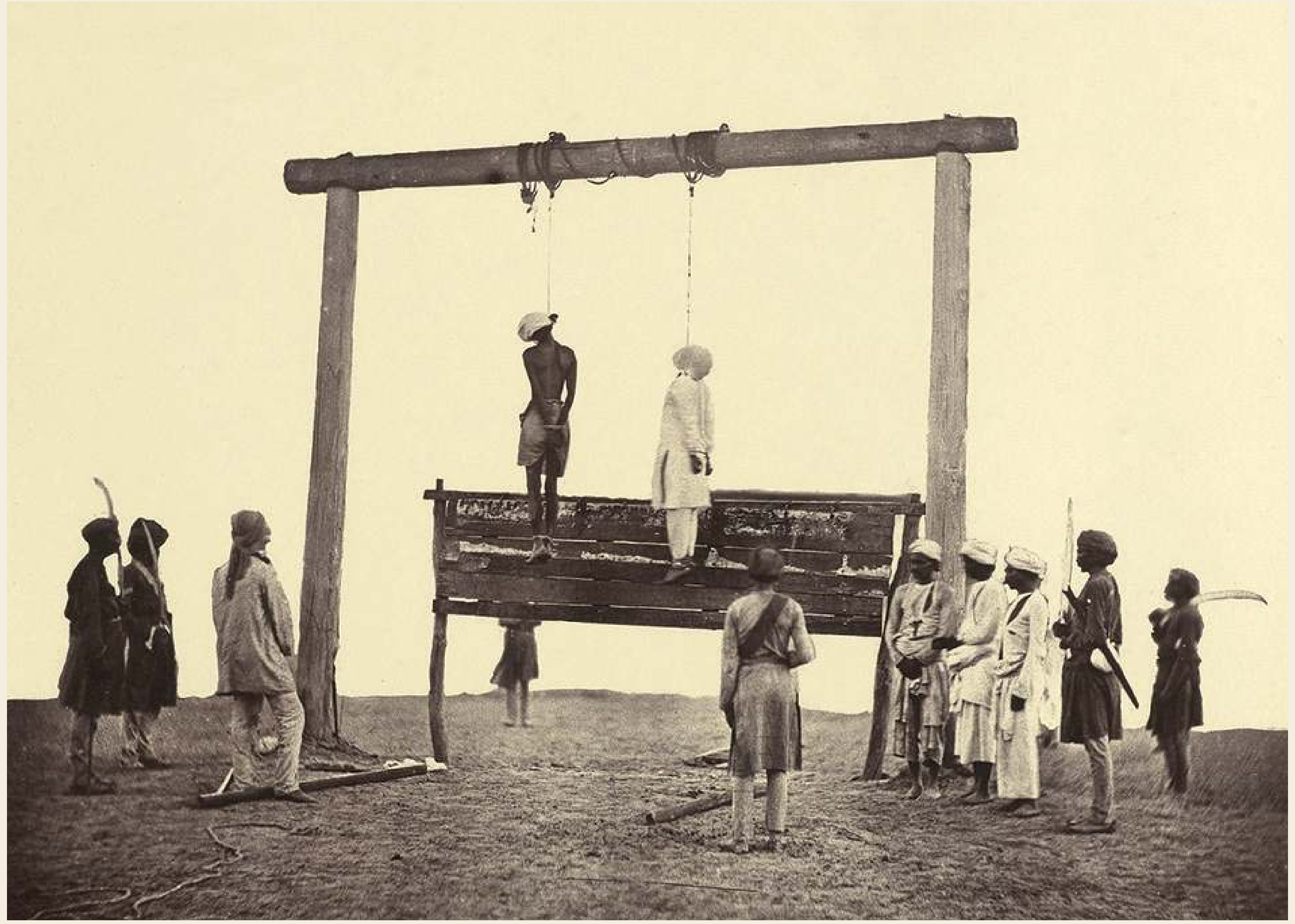
नाना राव धून्धू पंत एवं रानी लक्ष्मीबाई की बनारस स्थित सम्पत्ति की नीलामी हेतु, स्मिथ एण्ड कम्पनी द्वारा जारी इश्तिहार – 22 अक्टूबर, 1860

ब्रिटिश कमाण्डर, पान्सनबी को शक हुआ कि विद्रोह भड़क सकता है तो उसने सुल्तानपुर से 13 इर्रेगुलर कैवलरी को बुलाया। कुछ यूरोपीय अफसरों ने सलाह दी कि बनारस को छोड़ देना चाहिए पर अधिकतर इसके विरोध में थे क्योंकि कलकत्ता और लखनऊ के बीच, यह सबसे महत्वपूर्ण शहर था। वो टकसाल में रुक गये।

उन्होंने कचहरी की सुरक्षा आवश्यक समझी क्योंकि ट्रेज़री में साढ़े चार लाख रुपये और स्टैम्प पेपर थे, लाहौर के चन्द्र राम के आभूषण थे, जो 20 लाख मूल्य के थे।

4 जून को 2000 हिन्दुस्तानी सिपाही, जब अपने शस्त्र रख रहे थे तो उन्होंने देखा, यूरोपीय सेना उनकी ओर बढ़ी। उन्होंने घबरा कर अपने शस्त्र उठाए, उन्होंने अपने अफसरों पर गोली चलाई, सिख रेज़ीमेंट ने अंग्रेज़ों पर गोली चलाई। कुछ समय तक घमासान युद्ध हुआ लेकिन यह कुछ घण्टों तक था, यहाँ कुछ दिनों तक उथल–पुथल रही। कुछ हिन्दुस्तानी नागरिकों ने शान्ति की स्थिति बनाने के लिए अंग्रेज़ों की सहायता की।

परेड के बाद, एक अंग्रेज़, मान्टगुमरी मार्टिन ने उस दृश्य के बारे में बताया कि जो उसने टकसाल से देखा था– ''फाँसी के फंदों की एक कतार थी, वृद्ध या युवा सभी को नील द्वारा फाँसी दी गई थी।'' बनारस की जनता ने एक शान्तिपूर्ण स्थिति बनाकर रखी, कुछ प्रभावशाली नागरिक, जैसे राजा बनारस, देव नारायन सिंह, सूरत सिंह, गोकुल चन्द्र और अन्य ने सामान्य स्थिति वापस लाने के लिए विशेष भूमिका निभाई।



दो सिपाही, जिनको फाँसी दी गई

9 जून को बनारस डिवीज़न में सेना का कानून घोषित किया गया। मजिस्ट्रेटों को शक्ति मिल गयी, अफसर उन गाँवों को दण्ड देने के लिए भेजे गये, जो वफादार नहीं थे।

बनारस शहर में स्थायी फाँसी के फंदे बनाए गये। अधिकतर लोगों को जेल में डाल दिया गया और चाबुक से लोगों को मारा गया। जुलाई में एक किला, पुराने हिन्दू किले के पास, राजघाट में बनाया गया। जौनपुर में भी कुछ स्वतंत्रता सेनानी थे, जो बनारस पहुँच रहे थे।

अगस्त के मध्य में बनारस में जो विद्रोह आरम्भ हुआ था, अब ब्रिटिश के विरुद्ध जाने की उसकी सम्भावना समाप्त हो गयी थी। अब वाराणसी एक विशाल सेना भण्डार बन गया था, जहाँ से अंग्रेज़ अपनी आवश्यकता की वस्तुएँ भेज सकते थे।

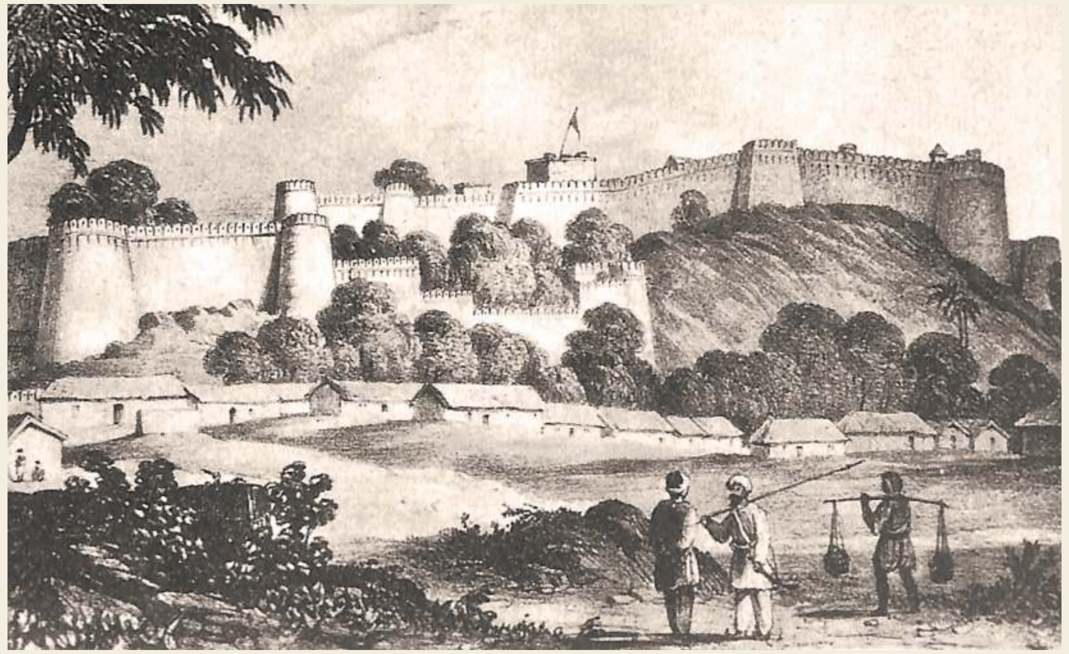
8 फरवरी, 1858 को 26 सिपाही, कैदी गारद के शस्त्र लेकर, जेल से भाग गये लेकिन उनमें से दो पकड़े गये और उनको फाँसी दी गयी।

झाँसी

17 दिसम्बर को ह्यू रोज़ को मध्य भारत की कमान प्राप्त हुई, जिसमें 2 ब्रिगेड सम्मिलित थी— (1) महो (डीवू), (2) सिहोर। नववर्ष आरम्भ हो चुका था। 1858 और पूर्व में ऊट्रम और हैवलॉक को विदाई देते हुए, कॉलिन कैम्पबेल की नियुक्ति की गयी। लेकिन सौगोर से समाचार अच्छे नहीं थे, सिपाहियों की एक विशाल सेना, किले (झाँसी) पर हमला करने के लिए छावनी की ओर बढ़ रही थी। यहाँ एक कमज़ोर, दुर्बल आर्टिलरी का गैरीसन था, इनके ऊपर बड़े शस्त्र भण्डार की सुरक्षा का एवं 170 यूरोपीय महिला और बच्चों के जीवन का उत्तरदायित्व था। अंग्रेज़, बंगाल सिपाहियों पर कोई विश्वास नहीं कर पा रहे थे, उन्हें किले में कोई ड्यूटी नहीं दी गई। सर ह्यू रोज़, राहत देने के लिए सौगोर पहुँचे और 6 जनवरी को ये महो छोड़कर, सिहोर पर II ब्रिगेड से मिल गये। अब सर ह्यू रोज़ ने मध्य भारत का अभियान आरम्भ कर दिया।

भोपाल में वहाँ की बेगम, वहाँ की जनता की भावनाओं से परिचित थीं। वह आश्वासित करती रहीं कि अभी अंग्रेज़ों को हटाने का समय नहीं आया है।

सावरकर के अनुसार, झाँसी का विवरण जी.बी. परासनिस ने ''लाइफ ऑफ लक्ष्मीबाई'' में लिखा है। 1857 में पेशवा बाजीराव ने झाँसी को ईस्ट इण्डिया कम्पनी को सौंप दिया। 1857 में राव गंगाधर की मृत्यु हुई, इनका कोई उत्तराधिकारी नहीं था लेकिन उन्होंने शास्त्रीय अधिकार से एक बालक को गोद लिया था, लॉर्ड डलहौज़ी ने इसे स्वीकृत नहीं किया। कम्पनी ने झाँसी को लावारिस ''राज्य गामी सम्पत्ति'' समझा और रानी को एक पेंशन दी, रानी ने उसे अस्वीकार कर दिया। मैलेसन ने कहा है कि ''रानी झाँसी गौवध से नाराज़ थीं क्योंकि झाँसी में जब से ब्राह्मण शासन आया, तब से अभी तक झाँसी में गौवध निषेध था।''



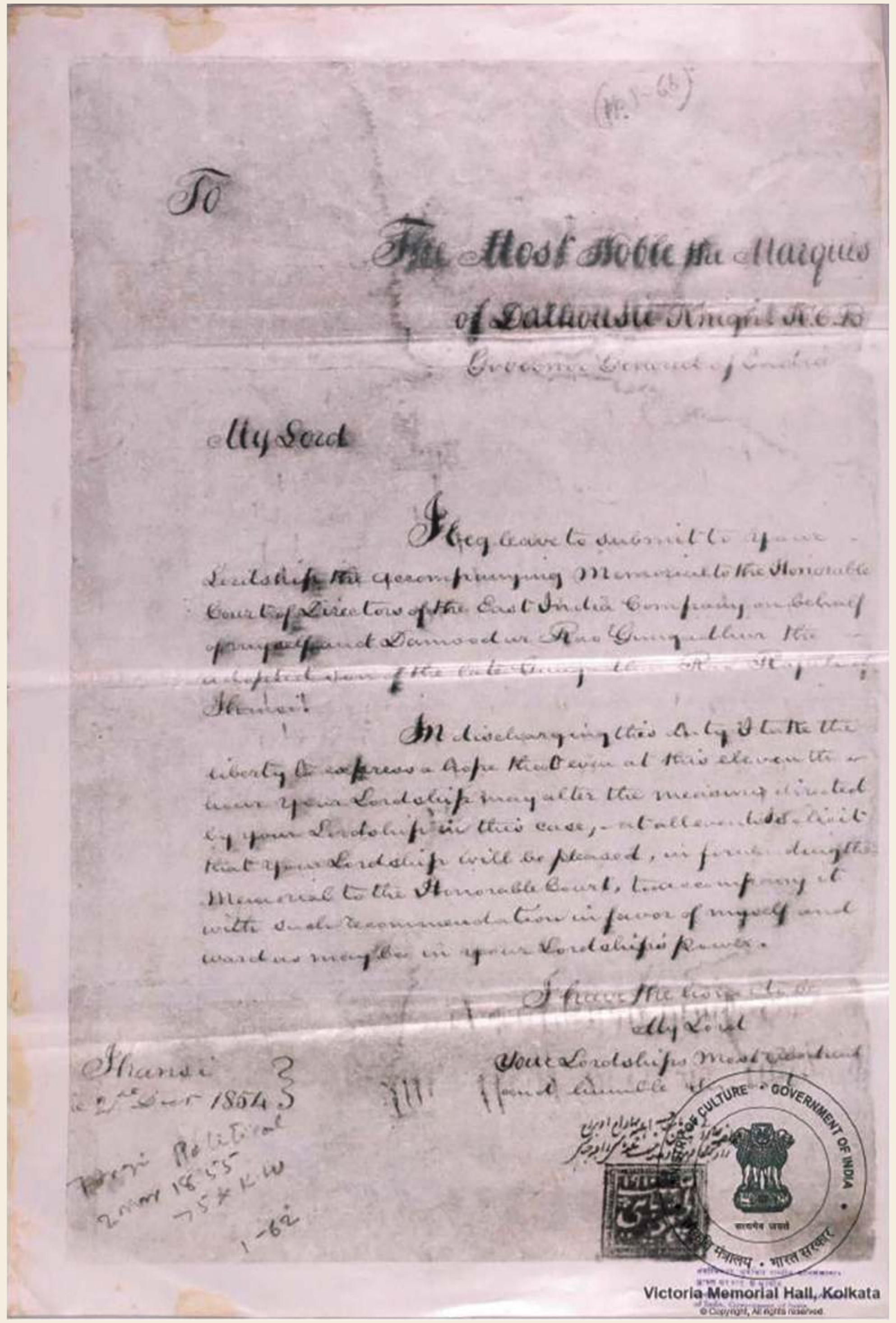


झाँसी की रानी द्वारा सेना का नेतृत्व – ग्वालियर का युद्ध
वेलकम लाइब्रेरी, लंदन

मेजर मैल्कम ने कहा कि यह बहुत उच्च चरित्र की महिला थीं। जॉन लैंग, जो प्रसिद्ध वकील थे, जिन्हें राज्य–हरण के बाद रानी ने अपने परामर्श हेतु रखा था। उनका रंग ज़्यादा गोरा नहीं था, वह सोने की बालियाँ पहनती थीं, उनकी वेशभूषा में एक सफेद मसलिन की साड़ी होती थी। जी.बी. परासनिस ने बताया कि वे सवेरे पाँच बजे उठती थीं, फिर इत्र से स्नान करती थीं। वे सफेद चन्देरी की साड़ी पहनती थीं और रोज़ प्रार्थना के लिए बैठती थीं। पहले वह प्रायश्चित के लिए पानी को गिराती थीं, गंगाधर राव की मृत्यु के बाद बाल रखने के लिए प्रायश्चित करती थीं। फिर वे तुलसी को पूजती थीं, फिर पार्थिव पूजा आरम्भ होती थी, जिसमें दरबार के संगीतकार गाते थे, पुराणिक फिर पुराण पढ़ते थे। जब इन्हें झाँसी के राज्यहरण के बारे में बताया गया तो उन्होंने जवाब दिया कि मैं अपनी झाँसी नहीं दूँगी।

सावरकर लिखते हैं कि भारत माता के गले के हार के दो चमकते हुए मोती हैं– नाना साहब और लक्ष्मीबाई।

जी.बी. परासनिस– 3 बजे ''जब वह अपने दरबार जाती थीं तो वह पुरुषों की वेशभूषा अपना लेती थीं। गहरे नीले रंग की टोपी लगाती थीं या पगड़ी पहनती थीं और कढ़ा हुआ दुपट्टा, उनकी पतली कमर पर रहता था और साथ ही एक तलवार, जिस पर हीरे जवाहरात जड़े थे, धारण करती थीं। उन्होंने अपने पति की मृत्यु के बाद, कभी नथ नहीं पहनी। मोतियों का हार और हीरे की अंगूठी पहनती थीं।'' वह महालक्ष्मी की पूजा करती थीं। वह बहुत दयालु भी थीं। जब वे मंदिर जाती थीं तो पालकी और घोड़े पर जाती थीं। स्वतंत्रता का राष्ट्रीय ध्वज चलता था और सेना संगीत बजता था, 200 यूरोपीय इनके ध्वज के पीछे होते थे।


To

The Most Noble the Marquis of Dalhousie Knight K.G.
Governor General of India

My Lord

I beg leave to submit to your Lordship the accompanying Memorial to the Honorable Court of Directors of the East India Company on behalf of myself and Damoodur Rao Gungadhur the adopted son of the late Gungadhur Rao Raja of Jhansi.

In discharging this duty I take the liberty to express a hope that even at this eleventh hour your Lordship may alter the measure directed by your Lordship in this case, and to solicit that your Lordship will be pleased, in forwarding the Memorial to the Honorable Court, to accompany it with such recommendation in favor of myself and ward as may be in your Lordship's power.

I have the honor to be
My Lord
Your Lordship's Most Obedient and humble Servant

Jhansi
2nd Dec. 1854

झाँसी के स्वर्गीय राजा गंगाधर राव की तरफ से
गवर्नर जनरल डलहौज़ी को लिखा गया पत्र
विक्टोरिया मेमोरियल हाल, कोलकाता

इनका नाम, मणिकर्णिका ताम्बे, इनके पिता, मोरोपंत ताम्बे, इनकी माँ, भगीरथी थीं। मोरोपंत ताम्बे, बाजीराव II के भाई के दरबार में थे, ये पूना से बिठूर आये। मणिकर्णिका का जन्म 1828 में हुआ, यह नाना साहब के साथ पली बढ़ी थीं, तात्या टोपे इनके मार्गदर्शक और आदर्श थे, इन्हें मनु, छबीली के नामों से जाना जाता था। फिर विवाह के बाद, ये रानी लक्ष्मीबाई के नाम से जानी गईं। इनका एक ही पुत्र था, जिसकी मृत्यु 1851 में हुई। फिर 5 वर्षीय, दामोदर राव को गोद लिया, जो इन्हीं के परिवार का बालक था।

दिसम्बर 1857 में ब्रिटिश सेना को पता चल गया कि लक्ष्मीबाई की भागीदारी, किसके साथ थी। उन्होंने कहा कि लक्ष्मीबाई ने उन्हें धोखा दिया और वे क्रोधित हो गये और नया हमला आरम्भ किया। ह्यू रोज़, मध्य भारत अभियान के अन्तर्गत आगे बढ़ा।

14 जनवरी 1858 को रानी झाँसी ने अंग्रेज़ों के विरुद्ध धर्म की विजय के लिए एक घोषणा जारी की। अब वे समझ गयीं कि अंग्रेज़ नया अभियान आरम्भ कर रहे हैं और झाँसी पर केन्द्रित हो गये हैं, सिपाही झाँसी की ओर पहुँचने लगे। जनवरी के अन्त में रानी के पास 1000 सिपाही थे, जिसमें कैवलरी, 10 गनर, जो ग्वालियर आकस्मिक सहायता सेना (Contingent) के थे। इस समय 6 नयी बड़ी तोपों और कैरेजेस का उत्पादन भी झाँसी में हो रहा था और साल्ट पीटर, जोकि एक सैकड़ा मॉन्ट से भी ज़्यादा था, जो किले में पहुँचाया जा रहा था, ये बारूद की आवश्यक सामग्री थी।

लक्ष्मीबाई, झाँसी को बचाने के लिए कड़ी मेहनत कर रही थीं। अंग्रेज़ी लक्ष्य था, झाँसी के किले पर कब्ज़ा करना लेकिन रानी को पकड़ना, जिसने उनको धोखा दिया था।





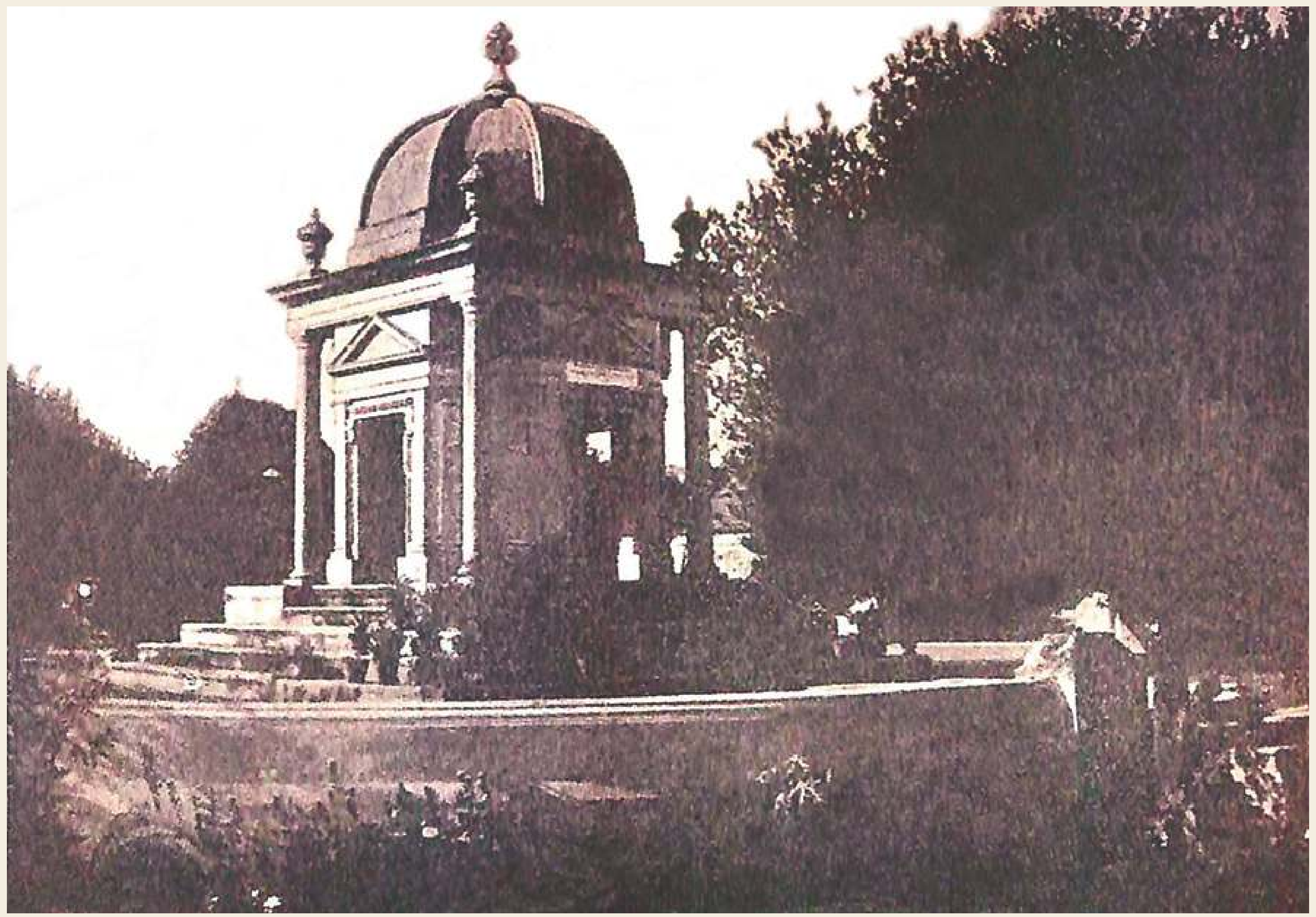
झाँसी का दुर्ग, 1857

ह्यू रोज़ ने लूट आरम्भ कर दी, शहर में आग लगाना, जलाना, आतंक फैलाना भी प्रारम्भ कर दिया। एक प्रकार से सफल रहे, रानी को पकड़ने के लिए वे हज़ारों पाउण्ड चाहते थे लेकिन उन्हें उतना नहीं मिला। इसके बाद ही तात्या के साथ अंग्रेज़ों का एक युद्ध हुआ, जिसमें तात्या पराजित हुए और रानी वहाँ से बच निकलने में सफल रहीं। मार्च–अप्रैल 1858 में जब झाँसी उनके हाथों में आ गया, सर ह्यू रोज़ ने झाँसी के लोगों पर अत्याचार किया।

झाँसी, पूर्व से ही कानपुर की घटनाओं से प्रभावित था, 4 जून को ही विद्रोह की भावना भड़क उठी थी। इसके पहले, कुछ पत्र, ब्रिटिश कमिश्नर के हाथों में पड़े, जिससे पता चला कि लक्ष्मण राव नामक एक ब्राह्मण, जो रानी की सेवा में थे, एक क्रान्ति की भूमिका रच रहे थे। और उससे पहले वे सेना की कमान के कुछ ब्रिटिश अफसरों को मारना चाह रहे थे लेकिन अंग्रेज़ों के कुछ कार्यवाही करने से पहले ही क्रान्तिकारियों ने किले पर कब्ज़ा कर लिया। अंग्रेज़ सुरक्षा के लिए शहर के किले में पहुँच गये और किले पर कब्ज़ा कर लिया।

17 जून को ही रिसालदार काला खान, तहसीलदार मुहम्मद हुसैन, झाँसी के अन्य वीर सिपाहियों ने हमला आरम्भ किया और क्रान्ति का ध्वज झाँसी के किले पर फहराया। अंग्रेज़ों ने अपना सफेद ध्वज लगाकर, शान्ति की माँग की।

हकीम सालेह मुहम्मद, जोकि एक मुख्य नागरिक थे, उन्होंने वादा किया, अंग्रेज़ों की जानें बख्श दी जाएँगीं अगर उन्होंने बिना शस्त्र समर्पण किया। अंग्रेज़ों ने समर्पण किया लेकिन अंग्रेज़ जब किले से बाहर आये तो सिपाही चिल्लाये, मारो फिरंगी को, उन्होंने नील के अत्याचारों को याद किया।



मेमोरियल टावर झाँसी
ए हिस्ट्री ऑफ द इण्डियन म्यूटिनी, जी. डब्लू. फॉरेस्ट 1857–58
रिव्यूड एण्ड इलस्ट्रेटेड फ्रॉम ओरिज़नल डॉक्यूमेंट वॉल्यूम III, 1912

8 जून को एक जुलूस निकाला गया, अंग्रेज़ों को जुलूस में युद्ध कैदी के रूप में परेड कराई गई। रिसालदार ने अब निर्देश दिया कि जो फिरंगी देशद्रोह के दोषी हैं, जिन्होंने रानी को हटाने में भाग लिया था, इनकी जान को नहीं बख्शना चाहिए और उनको तीन पंक्तियों में खड़ा किया गया– पुरुष, महिला और बच्चे। जेल दरोगा ने कमिश्नर का सर कलम किया, वैसे ही उन पंक्तियों का भी सर कलम किया गया, 75 पुरुष, 12 महिलाएँ और 23 बच्चों को मार दिया गया। क्रान्तिकारियों ने झाँसी को ग्रहण कर लिया और रानी को दामोदर राव का संरक्षक घोषित किया गया और कहा गया कि पूरा विश्व भगवान का है, देश सम्राट का है, अधिकार रानी लक्ष्मीबाई का है।

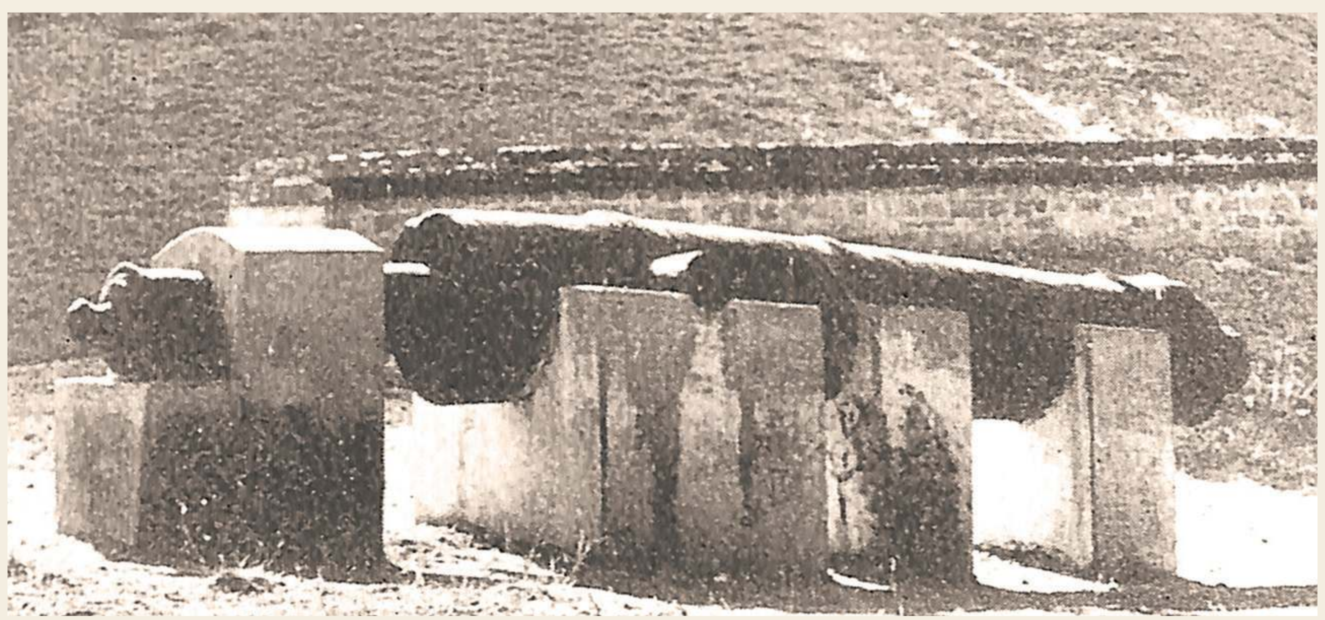
सिंधिया तेहरी के राजा थे, ये अंग्रेज़ों के वफादार थे परन्तु 1 मार्च 1858 को रानी झाँसी की फौजों ने तेहरी को पराजित किया और चरखारी पर कब्ज़ा किया। देश के सम्मान के लिए झाँसी में, अंग्रेज़ों के विरुद्ध, रात–दिन युद्ध की तैयारी की गयी।

ह्यू रोज़ के अनुसार, झाँसी के सैनिक, वीर थे परन्तु उनमें प्रशिक्षण और अनुशासन की कमी थी। लेकिन रानी स्वयं सेना का नेतृत्व कर रही थीं। हर द्वार पर, हर मुंडेर पर वह समान रूप से सक्रिय थीं, जहाँ पर तोपें रखी गयीं, वहाँ भी वे खड़ी रहीं और व्यस्त रहीं। सक्रिय होशियार गनर को चुनने में भी वह लोगों को सहयोग और प्रेरणा देती रहीं।

झाँसी के विद्वान ब्राह्मण, देश की सफलता के लिए प्रार्थना कर रहे थे। झाँसी के लोग, अपनी बंदूकें तैयार कर रहे थे। महिलाएँ बैटरीज़ में काम करतीं और बंदूकों को, शस्त्रों को ले जाते दिख रही थीं, तोपखानों को बना रही थीं।



युद्ध के मैदान में रानी लक्ष्मीबाई
एक भारतीय चित्रकार द्वारा चित्रित



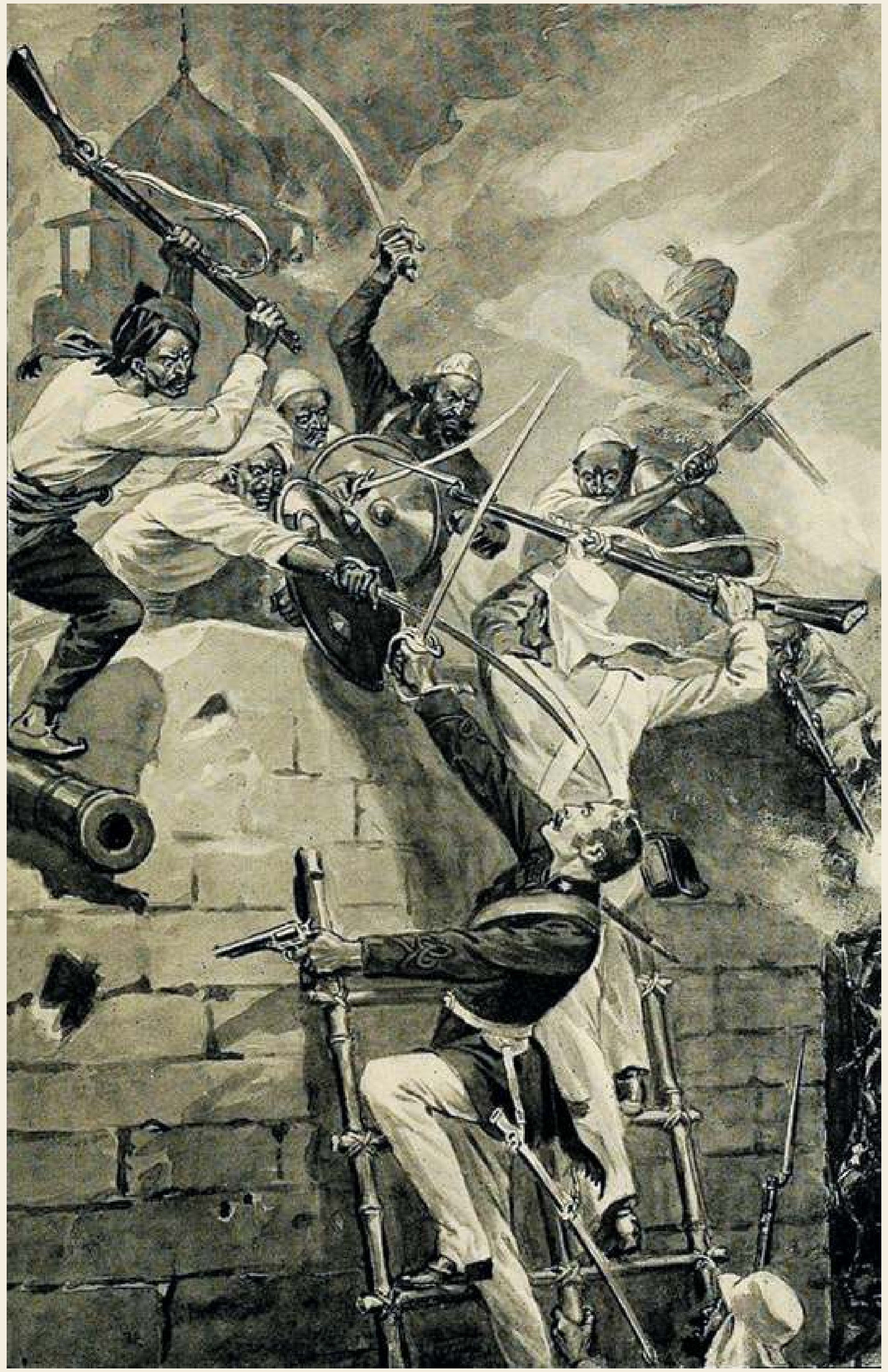
कड़क बिजली गन

23 की रात्रि में युद्ध के नगाड़ों की आवाज़ सुनाई दी और चमकती हुई मशालें किले से दिखाई दीं। 24 की सुबह घनघोर गर्जना के साथ युद्ध शुरू हुआ। छठे दिन, लक्ष्मीबाई की तोपों ने बहुत सफलता प्राप्त की, अंग्रेज़ों का भारी नुकसान हुआ। कई बार अंग्रेज़ लापरवाह हो गये और उन्हें नुकसान उठाना पड़ा। बारूद के प्रयोग के बाद भी, अंग्रेज़, झाँसी के किले में प्रवेश नहीं कर पाये।

सावरकर के अनुसार, अब तात्या टोपे अपनी सेना के साथ झाँसी पहुँचे। कानपुर में विंडहैम और कॉलिन कैम्पबेल को पराजित करने के बाद, तात्या ने गंगा पार करके, श्रीमंत नाना से मुलाकात की। फिर उन्होंने कालपी के पास, जमुना नदी पार की। तात्या जो पेशवा के प्रतिनिधि थे, उन्होंने चरखारी राजा की राजधानी पर हमला किया और दण्ड दिया, 3 लाख रुपये और 24 बंदूकें ले लीं।

रानी लक्ष्मीबाई का पत्र उन्हें कालपी में मिला, जिसमें निवेदन था कि वे झाँसी आयें। इस नोट को उन्होंने, राव साहब पेशवा को भेजा। जैसे ही निर्देश मिला, उन्होंने अंग्रेज़ सेना पर पीछे से हमला किया। तात्या टोपे ने ह्यू रोज़ का विशाल सेना के साथ सामना किया। तात्या, सामने से हमला करते और झाँसी सेना, पीछे से।

अंग्रेज़, तात्या की ओर बढ़े और झाँसी पर हमला कर दिया, ऐसा करने से दोनों हमले रुक गये। अंग्रेज़ आगे बढ़े, झाँसी से गोली की आवाज़ नहीं सुनाई पड़ी, सेना हटा दी गई और कमाण्डर भाग गये। तात्या की तोपें, अंग्रेज़ों के हाथ में आ गईं, डेढ़ हज़ार क्रान्तिकारियों की इसमें मृत्यु हुई। 1 अप्रैल को ''बेतवा नदी का युद्ध'' हुआ, जिसमें तात्या पराजित हुए।

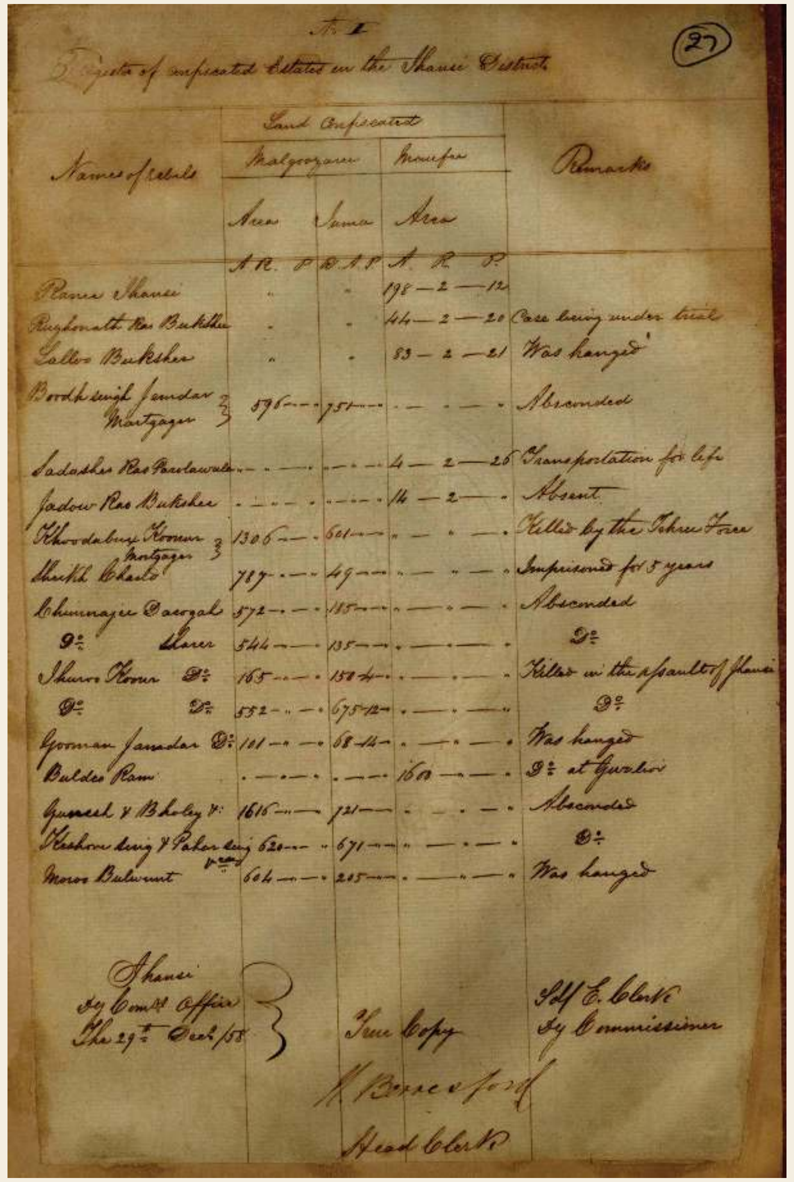


अंग्रेज़ों द्वारा झाँसी के किले पर चढ़ाई

अंग्रेज़ों ने 3 अप्रैल को झाँसी पर अन्तिम चढ़ाई आरम्भ कर दी। अंग्रेज़ों ने किले के द्वार पर कब्ज़ा कर लिया, अंग्रेज़ हत्या करते, जलाते हुए किले में पहुँच गये। झाँसी, शत्रु के हाथ में आ गया, हज़ारों रुपये लूट लिए गये। 5 साल से 80 साल तक के लोगों का, जिनका भी समर्पण हुआ, उनकी हत्या कर दी गयी।

रानी झाँसी की आखों में भी आँसू आ गये, वे रोईं, किले पर यूनियन जैक फहरा दिया गया। फिर सरदार कुँवर खुदा बक्श (चीफ गार्ड फोर्ट पर) और गुलाम गौस खान (चीफ गनर आर्टिलरी) को मार दिया गया। रात के समय, रानी लक्ष्मीबाई ने अपनी प्रजा से भेंट की और अन्तिम बार आशीर्वाद दिया। वे बहुत दुःखी थीं, रानी, झाँसी छोड़ देंगी, इससे उनकी प्रजा भी दुःखी थी। रानी ने अपने घुड़सवार चुने और हाथी पर कुछ आभूषण रखे गये, रानी किले से बाहर आईं, लोग चिल्ला रहे थे– ''हर–हर महादेव।''

सावरकर के अनुसार– ''रानी ने अब पुरुषों की पोशाक पहन ली थी, स्टील का कवच पहन लिया। उनका दत्तक पुत्र दामोदर, उनकी पीठ पर बँधा था। इस प्रकार सिल्क की धोती में, सफेद घोड़े पर सवार रानी लक्ष्मीबाई, युद्ध की देवी लग रही थीं। इनके पिता, मोरोपंत ताम्बे को एक देशद्रोही ने अंग्रेज़ों को सौंप दिया। इन्हें बंदी बनाया गया और फाँसी की सज़ा दी। रानी, रात भर भागती रहीं। कालपी की सड़क पर इनका सामना लेफ्टिनेंट बॉकर से हुआ, जो इनका पीछा कर रहा था। उन्होंने अपनी तलवार से उसे रोकने का प्रयास किया, बॉकर घोड़े से गिर गया, 20 लोगों में एक युद्ध हुआ और घायल बॉकर ने इनका पीछा करने का इरादा छोड़ दिया। अब रानी ने कालपी में प्रवेश किया। उनकी भेंट राव साहब पेशवा से हुई, अब इन्होंने तात्या तोपे के साथ, भविष्य के युद्ध के लिए तैयारी की।



No. 1

Register of confiscated Estates in the Jhansi District

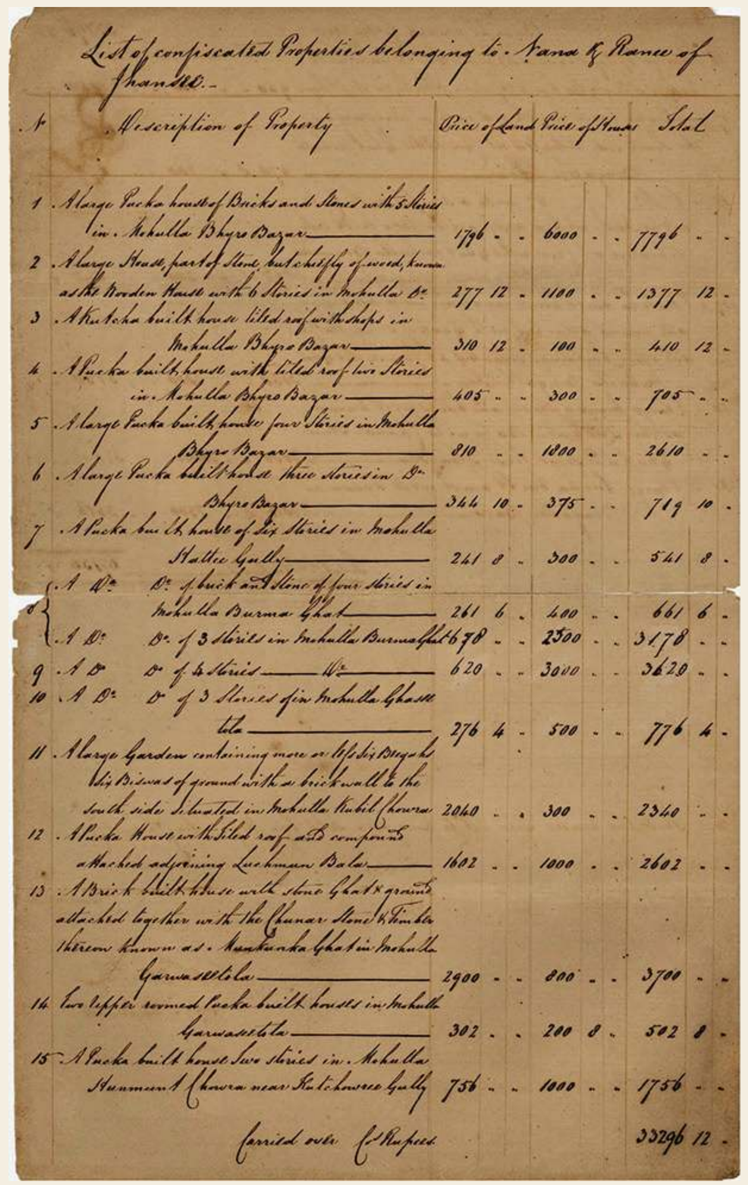
Names of rebels	Land confiscated: Malgoozaree Area	Malgoozaree Jumma	Moaafee Area	Remarks
	A. R. P.	R. A. P.	A. R. P.	
Ranee Jhansi	..	.	198 — 2 — 12	
Rughonath Rao Bukshee	.	.	44 — 2 — 20	Case being under trial
Lalloo Bukshee	..	.	83 — 2 — 21	Was hanged
Boodh Singh Jemadar Mortgager	596 —	751 —	—	Absconded
Sadashee Rao Paraolawala	—	—	4 — 2 — 26	Transportation for life
Jadow Rao Bukshee	—	—	14 — 2 —	Absent
Khoodabux Koonur Mortgager	1306 —	661 —	—	Killed by the Tehree Force
Sheikh Chauto	787 —	49 —	—	Imprisoned for 5 years
Chimnajee Daroga	572 —	185 —	—	Absconded
Do. Sheree	544 —	135 —	—	Do.
Jhuroo Koonur Do.	165 —	150 4 —	—	Killed in the assault of Jhansi
Do. Do.	552 —	675 12 —	—	Do.
Gooman Jemadar Do.	101 —	68 14 —	—	Was hanged
Buldeo Ram	—	—	1610 —	Do. at Gwalior
Gunesh & Bholey Do.	1616 —	721 —	—	Absconded
Keshore Singh & Pahar Singh	620 —	671 —	—	Do.
Moro Bulwunt Do.	604 —	205 —	—	Was hanged

Jhansi
Dy Comm. Office
The 29th Oct/58

True Copy
H. Beresford
Head Clerk

Sd/ E. Clerk
Dy Commissioner

रानी लक्ष्मीबाई एवं उनके सहयोगियों की सम्पत्ति की ज़ब्ती – 29 अक्टूबर, 1858



List of confiscated Properties belonging to Nana & Ranee of Jhansie.–

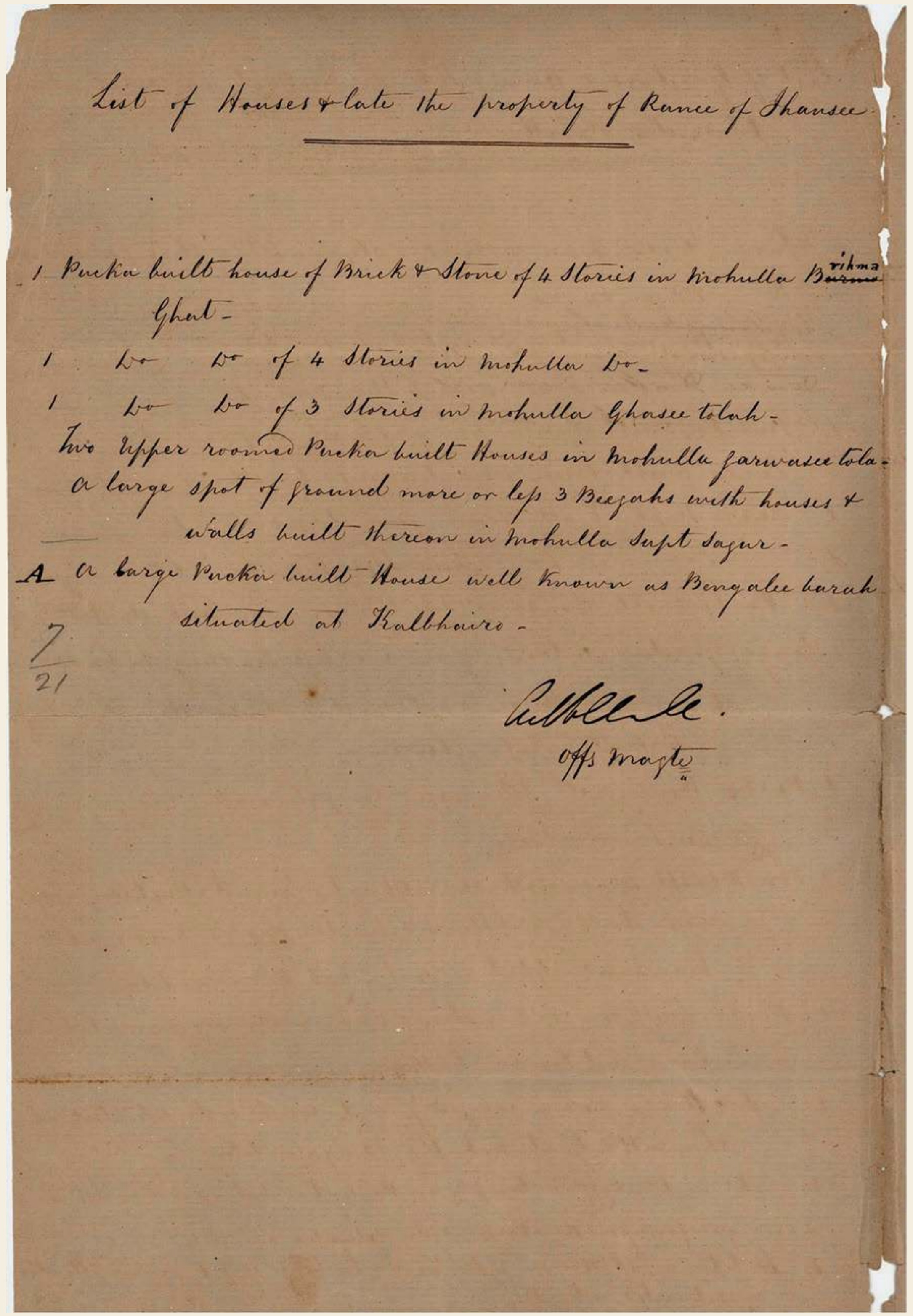
No	Description of Property	Price of Land	Price of Houses	Total
1	A large Pucka house of Bricks and Stones with 5 Stories in Mohulla Bhyro Bazar	1796	6000	7796
2	A large House, part of Stone but chiefly of wood, known as the Wooden House with 6 Stories in Mohulla Do.	277 12	1100	1377 12
3	A Kutcha built house tiled roof with shops in Mohulla Bhyro Bazar	310 12	100	410 12
4	A Pucka built house with tiled roof two Stories in Mohulla Bhyro Bazar	405	300	705
5	A large Pucka built house four Stories in Mohulla Bhyro Bazar	810	1800	2610
6	A large Pucka built house three stories in Do. Bhyro Bazar	344 10	375	719 10
7	A Pucka built house of Six Stories in Mohulla Hattee Gully	241 8	300	541 8
8	A Do. Do. of brick and Stone of four stories in Mohulla Burma Ghat	261 6	400	661 6
	A Do. Do. of 3 Stories in Mohulla Burma Ghat	678	2500	3178
9	A Do. Do. of 4 Stories — Do.	620	3000	3620
10	A Do. Do. of 3 Stories in Mohulla Ghassi tola	276 4	500	776 4
11	A large Garden containing more or less Six Beegahs Six Biswas of ground with a brick wall to the south side situated in Mohulla Kubil Chowra	2040	300	2340
12	A Pucka House with tiled roof and compound attached adjoining Luchmun Bala	1602	1000	2602
13	A Brick built house with stone Ghat & ground attached together with the Chunar Stone & Timber thereon known as Munkunka Ghat in Mohulla Garwasstola	2900	800	3700
14	Two Upper roomed Pucka built houses in Mohulla Garwasstola	302	200 8	502 8
15	A Pucka built house two stories in Mohulla Hunmunt Chowra near Kutchowree Gully	756	1000	1756
	Carried over Co.'s Rupees			33296 12

रानी लक्ष्मीबाई तथा नाना साहब की ज़ब्त की गई सम्पत्ति का अनुमानित मूल्य

रानी 5 अप्रैल को कुंच (Kunch) गाँव पहुँचीं। कुंच का युद्ध हुआ, जिसमें ह्यू रोज़ के नेतृत्व में तात्या टोपे के नेतृत्व वाली सेना हार गई। रानी ने पेशवा से कहा कि अगर सेना संगठित होगी तो दुश्मन कभी विजयी नहीं होगा। बांदा के नवाब, इनसे प्रभावित हुए, घोषणापत्र छापे गये। ह्यू रोज़ ने 22 मई को हुए युद्ध में कालपी में विजय प्राप्त की। ऊँट, युद्ध में विजय का कारण बने, कालपी के शस्त्र भण्डार पर अंग्रेज़ों ने कब्ज़ा किया। 24 मई को ह्यू रोज़ ने कालपी में प्रवेश किया। साठ हज़ार पाउण्ड बारूद पाया गया, ज़मीन में गड़ी हुई मस्कट, नये प्रकार के गन के लिए पीतल के गोले, कैनन बॉल की मरम्मत के कारखाने, सेना की वर्दियाँ जमा थीं। ध्वज, ड्रम, फ्रेंच बिगुल, होवित्जर गन, जिनकी तैयारी यूरोप में हुई थी, भिन्न प्रकार के शस्त्रों पर अंग्रेज़ों ने कब्ज़ा कर लिया।

भविष्य की योजना बनाने के लिए क्रान्तिकारी नेता गोपालपुर गये, उस समय आशा के कोई चिन्ह नहीं थे, न कोई किला था, तात्या, गोपालपुर वापस आ गये। तात्या ने क्रान्ति के लिए एक नई सेना तैयार की, सरदार और दरबार के कुछ लोगों को अपनी तरफ कर लिया। उन्होंने सहायता का वादा किया और 1 महीने में ही ग्वालियर इनके पास था। इन्होंने ग्वालियर की मिलिट्री पोजीशन प्राप्त की। रानी ने पेशवा से कहा कि अब वे ग्वालियर की ओर बढ़ें।

28 मई 1858 को क्रान्तिकारी, अमीन महल पहुँचे, महालकारों ने उन्हें रोकने का प्रयास किया तो जवाब मिला कि वे पेशवा हैं, उनकी सेना 'स्वराज और स्वधर्म' के लिए लड़ रही है। उनके इन शब्दों से कायर शान्त हो गये और वीरों ने इनका स्वागत किया। ये वहाँ पहुँच गये, उन्होंने सिंधिया को सहायता के लिए एक पत्र लिखा। सिंधिया अपनी सेना और तोपों के साथ, पेशवा की तरफ पहुँचे।



List of Houses & late the property of Ranee of Jhansee

1 Pucka built house of Brick & Stone of 4 Stories in Mohulla Brihma Ghat -

1 Do Do of 4 Stories in Mohulla Do -

1 Do Do of 3 Stories in Mohulla Ghasee tolah -

Two Upper roomed Pucka built Houses in Mohulla Jarwasee tola -

A large spot of ground more or less 3 Beegahs with houses & walls built thereon in Mohulla Supt Sagur -

A A large Pucka built House well known as Bengalee barah situated at Kalbhairo -

7/21

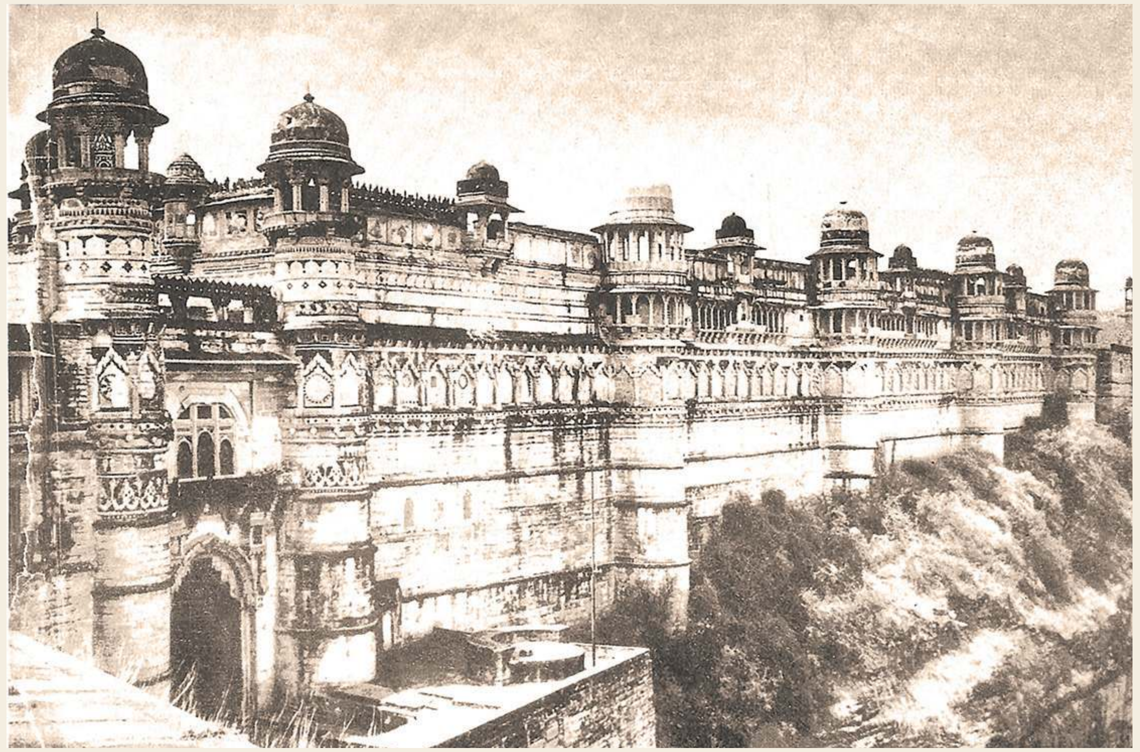
Offg Magte

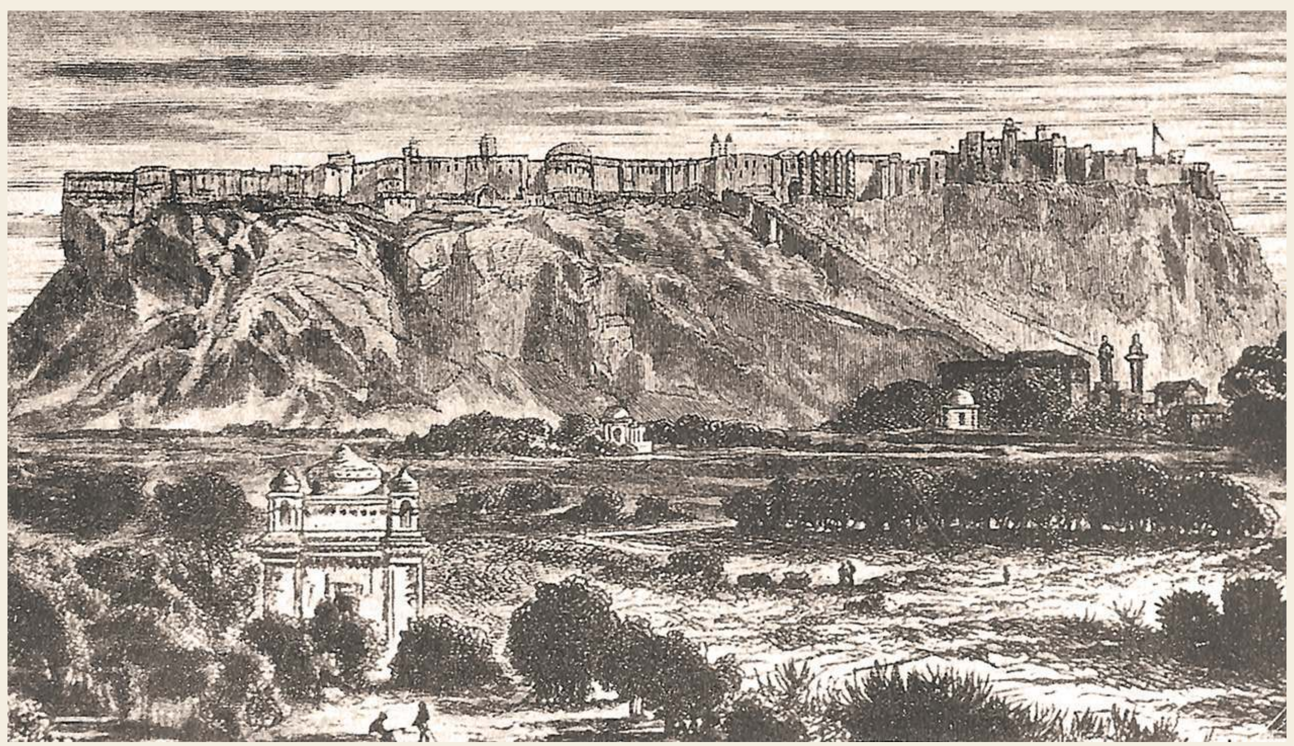
रानी लक्ष्मीबाई के बनारस स्थित, ज़ब्त किये गये भवनों की सूची

1 जून को रानी लक्ष्मीबाई, अपने 300 घुड़सवारों के साथ आगे बढ़ीं और सेना ने जैसे ही तात्या को देखा तो इन्होंने पेशवा के विरुद्ध लड़ाई करने से इन्कार कर दिया और ये पेशवा के साथ सम्मिलित हो गये। ग्वालियर में सबने पेशवा के ध्वज का सम्मान किया।

3 जून को, जोकि एक शुभ दिन था, फूलबाग में एक दरबार बुलाया गया। सरदार, सिलेदार, कैवलरी अफसर, जो श्रीमंत के साथ हो गये थे, उन्होंने अपने पदानुसार, स्थान ग्रहण किया। तात्या टोपे, अरब, रोहेला, पठान, राजपूत, परदेसी और अन्य जो इनके नीचे थे, वो तलवारों के साथ, सेना वर्दी में दरबार आये, श्रीमंत स्वयं पेशवा की वेशभूषा में थे। वह सिंहासन पर बैठे, 20 लाख का वितरण सैनिकों के बीच में किया गया। श्रीमंत राव साहब, जो नाना के प्रतिनिधि थे, उन्होंने नये राज्य की स्थापना की और क्रान्तिकारी पार्टी में आशा जागृत की। ह्यू रोज़, ग्वालियर की ओर बढ़ा, राव साहब बांदा के नवाब की ओर जा रहे थे और नवाब, राव साहब की ओर। इस उथल–पुथल में रानी बिल्कुल शान्त थीं, उनको कोई डर नहीं था, इन्होंने राव साहब को प्रेरित किया। रानी ने सेना वर्दी पहन ली और एक अच्छे घोड़े पर सवार हो गयीं, म्यान से अपनी तलवार निकाली और सेना से कहा कि वे आगे बढ़ें। ड्रम, नगाड़े बिगुल की आवाज़ें सुनाई देने लगीं।

17 जून को कोटा–की–सराय पर रानी ने कुछ सैनिकों के साथ अंग्रेज़ सेना को चुनौती दी परन्तु उनकी सेना, उनके समान वीर नहीं थी पर इनकी दो सहेलियाँ, मंदार और काशी इनके साथ थीं। वे पुरुषों की वेशभूषा में थीं, भारतीय इतिहास में इनकी देशभक्ति को याद रखा जाएगा। बिजली के समान यह आगे बढ़ीं। अंग्रेज़ों ने इन पर कई बार हमला किया अन्त में स्मिथ को वहाँ से हटना पड़ा।





ग्वालियर का किला

कोटा की सराय, ग्वालियर के दक्षिण–पूर्व में 3–4 मील की दूरी पर थी, यहाँ पर छोटा किला और सराय थी। यहाँ पर ब्रिगेडियर स्मिथ को ह्यू रोज़ ने कहा था कि वे वहाँ पर रुकें और वहाँ से संचार बनाए रखें, पर स्मिथ के पास बहुत सामान था, जो सुरक्षित नहीं था।

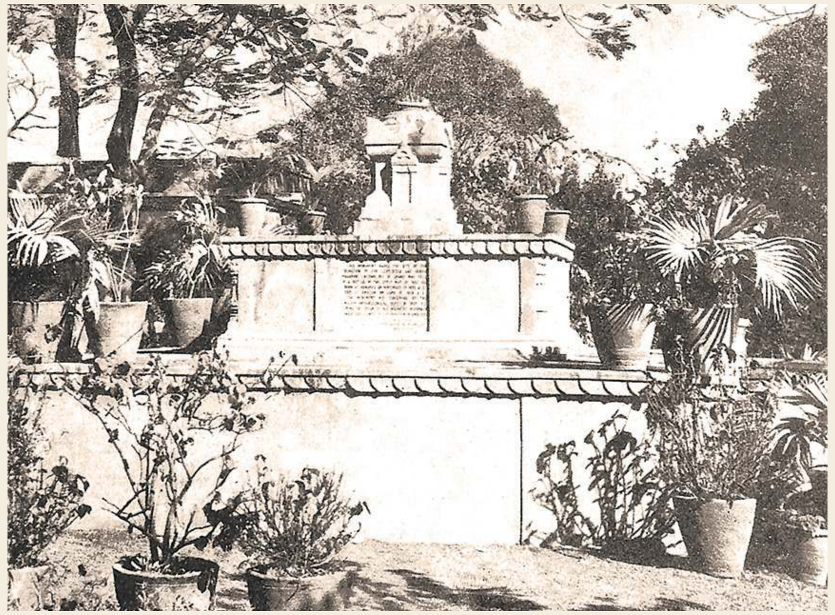
जी.डब्ल्यू. फॉरेस्ट– वहाँ पर दुश्मन बड़े समूह में दिख रहे थे और उन पर हमला करने के लिए तैयार थे। उन्होंने पहल के लिए कदम उठाया और 8 हुसार (Hussars) के साथ नदी पार कर ली। रानी आगे बढ़ीं तो उनके ऊपर एक छिपी हुई बैटरी खुली, वे वहाँ से हटना चाह रही थीं, उधर ब्रिगेडियर का घोड़ा भी गिर गया था।

18 जून को ग्वालियर में कोटा की सराय का युद्ध हुआ। ब्रिगेडियर स्मिथ ने आगे बढ़ने का प्रयास किया और अपनी इन्फेंट्री आगे भेज दी। इनके साथ घोड़े का तोपखाना भी था, आगे बढ़ने पर चार फुट के पानी ने इन्हें रोक दिया था।

तात्या टोपे की कमान में फूलबाग पैलेस था। फूलबाग पैलेस के पास 2 बैटरी, 6 और 5 गन की थीं। लेकिन बाएँ ओर से जो पहाड़ थे, वहाँ से सिपाहियों ने अंग्रेज़ों पर हमला किया परन्तु फूलबाग पर अंग्रेज़ों को सफलता प्राप्त हुई। लेकिन थोड़े समय के लिए ही, इनके अफ़सर गर्मी से थके हुए थे।

रानी, ह्यू रोज़ का सामना करने के लिए तैयार थीं। उस दिन 18 जून 1858 को वे एक कढ़ी हुई चंदेरी पगड़ी पहने हुए थीं और तमामी क्लोक और पजामा पहने थीं, मोती की माला गले में थी। उनके लिए एक नया घोड़ा तैयार किया गया, जिसे सजाया गया था।



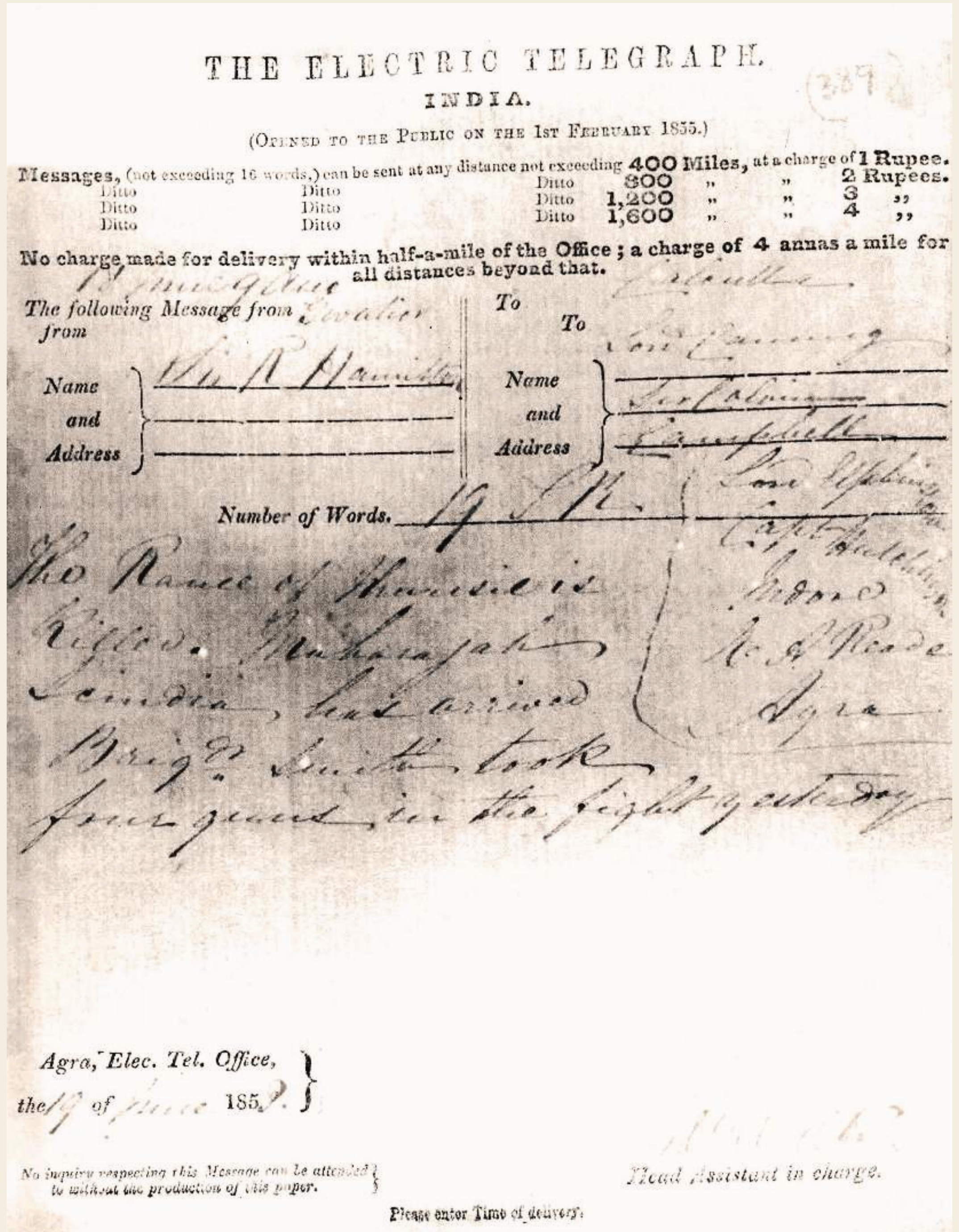


रानी लक्ष्मीबाई तथा उनकी पुण्य स्मारिका का चित्र

समाचार मिला कि अंग्रेज़ पहुँच रहे हैं तो लक्ष्मीबाई तम्बू से बाहर निकलीं और अपनी सेना के साथ आगे बढ़ीं, जो बार–बार पराजित हो रही थीं और वे कम होते चले गये। अब रानी दिखाई दीं, जो अपनी सेना का मनोबल बढ़ा रही थीं, पर कोई लाभ नहीं हुआ। ऊँटों की टुकड़ी (कैमल कोर) को सर ह्यू रोज़ बढ़ावा दे रहे थे, उसने उनकी अन्तिम लाइन को तोड़ दिया। रानी आगे बढ़ती गयीं, रानी ने देखा कि अंग्रेज़ सेना उनको पीछे से भी घेर चुकी थी।

रानी के पास अब केवल 20 घुड़सवार थे, अपनी महिला सहायकों के साथ वे आगे बढ़ना चाह रही थीं ताकि वे अपने मित्रों के साथ सम्मिलित हो जाएँ हुसार (हथियारों से युक्त घुड़सवारों) को पता नहीं चला कि वे कहाँ थीं लेकिन वे गोलियाँ चलाते रहे। रानी वीरता के साथ अपने रास्ते को साफ कर, आगे बढ़ीं। उन्होंने एक आवाज़ सुनी कि बाई साहब मैं मर गई हूँ। उन्होंने मुड़कर देखा कि मंदार को एक सिपाही ने मार दिया। क्रोधित होकर उन्होंने अंग्रेज़ पर हमला किया और उसे मार दिया। फिर वे आगे बढ़ीं लेकिन उनके घोड़े ने आगे बढ़ने से इन्कार किया, वह गोल–गोल चक्कर काटने लगा। अंग्रेज़ उनके काफी करीब आ गये, रानी आगे बढ़ीं, तलवार भाँजते हुए, उनमें से एक ने उनके सिर पर तलवार से वार किया। घायल रूप में उनका एक वफादार नौकर, रामचन्द्र राव देशमुख, उन्हें पास के एक घर में ले गया। वहाँ गंगादास बाबा ने इन्हें ठण्डा पानी दिया और एक पलंग पर लिटा दिया। ये खून से लथपथ थीं, इनकी मृत्यु हो गयी।

रामचन्द्र राव ने उनके मृत्यु के समय दिये गये निर्देशों का पालन किया। उन्होंने घास का एक ढेर लगाया, जिसे शत्रु ने नहीं देखा, उस पर रानी को लिटा दिया और वहीं उनका अन्तिम संस्कार कर दिया।



THE ELECTRIC TELEGRAPH.

INDIA.

(Opened to the Public on the 1st February 1855.)

Messages, (not exceeding 16 words,) can be sent at any distance not exceeding 400 Miles, at a charge of 1 Rupee.
Ditto Ditto Ditto 800 " " 2 Rupees.
Ditto Ditto Ditto 1,200 " " 3 "
Ditto Ditto Ditto 1,600 " " 4 "

No charge made for delivery within half-a-mile of the Office; a charge of 4 annas a mile for all distances beyond that.

The following Message from / from — To / To

Name and Address — Name and Address

Number of Words.

Agra, Elec. Tel. Office,
the of 185

No inquiry respecting this Message can be attended to without the production of this paper.

Head Assistant in charge.

Please enter Time of delivery.

रानी लक्ष्मीबाई मृत्यु सम्बंधी टेलिग्राम– दिनांक 18 जून, 1858
ग्वालियर से आर. हैमिन्टन ने कलकत्ता में लार्ड कैनिन को 18 जून, 1858 को
टेलिग्राम प्रेषित कर सूचित किया कि झाँसी की रानी मारी गईं, महाराजा सिंधिया पहुँच चुके हैं
ब्रिगेडियर स्मिथ ने कल के युद्ध में चार तोपों पर कब्ज़ा किया

फॉरेस्ट ने रानी के अन्तिम समय का विवरण, अपनी पुस्तक ''ए हिस्ट्री ऑफ द इण्डियन म्यूटिनी'' (A History of the Indian Mutiny) में दिया है। पर उनके नौकर ने जो बताया है, वही विवरण (Account) सबसे सत्य है।

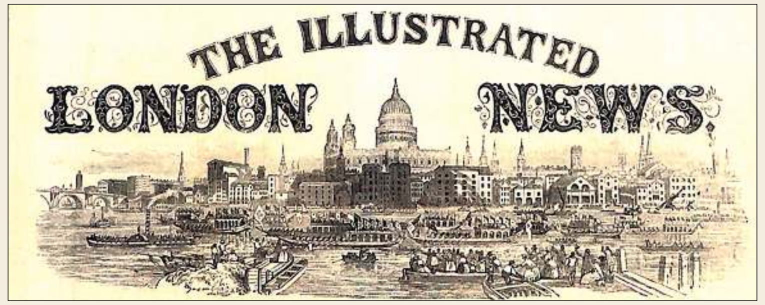
उनका सपना था कि वो अपनी सेना को लाल जैकेट और सफेद पगड़ी में लेकर जाएँ। उनकी पहचान न हो पाए कि महिला हैं या पुरुष। मेजर मैकफर्लन ने रिपोर्ट ऑन अफेयर्स ऑफ ग्वालियर 24 मई–20 जून, 1858 में लिखा है कि इनकी मृत्यु के बाद, इन्हें एक बगीचे में जला दिया गया।

सर रॉबर्ट हैमिल्टन ने बताया कि वह विद्रोहियों में सबसे बहादुर और बेस्ट मिलिट्री विद्रोही थीं। डा–लो ने रानी के चरित्र का विवरण दिया है, वह युवा, ऊर्जा और गर्विता से भरी हुई, समझौता न करने वाली थीं।

कुँअर सिंह व अन्य

1857 के प्रथम स्वतंत्रता संग्राम में और भी रियासतों और ज़मींदारों के नवाबों और शासकों ने भाग लिया था। 5 अगस्त 1857 को कुँअर सिंह ने स्वयं को शाहाबाद का राजा घोषित किया था। इनके महल को जगदीशपुर में जला दिया गया। इनके भाई अमर सिंह बड़े थे, निस्वर सिंह थे, जो इनके चीफ थे और जवान सिंह चीफ थे। इनको जगदीशपुर की घाटियों में खदेड़ कर जनरल आयर ने भगा दिया था, यह जंगल में रुके थे। 19 अगस्त 1857 को ये अकबरपुर पहुँचे। अमर सिंह ने देहरी को जला दिया। 20 अगस्त को कुँअर सिंह रोहतासगढ़ पहुँचे। उधर शहज़ादा फिरोज़शाह मसनद पर बैठा दिया गया, दूसरे दिन मंदसौर में विद्रोह भड़क उठा। कुँअर सिंह रामगढ़ पहुँचे और घोरावल को लूट लिया। 7 सितम्बर को रीवा की ओर जाने वाली सड़क को बन्द कर दिया गया। 8 सितम्बर को वह मिर्ज़ापुर से होते हुए, रीवा पहुँचते हैं। फिर 29 सितम्बर को कुँअर सिंह, बांदा पहुँचे। इनके साथ दानापुर के 1800 सैनिक थे। 8 अक्टूबर को बांदा के नवाब ने अजयगढ़ के किले पर आक्रमण किया। 10 फरवरी 1858 को नाना साहब की नौबतगंज में होने की सूचना मिली। कुँअर सिंह के भी अयोध्या पहुँचने की सूचना मिली है। नाना साहब कालपी पहुँचे।

17 मार्च 1858 को अतरौलिया में कुँअर सिंह की विजय हुई। 18 मार्च 1858 को नाना साहब के ऊपर 1 लाख का इनाम रखा गया। 22 मार्च 1858 को कुँअर सिंह ने मिलमैन को हरा दिया। 24 मार्च को नाना साहब बरेली पहुँचे। खान बहादुर खान की ''गन पाउडर फैक्ट्री'' में विस्फोट हुआ। 26 मार्च को कुँअर सिंह ने आजमगढ़ पर कब्ज़ा कर लिया। 21 अप्रैल को शिवपुर घाट पर कुँअर सिंह ने गंगा पार की, वह गम्भीर रूप से घायल थे। जगदीशपुर में ल ग्रैण्ड के अधीन थे, कुँअर सिंह ने 23 अप्रैल 1858 को अंग्रेज़ों को पराजित किया। स्वयं को इन्होंने राजा घोषित किया।





पालकी में बैठे कुँवर सिंह का चित्र, जिसमें सेवक उनके समीप खड़े हुए हैं, दिनांक–13 अक्टूबर, 1857
इलस्ट्रेटेड न्यूज़ लंदन



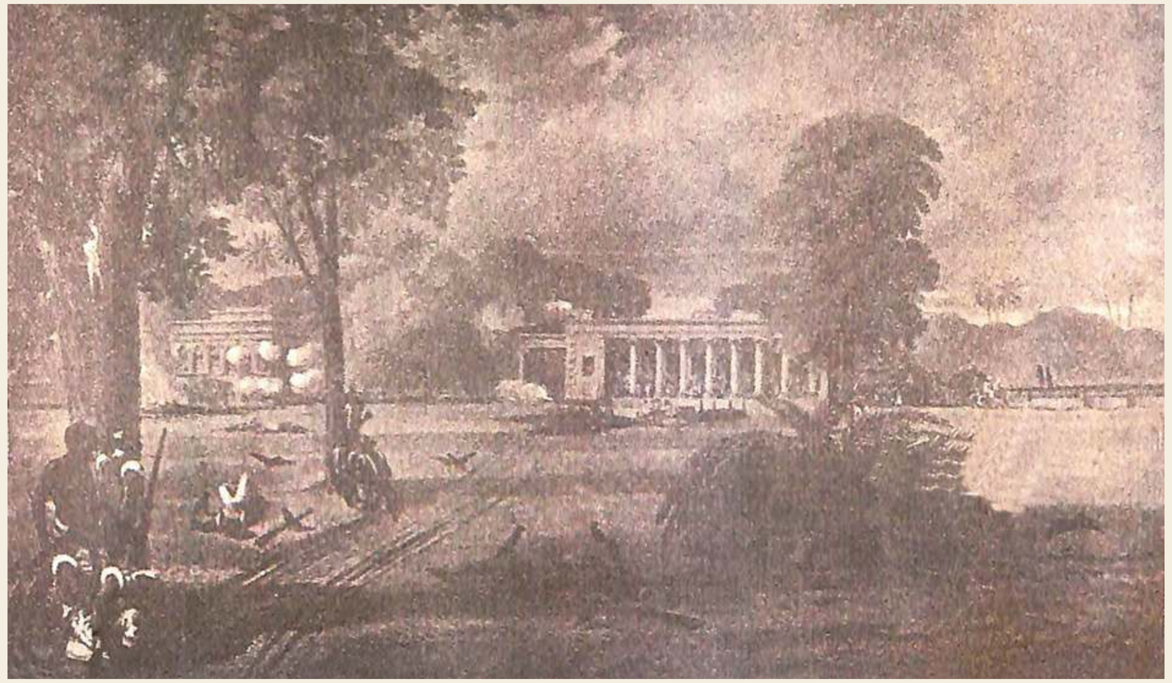
बाबू कुँवर सिंह – ए पिक्टोरियल 1857

कुँअर सिंह के बारे में मैलेसन ने कहा कि – (इण्डियन म्यूटिनी वॉल्यूम – 4) ''कुँअर सिंह बहुत निडर, धृष्ट और वीर थे, इन्हें सेनाभ्यास में समय का मूल्य मालूम था।''

सावरकर के अनुसार, कुँअर सिंह की मृत्यु के बाद भी महिलाएँ, हार मान कर दास और कैदी के रूप में बंदी नहीं बनाई जा सकीं। कैमूर पहाड़ों के बीच, जब अंग्रेज़ पीछा कर रहे थे, सारी जनता की हमदर्दी अमर सिंह के साथ थी, उन्होंने अंग्रेज़ों को अमर सिंह के विषय में गलत सूचना दी थी। उन्होंने समर्पण नहीं किया। महिलाओं ने भी अंग्रेज़ों का सामना किया और कुँअर सिंह के महल की 150 महिलाओं ने जब देखा कि अब सफलता की कोई आशा नहीं है तो वे तोपों के आगे खड़ी हो गईं और स्वयं को उड़वा दिया और शहीद होकर अमर हो गईं।

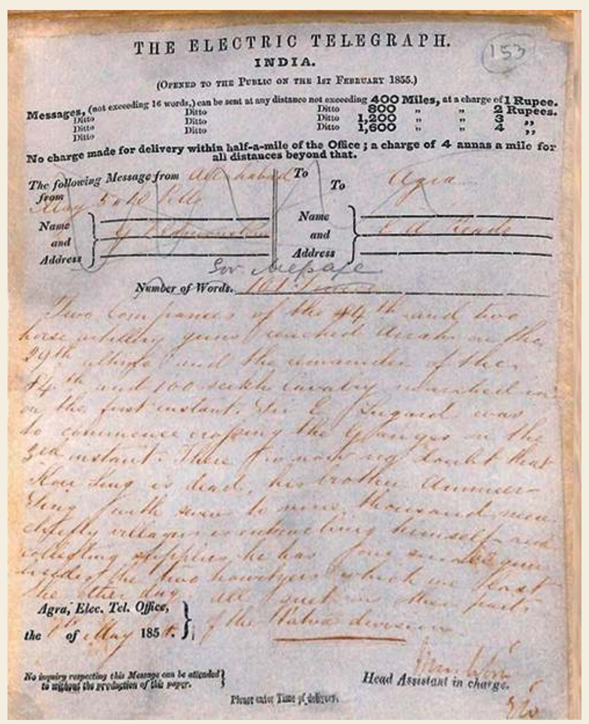
3 मई को अहमदुल्ला शाह एक बड़ी सेना के साथ मोहम्मदी से शाहजहाँपुर पहुँचे। 6 मई को बरेली के युद्ध में, गाज़ियों का हमला प्रसिद्ध है, जिसमें 133 गाज़ी, तलवार से मारे गये और बरेली का समर्पण हुआ पर विद्रोही नेता फरार हो गये। 11 मई को अमर सिंह पिऊ के पास पराजित हुए और भाग निकले, शाहजहाँपुर का युद्ध हुआ। 13 मई को सिपाहियों ने ब्रिटिश कैम्प का सामना जगदीशपुर में किया।

15 मई तक विद्रोही नेता, जिसमें नाना साहब, खान बहादुर खान और मौलवी अहमदुल्ला शाह, शाहजहाँपुर के निकट थे। जब खुलकर लड़ाई से विजय की सम्भावना कम हो गई तो बारी से बितौली के बीच में अहमदुल्ला शाह ने गुरिल्ला प्रणाली अपनाई। 15 जून 1858 को अहमदुल्ला शाह ने पुवायाँ पर हमला किया और 16 जून, 1858 को हुए ''मोरार के युद्ध'' में वह मारे गये।



आरा की घेराबंदी

ए हिस्ट्री ऑफ द इण्डियन म्यूटिनी, जी. डब्लू. फॉरेस्ट 1857–58
रिव्यूड एण्ड इलस्ट्रेटेड फ्रॉम ओरिज़नल डॉक्यूमेंट्स वॉल्यूम III, 1912



THE ELECTRIC TELEGRAPH.
INDIA.
(Opened to the Public on the 1st February 1855.)

Messages, (not exceeding 16 words,) can be sent at any distance not exceeding 400 Miles, at a charge of 1 Rupee.
Ditto Ditto Ditto 800 " " 2 Rupees.
Ditto Ditto Ditto 1,200 " " 3 "
Ditto Ditto Ditto 1,600 " " 4 "

No charge made for delivery within half-a-mile of the Office; a charge of 4 annas a mile for all distances beyond that.

The following Message from ... To ... Agra

Name and Address ... | To Name and Address ...

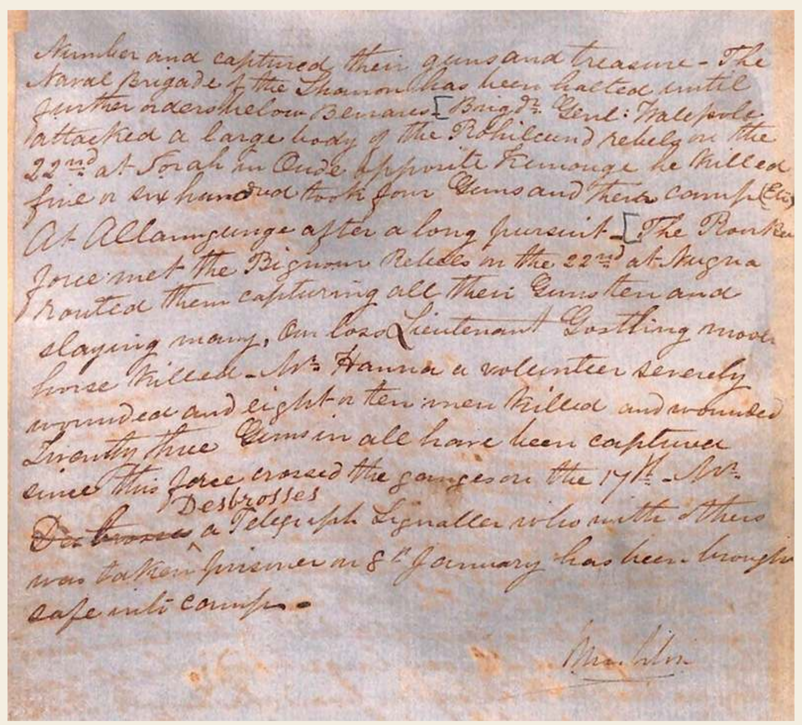
Number of Words. ...

Agra, Elec. Tel. Office, the ... of May 185...

No inquiry respecting this Message can be attended to without the production of this paper.

Head Assistant in charge.

Please enter Time of delivery.



Number and captured their guns and treasure – The Naval Brigade of the Shannon has been halted until further orders below Benares [Brigd.r Genl: Walepole attacked a large body of the Rohilcund rebels on the 22nd at Sorah in Oude opposite Kemonge he killed five or six hundred took four Guns and their camp (Etc) At Allamgunge after a long pursuit – [The Roorkee force met the Bignour Rebels on the 22nd at Mugna Routed them capturing all their Guns ten and slaying many, Our Loss Lieutenant Gostling mooh horse killed – Mr Hanna a volunteer severely wounded and eight or ten men killed and wounded Twenty three Guns in all have been captured since this force crossed the ganges on the 17th – Mr. Desbrosses a Telegraph Signaller who with others was taken prisoner on 8th January has been brought safe into camp –

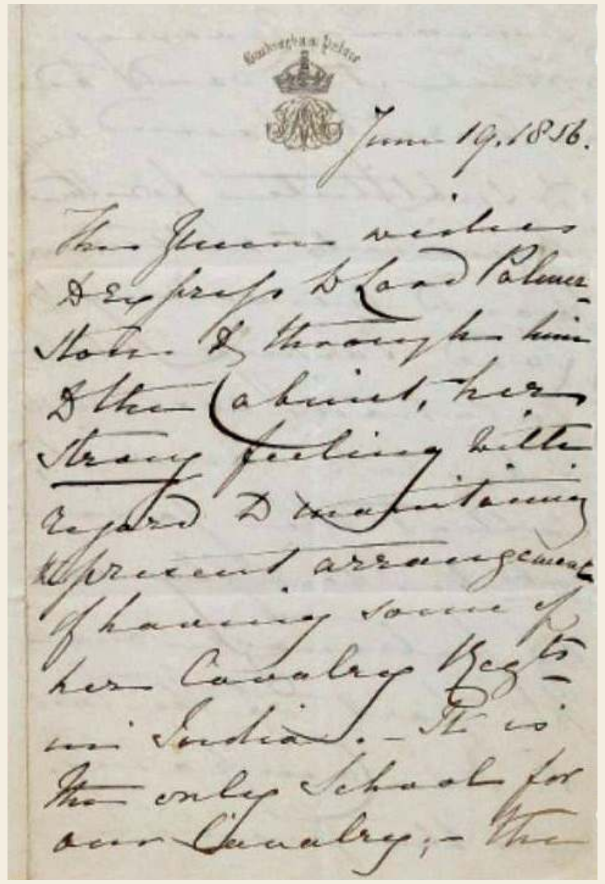
5 मई 1858, कुँवर सिंह की मृत्यु की पुष्टि करता टेलीग्राम

म्यूटिनी टेलीग्राम

पुवायाँ के राजा ने मौलवी का सिर, अंग्रेज़ों को भेंट किया और उन पर घोषित 50,000 रुपये के इनाम का दावा किया। अंग्रेज़ इतिहासकार मैलेसन ने मौलवी अहमदुल्ला शाह को श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए कहा, ''यह सच्चे देशभक्त थे।''

शंकरपुर– यह सबसे बहादुर बैसवारा राजपूत राजा, बेनी माधव की गद्दी थी। इन्हें स्थानीय गायकों ने गीतों में अमर कर दिया है। होली के समय, इनकी वीरता के गीत, वहाँ की जनता गाती है। अप्रैल 1858 में इन्होंने दक्षिण पूर्वी अवध में बंदोबस्त अभियान (सैटलमेंट ऑपरेशन) में हस्तक्षेप किया था, उन ज़मीदारों को फटकारा था, जिन्होंने अंग्रेज़ों के साथ समझौता किया था। 28 अप्रैल को होपग्रान्ट ने इनके विरुद्ध एक टुकड़ी भेजी थी लेकिन इन्हें बिना बेनी माधव को नुकसान पहुँचाए, वापस लखनऊ आना पड़ा। लॉर्ड क्लाइड (कॉलिन कैम्पबेल) ने उनको आश्वासित किया था कि उनके राज्य पर दावे का सोच–विचार किया जाएगा, यदि उन्होंने उनका विरोध नहीं किया। पर उन्होंने जवाब दिया कि वे समर्पण नहीं करेंगे क्योंकि वे स्वयं सम्प्रभु हैं, जिसके लिए वे लड़ाई कर रहे थे लेकिन वे अपने किले को दे देंगे क्योंकि वह उनकी निजी सम्पत्ति थी। उन्होंने रात में शंकरपुर को छोड़ा और डौंडियाखेड़ा गये, जहाँ बाबू राम बख्श सिंह रहते थे।

24 नवम्बर को एक मुठभेड़ में क्रान्तिकारी पराजित हुए पर बेनी माधव पकड़े नहीं गये और भागते हुए अवध में प्रवेश किया। बेनी माधव की मृत्यु, गोरखा सेना के विरुद्ध, दाग घाटी में हुई। उनके भाई जोगराज सिंह भी, इसमें मारे गये (24 फरवरी, 1860, Foreign Political Cunsultations No. 184-88) बिरजीस कदर ने 17 अगस्त, 1857 में इन्हें जौनपुर और आजमगढ़ का स्थाई अमील (प्रशासक) नियुक्त किया था।


Buckingham Palace
June 19. 1856.
The Queen wishes to express to Lord Palmerston & through him to the Cabinet, her strong feeling with regard to maintaining the present arrangement of having some of her Cavalry Regts in India. — It is the only School for our Cavalry, — the

महारानी विक्टोरिया का भारतीय क्रान्ति की पूर्व संध्या को, भारत में सेना के विषय में अपने प्रधानमंत्री, लॉर्ड पामसर्टन को तीसरे व्यक्ति के माध्यम से लिखा गया उल्लेखनीय हस्तलिखित पत्र, जोकि अहस्ताक्षरित था

सोथबीज़ ऑक्शन्स



तात्या टोपे की फौज

राजस्व की प्राप्ति के लिए पूरा ज़ोर लगाना चाहिए और रय्यत की बेहतरी के लिए, इसके लिए उन्हें Favour मिलेगा (म्यूटिनी बस्ता No.6 Train Raja Jaylal Singh)।

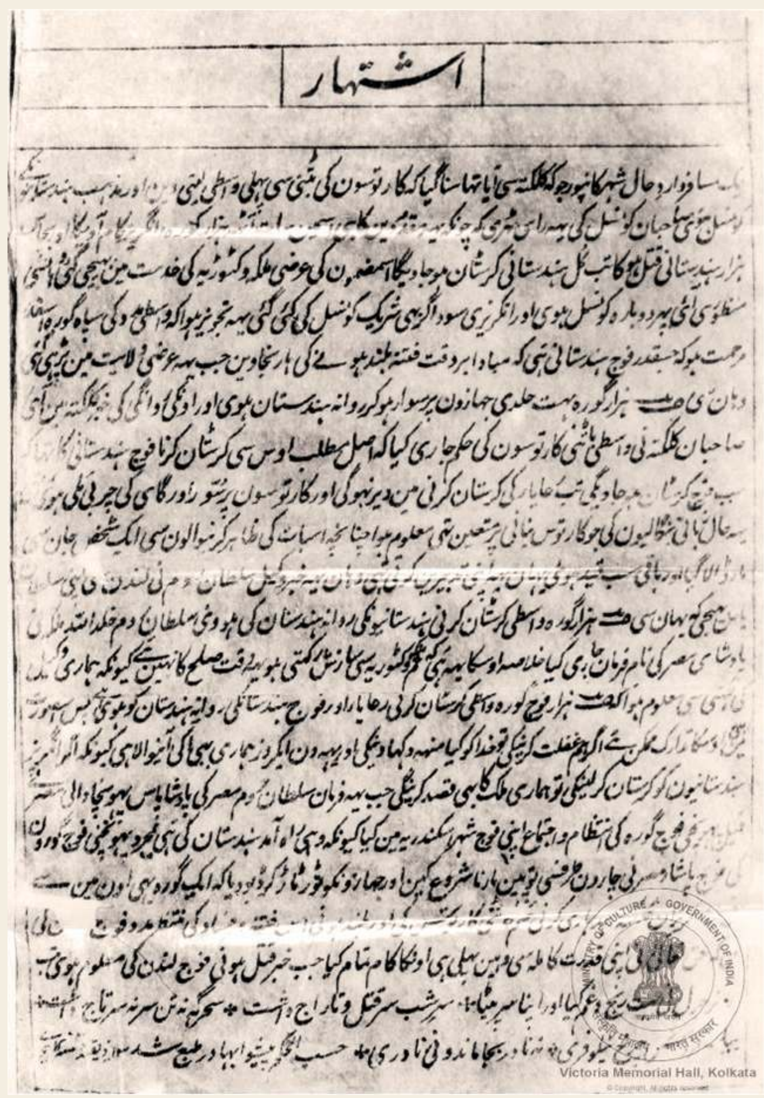
1 नवम्बर 1858 को मलिका विक्टोरिया की घोषणा ज़ारी हुई, जिसके द्वारा ईस्ट इण्डिया कम्पनी का शासन समाप्त हुआ और ब्रिटिश ताज का शासन आरम्भ हुआ। गवर्नर जनरल के स्थान पर वायसराय का नाम दिया गया, लॉर्ड कैनिंग को प्रथम वायसराय नियुक्त किया गया।

5 दिसम्बर 1858 नाना साहब के लिए कहा गया कि उन्हें फतेहगढ़ और कानपुर के बीच में देखा गया। फिरोज़शाह और वलीदाद खाँ अरौल में दिखाई दिये। बालाराव को तुलसीपुर से हटाकर खदेड़ दिया गया।

7 जनवरी, 1859 को अवध में अधिकारिक रूप से विद्रोह समाप्ति की घोषणा की गई। जून, 1959 युवराज फिरोजशाह गंगा नदी के द्वारा तात्या टोपे से मिले। 29 जनवरी को गिरफ्तार होकर फर्रूख़ाबाद के नवाब फतेहगढ़ पहुँचे।

28 मार्च को नाना साहब और बेगम हज़रत महल के बुटवल में होने की सूचना मिलती है। 7 अप्रैल को खान बहादुर खान, बेगम हज़रत महल, नाना साहब, बिरजीस कदर के निया कोट (Niacote) के किले में मौजूद होने की सूचना मिलती है।

8 अप्रैल को तात्या टोपे को मानसिंह के विश्वासघात के कारण पकड़ लिया जाता है और 18 अप्रैल को इन्हें सिपरी में फाँसी दे दी गयी। बख़्त खान, 13 मई को दिल्ली के पतन के बाद लखनऊ आये और इनके मारे जाने की सूचना मिली (Foreign Political Cunsultation No. 187-88, 17 June 1859)।



नाना साहब को पकड़वाने पर इनाम का इश्तिहार
विक्टोरिया मेमोरियल हाल – कोलकाता



मम्मू खाँ– यह स्त्रियों को बेगम के पास सेवा के लिए भेजते थे। इन्हें हत्या और क्रान्ति के नेतृत्व के लिए आजीवन निर्वासन का दण्ड दिया गया
जान निकोलस ट्रेसिडर द्वारा खींचा हुआ चित्र

8 जुलाई 1859 को शान्ति की घोषणा की गई। 24 सितम्बर 1859 को नाना साहब की मृत्यु की घोषणा की गई। तराई में अमर सिंह पकड़े गये, जंग बहादुर ने अमर सिंह को अंग्रेज़ों को सौंप दिया। खान बहादुर खान 9 दिसम्बर 1859 को जंग बहादुर द्वारा पकड़वाये गये, 8 दिन के बाद इनके साथ मम्मू खान को लखनऊ जेल में पहुँचा दिया गया। 24 मार्च 1860 खान बहादुर खान को उसी स्थान पर फाँसी दी जाती है, जहाँ उन्होंने बरेली में विद्रोह का झण्डा फहराया था। सती चौरा घाट पर 3 मई 1860 को ज्वाला प्रसाद को फाँसी दी गई।

सावरकर के अनुसार अजीमुल्ला, नाना साहब को पेंशन की अस्वीकृति से निराश हो गये परन्तु इनके हृदय में एक नयी आशा जागृत हुई। अपनी आशा को पूरा करने के लिए, वे अपने देश, देशवासियों पर निर्भर हो गये। लेकिन साम, दाम और भेद के बिना, ये देश की स्वतंत्रता कैसे प्राप्त करते।

महारानी के घोषणापत्र के बाद नाना साहब ने समर्पण से इन्कार कर दिया था। इन्होंने विक्टोरिया के घोषणा के जवाब में पत्र लिखा कि मैं आत्म समर्पण नहीं करूँगा, अपने प्राणों को त्यागना होगा ही होगा, मैं असम्मानित होकर क्यों मरूँ, जब तक मेरे प्राण रहेंगे, मेरे तुम्हारे बीच में युद्ध रहेगा, चाहे मैं गिरफ्तार होऊँ या मैं मारा जाऊँ या कैदी बनूँ या मुझे फाँसी हो जाए, मैं तलवार का प्रयोग करूँगा। (27 मई 1859 Foreign Political Cusultation No. 68) कानपुर के आरम्भिक चरणों में ये पीछे रहते थे, सामने नहीं आते थे। सेन के अनुसार, ये बिठूर से फर्रूख़ाबाद गये, बरेली, बहराइच फिर तराई के जंगलों में देखे गये। इनका अन्त कैसे होता है, इसके विषय में ज़्यादा जानकारी नहीं है।



लखनऊ की कुछ विशेष इमारतों का गोमती नदी से दृश्य
बाएँ से इमारत कदम रसूल, शाह नज़फ, मोती महल और छत्तर मंज़िल, 1857

योवर्ड, जोकि गोण्डा में हेड क्लर्क थे, अपनी रिपोर्ट (1876 में छपी) ने बताया कि सैकड़ों लोग, जो नेपाल में थे। उन्होंने सबूत दिया कि नाना साहब नेपाल में सुरक्षा पा गये, वे वहाँ वेशभूषा बदलकर पहुँचे, वे सड़कों पर राजधानी में दिखाई दिये।

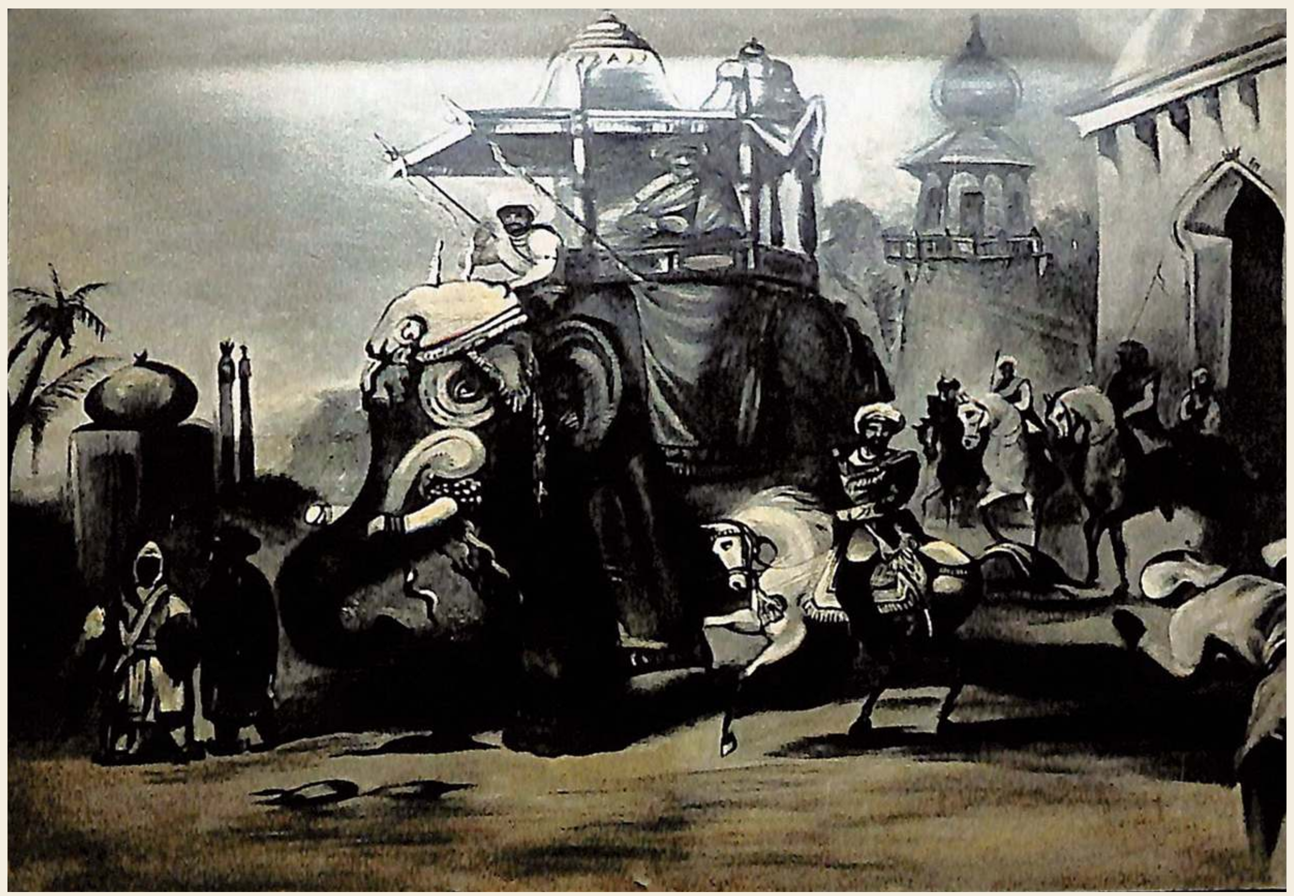
इनका रहन सहन बहुत अच्छा था, इनकी मृत्यु 1864 में मिर्गी द्वारा लकवे से हुई। अपनी गिरफ्तारी के बाद, ज्वाला प्रसाद ने शरर को बताया था कि जिस वक्त नाना की मृत्यु हुई, मैं वहाँ नहीं था परन्तु जब उन्हें जलाया जा रहा था, तब मैं वहाँ उपस्थित था।

अज़ीमुल्ला ने अपनी डायरी आरम्भ की और लिखा कि नाना साहब लखनऊ में छिपे थे, जासूसों ने उनके विषय में सूचना अंग्रेज़ों को दे दी।

कुछ समय के बाद, नेपाल के प्रधानमंत्री इन्हें गिरफ्तार करके, ब्रिटिश सरकार को सौंप देना चाहते थे। वो अपना नाम बदलकर भी छिपे रहते थे।

1926 में इनकी मृत्यु नीमसार मिश्रिख में हुई, जिसे आज नैमिषारण्य कहते हैं। गोमती के किनारे इनका अन्तिम संस्कार हुआ और इनके तीसरे बेटे ने अन्तिम संस्कार में भाग लिया था। अज़ीमुल्ला भी उपस्थित थे (इस डायरी की सत्यता संक्षिप्त है)।

फ्रेन्ड ऑफ इण्डिया (कलकत्ता में प्रकाशित) 10 नवम्बर 1859 में लिखा गया (द इंग्लिश मैन के पत्रकार ने) बताया कि 24 सितम्बर 1859 को ताराघड़ी में इनकी मृत्यु हुई। इस प्रकार से नाना साहब की मृत्यु के बारे में कई मत हैं।



नाना साहब का लखनऊ आगमन (अप्रैल, 1857)
स्मृति संग्रहालय रेज़ीडेन्सी, पुरातत्व विभाग लखनऊ

नाना साहब, शिवाजी के कार्यों को बहुत महत्व देते थे। जान केयी ने बताया है कि वे शान्त स्वभाव के थे और दिखावा नहीं करते थे। उनकी आदतें खर्चीली नहीं थीं, दरबार में पोशाक थी। किनखाब में (ब्रॉकेड), तात हीरों से जड़े थे। वह बहुत उदार थे और अंग्रेज़ों का भी स्वागत करते थे, अंग्रेज़ जब थक जाते थे तो कानपुर जाते थे, उन्हें जाते समय महंगी शालें और हीरे उपहार स्वरूप दिये जाते थे।

ट्रेवेलियन ने बताया था कि ये शिक्षित थे और राजनीति में रूचि रखते थे। सावरकर ने लिखा कि वे अपने देश के नरसिंह मन्त्री थे, जो विदेशी शासन और स्वराज में विशेष अन्तर था, उन्होंने सबके सामने बताया।

1857 के विद्रोह में मद्रास की प्रेज़िडेंसी प्रभावित नहीं थी। 1 मद्रास एन.आई. के व्यवहार की तहक़ीकात हुई थी, जब इन्होंने निर्देशों का पालन करने से इन्कार किया था (Foreign Political Cunsultation No. 251-54, 18 दिसम्बर 1857)।

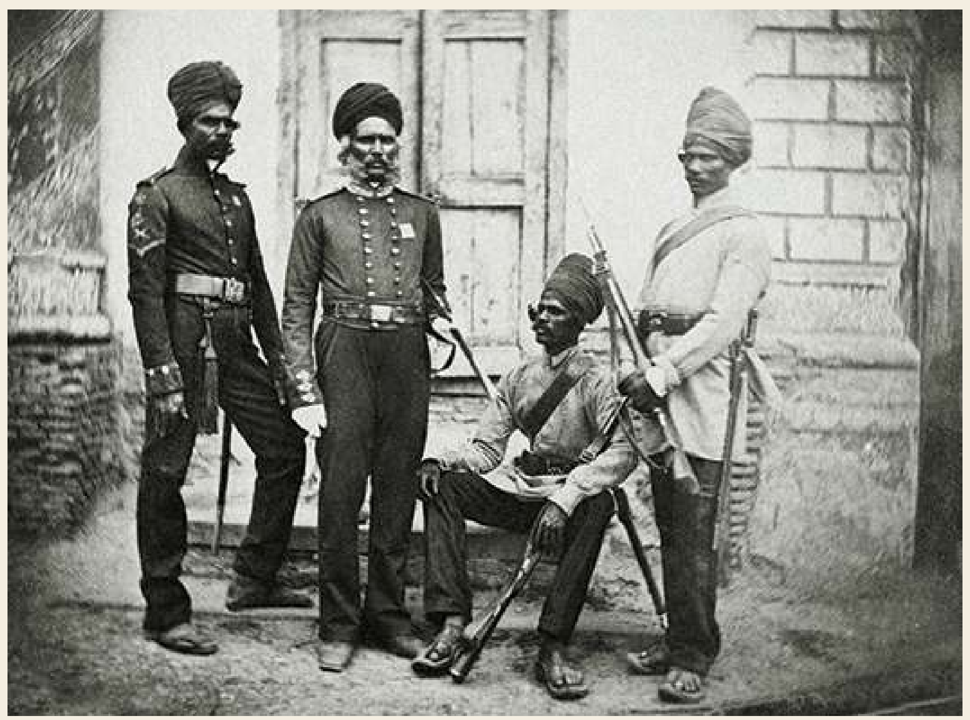
बाम्बे प्रेज़िडेंसी में सतारा, कोल्हापुर नारगुंड, सामन्तवाड़ी जिले में विद्रोह हुआ।

नॉर्थ प्रॉविंस, अवध (इनकी सीट आगरा में थी) और रूहेलखण्ड में सबसे ज़्यादा सफलता प्राप्त हुई। बिजनौर और मुरादाबाद में ज़्यादा सहयोग नहीं मिला था, नॉर्थ वेस्ट प्रॉविंस में यहाँ प्रभावशाली ज़मींदारों ने सेना विद्रोहियों का साथ दिया लेकिन कुछ विदेशी सरकार के साथ थे।

अंग्रेज़ों ने मेरठ और सहारनपुर से अपना नियंत्रण पूरी तरह नहीं खोया। दिल्ली के निकट गाँव अपनी वफादारी में विभाजित थे।



कैसरबाग में सिक्ख सैपर्स एवं खनिक
फेलिचे बीटो द्वारा खींची गई फोटो (1857–58), द इण्डियन म्यूटिनी



लखनऊ में सूबेदार एवं सिपाही (1857–58)
फेलिचे बीटो द्वारा खींचा गया चित्र

एस.एन. सेन कहते हैं कि अवध में विद्रोह को राष्ट्रीय दायरा प्राप्त हुआ लेकिन इस कथन का प्रयोग सीमित रूप से करना चाहिए क्योंकि यह भारतीय राष्ट्रीयता का प्रारम्भ था।

1857 के विद्रोह में भाग लेने वाले जनता के सभी वर्गों से आये। विलायती या अफग़ानों का बहुमत था, विद्रोही सेना ने धार और मण्डसौर में।

केयी के अनुसार, मोहम्मडन और हिन्दू हमारे विरुद्ध एक हो गये थे। एक समय था, जब इसे हिन्दू आन्दोलन या मुस्लिम आन्दोलन कहा जाता था पर दोनों की ही भागीदारी क्रान्तिकारी सेना में पाई गई।

नाना के साथ अजीमुल्ला खान, बहादुर खान के साथ शोभाराम, रानी झाँसी के साथ विश्वासी अफग़ान गारद थे। अवध में पासी अधिक संख्या में थे, भील राजपूताना और मध्य भारत (Central India) में, संथाल ने साहूकारों और सरकार के विरुद्ध निर्णय लिया और क्योंकि सरकार उन्हें सुरक्षा दे रही थी।

''थ्योरी ऑफ इण्डियन म्यूटिनी'' में चौधरी ने लिखा है कि जैतपुर की रानी, तेहरी की रीजेंट रानी, जालौन की रानी ताराबाई, रामगढ़ की रानी ने भी विद्रोह में भाग लिया था।

जी. डब्ल्यू. फॉरेस्ट, जिन्होंने म्यूटिनी रिकॉर्ड का विस्तृत अध्ययन किया कहते हैं कि विद्रोह ने इतिहासकार और प्रशासकों को बहुत सबक सिखाए हैं। उनमें से एक है कि यह एक चेतावनी है, यह असम्भव है कि एक क्रान्ति उपलब्ध हो सकती थी, जिसमें ब्राह्मण, शूद्र, मोहम्मडन और हिन्दू हमारे विरुद्ध संगठित थे।



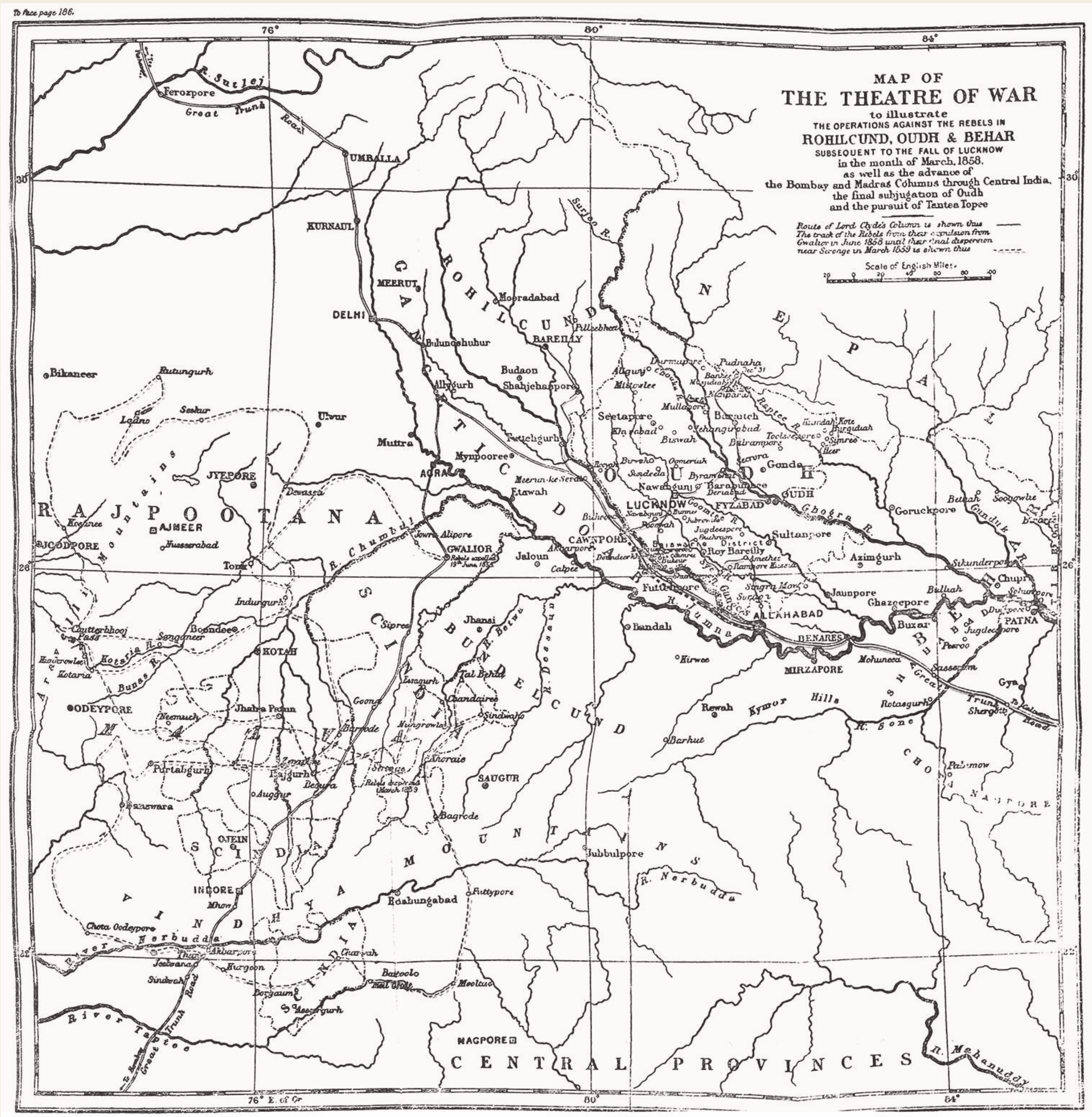
विनायक दामोदर सावरकर (1883–1966)

शंकर शाह गढ़ामण्डल (गोंडवाना) के राजा थे, जिन्हें अंग्रेज़ों ने अपने पुत्र सहित 18 सितम्बर 1858 को विप्लव भड़काने के अपराध में तोप के मुँह से बाँधकर उड़ा दिया था, उनके पुत्र का नाम कुँअर रघुनाथ शाह था। राजा शंकर शाह ज़मींदारों और आम जनता के बीच काफी लोकप्रिय थे।

जबलपुर में तैनात अंग्रेज़ों की 52वीं रेज़ीमेंट का कमाण्डर, लेफ्टिनेंट जनरल क्लार्क बड़ा अत्याचारी था। राजा शंकर शाह ने उसके विरुद्ध संघर्ष का ऐलान किया। धोखे से क्लार्क ने 14 सितम्बर को राजा शंकर शाह और उनके 32 वर्षीय पुत्र रघुनाथ शाह को बन्दी बना लिया और 18 सितम्बर 1858 को तोपों के मुँह पर बाँधकर उड़ा दिया गया।

सावरकर (1883–1966) ने ''1857–स्वतंत्रता का प्रथम युद्ध'' पुस्तक आरम्भ की और 10 मई, 1907 में जब 50वीं वर्षगाँठ हुई, तब इसे पूर्ण किया। जून 1907 में इसकी पाण्डुलिपि को प्रतिबन्धित कर दिया गया और यह पहली बार 1909 में प्रकाशित हुई। फिर मैडम कामा के प्रयासों से 1910 में, 1912 में तीसरा संस्करण अमेरिका में गदर पार्टी के लाला हरदयाल द्वारा, 4 संस्करण 1928 में प्रकाशित हुआ।

भारतवर्ष में प्रथम संस्करण, लाहौर में सरदार भगत सिंह द्वारा और 5वाँ जापान में इण्डियन आर्मी के रास बिहारी और नेताजी सुभाष चन्द्र बोस द्वारा प्रकाशित किया गया। इसके बाद कई संस्करण इसके निकाले गये, इन्होंने अपनी पुस्तक 1857 के प्रथम संघर्ष के शहीदों को समर्पित की। सावरकर ने अपनी पुस्तक में सिपाहियों की वीरता और नायकत्व, उनके आदर्श और बलिदान के विषय में लिखा है। सावरकर का कहना है कि यह सेना विद्रोह नहीं बल्कि क्रान्ति है।



अवध, रोहिलखण्ड और बिहार में लड़े गये युद्धों को दर्शाता नक्शा

ए हिस्ट्री ऑफ द इण्डियन म्यूटिनी, जी. डब्लू. फॉरेस्ट 1857–58

रिव्यूड एण्ड इलस्ट्रेटेड फ्रॉम ओरिज़नल डॉक्यूमेंट्स वॉल्यूम III, 1912

यह धर्म और स्वतंत्रता के लिए युद्ध के रूप में आरम्भ हुआ। यह भारत का प्रथम स्वतंत्रता का युद्ध है, विद्रोही विदेशी सरकार को हटाना चाहते थे और पुरानी व्यवस्था के अन्तर्गत, दिल्ली के राजा सम्राट, बहादुरशाह को वापस लाना चाहते थे।

सावरकर की पुस्तक म्यूटिनी के अध्ययन में विशेष सहायता देती है, इन्होंने म्यूटिनी के अध्ययन को अलग दृष्टिकोण से देखा है। इससे पुराने विवाद को नई शक्ति मिलती है, इसमें चिन्ह हैं, राष्ट्रीय स्वतंत्रता के। इन्होंने ऐसे वातावरण को पैदा किया, एक लोकप्रिय युद्ध के द्वारा देशभक्ति की भावना को जगा दिया, जो 1857 की घटनाओं में दिखाई देती है।

फर्स्ट वार ऑफ इंडिपेंडेंस प्रकट होता है, मराठों के भालों में, राजपूत की तलवारों में, सिखों के कृपाण, इस्लाम के मानने वालों के चन्द्रमा में, यह सारे चिन्ह, एक ही जगह एकत्र हो गये थे। सावरकर प्रथम भारतीय हैं, जिन्होंने आन्दोलन के लोकप्रिय चरित्र पर शक्तिशाली विचार रखे, 1857 के संघर्ष में इन्हें योग्य अधिकारी माना जाता है।

एलेक्ज़ेंडर डफ के अनुसार, ''यह सैन्य विद्रोह नहीं था बल्कि यह एक क्रान्ति थी।''

कौशिक राय, एस.ए. रिजवी, एम.एल. भार्गव, ताराचन्द्र ने भी इसे भारतीय स्वतंत्रता का प्रथम युद्ध माना है।

मार्क्स और एंगल्स ने भी फर्स्ट इण्डियन वार ऑफ इंडिपेंडेंस कहा है।



बहादुरशाह ज़फर का समर्पण
बहादुरशाह ज़फर ने समर्पण किया ताकि बेग़म जीनत महल
और राजकुमार जवान बख़्त बख़्शे जाएँ,
फिर इन्हें बर्मा भेज दिया गया, 7 नवम्बर 1862 में रंगून में इनकी मृत्यु हो गई

जी. डब्ल्यू. फॉरेस्ट ने 'ए हिस्ट्री ऑफ द इण्डियन म्यूटिनी' में ऐतिहासिक दृष्टि से विचार प्रकट किए हैं। और सबसे नीचे वर्ग के लोगों का वर्णन भी किया है। हरीशचन्द्र मुखर्जी– हिन्दू पैट्रियट के सम्पादक हैं, 21 मई 1857 में लिखा कि अब यह लम्बे समय तक म्यूटिनी नहीं रहा बल्कि स्वतंत्रता के लिए संघर्ष हो गया।

बेंजामिन डिज़रायली, जो बाद में प्रधानमंत्री बने चेतावनी दी थी, प्रश्न उठाया कि यह सिपॉय युद्ध का लोकप्रिय चरित्र कहाँ था, इन्होंने बताया कि साम्राज्य का पतन चर्बी वाले कारतूस नहीं थे...

रस्सेल, मॉय डायरी इन इण्डिया– 1858–59 में कहते हैं कि यह प्रजातियों के बीच युद्ध था (इट इज वॉर ऑफ रेस)।

जी.बी. मैलेसन ने केयी की किताब का कार्य जब समाप्त किया तो 1880 में लिखा कि यह आन्दोलन अब राष्ट्रीय हो गया।

द टाइम्स के अनुसार ''युद्ध की लहर नेपाल से गुजरात की सीमा तक, राजपूताना के रेगिस्तानों से निज़ाम के टरेटरी की फ्रंटियर तक, एक ही भावना से प्रेरित होकर, अपने विरोध को एक राष्ट्रीय चरित्र दे रहे थे।''

यह ब्रिटिश शासन को बहुत बड़े स्तर पर प्रथम सीधी चुनौती थी। ऐसा उदाहरण दूसरा नहीं मिलता, जिसमें भारत के सभी वर्गों ने भाग लिया और जो बहुत से प्रान्तों में फैला। कोई ऐसा युद्ध भारत में नहीं हुआ, जो 1 साल से ज़्यादा चला हो, जिसका लक्ष्य था, विदेशी शक्ति को नष्ट करना, यही भारतीय राष्ट्रवाद की उत्पत्ति है।



1857

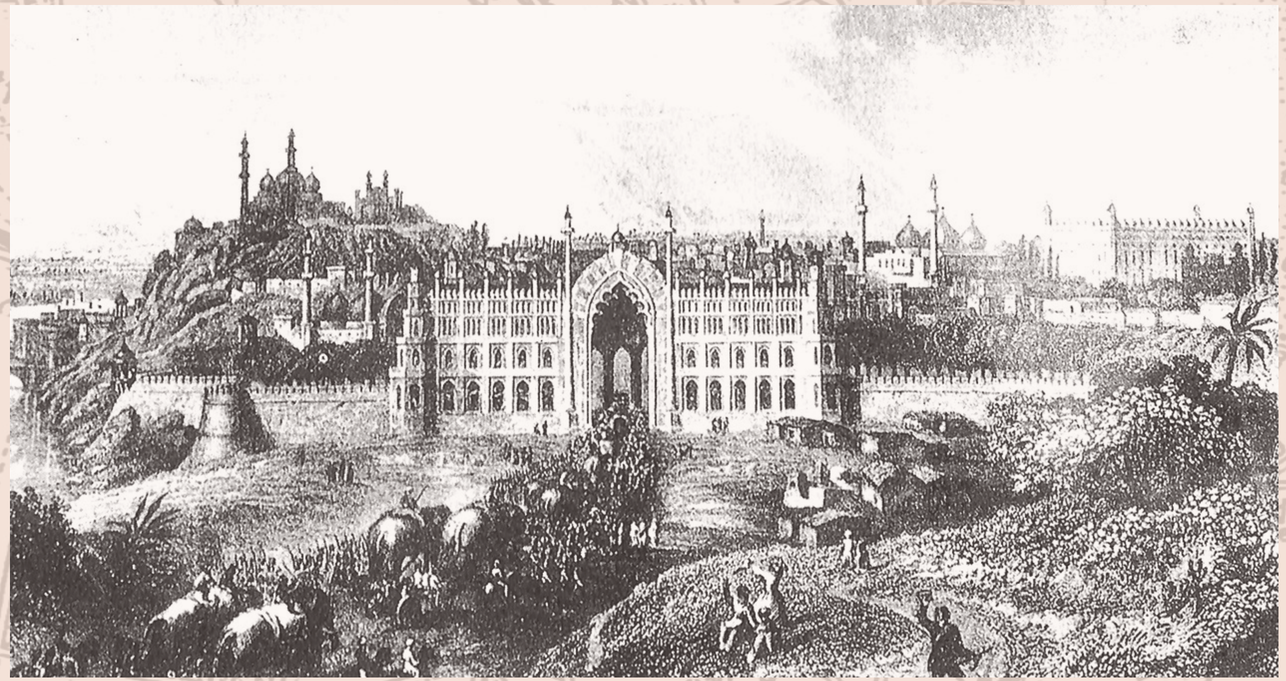
''...यह ब्रिटिश शासन को बहुत बड़े स्तर पर प्रथम सीधी चुनौती थी। ऐसा उदाहरण दूसरा नहीं मिलता, जिसमें भारत के सभी वर्गों ने भाग लिया और जो बहुत से प्रान्तों में फैला। कोई ऐसा युद्ध भारत में नहीं हुआ, जो १ साल से ज़्यादा चला हो, जिसका लक्ष्य था, विदेशी शक्ति को नष्ट करना, यही भारतीय राष्ट्रवाद की उत्पत्ति है...''

सन्दर्भ सूची

- 1857 – एस.एन. सेन
- ए हिस्ट्री ऑफ इण्डियन म्यूटिनी – जी.डब्ल्यू. फॉरेस्ट I वाल्यूम
- ए हिस्ट्री ऑफ इण्डियन म्यूटिनी – जी.डब्ल्यू. फॉरेस्ट II वाल्यूम
- ए हिस्ट्री ऑफ इण्डियन म्यूटिनी – जी.डब्ल्यू. फॉरेस्ट III वाल्यूम
- एन अनरिकार्डेड चैप्टर ऑफ द इण्डियन म्यूटिनी – रेजीनाल्ड जी. विल्बरफोर्स
- डेट लाइन 1857 रिवोल्ट अगेन्स्ट द राज – रूद्रांशु मुखर्जी प्रमोद कपूर
- थ्योरीज ऑफ बहादुर शाह जफ़र
- द म्यूटिनी आउटब्रेक एट मेरठ इन 1857 – जे.ए.बी. पामर
- द म्यूटिनीज़ इन अवध – एम.आर. गबिन्स
- नरेटिव ऑफ इवेन्ट्स नम्बर 406 ऑफ 1858
- नाना साहब पेशवा एण्ड द फाइट फॉर फ्रीडम – आनन्द स्वरूप मिश्रा
- फर्स्ट वॉर ऑफ इडिपेडेंस – विनायक दामोदर सावरकर
- माई इण्डियन म्यूटिनी डायरी – विलियम हावर्ड रस्सेल
- माई रीकलेक्शन ऑफ द सिपॉय रिवोल्ट – मिसेज म्यूटर
- रिकार्ड्स ऑफ द इन्टेलीजेंस डिपार्टमेंट
- नेशनल आर्मी म्यूजियम, लंदन
- विक्टोरिया मेमोरिलय हॉल कोलकाता
- स्मृति संग्रहालय रेजीडेंसी पुरातत्व विभाग, लखनऊ

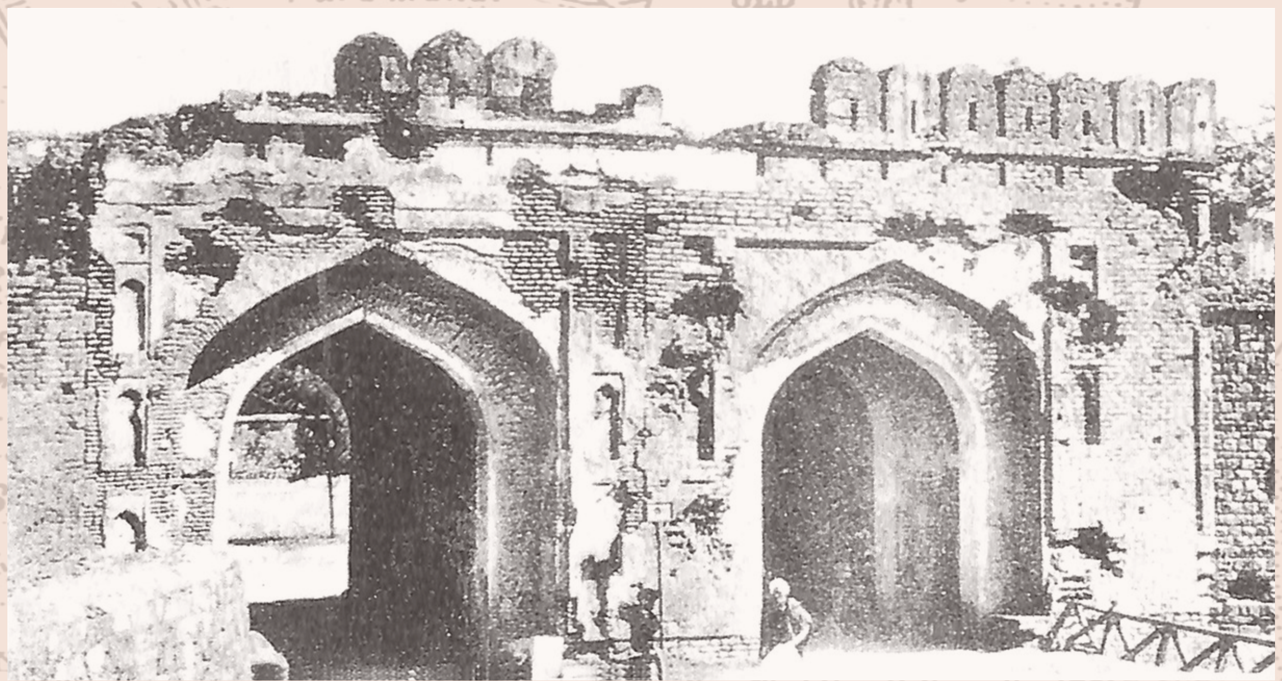
निवास के खण्डहर

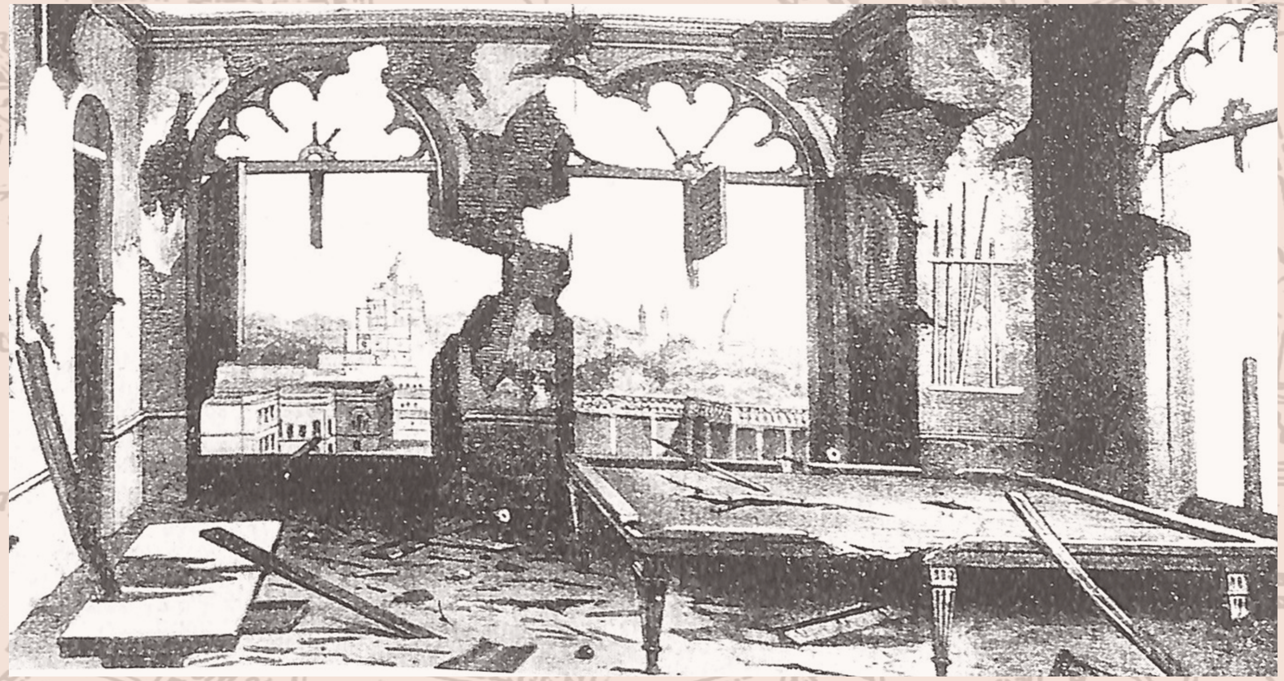




लखनऊ शहर, 1857

कश्मीरी गेट, दिल्ली





निवास का आन्तिरिक भाग – बिलियार्ड रूम

घुड़सवार सेना और विद्रोहियों में मुठभेड़



दिल्ली में क्रान्ति, जून 1857





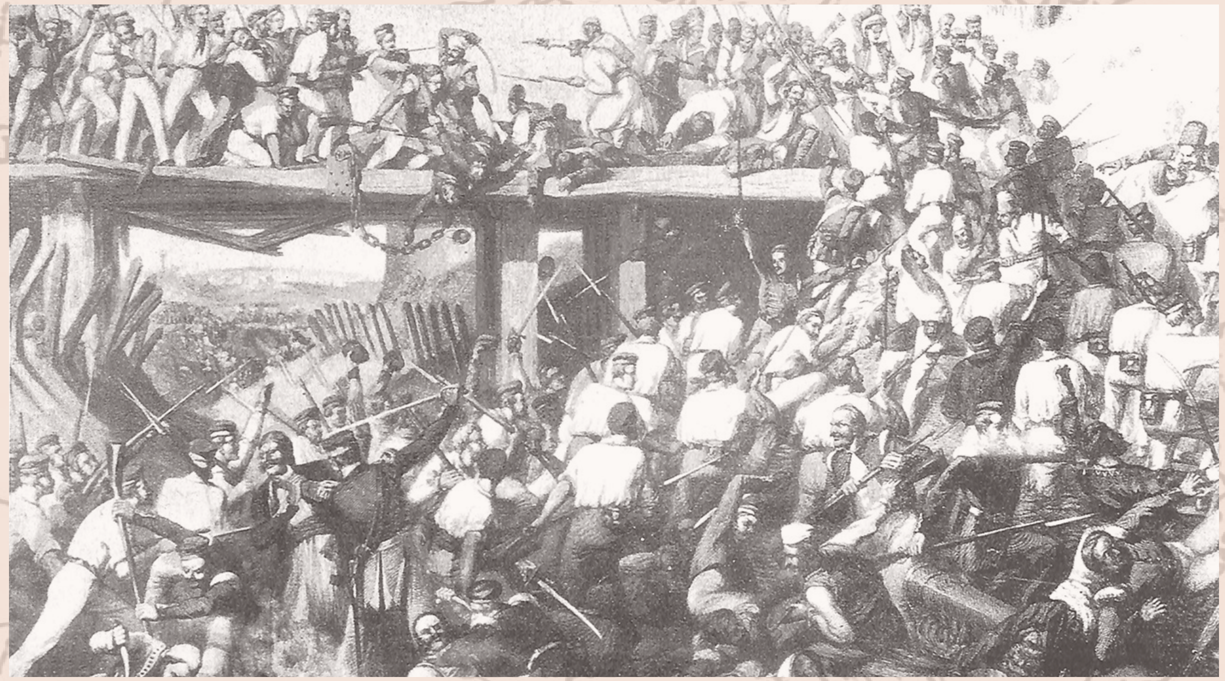
विद्रोहियों द्वारा अंग्रेज़ों पर आक्रमण, 1857



कानपुर से नाव द्वारा भागते हुए, अंग्रेज़ी महिलाओं और बच्चों का नरसंहार

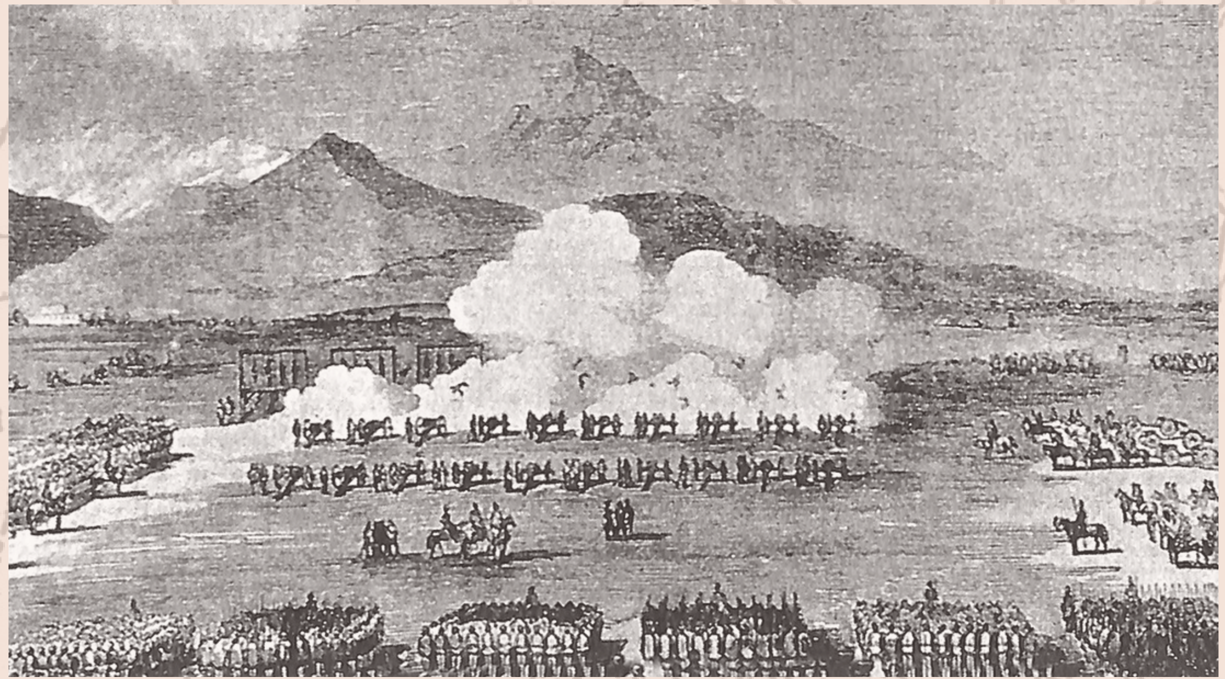
पेशावर में विद्रोही सिपाहियों का निष्पादन

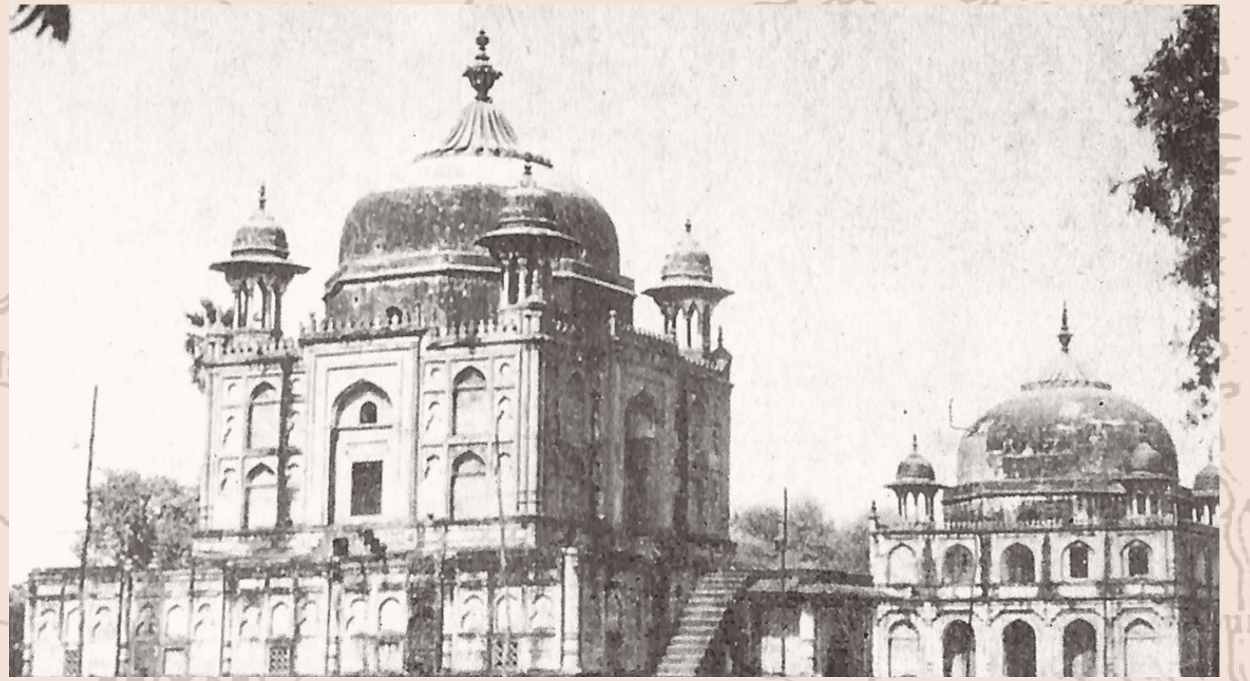




ब्रिटिश सेना द्वारा दिल्ली पर आक्रमण, 14 सितम्बर, 1857

पेशावर में तोपों से उड़ाना





खुसरो बाग, इलाहाबाद

द्वितीय ड्रैगून गार्ड्स, लखनऊ विद्रोहियों का पीछा करते हुए



इण्डियन राइफल्स फायरिंग करते हुए





सिकंदरबाग पर 78वें हाइलैंडर्स, लखनऊ की घेराबंदी



9वीं रानी रॉयल लांसर्स द्वारा भारतीय विद्रोहियों पर हमला

विद्रोहियों को तोप से उड़ाते अंग्रेज़ सैनिक





केसर बाग को बर्ख़ास्त करने पर विचार कर रहे टाइम्स संवाददाता

भारतीय सैनिक, 1857 में अंग्रेज़ों के खिलाफ उठ खड़े हुए





1857 के विद्रोह के दमन के दौरान, स्कॉटिश हाइलैंडर्स द्वारा चार्ज

लखनऊ में रेगन बैटरी पर विद्रोहियों द्वारा हमला





सिपाही और लड़ाकू घोड़े और कश्मीरी गेट पर तूफान, दिल्ली

लखनऊ में विद्रोहियों और अंग्रेज़ सिपाहियों में मुठभेड़, 18 नवम्बर 1857





1857 के भारतीय विद्रोहियों (बंगाल सेना) का एक दृश्य

स्वतंत्रता सेनानियों की हर–मेजेस्टी 9वीं लैंसर्स के साथ मुठभेड़





तबाह हुई हाई–लैण्डर्स की पोस्ट का दृश्य

विद्रोहियों के खिलाफ, क्वीन्ज़ बेज टुकड़ी का प्रहार, 06 मार्च, 1858





सेनानियों की गोलाबारी के उपरांत क्षतिग्रस्त रेज़ीडेन्सी, मुख्य भवन का एक दृश्य

अंग्रेज़ी सेना का एक सिपाही

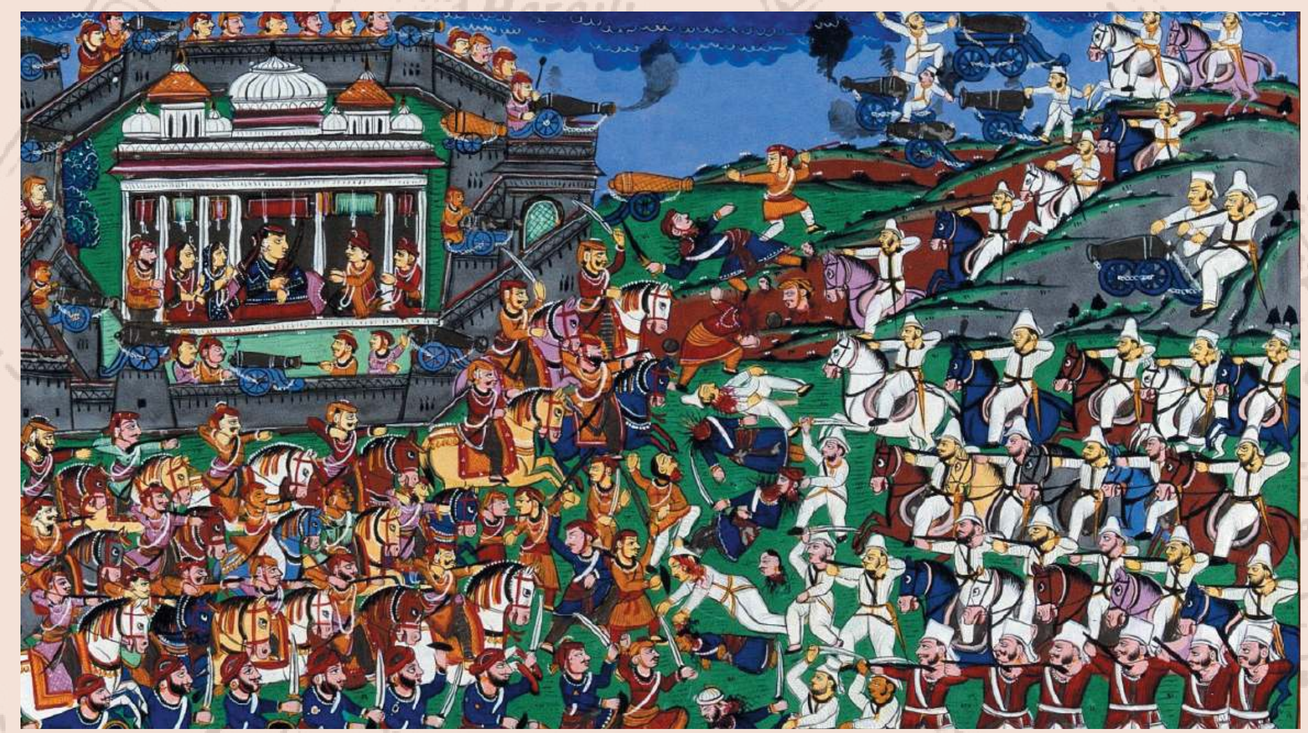




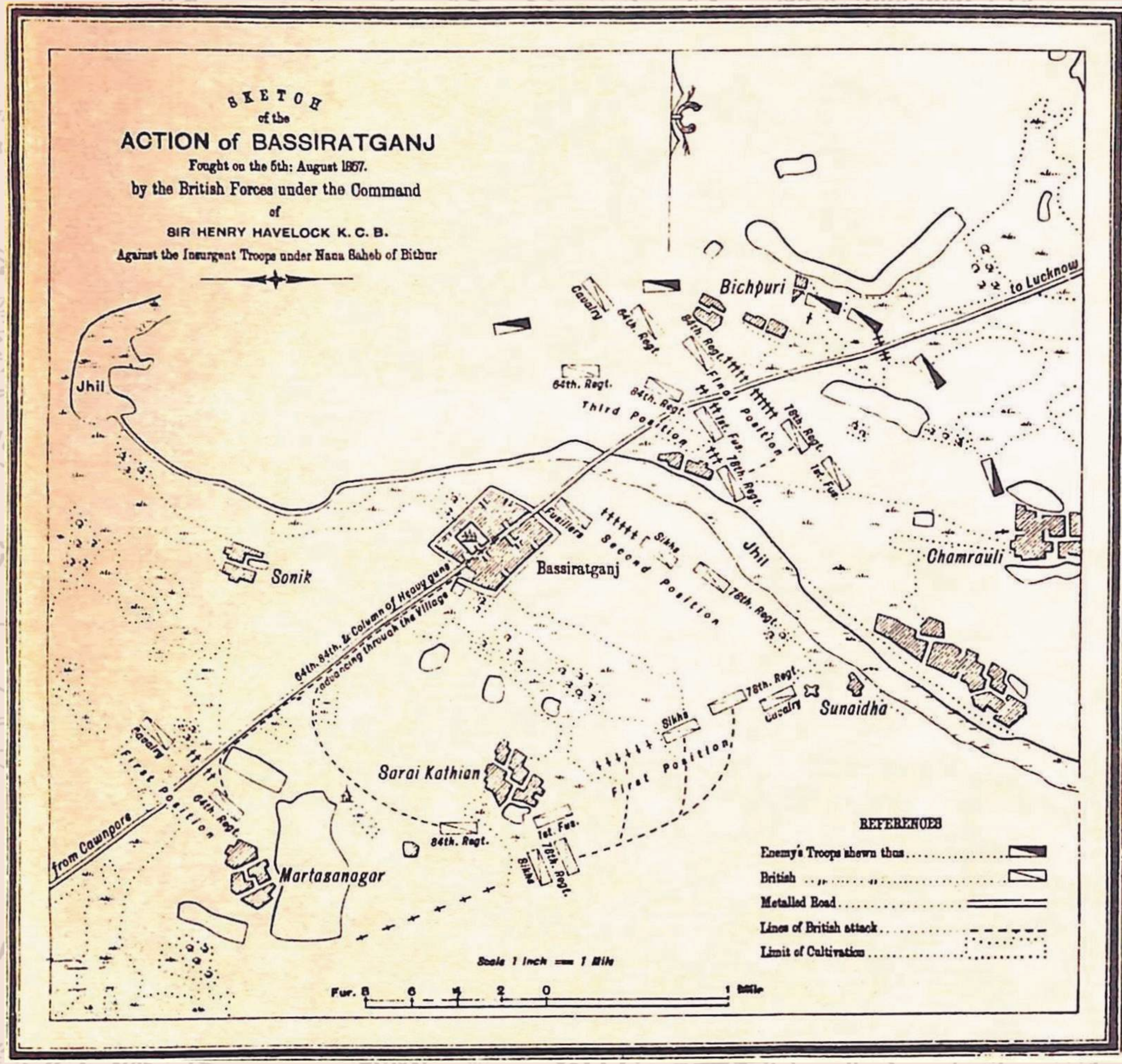
कानपुर में हत्याकाण्ड, 1857

झाँसी की रानी, लक्ष्मीबाई का दरबार

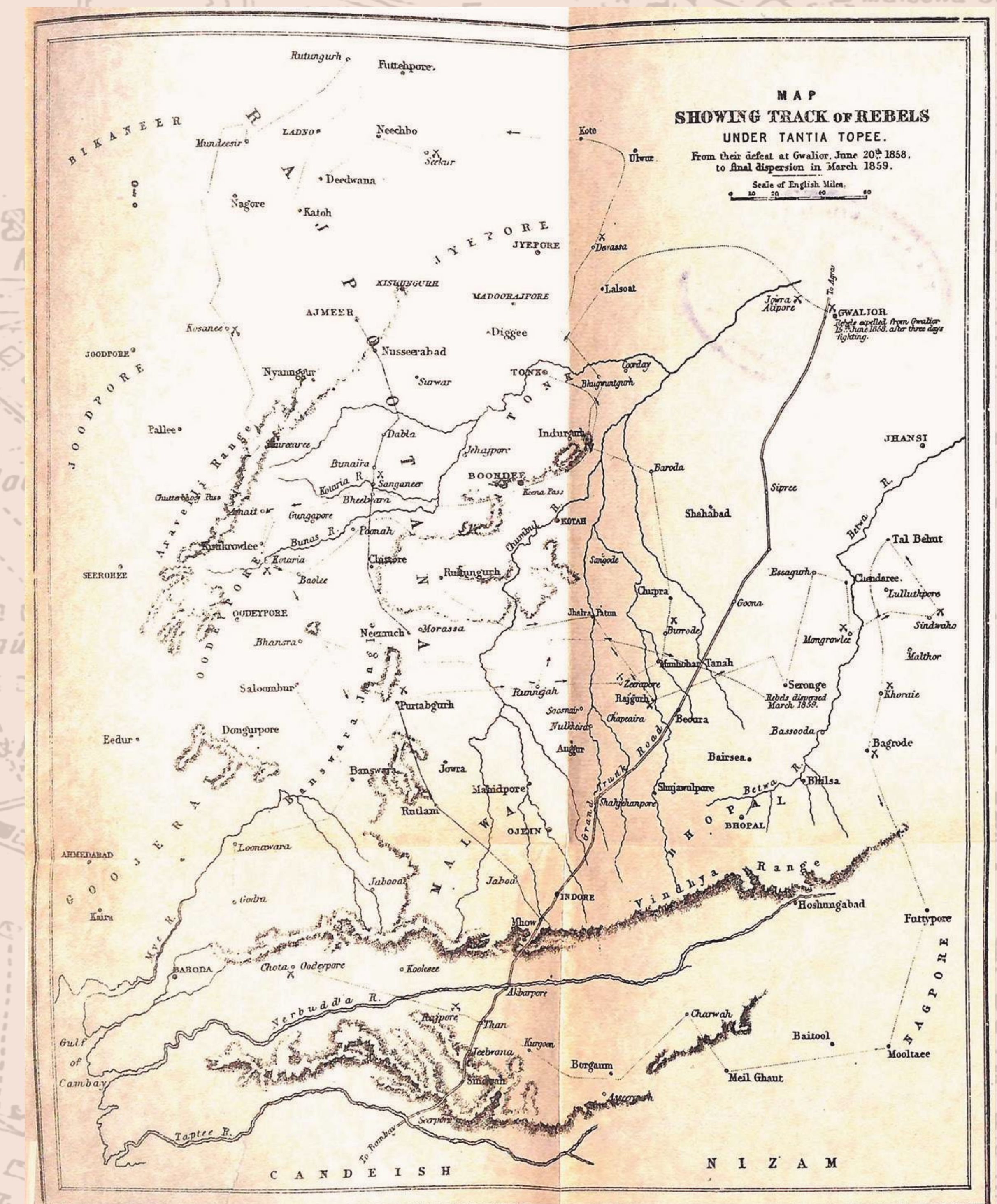




झाँसी में कम्पनी शासन के खिलाफ युद्ध

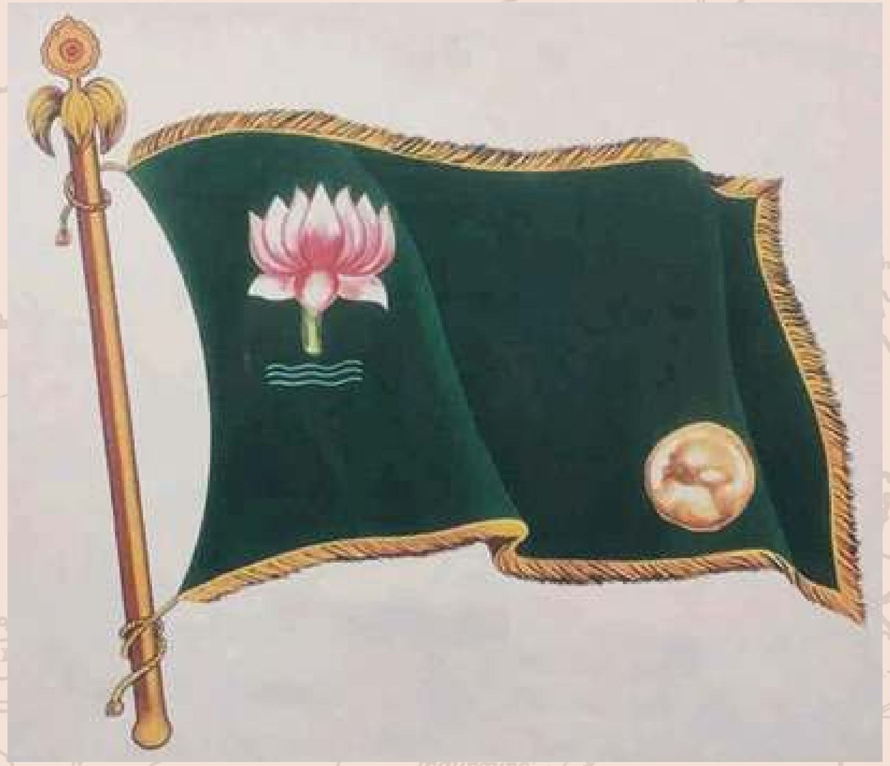


बसीरतगंज का युद्ध – हेनरी हैवलॉक एवं नाना साहब के बीच सेना की स्थिति का मानचित्र
स्रोत– ए हिस्ट्री ऑफ द इण्डियन म्यूटिनी, जी. डब्लू. फॉरेस्ट
1857–58 रिव्यूड एण्ड इलस्ट्रेटेड फ्रॉम ओरिजनल डॉक्यूमेंट्स वॉल्यूम I, 1912



विद्रोहियों की स्थिति दर्शाता मानचित्र
स्रोत– ए हिस्ट्री ऑफ द इण्डियन म्यूटिनी, जी. डब्लू. फॉरेस्ट
1857–58 रिव्यूड एण्ड इलस्ट्रेटेड फ्रॉम ओरिजनल डॉक्यूमेंट्स वॉल्यूम III, 1912

सम्राट बहादुरशाह ज़फ़र का झण्डा – 1857





रानी लक्ष्मीबाई, झाँसी का झण्डा

बेगम हज़रत महल का सन् 1857 का झण्डा

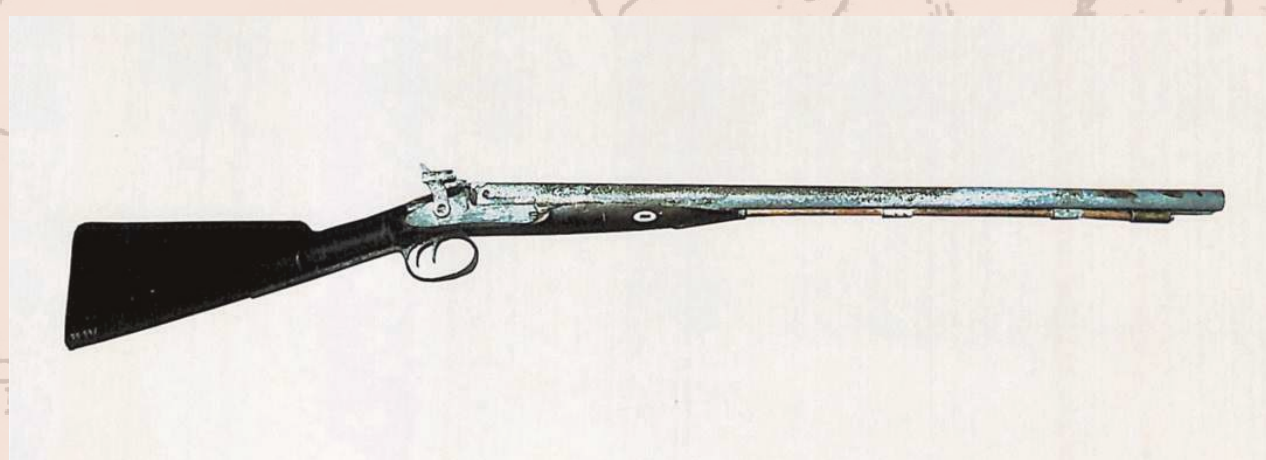




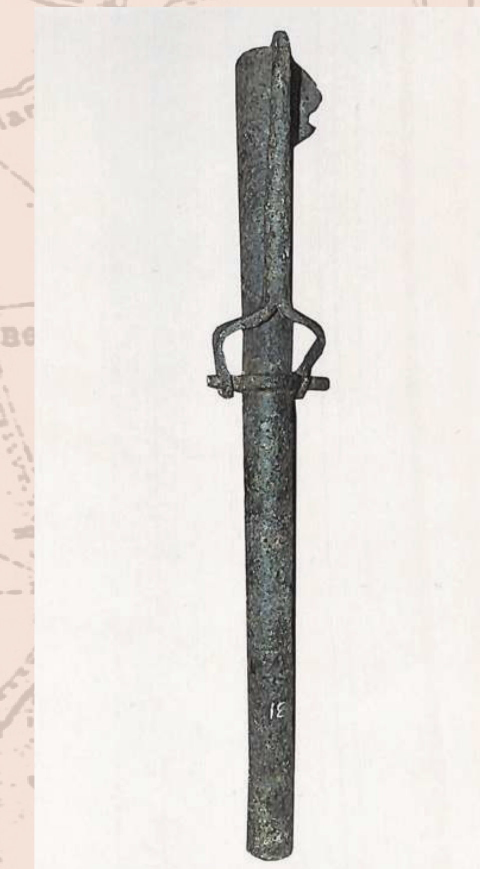
बीबीघर हत्याकाण्ड का स्थल, 1857



सिपाहियों द्वारा इस्तेमाल किया जाने वाला हथियार



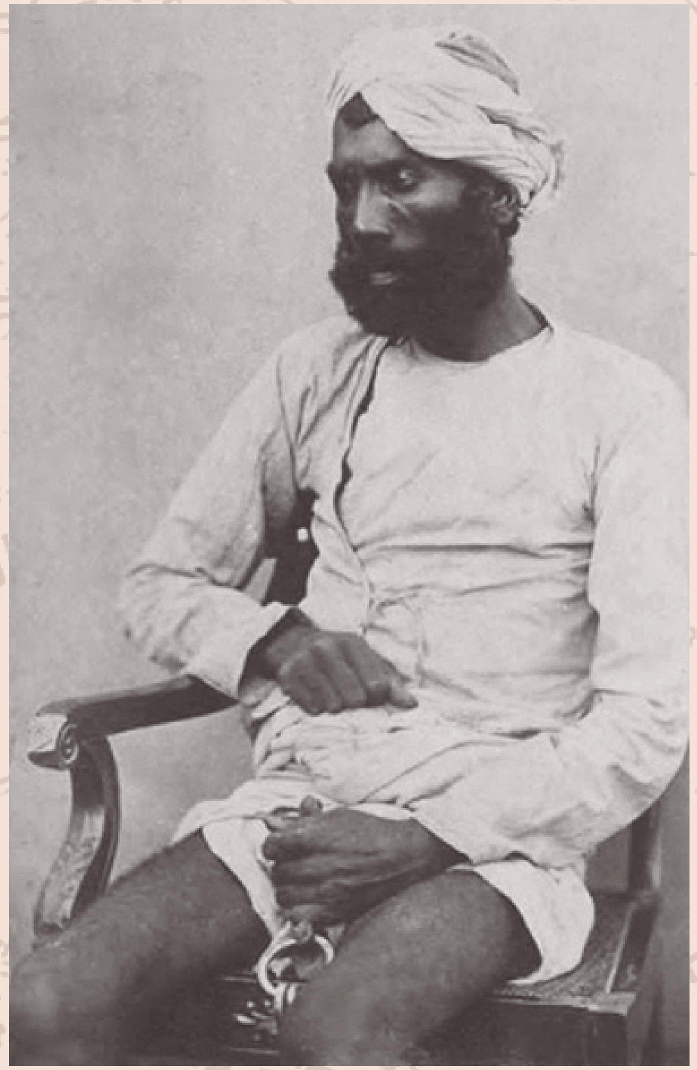
लखनऊ की घेराबन्दी में प्रयोग हुई गन, 1857



लौह जंबूरक या
ऊँट शस्त्र (तोप–नुमा) का बैरल



भारतीय विद्रोही सिपाहियों की तलवार, 1857



विदोही नेता गंगू मेहतर
नाना द्वारा पकड़े हुए फतेहगढ़ के भगोड़ों को तलवार से मारने के जुर्म में, इनपर कानपुर में मुकदमा चलाया गया



मौलवी सलामत अली
104 वर्षीय कानपुर के शाही इमाम। उनके द्वारा जारी किये गए एक फतवे में अंग्रेज़ों को मारने का आदेश दिया, जून 1857
फोटोग्राफर – जोन निकोलस ट्रेसिडर



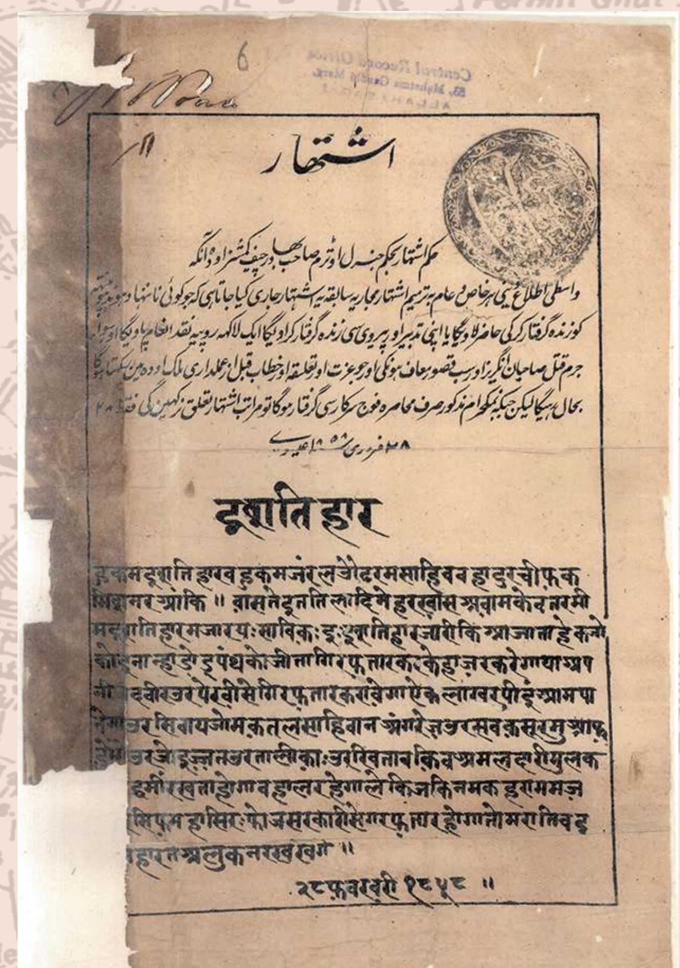
बंगाल का फकीर
नरेटिव ऑफ द इण्डियन रिवोल्ट
सर कॉलिन कैम्पबेल, लंदन, 1858



रानी हज़रत महल का एक अल्प ज्ञात चित्र
स्रोत – नाना साहब पेशवा एण्ड द फाइट फॉर फ्रीडम
आनन्द स्वरूप मिश्र। आई. डी. लखनऊ, 1961

406 मुहर, रानी चौहान

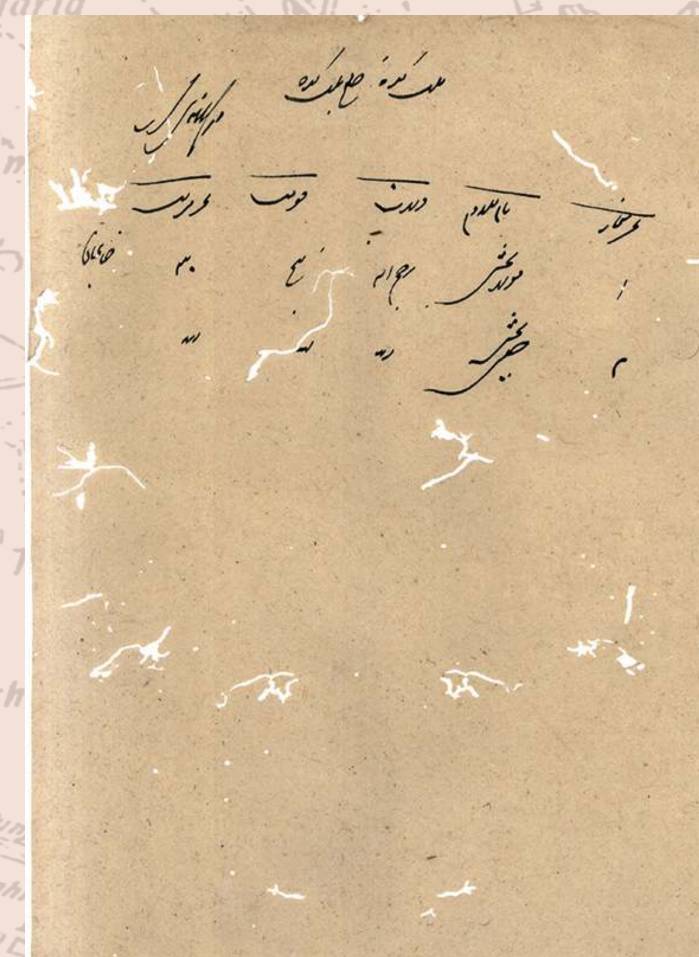




इश्तिहार

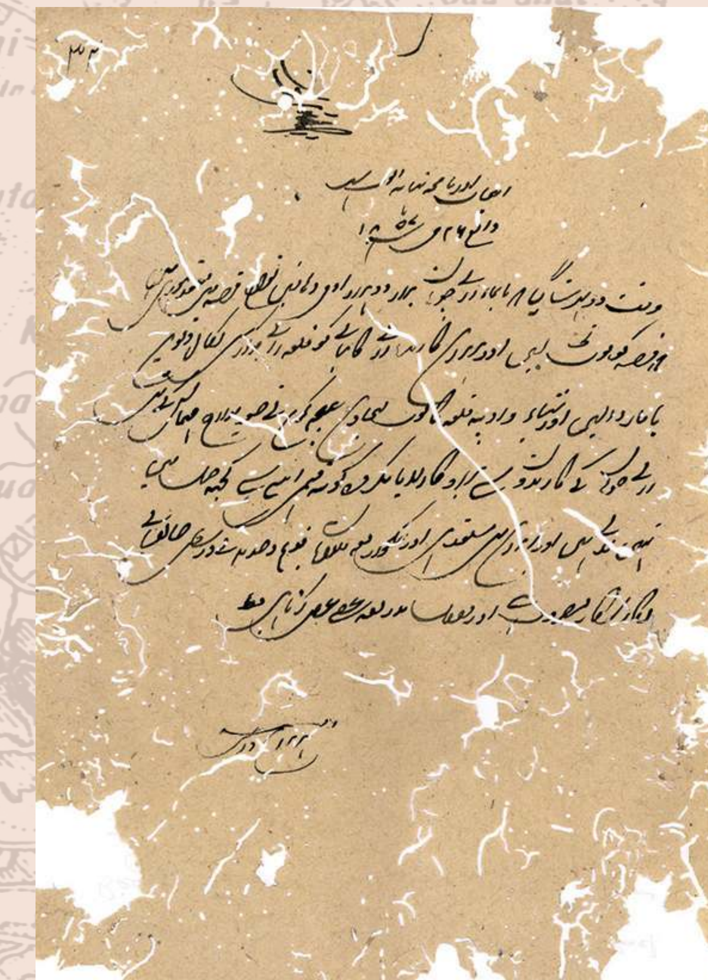
२८ फ़रवरी १८५८ ॥

इश्तिहार



अलीगढ़ विद्रोहियों की सूची नं. 101

408 अकबर रोज़नामचा, थाना अनूप शहर





उत्तर प्रदेश राजकीय अभिलेखागार

संस्कृति विभाग, लखनऊ

बी–44, महानगर विस्तार, लखनऊ–226006

सम्पर्क

0522 2331813

uparchives.lko@gmail.com, archives.up@nic.in

www.uparchives.up.nic.in